College Section.

लेखक—
बाबू हरिदास वैद्य।

चिकित्सा-चन्द्रोदय

चौथा भाग।

लेखक

बाबू हरिदास वैद्य।

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी।

कलकत्ता

२०१ हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में

मैनेजर—पण्डित काशीनाथ जैन

द्वारा मुद्रित।

मार्च, सन् १९२३ ई०

प्रथमवार २०००

मूल्य— अजिल्द का ३॥)
सजिल्द का ४॥)

निवेदन

भक्तोंके मनोरथ पूरे करने वाले, उनकी लज्जा-रक्षा करने वाले, उन्हें संकटसे उबारने वाले, भक्तभयहारी, कुञ्ज-विहारी आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्रकी कृपा का ही फल है; कि "स्वास्थ्यरक्षा" की तरह "चिकित्सा-चन्द्रोदय" भी भारतमें, घर-घरकी चिकित्सा-रामायण होना चाहती है। अगर उन जगदाधारकी इतनी कृपा न होती, तो इस नाचीज़ के लिखे ग्रन्थकी, भारतके कोने-कोने में, ऐसी कदर न होती। इतना ही नहीं, यदि उनका हस्तकमल इस सेवकके सिर पर न होता, तो यह तुच्छातितुच्छ लेखक आयुर्वेद रूपी महा-महासागरका मथन करके, उसमें से अमूल्य-अमूल्य रत्नोंका संग्रह न कर सकता। आयुर्वेद के प्रायः सभी-छोटे बड़े ग्रन्थोंको मथकर मक्खन निकालना, कोई बच्चोंका खेल नहीं और वह भी अत्यल्प समयमें। जो लोग उन भक्तवत्सल प्रभुको याद करते हैं, उनकी सहायताके लिये वे हर समय तैयार रहते हैं। यह शास्त्रोंकी बात नहीं है, स्वयं इन आँखोंसे देखी बात है। विगत वर्ष, मैं उनकी अपूर्व कृपाका परिचय पा चुका हूँ। उनकी कृपा का नमूना देख लेने से ही, मेरी उनमें औरभी प्रगाढ़ भक्ति हो गई है। वे ही मेरे इस जीर्ण-शीर्ण शरीरमें बल-पुरुषार्थ और मस्तिष्कमें शक्तिका सञ्चार कर रहे हैं। ऐसे कृपानिधान श्रीकृष्ण भगवान्‌के चरणकमलोंमें, मैं अत्यन्त विनीत भाव से नतमस्तक होता हूँ।

यों तो मैंने अपने सभी ग्रन्थ—समयाभावसे—भागते दौड़ते लिखे हैं। किसी भी ग्रन्थके लिये, मुझे काफी समय नहीं मिला; पर इस चौथे भागके लिखने में तो मुझे उन सब से भी कम समय मिला है। प्रेमी और कदरदान पाठकोंके जबर्दस्त तकाज़ोंसे तंग आकर, मैंने गत जनवरीके शेषांशमें इसके लिखनेमें हाथ लगा

दिया था। फरवरीमें, मेरी सब से बड़ी विदुषी और सौभाग्यवती कन्या चपला देवीके शुभ विवाहकी लग्नपक्की हो गई। अब जो मैं इस ग्रन्थ को पूरा नहीं करता, तो इसके तैयार होने में प्रायः ४।५ मासका विलम्ब होता और इतना विलम्ब पाठकोंको असह्य होता; इसीसे मैंने गत दो महीनोंमें, रात-दिन बीस घण्टे रोज़ काम करके, इसे समाप्त किया है। इससे प्रुफ-संशोधनमें त्रुटियोंका होना सम्भव है, क्योंकि पूरी नींद न लेने और रात-दिन प्रूफ-ही-प्रूफ देखने से आँखें चक्कर खा जाती हैं। उनसे जैसा काम होना चाहिये, वैसा नहीं होता। इसलिये मैं विद्वानोंसे अतीव विनीत भावसे प्रार्थना करता हूँ, कि वे मेरी मजबूरीका खयाल करके मुझे क्षमा प्रदान करेंगे और प्रूफ-संशोधनकी भूलोंके सिवा जो और भयङ्कर दोष उनकी नज़र तले आवें, उनसे मुझे अवगत कर देंगे, इसके लिये मैं उनका यावज्जीवन आभार मानूँगा।

इस भाग की लम्बी-चौड़ी भूमिका लिखने को भी मेरे पास समय नहीं है, क्योंकि आज ही सफर करनी है, उसके लिए ज़रूरी तैयारी करनी है, अतः मैं दो-चार बहुत ही ज़रूरी बातें निवेदन करके, अपने निवेदन को समाप्त करता हूँ। मुझे चिकित्सा-व्यवसाय करते २०।२५ साल हुए। इतने दिनों में मुझे जितने रोगी 'प्रमेह' और "नपुंसकता" अथवा दूषित-वीर्य वाले मिले और मिलते हैं, उतने अन्य रोगों के नहीं। आज भारत में रहने वाले सौ में ८० पुरुष इनमें से किसी न किसी रोग में गिरफ्तार हैं। इन रोगों के कारण स्त्री-पुरुषों का मन आपस में नहीं मिलता, मन-मुटाव बना रहता है। इतना ही नहीं, इन रोगों की वजह से कितने ही घरों में सन्तान का मुँह नहीं दीखता और व्यभिचार की वृद्धि होती है। अव्वल तो इन रोग वालों के सन्तान होती ही नहीं; यदि होती भी है, तो अल्पायु, अल्प-बुद्धि और सदा रोगों में जकड़ी रहने वाली। इन्हीं सब कारणों से मैंने इस भाग में, और

रोगों को छोड़कर, "प्रमेह" और नपुंसकत्व के निदान—कारण और लक्षण अथवा पहचान और उनकी यथोचित चिकित्सा खूब विस्तार से, अच्छी तरह समझा-समझाकर, इस तरह लिखी है कि, थोड़ी सी हिन्दी-मात्र जानने वाला व्यक्ति भी, अपने इन रोगों को पहचान कर, स्वयं चिकित्सा कर सके। इसके सिवा, वैद्यका व्यवसाय करने वाले कमज़ोर वैद्यों को भी, इस भाग से प्रमेह और नामर्दी के इलाज में खूब मदद मिलेगी। शास्त्रों को न जानने वाले [illegible] वैद्यों के लिए तो यह सच्चे गुरु और सच्चे मददगार का ही काम देगा। हाँ, एक खूबी और की है, वह यह, कि धनियों के लिए क़ीमती और निर्धनों के लिये कौड़ियों में तैय्यार होने वाले नुसख़े लिख दिये हैं। अनेक नुसख़े तो ऐसे लिखे हैं, जिनकी तैयारी में १ पाई भी खर्च न होगी, पर काम होगा—हज़ारों रुपये खर्च करने वाले अमीरों का सा। इसके सिवा, एक और बड़ी खूबी यह की गई है, कि प्रत्येक रोग पर अनुभूत, मुजर्रब, परीक्षित या आजमूदा नुसख़े लिख दिये हैं, जो मौक़ा पड़ने पर तीरेहदफ़ या रामबाण कासा काम करते हैं। यह खूबी बहुत कम ग्रन्थोंमें पाई जाती है। जिन नुसख़ोंको वैद्य लोग अपने पुत्रों और शिष्योंतक से छिपाते हैं, वे ही या वैसे ही नुसख़े, प्रत्येक भागकी तरह, इस भागमें भी अकपट भाव से लिख दिये हैं। स्त्रियोंके लिये भी "फल घृत" प्रभृति अचूक सन्तानोत्पादक योग बीच-बीचमें लिख दिये हैं। फिर भी; यदि दैवानुकूल रहा, तो इस विषयको हम अगले पाँचवें भाग में विस्तारसे लिखेंगे।

इस ग्रन्थके लिखने में चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, बंगसेन और चक्रदत्त प्रभृति प्राचीन ग्रन्थोंके सिवा अनेक अर्वाचीन छोटे-मोटे ग्रन्थों से भी सहायता ली गई है। अतएव मैं उन सभी ग्रन्थों के लेखक महोदयों का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। यदि मैं उन सब के नाम भी यथास्थान दे देता, तो मुझे सन्तोष होता,

पर अफ़सोस है कि मेरी नुसख़ों की कापी में उन के नाम नहीं। केवल आज़मूदा नुसख़ों के सामने मेरी क़लम से "परीक्षित" शब्द लिखे हुए हैं। आशा है, लेखक महोदय मुझे क्षमा प्रदान करेंगे। मैंने यों तो सभी भागों में अपने परीक्षित योग लिखे हैं, पर यह भाग तो प्रायः परीक्षित नुसख़ों का ख़ज़ाना ही है। जो नुसख़े कम-से-कम दस बार आज़माये गये हैं, उन के सामने ही "परीक्षित" शब्द लिखा है। मुझे उम्मीद है कि इस भाग से हज़ारों लाखों भारतवासी भाई फ़ायदा उठायेंगे। ऐसा होने से ही, मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगा।

इस असहयोग के ज़माने में भी, मैं भारत सरकार को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि भूतपूर्व वायसराय लार्ड चेम्सफार्ड महोदय और बंगालके लाट के प्राइवेट सेक्रेटरी आनरेबिल मिष्टर गॉरले महोदय एम० ए०, आई० सी० एस०, सी०आई०ई० ने मुझ पर जो कृपायें की हैं, उन्हें मैं यावज्जीवन नहीं भूल सकता। ईश्वर की और उनकी कृपाका ही फल है कि, मैं इस समय निर्भय-होकर, सानन्द इस ग्रन्थ को लिख सका।

मैं अपने क़दरदान पाठकों को भी हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। उनके भरोसे पर ही, मैं अपना समय और धन दिल खोलकर ख़र्च करता रहता हूँ। हिन्दी-पाठकों की ऐसी ही कृपा रहेगी, तो इस ग्रन्थ के शेष भाग भी शीघ्र ही निकल जायेंगे।

शेष में, मैं अपने प्रिय मित्र बाबू अमीचन्द जी गोलछा, प्रोप्राइटर नरसिंह प्रेस, और पं० काशीनाथ जी जैन, मैनेजर नरसिंह प्रेस, को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मेरे ही लिए, रात-दिन मेशीनें चलवाकर, इस ग्रन्थ को आज समाप्त करा दिया।

कलकत्ता
२१ मार्च, १९२३ ई०

विनीत—
हरिदास।

विषय-सूची।

प्रमेह-रोग-वर्णन।

नपुंसकता और धातु-रोग ११८

धातुओंका शोधन मारण ३२७

चन्द उपधातु और विषों की
शोधन-विधि ४०३

विष और उपविषों की शोधन-विधि।

प्रमेह रोग-वर्णन।

प्रमेह के सामान्य लक्षण।

(प्रमेह की सीधी-सादी पहचान)

प्रमेह रोग होने से पेशाब ज़ियादा और गदला होता है, ये ही प्रमेह के सामान्य लक्षण हैं।

नोट (१)—प्रमेह पेशाब की नली का रोग है, पर यह सोजाक की तरह एक-मात्र पेशाब की नली से ही सम्बन्ध नहीं रखता, बल्कि सारे शरीर से सम्बन्ध रखता है; अर्थात् प्रमेह और सोजाक दोनों ही पेशाब की नली के रोग हैं; पर प्रमेह सारे शरीरसे सम्बन्ध रखता है और सोजाक एकमात्र मूत्र-नली से सम्बन्ध रखता है। प्रमेह होने से शरीर की खून, मांस, चर्बी और वीर्य्य प्रभृति धातुएं खराब होकर, मूत्र-नली द्वारा, मूत्रके साथ निकलती हैं; इससे मनुष्य का जीवन कठिन हो जाता है; किन्तु सोजाक से यह नहीं होता। सोजाक में मूत्र-नलीमें

जख्म हो जाते हैं, उनमें से राध या पीप निकल कर धोती में लगती रहती है और पेशाव करते समय भयानक वेदना होती है। सोजाक होने से शरीर की आधार-भूत धातुएँ नहीं निकलतीं; इस लिये सोजाक वाला प्रमेह वाले की तरह कमजोर नहीं होता। पाठक इतने ही से सोजाक और प्रमेह का भेद समझ जायँगे। जिन्हें और भी अधिक समझना हो, वे हमारे लिखे "चिकित्सा चन्द्रोदय" तीसरे भागका "सोजाक-वर्णन" देख जाँय।

आजकल इस देशमें सोजाक और प्रमेह का बड़ा जोर है। जिस तरह सोजाक १०० में ६० मनुष्योंको होता है; उसी तरह प्रमेह १०० में ६६ मनुष्यों को होता है। कोई विरला ही भाग्यवान् इस भयानक रोगसे बचता है। इस रोग का इलाज शीघ्र ही न होने से यह "मधुमेह" में परिणत हो जाता है; यानी प्रमेह से मधु-मेह हो जाता है; प्रमेह का आराम होना उतना कठिन नहीं; पर मधुमेह का आराम होना कठिन ही नहीं, बल्कि अनेक बार असम्भव हो जाता है। इसलिये इस रोग के होते ही फौरन इलाज कराना चाहिये। आरम्भ में इसका इलाज सहज में हो जाता है, पर जब यह भयङ्कर रूप धारण कर लेता है, तब बड़ी कठिनाई होती है। असाध्य हो जाने पर तो ब्रह्मा भी इसे आराम नहीं कर सकता। अतः जिन्हें सुखपूर्वक जीना हो, जिन्हें आरोग्य-सुख भोगना हो, जिन्हें पूरी १०० वर्ष की उम्र तक इस दुनिया में रहना हो, वे प्रमेहके चिह्न नजर आते ही, हजार काम छोड़कर, प्रमेहका इलाज करें या करावें। हारीत ने कहा है:—

यथा च नामानि तथैव लक्षणं वलक्षयं नापि नरस्य देहे।
कुर्वन्ति शीघ्रं भिषजांवरिष्ठाः कुर्यात्क्रियाञ्च शमनाय हेतुम्॥

प्रमेह के निदान-कारण।

नीचे लिखे कारणों से मनुष्य को प्रमेह रोग होता है:—

(१) ज़रा भी मिहनत न करने से।

(२) रात-दिन बैठे-बैठे आनन्दमें गुज़ारने से।

(३) हर समय पलँग या गद्दे तकियों पर पड़े रहने से।

(४) दिन-रात खूब सोने से।

(५) दही दूध ज़ियादा खाने से।

(६) कछुआ और मछली प्रभृति जलचरों का मांस खाने से।

(७) जलवाले देशके प्राणियों का मांस खाने से।

(८) दिहाती पशु—भेड़ बकरी आदिका मांस खाने से।

(९) नये चाँवल प्रभृति नये नये अन्न खाने से।

(१०) बरसात का नया जल पीने से।

(११) गुड़ या गुड़ के बने पदार्थ खाने से।

(१२) इन सबके सिवा अन्यान्य कफकारक पदार्थ खाने से।

नोट—जितने कफकारक आहार विहार हैं, वे सब प्रमेह पैदा करते हैं; अतः मनुष्य को कफ बढ़ाने वाले पदार्थ जियादा न खाने चाहिएँ।

वाग्भटने लिखा है—स्वादु, खट्टे, नमकीन, चिकने, भारी, कफकारी, शीतल पदार्थ; नवीन अन्न, मदिरा, अनूप देशके प्राणियों का मांस, ईख, गुड़, गायका दूध, एक स्थान में रहना, एक ही तरहके आसन से प्रीति रखना, और शास्त्र-विरुद्ध सोना—ये सब प्रमेह पैदा करने वाले हैं। आत्रेय ऋषि कहते हैं—मिहनत करने, धूपमें फिरने, तीक्ष्ण और विरुद्ध भोजन करने एवं शराब, दूध तथा चरपरे पदार्थ खानेसे मुनियों ने प्रमेह की उत्पत्ति लिखी है।

प्रश्न—बङ्गाली मछली बहुत खाते हैं; पर उनको प्रमेह क्यों नहीं होता?

उत्तर—प्रमेह बङ्गालियों को भी होता है, पर मछली खाने से इसलिये नहीं होता, कि वे लोग मछली को सरसोंके तेलमें भूँज कर खाते हैं। तेलमें भूँजने से मछली का कफकारी गुण जाता रहता है।

जिसे प्रमेह होने वाला होता है, वह क्या क्या करता है?

सुश्रुताचार्य्य लिखते हैं—

दिवास्वप्नाव्यायामालस्यप्रसक्तं शीतस्निग्धमधुरमेद्यद्रवान्नपानसेविनं पुरुषं जानीयात्प्रमेही भविष्यति॥

जो मनुष्य गरमी के मौसम के सिवा और मौसमों में दिन में सोता या बहुत सोता है, किसी तरह की कसरत या मेहनत नहीं करता, आलस्य में दिन काटता है, बहुत ही शीतल, चिकने और

मीठे पदार्थ खाता-पीता है; यानी शीतल शर्बत, घी, दूध, शिखरन और पन्ने प्रभृति उचित से अधिक खाता-पीता है, समझना चाहिये, उसे "प्रमेह" रोग होगा । जिन्हें प्रमेह से बचना हो, वे प्रमेह पैदा करने वाले उपरोक्त कारणों से बचें ।

नोट—दिनमें किन-किन को और कब सोना चाहिये—और किन-किन को कब दिनमें न सोना चाहिये—इस विषयमें हमने "स्वास्थ्यरक्षा" के पृष्ठ २४१-४५ में विस्तार से लिखा है । प्रत्येक तन्दुरुस्ती चाहने वाले को वहाँ लिखे निद्रा-संबन्धी नियम देख लेने चाहिएँ ।

प्रमेह की सम्प्राप्ति ।

(प्रमेह कैसे होता है?)

कफ,—मूत्राशय या वस्तिमें रहने वाली चरबी को, मांसको और शरीर के क्लेदको दूषित करके या बिगाड़ कर "कफज प्रमेह" उत्पन्न करता है ।

नोट—वात पित्त और मेदके साथ कफके मिले रहनेसे "कफका प्रमेह" होता है।

कफकी तरह ही, बहुत ही ज़ियादा गरम पदार्थों के सेवन करने से पित्त—कुपित होकर या बढ़कर, कफादि सौम्य धातुओं का क्षय या कमी होने पर—मेद और मांस आदि धातुओं को दूषित या ख़राब करके "पित्तज प्रमेह" पैदा करता है ।

नोट—वात, कफ, रुधिर—खून और मेदके साथ पित्तके मिले रहने से "पित्तका प्रमेह" होता है ।

कफ और पित्तके क्षीण हो जानेसे, वायु—कुपित होकर चरबी, मज्जा, ओज और लसीका धातुओं को खींचकर, वस्ति या मूत्राशय अथवा पेशाब की थैली के मुँहपर ले आता और इस तरह "वातज प्रमेह" पैदा करता है ।

नोट—कफ, पित्त, वसा, मज्जा और मेदके साथ वायु के मिले रहने से "वातज प्रमेह" होता है ।

प्रमेह में दोष और दूष्य ।

प्रमेह रोग में वात, पित्त और कफ ये तीन दोष हैं। जो दूसरों को दूषित करते हैं; उन्हें दोष कहते हैं।

प्रमेह में मेद, खून, वीर्य, रस, चरबी, लसीका, मज्जा, ओज और मांस—ये दूष्य हैं; क्योंकि ये वात, पित्त और कफ से दूषित होते है *।

प्रमेह में वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष, ऊपर लिखे मेद, खून, वीर्य, रस, चर्बी, लसीका, मज्जा और ओज एवं मांस को दूषित करते हैं; मतलब यह कि, वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष मेद, मांस आदि धातुओं को ख़राब करके प्रमेह रोग पैदा करते हैं।

ख़राब करने वाले हैं—वातादिक दोष और ख़राब होने वाली हैं,—मेद, मांस प्रभृति धातुयें। इन धातुओंके ख़राब होने का परिणाम या नतीजा अथवा फल है—"प्रमेह",

प्रमेह के पूर्व रूप ।

जिसे प्रमेह रोग होने वाला होता है, उसके पहले दाँत, कण्ठ, जीभ और तालूमें मैल जमता है; हाथ पैरोंमें जलन होती है, शरीर में चिकनापन और मुँहमें मीठापन होता है तथा प्यास बहुत लगती है। किसी-किसीने बालों को जटासी हो जाना एवं नाख़ूनों का बहुत बढ़ना भी लिखा है।

*:मांस के चिकने भागको "वसा" या चर्बी कहते हैं। हड्डीके बीचके चिकने भागको "मज्जा" या हड्डी का गूदा कहते हैं। चमड़े और मांसके बीचके पानी जैसे पदार्थ को "लसीका" कहते हैं और सब धातुओं के सार को "ओज" कहते हैं।

प्रमेह की क़िस्में।

मुख्यतया प्रमेह तीन तरहके होते हैं:—

(१) कफज।

(२) पित्तज।

(३) वातज।

प्रमेह के और भेद।

कफके, पित्तके और वायुके प्रमेह विद्वानोंने, इलाज के सुभीते के लिये, बीस किस्मोंमें बाँटे हैं:—

(१) कफज प्रमेह १० प्रकारके होते हैं।

(२) पित्तज प्रमेह ६ प्रकार के होते हैं।

(३) वातज प्रमेह ४ प्रकार के होते हैं।

कफज प्रमेहों के नाम।

(१) उदक प्रमेह।

(२) इक्षु प्रमेह।

(३) सान्द्र प्रमेह।

(४) सुरा प्रमेह

(५) पिष्ट प्रमेह।

(६) शुक्र प्रमेह।

(७) सिकता प्रमेह।

(८) शीत प्रमेह।

(९) शनैर्मेह।

(१०) लाला प्रमेह।

नोट—इन प्रमेहों के जैसे—जैसे नाम हैं; वैसे ही वैसे पेशाब होते हैं। जैसे; उदक का अर्थ पानी है। उदक प्रमेह होनेसे पानी-जैसा पेशाब होता है। इच्छुका अर्थ ईख या गन्ना है, इसलिये इक्षु प्रमेह होने से ईख या गन्नेकी तरह अत्यन्त मीठा पेशाब होता है। इसी तरह और सबको समझ लेना चाहिए।

पित्तज प्रमेहों के नाम ।

(१) क्षार प्रमेह ।
(२) नील प्रमेह ।
(३) काल प्रमेह ।
(४) हरिद्र प्रमेह ।
(५) मांजिष्ठ प्रमेह ।
(६) रक्त प्रमेह ।

नोट—इन प्रमेहों के भी जैसे नाम हैं, वैसे ही पेशाब होते हैं। क्षार प्रमेह वाले का पेशाब खारी जल-जैसा ; नील प्रमेह वाले का नीले रङ्ग का; कालप्रमेह वालेका काले रङ्ग का, हरिद्र प्रमेह वाले का गहरे हल्दी के रङ्ग का, मांजिष्ठ प्रमेह वाले का मँजीठ के रङ्ग का और रक्त प्रमेह वाले का खूनके रङ्गका पेशाब होता है।

वातज प्रमेहों के नाम ।

(१) वसा प्रमेह ।
(२) मज्जा प्रमेह ।
(३) क्षौद्र प्रमेह ।
(४) हस्ति प्रमेह ।

नोट—इन प्रमेहों में भी नामानुसार पेशाब होते हैं। वसा का अर्थ चर्बी है। वसा प्रमेही को चर्बी-जैसा पेशाब होता है। मज्जा प्रमेही का पेशाब मज्जाके समान या मज्जा मिला होता है। क्षौद्र का अर्थ शहद है। इसमें पेशाब कसैला, रूखा और मीठा होता है। हस्ति प्रमेह वाला हाथी की तरह बारम्बार वेग-रहित और रुक-रुक कर मूतता है।

कफज प्रमेहों के लक्षण।

(१) उदक प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब ज़ियादा सफेद, साफ, शीतल, गन्धहीन, पानी-जैसा; किसी क़दर गदला और चिकना होता है।

नोट—इस प्रमेह वाला जब मूतता है, तब उसे मूत्र-नली में ठण्डा-ठण्डा पानी सा जान पड़ता है। बहुधा मिकदार में जियादा, साफ, सफेद, गन्ध-रहित, जलके समान पेशाब होता है। इस प्रमेह वाले को "नीमकी अतर छाल" का काढ़ा शहद मिलाकर ४० दिनतक पीना चाहिए।

(२) इक्षु प्रमेह—इस प्रमेह वाले का पेशाब ईख या गन्नेके रस की तरह मीठा होता है।

नोट—इक्षु प्रमेही का पेशाब रङ्गमें और स्वाद में ईख-जैसा होता है। इस प्रमेह वालेके पेशाब पर भी चींटियाँ लगती हैं, पर यह मधुमेहकी तरह असाध्य नहीं होता। इसमें "अरनी" का काढ़ा पीना हितकारी है।

(३) सान्द्र प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब, रातके समय किसी बर्तन में रख देने से सवेरे ही गाढ़ा हो जाता है।

नोट—इस प्रमेह वाले का पेशाब बर्तन में गाढ़ा हो जाता है और नीचे गदला पदार्थ जम जाता है। इसके लिये "सातला की जड़" का काढ़ा अच्छा है।

(४) सुरा प्रमेह—इस प्रमेह वाले का पेशाब ऊपर से सुरा या शराब की तरह साफ और नीचे से गाढ़ा होता है।

नोट—अगर इस रोगी का पेशाब बोतलमें रख कर देखा जाय, तो वह नीचे से गाढ़ा और ऊपर से पतला होगा, रंग मटमैला या किसी कदर ललाई लिये होगा। इसके लिये भी उदक प्रमेह की तरह "नीम की अतर छाल" का काढ़ा अच्छा है।

(५) पिष्ट प्रमेह—इस प्रमेह वाले का पेशाब पिसे हुए चाँवलों के पानी-जैसा सफेद और मिक़दार में ज़ियादा होता है तथा पेशाब करते समय रोंएँ खड़े हो जाते हैं।

नोट—पिष्ट प्रमेही के लिये हल्दी और दारुहल्दी का काढ़ा पीना हित है।

(६) शुक्र प्रमेह—इस प्रमेह वाले का पेशाब वीर्य-जैसा होता है अथवा इसके पेशाब में वीर्य मिला रहता है ।

नोट—शुक्र प्रमेही के पेशाबमें वीर्य मिला रहता है । इसके लिये "दूब की जड़, शैवाल और करञ्ज की गिरी" का काढ़ा हितकर है ।

(७) सिकता मेह—इस रोग वालेके पेशाब में बालू जैसे कड़े पदार्थ गिरते हैं; यानी पेशाब के साथ बालू रेत के समान छोटे-छोटे कण गिरते हैं ।

नोट—सिकता मेह और शर्करा रोगकी पहचानमें अकसर भूल हो जाती है । सिकता मेह में पेशाब के साथ सफेद रङ्ग की बालू आती है ; पर शर्करा में लाल रङ्ग की बालू आती है । बालू की रङ्गत से ठीक पता लगता है । सिकता मेह होने से पेशाब करते समय दर्द भी होता है । शर्करा रोग अकसर सोजाक होनेके बाद होता है । हकीम लोग सिकतामेह और शर्करा दोनों को ही "रेग मसाना" कहते हैं । सिकतामेह में " चीते की जड़ की छाल" का काढ़ा मुफीद है ।

(८) शीत मेह—इस रोगी का पेशाब बहुत ही शीतल, मीठा और मिक़दार में ज़ियादा होता है ।

नोट—शीत प्रमेहवाला पेशाब करते समय जाड़े के मारे काँप उठता है और उसके रोएँ खड़े हो जाते हैं । सुश्रुतने शीत प्रमेह की जगह "लवण मेह" लिखा है । हारीत ने भी "लवण मेह" लिखा है । इसके रोगीभी देखनेमें आते हैं । इस रोगी को "पाढ़ी और अगरका काढ़ा" लाभदायक है ।

(९) शनैर्मेह—इस रोगवाला बहुत ही धीरे धीरे पेशाब करता है और पेशाब मिक़दारमें थोड़ा होता है ; यानी यह रोगी धीरे-धीरे और थोड़ा मूतता है ।

नोट—इस रोगमें थोड़ा-थोड़ा और बारम्बार पेशाब होता है, पर पेशाब करते समय किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती । बहुतसे लोग थोड़ा-थोड़ा पेशाब देखकर इसे "मूत्रकृच्छ्र" समझ लेते हैं । यहबड़ी भूल है । मूत्रकृच्छ्रमें पीड़ा होती है; पर शनैर्मेहमें पीड़ा नहीं होती । इस रोगीको "खैरके पेड़की छालका काढ़ा" अच्छा है ।

(१०) लाला प्रमेह—इस रोगीका पेशाब लारके समान, तार या ताँतूदार एवं चिकना या लिबलिबा होता है ।

नोट—सुश्रुतमें लाला प्रमेहकाभी जिक्र नहीं है। इसके स्थानमें "फेन प्रमेह" लिखा है। रोगी दोनों तरहके मिलते हैं। फेन-प्रमेहीको पेड़ूपर बोझसा रखा जान पड़ता है और पेशाब झागदार होता है या पेशाबपर झाग जम जाते हैं। इन दोनों प्रमेहवालोंको "त्रिफला" का काढ़ा अच्छा है।

सूचना—इन दसों प्रमेहोंमें जो काढ़े दिये जायँ, उनके औट जानेपर, उनमें "शहद" ज़रूर मिला दें। शहदकी मात्रा ३ माशेसे १ तोले तक है। काढ़ेकी दवा दो या अढ़ाई तोले लेकर, मिट्टीकी हाँड़ीमें, पाव सवा पाव जल डालकर औटानी चाहिए। जब आधा या चौथाई पानी रह जाय, मल-छानकर शीतल कर लेना चाहिए और शहद मिलाकर पी जाना चाहिए। उपरोक्त सब काढ़े इन रोगोंपर परीक्षित हैं; पर एक ही दवा सबको फ़ायदा नहीं कर सकती। अगर काढ़ोंसे लाभ न हो; तो आगे लिखी दवाओं मेंसे कोई बढ़िया दवा देनी चाहिये। हाँ, एक बात और है; अगर रोगीका मिज़ाज गरम हो, उधर गरमीका मौसम हो, तो काढ़ा न देकर "हिम" देना चाहिये; बरसात और जाड़ेमें "काढ़ा" देना ही हितकर है; पर इसपर भी न भूलना चाहिए; रोगीका मिज़ाज देखना चाहिये। अगर मिज़ाज ठण्डा हो, तो "काढ़ा" और गरम हो तो "हिम" देना चाहिये। मौसमकी अपेक्षा प्रकृति या मिज़ाजपर ध्यान देना ज़रूरी है।

नोट—अगर दवा पानी में भिगोकर औटायी जाती है, तो उसे "काढ़ा" कहते हैं। अगर रात को भिगोकर सवेरे, बिना औटाये, मल-छानकर पिलायी जाती है, तो "हिम" कहते हैं।

पित्तज प्रमेहोंके लक्षण

(१) क्षार प्रमेह—इस रोगीका पेशाब गन्ध, वर्ण, रस और स्पर्शमें खारी जलके समान होता है।

नोट—क्षार प्रमेहीको "त्रिफलेका हिम" हितकरी है।

(२) नीलप्रमेह—इस रोगीका पेशाव नीले रंगका या पपहिया पक्षीके रंग जैसा होता है।

नोट—इस रोगीको "पीपलके पेड़की छालका काढ़ा या हिम" अच्छा है।

(३) काल प्रमेह—इस रोगीका पेशाव काली स्याहीके जैसा काला होता हैं।

नोट—इस रोगीको "नीमकी अन्तर छाल, आमले, गिलोय और परवलके पत्तों का कोढ़ा" अच्छा है।

(४) हरिद्र मेह—इस रोगीका पेशाव रसमें कड़वा एवं रङ्गमें हल्दीके गहरे रङ्गका होता है और पेशाव करते समय जलन भी होती है।

नोट—इस रोगीको "लोध, सुगन्धवाला, सफेद चन्दन और धायके फूलोंका काढ़ा या हिम" अच्छा है।

(५) मांजिष्ट प्रमेह—इस रोगीके पेशावमें बदबू आती है और वह रङ्गमें मँजीठके काढ़े-जैसा होता हैं।

नोट—"नीमकी छाल, अर्जुन वृक्षकी छाल और कमलगट्टेकी गिरी (हरी पत्ती निकालकर) का काढ़ा या हिम" उत्तम है।

(६) रक्त प्रमेह—इस रोगीका पेशाव बदबूदार, गरम, खारी और खून-जैसा लाल होता है।

नोट—"लाल कमलके फूल, नीले कमलके फूल, फूल प्रियँगू, और ढाकके फूल" इन चारोंका काढ़ा, मिश्री मिलाकर, पिलानेसे रक्त प्रमेह में अवश्य लाभ होता है।

सूचना—इन छहों प्रमेहोंमें, यदि पहले पेशाव साफ करके दवा खिलायी जाय, तो उत्तम हो—जल्दी लाभ हो। पेटके रोगोंमें जिस तरह कोठा साफ करके दवा देनेसे जल्दी लाभ होता है; उसी तरह प्रमेह रोगोंमें मूत्र-मार्ग साफ करके दवा देना अच्छा है। नं० ५ मांजिष्ठ प्रमेह और नं० ६ रक्त प्रमेहमें तो इस बातकी बहुत ही जरूरत है; क्योंकि रक्त प्रमेहमें रोगी भीतरी गरमीसे बेचैन रहता है। अगर ऐसे रोगीका पेशाव शीतल और साफ हो जायगा, तो रोगीको चैन आजायगा और उसे आराम होनेका विश्वास हो जायगा। "शीतलचीनीको" पीसकर घन्टे-घन्टे या दो-दो घन्टेमें दो-दो या तीन-तीन माशे फँकानेसे पेशाव साफ होंगे। शीत-

ल-चीनी फाँककर ऊपरसे १ गिलास जल पीना होगा। शीतलचीनीके साथ पिया हुआ पानी पेटमें नहीं रहता; निकल जाता है । प्रमेहमें अधिक जल पीना जरूर बुरा है, पर खासकर कफ और वातज प्रमेहोंमें; पित्तज प्रमेहमें उतना हानिकर नहीं और खासकर शीतल-चीनीके चूर्णके साथ। पित्तके छहों प्रमेहोंमें शीतल-चीनीका चूर्ण कम-से-कम एक सप्ताह फँकाकर, पेशाव साफकर दिया जाय और फिर कोई काढ़ा या हिम अथवा अन्य दवा दी जाय, तो निश्चय ही जल्दी लाभ हो।

वातज प्रमेहोंके लक्षण

(१) वसा प्रमेह—इस रोगवाला चर्बी-जैसा या चर्बीके समान पेशाव करता है ।

(२) मज्जा प्रमेह—इस रोगवाला मज्जा-मिला या मज्जा-जैसा मूतता है ।

(३) चौद्र प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाव शहदके रंगका, मीठा, रूखा और कषैला होता है । इस परभी मक्खियाँ अथवा चींटि-याँ बैठती हैं ।

(४) हस्ति प्रमेह—इस प्रमेहवाला मतवाले हाथीकी तरह या उसके मद-जैसा पेशाव बारम्बार, वेगरहित, तार-दार और रुक-रुक कर करता है ; यानी हस्ति प्रमेही ठहर-ठहर कर मूतता है, पेशावमें तारसे निकलते हैं और उसमें वेग नहीं होता ।

नोट—हस्ति प्रमेहीको पेशावके पहले वेग नहीं होता—हाजत नहीं होती। वह हाथीकी तरह मिकदारमें अधिक मूतता है। इस रोगीका पेशाव कभी-कभी रुक भी जाता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न (१)—हस्ति प्रमेह और शनैःप्रमेहमें क्या फ़र्क़ है ?

उत्तर—हस्ति प्रमेह वाला ठहर-ठहरकर मूतता; पर मिक़दार

में ज़ियादा मूतता है ; शनैः प्रमेह वाला धीरे-धीरे मूतता, पर मिक़दारमें कम मूतता है ।

प्रश्न (२)—पिष्ट प्रमेह और हस्ति प्रमेह में क्या भेद है ।

उत्तर—पिष्ट प्रमेह वाला भी मिक़दारमें ज़ियादा मूतता है और हस्ति प्रमेहीभी ; किन्तु पिष्ट प्रमेह वालेका पेशाब रंग में पिसे हुए चाँवलोंके धोवन-जैसा होता है ; पर हस्ति प्रमेहवालेका पेशाब हाथीके मद-जैसा होता है । पिष्ट प्रमेह वाला जब मूतता, है तब रोएँ खड़े हो जाते हैं; पर हस्ति प्रमेहमें ऐसा नहीं होता ।

प्रश्न (३)—इक्षु प्रमेह और क्षौद्र प्रमेहमें क्या भेद है ?

उत्तर—इक्षु प्रमेह वालेका पेशाब ऊखकी तरहका और मीठा होता है । उसपर चींटियाँ लगती हैं ; किन्तु क्षौद्र प्रमेह वालेका पेशाब शहदके रंगका, मीठा, कषेला और रूखा होता है ; चींटियाँ इसपर भी बैठती हैं । इक्षु प्रमेह कफसे होता है और असाध्य नहीं होता; जबकि क्षौद्र प्रमेह वातज होता और असाध्य होता है ।

प्रश्न (४)—सिकता प्रमेह और शर्करामें क्या भेद है ।

उत्तर—सिकतामें पेशाबके साथ सफेद बालू आती है; पर शर्करा में लाल आती है ।

प्रश्न (५)—शनैःप्रमेह और मूत्रकृच्छ्रमें क्या भेद है ?

उत्तर—शनैःप्रमेहमें रोगी रुक-रुक रक मूतता है; पर उसे तकलीफ नहीं होती; मूत्रकृच्छ्र में भी रोगी ठहर-ठहरकर मूतता है, पर इसमें जलन और पीड़ा होती है ।

प्रश्न (६)—उदक मेही और शीत मेहीके पेशाबमें क्या फ़र्क़ है ?

उ०—उदक मेहीका पेशाब शीतल होता है और शीत मेहीका अत्यन्त शीतल होता है । उदक मेहीको पेशाब करते समय भीतरसे ठण्डा-ठण्डा मालूम होता है; पर उसे जाड़ा नहीं लगता और वह काँपता नहीं; किन्तु शीत मेहीको पेशाब करते समय शीत लगता है, वह काँप उठता है और उसके रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

प्रश्न (७)—सान्द्रप्रमेह और सुरामेहके मूत्रमें क्या भेद है ?

उ०—सान्द्रमेही और सुरामेही दोनोंके पेशाबों को बर्तनमें रखनेसे नीचे गाढ़ा-गाढ़ा पदार्थ जम जाता है। फ़र्क़ यही है कि, सान्द्रमेहीका पेशाब सब गाढ़ा हो जाता है; किन्तु सुरामेह वालेका ऊपर से पतला होता है और उसका रंगभी मटियल और कुछ सुर्खीमाइल होता है।

प्रश्न (८)—मांजिष्ठ प्रमेही और रक्त प्रमेही दोनों होके पेशाब लाल और बदबूदार होते हैं, फिर अन्तर क्या ?

उत्तर—मांजिष्ठ प्रमेहीका पेशाब मँजीठके रङ्गका और रक्त प्रमेहीका रक्तके रङ्गका होता है। मांजिष्ठ प्रमेहवालेके पेशाबमें आम दुर्गन्ध रहती है; किन्तु रक्त प्रमेह में कच्ची बदबू नहीं होती। साफ पहचान यह है कि, रक्त प्रमेहीका पेशाब खूनके रंगका और गरम बहुत होता है।

प्रश्न (९)—किस प्रमेहमें मूतते समय दर्दभी होता है ?

उत्तर—सिकता प्रमेहमें। दर्द मूत्रकृच्छ्रमें भी होता है। सिकता मेहमें सफेद बालू आती है और मूत्रकृच्छ्रमें दर्द होने पर भी बालू नहीं आती।

प्रमेहों के इतने भेद कैसे ?

वात, पित्त और कफ—इन तीनों दोषों और मेद मांस आदि धातुओं की विशेषता और संयोग की विशेषता से मूत्र या पेशाब के रङ्ग वगैरः में जो फ़र्क़ होता है, उसीसे प्रमेहों के इतने भेद हुए।

साध्यासाध्यत्व।

(१) कफ के दस प्रमेह साध्य हैं; यानी उत्तम चिकित्सा से आराम हो जाते हैं।

(२) पित्तके ६ प्रमेह याप्य या कष्टसाध्य हैं; यानी बड़ी दिक्कतों से आराम होते हैं।

(३) वातके चार प्रमेह असाध्य हैं; इनका आराम होना असम्भव है।

कफज प्रमेह क्यों साध्य हैं?

कफज प्रमेह इसलिये साध्य हैं कि, वे केवल मेद आदि धातुओं के दूषित होने से होते हैं और कर्षण रूप एक क्रिया से ही नाश हो जाते हैं; यानी इनकी औषधि-क्रिया समान है। ये केवल एक "कफ" को ठीक करने से आराम हो जाते हैं। किसी को घटाना और किसी को बढ़ाना नहीं पड़ता।

नोट—कफके दसों प्रमेह शरीर के दोष और दूष्य की एक ही क्रिया होने से साध्य होते हैं। यह रोग का प्रभाव है कि, प्रमेह में "दोष और दूष्य की तुल्यता" साध्यत्व का कारण होती है। प्रमेह के सिवा और रोगोंमें दूष्य की असमानता साध्यता का कारण होती है।

पित्तज प्रमेह कष्टसाध्य क्यों?

पित्तके प्रमेह इस कारण से याप्य या कष्टसाध्य हैं कि, वे कफ आदि सौम्य धातुओं के क्षय होने पर, मेद आदि के दूषित होने से होते हैं। इनकी औषधि-क्रिया कफज प्रमेहों की तरह समान नहीं—असमान या विषम है। ये मधुर और रूखी आदि विषम क्रिया से नाश होते हैं। विषम इसलिये कि, शीतल और मधुर पदार्थ पित्तको शान्त करते हैं, पर मेद को बढ़ाते हैं; उधर गरम और कटु पदार्थ मेद को नाश करते हैं, पर पित्तको बढ़ाते हैं।

खुलासा यों समझिये, कि अगर पित्तज प्रमेहों के नाश करने के लिए पित्त नाशक शीतल और मीठे पदार्थ देते हैं, तो पित्त तो शान्त हो जाता है; पर मेद आदि धातु बढ़ने लगते हैं। इस दशामें रोग का आराम होना कठिन हो जाता है; क्योंकि पित्त शान्त हो और मेद न बढ़े, तभी प्रमेह आराम हो। इसी से पित्त के प्रमेहों में मधुर और रूखी—असमान या विषम चिकित्सा करते हैं; क्योंकि मधुर से पित्त शान्त होता और रूखी से मेद आदि घटते, पर बढ़ने नहीं पाते।

नोट—दोष और दूष्य की विषम क्रिया होनेसे पित्तज प्रमेह याप्य या कष्टसाध्य होते हैं; अर्थात् दवा खाने तक आराम रहते हैं। पित्तज प्रमेह में दोष—पित्त—जिस दवा से शान्त होता है, दूष्य—मेदादि धातुएँ उससे बढ़ती हैं। कफज प्रमेहों में यह बात नहीं है। जिस दवासे कफ शान्त होता है, उसीसे मेदादि घटते हैं। कफज प्रमेह की चिकित्सा में यह बड़ा आराम है, पर पित्तज में यह सुभीता नहीं।

वातज प्रमेह असाध्य क्यों ?

वातज प्रमेह असाध्य इस कारण से हैं कि, ये सारी धातुओं के क्षय होने से होते हैं। वायु—मज्जा आदि गम्भीर धातुओं को आकर्षण करने से पीड़ित करता है। वातज प्रमेहों में सारी धातुएँ क्षय होती हैं और इनकी भी क्रिया या चिकित्सा विषम है, इसीसे वातज प्रमेह असाध्य समझे जाते हैं।

नोट—प्रमेहके सिवा और रोगोंमें भी मेद मांस आदि धातुएँ दूषित या खराब होती हैं, पर प्रमेह की तरह नहीं। और रोगों में धातुएँ ऐसी दूषित नहीं होतीं, जो प्रमेह की तरह पेशाब के साथ बाहर जाने लगें। प्रमेह में धातुएँ पतली होकर और पेशाबमें मिलकर बाहर गिरने लगती हैं, इसीसे प्रमेह वाला दिन-दिन कमजोर होने लगता है। यही वजह है कि, शास्त्रोंमें ओज धातु का नाम लिया गया है, क्योंकि जब मेद आदि धातुएँ घटेंगी, तो सब धातुओंका सार "ओज" आपही घटेगा।

प्रमेहों के उपद्रव।

कफज प्रमेहों के उपद्रव।

(१) अन्नका अच्छी तरह न पचना, (२) अरुचि, (३) वमन, (४) तन्द्रा, (५) खाँसी, और (६) पीनस या जुकाम, ये कफज प्रमेहों के उपद्रव हैं।

नोट—उपरोक्त छै उपद्रवों के सिवा पेशाब और शरीर पर मक्खियाँ बैठती हैं, आलस्य बढ़ता, साथ ही मांस की वृद्धि होती बारम्बार जुकाम होता और उसकी वजह से सिर में ऐसी पीड़ा होती है, जिसके कारण समझ में नहीं आते।

पित्तज प्रमेहों के उपद्रव।

(१) मूत्राशय या पेड़ूमें तोड़ने-सरीखी पीड़ा, (२) दोनों अण्डकोषों या फोतों का पक कर फूटना, (३) ज्वर चढ़ना, (४) जलन होना, (५) प्यास लगना, (६) खट्टी डकारें आना, (७) मूर्च्छा या बेहोशी, और (८) मल-भेद या दस्त लगना—ये सब पित्तज प्रमेहों के उपद्रव हैं।

नोट—इन उपद्रवों के सिवा लिङ्ग की नली में सूई सी गड़ती हैं और घाव भी हो जाते हैं। नाक, आँख और मुँह से धूआँ सा निकलता जान पड़ता है। दाह, मूर्च्छा, प्यास, नींद न आना और पाण्डु रोग—ये विकार देखे जाते हैं। नेत्र, दस्त और मूत्र इत्यादि पीले हो जाते हैं; क्योंकि हार्ट डिजीज, किड़नी के रोग—दिलके मर्ज़, गुर्देके रोग और पाण्डु रोगका पूरा सम्बन्ध है।

वातज प्रमेहों के उपद्रव।

(१) उदावर्त्त, (२) कँपकँपी, (३) छाती में दर्द, (४) हृदय का रुकना, (५) चपलता, (६) शूल—दर्द, (७) नींद न

आना, (८) शोष, (९) श्वास, और (१०) खाँसी ये वातज प्रमेहों के उपद्रव हैं ।

नोट—इन लक्षणों के सिवा हृदय का अकड़ना सा और दस्त का कब्ज भी होता है ।

उपद्रव-सहित प्रमेह कष्टसाध्य ।

जो प्रमेह सुखसाध्य होते हैं, वे भी उपद्रव-सहित होने से कष्ट-साध्य हो जाते हैं; यानी दिक्कत से आराम होते हैं ।

चिकित्सा की उपेक्षा हानिकारक ।

आयुर्वेद में लिखा हैः—

सव एव प्रमेहास्तु कालेनाप्रतिकारिणः ।
मधुमेहत्वमायान्ति तदाऽसाध्या भवन्तिहि ॥

प्रमेह रोगके होते ही इलाज न करने से, सब तरह के प्रमेह, समय पाकर, "मधुमेह" हो जाते हैं और जब मधुमेह हो जाते हैं, तब असाध्य हो जाते हैं ।

प्रमेह के असाध्य लक्षण ।

ऊपर कहे हुए सब उपद्रव हों; पेशाब बारम्बार होता हो, शरा-विका आदि दश प्रमेह-पिड़िकाओं में से कोई पिड़िका हो और रोगने शरीर में वास कर लिया हो, तो प्रमेह रोगीका आराम होना कठिन ही नहीं—असम्भव है । ऐसा प्रमेह रोगीको मार डालता है । और भी कहा हैः—

मूर्च्छाछर्दिज्वरश्वासकासवीसर्प गौरवैः ।
उपद्रवैरुपेतो यः प्रमेही दुष्प्रतिक्रियः ॥

जो प्रमेह रोगी मूर्च्छा, वमन, ज्वर, श्वास, खाँसी, विसर्प और गुरुता या भारीपनसे युक्त हो, वह असाध्य है; अर्थात् वह आराम हो नहीं सकता।

प्रमेह के अरिष्ट-चिह्न ।

जिस प्रमेह-रोगी में सब लक्षण हों, जिसके पेशाब के साथ बहुत सा वीर्य जाता हो और जो पिड़िकाओं से पीड़ित हो, वह प्रमेह-रोगी निश्चय ही मर जायगा।

जन्म का प्रमेह असाध्य ।

जातः प्रमेही मधुमेहिनो वा न साध्य रोगः सहि बीजदोषात् ॥
ये चापि केचित्कुलजा विकारा भवन्ति तांश्च प्रवदन्त्यसाध्यान् ॥

मधुमेही मनुष्य से पैदा हुए प्रमेही का प्रमेह—बीजके दोष के कारण से—साध्य नहीं होता; यानी आराम नहीं होता; क्योंकि जो विकार जिसके कुल-परम्परा से चले आते हैं, वे आराम नहीं होते।

उपेक्षासे सभी प्रमेह मधुमेह हो जाते हैं ।

चिकित्सा न करनेसे—शीघ्र ही इलाज न करनेसे—सभी तरहके प्रमेह "मधुमेह" हो जाते हैं और जब मधुमेह हो जाते हैं असाध्य हो जाते हैं।

मधुमेह शब्दकी प्रवृत्तिमें कारण ।

मधुरं यच्च सर्व्वेषु प्रायो मध्विव मेहति ।
सर्वेऽपि मधुमेहाख्या माधुर्य्याच्च तनोरतः ॥

प्राय: सब तरहके प्रमेहोंमें मनुष्य मीठा और मधुके समान मूतता है तथा शरीरमें मधुरता होती है; इसीसे सब प्रमेहोंको "मधुमेह" कहते हैं ।

मधुमेहके भेद ।

मधुमेह होनेसे पेशाब मधु—शहद-जैसा-होता है । मधुमेह दो तरह के होते हैं:—

(१) धातुओंका क्षय होनेके कारण वायुके प्रकोपसे होता है ।

(२) दोषों द्वारा वायुकी राहें रुक जानेसे होता है ।

वायुकी राह रुक जानेसे वायु अकस्मात् दोषोंके चिह्न दिखाती है तथा उसी तरह क्षणमात्रमें मूत्राशयको ख़ाली कर देती है और क्षणभरमें ही भर भी देती है, इसीसे यह प्रमेह कष्टसाध्य हो जाता है ।

मधुमेहके लक्षण ।

सभी तरहके प्रमेहोंका बहुत दिन इलाज न होनेसे मधुमेह रोग हो जाता है । इस रोगमें पेशाब मधुकी तरह गाढ़ा, लिबलिबा, मीठा और पिङ्गल वर्णका होता है । मधुमेहीका शरीरभी स्वादमें मीठा हो जाता है । मधुमेहमें जिस-जिस दोषकी अधिकता रहती है, उसी-उसी दोषके लक्षण नज़र आते हैं । इस अवस्थामें बहुत दिनों तक इलाज न होने से तरह-तरहकी पिड़िकायें उत्पन्न हो जाती हैं । मधुमेह और पिड़िका मेह असाध्य होते हैं । शास्त्रमें कहा है—

पिड़िका पीड़ितं गाढ़मुपसृष्टमुपद्रवैः।
मधुमेहिनमांचष्टे सचासाध्यः प्रकीर्त्तितः॥

पिड़िकाओं से पीड़ित और उपद्रवों से युक्त रोगी मधुमेही होता है और वह असाध्य होता है।

और भी कहा हैः—

सचापि गमनात् स्थानं स्थानादासनमिच्छति।
आसनात् वृणुते शय्यां शयनात् स्वप्नमिच्छति॥

मधुमेह वाले रोगी को चलने से बैठना, बैठनेसे लेटना और लेटने से सोना अच्छा लगता है।

चरक के सूत्र-स्थान में लिखा हैः—

गुरुस्निग्धाम्ललवणं भजतामतिमात्रशः।
नवमन्नं च पानं च निद्रामास्या सुखानि च॥
त्यक्तव्यायाम चिन्तानां संशोधनमकुर्वताम्।
श्लेष्मा पित्तं च मेदं च मांसं चाति प्रवर्धते॥
तैरावृत्तः प्रसादञ्च गृहीत्वा याति मारुतः।
यदा वस्तिं तदा कृच्छ्रो मधुमेहः प्रवर्तते॥

भारी, चिकना, खट्टा और खारी पदार्थ अत्यधिक खानेसे, नया अन्न और नया जल सेवन करने से, बहुत सोने से, एक जगह सुखसे बैठे रहने से, मिहनत और चिन्ता न करने से और किसी तरह शरीर का शोधन न करने से शरीर में कफ, पित्त, मेद और मांस बहुत बढ़ते हैं। उनसे घिरा हुआ वायु प्रसाद को ग्रहण कर, वस्ती को ओर जाता है, तब कठिनसे आराम होनेवाला मधुमेह हो जाता है।

शक्कर की परीक्षा-विधि।

एक काँच की नलीमें पेशाब लो और उसमें पेशाबसे आधा "लाइकर पोटास" डाल दो और उसको हिलाकर स्पिरिट-लैम्प पर या दीपक पर रखकर गरम करो। अगर पेशाब में शक्कर होगी, तो

पेशाबका रङ्ग बट्ट भूरा या पोर्ट वाइन के रङ्ग के जैसा हो जायगा। अगर १ औन्स पेशाब में १० से २० ग्रेन तक शक्कर जाती हो, तो रोग को असाध्य समझो।

एक विद्वान् वैद्यने "वैद्य कल्पतरु" में लिखा है—"पेशाब अधिक आता है और उसमें शक्कर जाती है, उसे "मधुमेह" कहते हैं। खूनमें शक्करका एक भाग रहता है। जब शक्कर उन्नत प्रमाणमें होती है, तब वह पेशाबके साथ नहीं निकलती, किन्तु जब शक्कर या शक्करकेसे धर्म वाले पदार्थ अधिक खाये जाते हैं, अथवा मगज़ में कोई रोग होता है, तब पेशाबमें शक्कर जाती है। मधुमेह की एक दूसरी क़िस्म "डायाबिटीज़" इन्सीपीडस है। उसमें भी पेशाब बहुत होता है, किन्तु उसमें शक्कर नहीं जाती। उसके लक्षण "मूत्रातिसार" अथवा "उदकमेह" से मिलते हैं।

ठण्ड या सरदी, मदिरा सेवन, शक्करके बने पदार्थोंके उचित से अधिक सेवन करने एवं मगज़के रोगोंके कारण मधुमेह की भयङ्कर व्याधि होती है। आयुर्वेदमें तो प्रमेहके जो कारण लिखे हैं, वे ही मधु-मेह के लिखे हैं। वर्त्तमान नवीन चिकित्सकों ने खोजकर पता लगाया है, कि कलेजेका काम ठीक रूपसे न होनेके कारण यह रोग होता है। इस वजहसे, शक्कर रक्त में मिलकर, मूत्र-मार्ग से बाहर निकलती है। जो लोग आनन्द का जीवन बिताते हैं, काम-धन्धा नहीं करते; घी, चीनी, मिष्टान्न और भात अधिक खाते हैं, उन्हें यह रोग होता है।

कितने ही लोगोंको शुरूमें यह रोग मालूम नहीं होता; कित-नोंही को इसके चिह्न शीघ्र ही मालूम होते हैं। शरीर शीघ्रही अशक्त या बेकाम हो जाता है। पेशाब बारबार या मिक़दार में ज़ियादा होता है। २४ घण्टे में १० से ३० सेर तक पेशाब होता है। उसमें शक्कर आधी छटाँक से १ सेर तक निकल जाती है। प्यास लगनेके कारण जल ज़ियादा पीया जाता है। पेशाबमें कभी-कभी जलन होती

है और पीप भी गिरती है। पेशावका रङ्ग फीका पानी-जैसा होता है; पर उसका स्वाद मीठा और गन्ध भी मीठी-मीठी होती है। पेशावको कुछ देर तक रखने से उसमें झाग से आते हैं और उसके ऊपर जीव-जन्तु चढ़ते हैं, यह इस रोगकी सामान्य परीक्षा है। मुँह, जीभ और गला ये सूखते हैं। प्यासकी तरह भूख भी ज़ियादा लगती है, कभी कभी अरुचि भी होती है, जीभ खून बन जाती है, दाँतों के पेढ़े शिथिल हो जाते हैं, उनसे रक्त भी निकलता है और दाँत गिर जाते हैं, दस्तकी क़बजियत ज़ियादा होती है, थूकमें शक्कर रहती है, मुँह मीठा-मीठा रहता है, चमड़ा सूखा रहता है। चेहरा चिन्तातुर रहता है, स्वभाव बदल जाता है, कमज़ोरी आजाती है, पुरुषत्व कम हो जाता है। इसके भी आगे चलकर नींद नहीं आती, सूक्ष्म ज्वर रहता है, नाड़ी क्षीण चलती है और शरीर सूखकर हाड़ों का पञ्जर हो जाता है। इस रोगमें क्षय, चमड़े से सम्बन्ध रखनेवाला रक्त रोग, नेत्रोंमें मोतियाबिन्द सूजन प्रभृति होते हैं और शेषमें मृत्यु होती है।

स्त्रियों को प्रमेह क्यों नहीं होता ?

रजः प्रसेकान्नारीणां मासि मासि विशुद्ध्यति।
कृत्सनं शरीरं दोषांश्च न प्रमेहन्त्यतः स्त्रियः॥

स्त्रियोंको हर महीने रजोधर्म होता रहता है; इस कारण उनके शरीर के सब दोष शुद्ध रहते हैं, इसीसे स्त्रियों को प्रमेह नहीं होता।

प्रमेह की उपेक्षा से पिड़िकाओं की पैदायश।

प्रमेहों की उपेक्षा करने से—जल्दी ही, रोग होते ही इलाज न

करने से—प्रमेह जिस तरह मधुमेह हो जाते हैं; उसी तरह सन्धि-योंमें, मर्म-स्थानों में और अधिक मांसवाले स्थानों में नीचे लिखो दस तरह की पिड़िकायें हो जाती हैं:—

(१) शराविका।
(२) सर्षपिका।
(३) कच्छपिका।
(४) जालिनी।
(५) विनता।
(६) पुत्रिणी।
(७) मसूरिका।
(८) अलजी।
(९) विदारिका।
(१०) विद्रधिका।

दस प्रकार की पिड़काओं के लक्षण।

१ शराविका।

जो पिड़िका या फुन्सी अन्तमें ऊँची, मध्यमें नीची और मट्टी के शकोरे-जैसी हो, उसे "शराविका" कहते हैं।

२ सर्षपिका।

जो फुन्सी सरसों के आकार वाली और उतनी ही बड़ी हो, वह "सर्षपिका" कहलाती है।

३ कच्छपिका।

जो फुन्सी कछुए की पीठ के जैसी हो और जिसमें जलन होती हो, उसे "कच्छपिका" कहते हैं।

४ जालिनी।

जो फुन्सी सूक्ष्म नस-जाल से लिपटी हो और जिसमें तेज़ जलन हो, वह "जालिनी" कहलाती है।

५ विनता ।

जो बड़ी मोटी, नीले रङ्ग की हो तथा पेट या पीठ में हुई हो, उसे "विनता" कहते हैं ।

६ पुत्रिणी ।

जो फुन्सी बड़ी हो और जिसके इर्द-गिर्द सूक्ष्म बारीक फुन्सियाँ हों या जो महीन-महीन-फुन्सियोंसे घिरी हो, उसे "पुत्रिणी" कहते हैं ।

७ मसूरिका ।

जो फुन्सी मसूर की दाल के समान बड़ी हो, उसे "मसूरिका" कहते हैं ।

८ अलजी ।

जो फुन्सी लाल और काली हो तथा और फुन्सियों से व्याप्त हो, उसे "अलजी" कहते हैं ।

नोट—अलजी और पुत्रिणी दोनों ही पिड़िकायें अन्य फुन्सियों से व्याप्त होती हैं, पर और बातोंमें फ़र्क़ होता है ।

९ विदारिका ।

जो फुन्सी विदारीकन्द के समान गोल और कठोर हो, उसे "विदारिका" कहते हैं ।

१० विद्रधिका ।

जो फुन्सी विद्रधि के लक्षणों वाली हो, उसे "विद्रधिका" कहते हैं ।

नोट—जो प्रमेह जिस दोषसे होता है, उसकी पिड़िका भी उसी दोष वाली होती है ।

पिड़िकाओं की असाध्यता ।

गुदा, हृदय, शिर और पीठ—इनके मर्म-स्थानोंमें उत्पन्न हुई, उपद्रव-सहित और मन्दाग्नि वाले मनुष्यके पैदा हुई पिड़िकाओं की चिकित्सा न करनी चाहिये; क्योंकि वे असाध्य होती हैं ।

पिड़िकाओं के उपद्रव।

प्यास, बेहोशी, मांसका संकोच, श्वास, हिचकी, मद, ज्वर, विसर्प और मर्म-स्थानों में अवरोध,—ये पिड़िकाओं के उपद्रव हैं।

क्या बिना प्रमेह के भी पिड़िका होती हैं?

जिस मनुष्य की मेद दूषित या ख़राब होती है, उसके बिना प्रमेह भी पिड़िकायें हो जाती हैं। पिड़िकायें जब तक अपने-अपने स्थानों को नहीं पकड़तीं, नहीं दीखतीं।

(१) वैद्यको चाहिये, पहले कारूरः द्वारा यानी पेशाब को शीशी में रखकर एवं लक्षण मिलाकर यह मालूम करले, कि रोगी को कैसा प्रमेह है; यानी प्रमेह कफ से हुआ है या पित्तसे अथवा वात से। अगर कफज प्रमेह है; तो शास्त्रमें लिखे उदक मेह, इक्षु प्रमेह, सुरा प्रमेह आदिक दसों प्रमेहोंमें से कौनसा प्रमेह है। अगर पित्तज है, तो क्षार प्रमेह, नील प्रमेह, काल प्रमेह आदिक में से कौनसा प्रमेह है। अगर प्रमेह की ख़ास क़िस्म मालूम हो जाय; तो चिकित्सा में सुभीता है, उसकी ख़ास दवा दी जा सकती है। अगर मालूम न पड़े या किसी कारण से मालूम न हो सके, तो वैद्य साधारण चिकित्सा करे, समस्त

प्रमेह नाशक कोई नुसख़ा दे । इस तरह भी आराम हो सकता है, पर कहीं-कहीं दिक़्क़त होगी और जल्दी कामयाबी भी न होगी । मान लो; किसीको पित्तज प्रमेह का एक भेद "रक्त प्रमेह" है । इस प्रमेह में रोगी को भीतरी गरमी बहुत बढ़ जाती है ; वह घबराता रहता है, क्योंकि दिल कमज़ोर हो जाता है, रोगी को आराम होने की आशा नहीं रहती । अगर वैद्य सामान्य चिकित्सा करेगा, तो सम्भव है कि, गिर पड़ कर रोगी चङ्गा हो जाय: पर यदि वैद्य यह जान ले कि यह रक्त प्रमेह है: यह पित्तज है; अतः इस में गरमी का बहुत ज़ोर रहता है, तो वह पहले उसकी धातुकी गरमी छांटेगा, जिससे रोगी को शान्ति मिलेगी, उसके दिल-दिमाग़ में तरी पहुँचेगी, उसका चित्त स्थिर-शान्त होगा, उसे आराम होने का भरोसा हो जायगा, अतः वह बिना--चींचपड़ किये दवा खाये जायगा और आराम भी हो जायगा । इन बातोंके सिवा, सबसे बड़ा लाभ यह होगा, कि वीर्यकी गरमी शान्त होनेसे, मैला निकल जानेसे, दवा जल्दी फ़ायदा करेगी । जिस तरह पेटके रोगों में दस्त कराकर, कोठा साफ करके, दवा देनेसे जल्दी फ़ायदा होता है; उसी तरह सोज़ाक और प्रमेहमें इन्द्रिय-जुलाब या बहुत पेशाब लाने वाली दवा देनेसे खूब जल्दी आराम होता है । पेशाब साफ करने वाली दवाएँ "चिकित्साचन्द्रोदय" तीसरे भाग के सोज़ाक प्रकरणमें बहुत लिखी हैं । शीतल-चीनी (काँटेदार गोल मिर्च) जिसे कबाब-चीनीभी कहते हैं; इस काम के लिए परमोत्तम है । कबाबचीनी के मेलसे बनी और दवाएँ भी अच्छी होती हैं । इसको, रोगी का बल, मौसम और देश प्रभृति का विचार करके, एक-एक, दो-दो और तीन-तीन माशे की खूराक से, दिन में बारह बार, ६ बार और चार बार तक दे सकते हैं । इसके चूर्णको फाँककर ऊपरसे १ गिलास साफ पानी पीना चाहिये । इस दवाके साथ पिया हुआ पानी पेटमें ठहरता नहीं; इसलिये प्रमेहमें अधिक पानी पीनेकी मनाही होनेपर भी, कोई खटका नहीं । दवाके साथ पिया

हुआ जल हानि नहीं करता। जब वैद्य देखे कि, रोगीको खूब पेशाब हुए; अब उसकी मूत्रनली साफ है; वीर्यकी गरमी निकल गई है, तब उसे कोई परीक्षित काष्ठादि औषधियों से बना चूर्ण देना चाहिये। अच्छी धातु बढ़ाने वाली दवा इस मौकेपर देनेसे फ़ायदा कर जाती है; पर कोरी इसी बातपर जमकर, बिना समझे, रोगीको ताक़तवर और मेद प्रभृति बढ़ानेवाले पदार्थ न देने चाहिएँ। दूध वगैरः ताक़तवर पदार्थोंसे यह रोग उल्टा बढ़ता है। सभी धातुएँ बह-बहकर निकल जाती हैं। हमने बहुतसे रोगी गिलोयके रसमें हल्दी या हल्दीका चूर्ण शहद मिलाकर देने अथवा त्रिफलेका चूर्ण शहदमें मिलाकर देने अथवा आमलोंके रसमें शहद और हल्दीका चूर्ण मिलाकर देनेसे आराम किये हैं। वे प्रमेह-रोगी कहते थे, साहब! हम जितनाही दूध घी खाते हैं, रोग उतना ही बढ़ता जाता है।

(२) शास्त्रोंमें, प्रमेह रोगीके लियेभी वमन विरेचनादिसे शुद्ध करके दवा देनेकी राय दी है; इस तरह जल्दी लाभ होता है। अगर रोगी वमनके योग्य न हो या वमन पसन्द न करता हो, तो वैद्य किसी हल्की दस्तावर दवासे, जिससे रोगीको कष्ट न हो, दो चार या ज़ियादा दस्त करादे; पर ऐसा न करे कि, रोगी मर मिटे। जब कोठा साफ हो जाय, भोजन पचने लगे, पाख़ाना रोज़ साफ होने लगे, प्रमेह-नाशक दवा दे। हम तो अमीर-मिज़ाज और एकदम नर्म कोठे वालोंको "पञ्चसकार चूर्ण (देखो स्वास्थ्यरक्षा) देकर कोठा साफ कर लेते हैं; पर यह चूर्ण क्रूर या कड़े कोठे वालोंको दस्त नहीं लाता। वे इसे हज़म कर जाते हैं; इसलिये उन्हें "इच्छाभेदी रस" देते हैं। किसी-किसीको सोंठ और कालेदानेका जुलाब भी देते हैं, यह सर्वोत्तम दस्तावर दवा है। स्वास्थ्यरक्षा के पृष्ठ ३५४ में इसकी तरकीब लिखी है। इससे प्रायः सभी को दस्त हो जाते हैं। किसी-किसी को पावभर गरम दूधमें अरण्डीका तीन चार तोले तेल मिलाकर भी देते और कोठा साफ कर लेते हैं। बहुतसे अमीरोंको हकीमी मुञ्जिस

और जुलाब देते हैं। हमने अपने आज़मूदा जुलाब और मुञ्जिसें "चिकित्साचन्द्रोदय" पहले भागके शेषमें लिखे हैं। नीचे का चूर्ण दस्त लानेमें सर्वश्रेष्ठ है:—

शरीर शोधन चूर्ण।

कालादाना·········· ३ तोले।
सनाय················२ तोले।
कालानमक···········१ तोले।

पहले कालेदाने और सनायको पीस-कूटकर छानलो; पीछे नमक को पीस-छानकर उसी चूर्णमें मिलादो। इसीको "शरीर शोधन चूर्ण" कहते हैं। यह चूर्ण कब्ज मिटाने और दस्त खुलासा लानेमें विचित्र औषधि है।

यह चूर्ण यकृत, प्लीहा, शूल और गर्भाशय के रोगोंमें भी दिया जाता है। इनके सिवा, जिन रोगोंमें दवा देनेसे पहले कोठा साफ करने की ज़रूरत होती है, उन सबमें इसे दे सकते हैं। इसमें यह खूबी है, कि इससे पतला दस्त नहीं आता; पर कोठेका सारा मल बँधे हुए दस्त के रूपमें निकल जाता है।

इसकी मात्रा २॥ माशे से ८ माशे तक है। रातको, सोते समय, एक मात्रा चूर्ण फाँक कर, ऊपर से गुनगुना जल पीना चाहिये। सवेरे ही एक या दो दस्त खुलासा होनेसे शरीर हल्का फूल हो जाता है। पहले इसे थोड़ी मात्रासे सेवन करना चाहिये, पीछे मात्रा बढ़ा सकते हैं। इस दवाके खानेसे पेटमें दर्द सा होता है, क्योंकि यह चूर्ण आँतों में जमे हुए मलको खुरचता है। ऐसी दशामें थोड़ी सी "सौंफ" मुँहमें रखकर चूसनेसे शीघ्र ही मल निकल जाता है।

हमने इस चूर्ण की परीक्षा की है। लाजवाब दस्तकी दवा है। इसके लिए हम पण्डित लक्ष्मीचन्दजी आर्य वैद्य, वैद्यरत्न, ओझा-

बलिया, ज़िला बलिया के कृतज्ञ हैं । आपही ने 'परोपकारार्थ' हमें यह लिख भेजा था और परीक्षा करके "स्वास्थ्यरक्षा" या "चिकित्सा-चन्द्रोदय" में लिखने के लिये कहा था । हमने खूब परीक्षा करके ही इसे यहाँ लिखा है । प्रत्येक गृहस्थ और वैद्य से हम इसे काममें लाने की सिफ़ारिश करते हैं ।

यह चूर्ण भी ऐसे मौक़ेके लिए अच्छा हैः—

दस्तावर नुसख़ा ।

१ हरड़का बकला ········· ६ माशे
२ सेंधानोन ················ २। माशे
३ आमले ····················· ६ माशे
४ गुड़ (पुराना) ············ १ तोले
५ दूधियाबच ·················· २ माशे
६ वायबिडङ्ग ················· २ माशे
७ हल्दी ······················· २ माशे
८ छोटी पीपर ················ १ माशे
९ सोंठ ························ २ माशे

गुड़को छोड़कर, बाक़ी आठों दवाओंको पीस-छान लो । पीछे गुड़में मिला लो । इसे खाकर, ऊपर से गरम जल पीलेनेसे कोठा साफ हो जाता है । इसे सवेरेके समय सेवन करना चाहिये । इसके सेवनसे पहले, यदि स्नेह स्वेद कर लिया जाय तो अच्छा; अन्यथा किसी युक्तिससे मल फुला लेना चाहिये या खूब घी डालकर मूँग-चाँवलोंकी खिचड़ी खानी चाहिये । इस तरह करके, यह चूर्ण फाँकनेसे दस्त जल्दी होंगे; क्योंकि मल नर्म हो जायगा । दस्त हो जानेके बाद, स्नान करके, तीन दिन तक यवागू अथवा पाँच दिन तक घी खाना चाहिये अथवा सात दिनों तक पुराने चाँवलों के भातका माँड़ या खिचड़ी खानी

चाहिये । जब पेट साफ हो जाय—कोई रसायन औषधि या अन्य औषधि लेनी चाहिये ।

शास्त्रोंमें लिखा हैः—प्रमेह रोगमें, पहले रोगी को प्रियंगू आदिके द्वारा सिद्ध किये तेलसे स्निग्ध करके, वमन और विरेचन कराने चाहिएँ; यानी क़य और दस्त कराने चाहिएँ । विरेचनके बाद "सुरसादिगण" की औषधियोंके काढ़ेमें सोंठ, देवदारु और नागरमोथेका चूर्ण एवं शहद और सेंधा नोन मिलाकर—निरुह वस्ति या पिचकारी देनी चाहिएँ । अगर गुदामें दाह हो, तो न्यग्रोधादि क्वाथसे निरुह वस्ति—पिचकारी देनी चाहिये। जिन प्रमेहोंमें वायुका कोप ज़ियादा दीखे, उनमें स्नेह पान कराना;यानी घी वगैरः चिकने पदार्थ पिलाना हित है । आजकल इतना झंझट करने वाले रोगी बहुत कम मिलते हैं, इसलिये घी डाली हुई मूँगकी खिचड़ी तीन चार दिन खिलाकर, "नारायण चूर्ण" या ऊपर लिखे चूर्ण अथवा "इच्छा भेदी रस"से कोठा साफ करके, दवा देनी चाहिये। पथ्य अपथ्यका ठीक ख़याल रखनेसे रोगी अवश्य आराम हो जाता है । अगर रोग आराम न हो, रोगी स्नेह पान, वमन, विरेचन और वस्ति-क्रिया पर राज़ी हो और इनके योग्य भी हो, तो इनको करानाही चाहिये । जो रोगी इनको सहन नहीं कर सकता, उसके लिए ये सब नहीं हैं । उसके लिये बलानुसार दो चार दस्त ही काफी हैं । जो संशोधनके योग्य नहीं, उन्हें शोधना भारी भूल है । वाग्भट्टने कहा है—"असंशोध्यस्य तान्येव सर्वमेहेषु पाययेत्" अर्थात् न शोधने योग्य रोगियोंको वैद्य शमन औषधि दे देवे ।

(२) प्रमेहमें पथ्य पदार्थ या हितकारी आहार विहारकी बड़ी ज़रूरत है । बिना अहितकारी आहार विहार त्यागे अथवा जिन कारणों से प्रमेह हुआ है उनके त्यागे, प्रमेह जा नहीं सकता। पथ्यकी प्रमेहमें बड़ी ज़रूरत है; इसीसे महर्षि सुश्रुताचार्यने अमीरों या राजा महाराजाओंके खाने-पीनेके पदार्थोंमें घृणा पैदा करने वाली या उनको बदज़ायक़े करने वाली चीज़ोंके मिला देनेकी राय दी है, जिससे रोगी

का मन उन चीज़ोंसे हट जाय। प्रमेह में कषैले पदार्थ हितकर होते हैं; इसलिये पाढ़, हरड़ और चीतेके काढ़े में शहद अधिक मिक़दारमें मिलाकर पिलाना चाहिये। त्रिफला, हल्दी, गिलोय और आमले इस रोगमें अच्छे हैं। जो रोगी दूध घी प्रभृति बढ़िया पदार्थ अथवा प्रमेह में वर्जित पदार्थ न त्यागे, उसकी पसन्द के पदार्थों में ऊँट या गधे प्रभृतिकी लीद मिला देनी चाहिये, ताकि वह आपही उन्हें छोड़ दे—उसे उनसे नफ़रत हो जाय। अगर रोगी रसीले और पतले पदार्थ न त्यागता हो, तो उनमें सेंधा नोन, हींग या सरसों मिला देनी चाहिये। अगर रोगी अधिक जल पीता हो; तो उसके पीनेके जलमें शहद, कैथ और गोल मिर्च डाल देनी चाहिएँ। इस तरह रोगी पानी से घृणा करने लगेगा; क्योंकि पानी प्रमेह को खूब बढ़ाता है और रोगी उसे बारम्बार पीना चाहता है; क्योंकि धातुओं के पेशाब की राहसे निकल जानेके कारण, उसकी प्यास बढ़ जाती है, मुँह सूखता रहता है। इस रोगमें और अपथ्य पदार्थोंसे रोगीको बचाना जैसा ज़रूरी है; उसकी अपेक्षा पानी से बचाना विशेष आवश्यक है; क्योंकि पानी पीने से "बहुमूत्र" या "मधुमेह" हो जाता है। मधुमेह असाध्य प्रमेह है।

प्रमेह में नीचे लिखे पदार्थ या आहार विहार अपथ्य हैं:—

सौवीर, मदिरा, माठा, तेल, दूध, घी, गुड़, खटाई, ईख, रस, अनूपदेश (जैसे बङ्गाल) के जानवरों का मांस, सिरका, रायता, मूली प्रभृति का अचार, मैरेय मदिरा—शराब, मामूली शराब, आसव जो ज़मीन में गाड़ने से तैयार हो, बहुत जल पीना, दूध पीना तेल या तेलके पके पदार्थ खाना, घी खाना, ऊख का रस या राब, दही, सत्तू, इमली और आम आदि खट्टे पदार्थों का पना, शर्बत, ग्राम्य पशुओं और जल-जीवों—मछली आदिका का मांस, पेशाब रोकना, स्नेहन कर्म, धूमपान-हुक्का बीड़ी पीना; फस्त खुलवाना, बहुत देर तक बैठे रहना, दिनमें सोना, नया अन्न खाना, पिट्ठी के पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, काँजी, गुड़, तूम्बी, ताड़फल की गुठली की मींगी,

विरुद्ध भोजन, कुम्हड़ा, खट्टा-मीठा-नमकीन रस, मैला पानी, लालमिर्च, लहसन, प्याज़, मूली, नारंगी, असरूद, केला, भूना, पूरी, कचौरी, घुइयाँ, आलू, साँभर नोन, बादी पदार्थ, स्त्री देखना, बहुत खाना, राह चलना, भागना, कपड़े से हवा करना, लाल कपड़े पहनना, एकान्त घर में गाना, स्त्री या बालक को प्यार करना, गहने पहनना, पान खाना, क्रोध करना, मिठाई खाना, साग खाना, ये सब पदार्थ या आहार विहार एवं उड़द की दाल, धूपमें फिरना ये सब प्रमेह रोगी को त्याग देने चाहियें ।

वैद्य-विनोद में लिखा है:—

> सौवीरकं सुरा तक्रं दधि क्षीरं घृतं गुड़ः ।
> अम्लेक्षुरसपिष्टान्नातप मांसानिवर्जयेत् ॥

काँजी, शराब, माठा, घी, दही, खट्टे पदार्थ, ईख-रस, पीसा अन्न, धूप और मांस प्रमेह वाले को मना है ।

वृन्द वैद्यक में लिखा है:—

> गुरु सौवीरकं मद्यं तैलं क्षीरं गुड़ं घृतम् ।
> अम्लभयिष्टेक्षूरसानूपमांसानिवर्जयेत् ॥

प्रमेह रोगीको भारी पदार्थ, सौवीर, काँजी, शराब, तेल, दूध, गुड़ घी, बहुत खटाई वाले पदार्थ, ईख-रस, और अनूपदेशके जानवरोंका मांस छोड़ देना चाहिये ।

आज-कलके डाक्टरों ने लिखा है कि, मधुमेहमें शक्कर जाती है; अतः शक्कर वाले खान-पान त्याग देने चाहिएं । शक्कर, चीनी, गुड़, गेहूँ, मक्का, चाँवल प्रभृति पदार्थ—जिनमें पिसान का सत्व यानी स्टार्च ज़ियादा हो; एवं स्टार्च-धर्म—गुणवाले साग जैसे आलू, प्याज़, पके फल, सूखा मेवा; नीबू, अदरख, अधिक दूध आदि प्रमेह रोगीको हानिकर हैं । हाँ " शुक्र प्रमेह " में पुष्टिकर आहार हितकर हैं, पर औरों में नहीं ।

प्रमेह रोगीको नीचे लिखे पदार्थ पथ्य हैं:—

वाग्भट ने लिखा है--जौके मालपूए, जौका सत्तू, गाय या घोड़े की गुदासे निकले जौ, मूँग; पुराने शालि चाँवल, पुराने साँठी चाँवल, कैथ, तेंदू, शहद, त्रिफला, काँटोंपर पकाया हुआ सूखा जङ्गली जीवों का मांस, पुराना मध्वरिष्ट, आसव, सफ़ेद डाभका पानी, शहद-मिला जल, त्रिफले के काढ़े में रात भर भिगोये और फिर सुखाये हुए जौओंका सत्तू ये सब प्रमेह रोगी को पथ्य हैं। प्रमेह-रोगी को रूखा और गाढ़ा उबटन, कसरत, रातमें जागना एवं अन्यान्य "कफ-मेद नाशक" क्रियाएँ भी हितकर हैं।

किसीने लिखा है—पुराने बासमती चाँवल, साँठी चाँवल, कोदों, जौ और गेहूँ की रोटी, चना, अरहर, कुलथी, मूँग की दाल, मूँग-अरहर की मिली दाल, करेला, जङ्गली जानवरों के मांस का रस इत्यादि हित हैं।

आज-कलके चिकित्सकों की राय है कि, प्रमेह रोगी को दिनमें पुराने चाँवलोंका भात, मूँग या मसूर की दाल, चने की दाल, छोटी मछली का थोड़ासा शोरवा, हिरन, खरगोश, उल्लू और बटेर के मांस का शोरवा, परवल, गूलर, बैंगन, सहँजनेकी डंडी, केलेका फूल, नरम कच्चा केला, काग़ज़ी या पाती नीबू—ये खाने चाहियें। रातके समय रोटी, करेले, बैंगन, परवल आदिका साग, चीनी-मिला थोड़ा दूध, सब तरह की कड़वी कषैली चीज़ें, सिंघाड़े, किशमिश, बादाम खजूर, अनार, भिगोये हुए चने, कम चीनीका मोहन भोग, बर्दाश्त हो तो स्नान—ये सब हितकर हैं।

किसीने लिखा है—गेहूँ, चना, मूँग, उड़द, जौ, चाँवल, अरहर, करेला, ककड़ी, गोभी, तोरई, परवल, चौलाई, कमल-नाल, ककड़ी और मेथी हित हैं।

हारीतने लिखा है—लाल चाँवल, साँठी चाँवल, कुलथी, थोड़ा घी, ज़रा मधुर अन्न ये पथ्य हैं।

अपथ्यसे हुए प्रमेह वालोंको कसरत ज़रूर करनी चाहिए। दण्ड

पेलने, बैठक करने, मुद्गर फिराने, राह चलने प्रभृति से प्रमेह में ज़रूर लाभ होता है; क्योंकि प्रमेह में वायु गरम होकर मेद के साथ मिल जाता है, इससे शरीर मोटा होता जाता है और प्रमेह रोग बढ़ता जाता है। शरीर की मेद कम करने और मुटाई नाश करने के लिये कसरत या मिहनत अवश्य करनी चाहिये; क्योंकि कसरत या मिहनत से मेद और मुटाई नाश होती है। अपथ्य सेवन से हुए प्रमेह में कफ और मेद का घटाना प्रमेह की सच्ची चिकित्सा है। वाग्भट ने कहा है—

> रूक्षमुद्वर्त्तनं गाढ़ं व्यायामो निशि जागरः।
> यच्चान्यच्छ्लेष्ममेदोघ्नं बहिरन्तश्चतद्धितम्॥

प्रमेह वाले को रूखा और गाढ़ा उबटन, कसरत, रातमें जागना एवं दूसरे कफ-मेद नाशक पदार्थों का शरीर के भीतर और बाहर प्रयोग करना लाभदायक है।

आपने कफ-मेद नाशक होनेके कारण ही प्रमेह वालेको "शिला-जीत" सेवन की ज़ोर से राय दी है, क्योंकि शिलाजीत में मुटाई नाश करने और प्रमेह आराम करने का विशेष गुण है।

बहुत से मूर्ख समझते हैं कि, प्रमेह में कसरत हानिकर है। अगर कसरत या मिहनत हानिकर होती; तो महर्षि वाग्भट ऐसा न कहते—

> अधनश्छत्रपादत्ररहितो मुनिवर्तनः।
> योजनानां शतं यायात्खनेद्वा सलिलाशयान॥
> गोशकृन्मूत्रवृत्तिर्वा गोभिरेव सह भ्रमेत्॥

निर्धन प्रमेह-रोगी को जूता और छाता न लेकर, मुनियों की वृत्तिको धारण करके, चारसौ कोस तक सफर करना चाहिये और तालाब आदि खोदने चाहियें अथवा गायका गोबर और गोमूत्र सेवन करते हुए गाय के साथ-साथ घूमना चाहिये।

बहुत से रोगोंमें कसरत की मनाही है; जैसे; रक्तपित्त रोगी,

कमज़ोर, किसी रोगसे सूखने वाला, दमा वाला, खाँसी वाला, क्षीण पुरुष, रास्ता चलनेसे थका हुआ, भोजन करके चुका हो, स्त्री-प्रसंग ज़ियादा करने वाला—इनको कसरत नहीं करनी चाहिये। प्रमेह-रोगी भी कमज़ोर हो, मिहनत करने योग्य न हो, तो उसे भी मिहनत या कसरत न करनी चाहिये। सुश्रुतके चिकित्सा-स्थान के ११ वें अध्याय में कहा है:—"क्षयंतु सततं रक्षेत्"...वह प्रमेही जो निर्धन हो और जिसके कुटुम्ब में कोई न हो, नङ्गे पैरों, बिना छाता लिये, माँग-माँग कर खाता हुआ, हर गाँव में एक रात ठहरता हुआ, मुनियोंकी तरह संयम रखता हुआ चारसौ कोस या इससे भी ज़ियादा चले। यदि धनाढ्य हो, तोभी श्यामाक, नीवार खा-खाकर अथवा आँवले, कैथ, तेंदू, अश्मन्तक फल खाता हुआ हिरनों के साथ घूमे और उनके मूत्र और मेंगनियों को सेवन करे अथवा निरन्तर गाय के साथ फिरे, कूआ खोदे; परन्तु दुर्बल रोगीको मिहनतसे बचाना चाहिये। मतलब यह है, प्रमेह-रोगी यदि मोटा-ताज़ा हो, तो मिहनत या कसरत करे। इससे उसकी मेद घटेगी, प्रमेह नाश होगा; पर कमज़ोर यदि व्यायाम करेगा या चारसौ कोस पैदल चलेगा, तो प्रमेह से चाहे जल्दी न भी मरे; पर इस तरह शीघ्र ही यमराज का पाहुना होगा। जिनको कुल-परम्परा से प्रमेह हुआ है, उनके लिये भी कसरतकी दरकार नहीं।

नोट—सहज प्रमेह रोगीको दूध मना है, पर अधिक मनाही नहीं है। इसी तरह उसे घीकी भी एकदम मनाही नहीं है। अपथ्य-जनित प्रमेह वालेको कसरतकी जैसी ज़रूरत है, सहज प्रमेह वालेको नहीं। अपथ्य-जनित प्रमेह रोगीको करेला प्रभृति कसैले साग, सरसोंके तेलमें या अलसीके तेलमें भूँजे हुए हित हैं; पर सहज प्रमेह वालेको तेलमें भूँजी तरकारी हितकर नहीं। यह वैसीही बात है, जैसीकि ज्वर में नवीन ज्वर रोगीको दूध घी मना है, पर पुराने ज्वर वालेको दूध हितकर है।

(४) लिख आये हैं कि, चिकित्साकी उपेक्षा करनेसे सभी प्रमेह मधुमेह हो जाते हैं; पर मधुमेहमें भी वही उपाय करने चाहि-

एँ जो प्रमेहोंमें किये जाते हैं। प्रमेह या मधुमेहमें शिलाजीत, वङ्ग-भस्म, लोह भस्म, कान्तिसार या फौलाद भस्म, अफीम या भाँग आदि पदार्थ हितकर हैं। शहद मीठा है, पर प्रमेहमें अत्युत्तम है, इसीसे प्रायः प्रत्येक काढ़े या रसके साथ शहदकी आज्ञा शास्त्रकारोंने दी है। शिलाजीतकी तरह शहद प्रमेहकी उत्कृष्ट औषधि है। शहदके सम्बन्धमें शास्त्रों में लिखा है—

वर्ण्यं मेधाकरं वृष्यं विशदं रोचनं जयेत्।
कुष्ठार्शःकासपित्तास्रकफमेह क्लम क्रिमीन्॥
मदतृष्णाऽस्रमिश्वास हिक्कातीसारहृद्ग्रहान।
दाहक्षतक्षयांस्तु योग वाहल्प वातलम्॥

शहद शरीरके रङ्गको अच्छा करता है; बुद्धि बढ़ाता है; धातु पुष्ट करता है; विशद और रोचक है; कोढ़, बवासीर, खाँसी, पित्त रक्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि, कृमि, मद, तृषा-प्यास, क्षय, श्वास, हिचकी, अतिसार, हृदय-रोग, दाह, क्षत, क्षय, और रक्तको जीतता है। यह योगवाही और किसी क़दर बादी करने वाला है।

शहदभी चार तरहके होते हैं—(१) माक्षिक (२) पैत्तिक, (३) क्षौद्र, और (४) भ्रामर। तेलकी कान्तिवाला माक्षिक, घीके जैसा पैत्तिक, भूरे रङ्ग वाला क्षौद्र और बिल्लौरी पत्थरके जैसा साफ भ्रामर होता है।

मधुओंमें माक्षिक—तेलकी कान्तिवाला मधु श्रेष्ठ है। यह नेत्र-रोगको हरता और हलका है। पैत्तिक जो घी जैसा होता है, रूखा और गरम है तथा पित्त, दाह और रक्तवात करता है। माक्षिक और क्षौद्र गुणमें समान हैं, पर प्रमेह नाश करनेमें "क्षौद्र" अच्छा है। इसका रङ्ग भूरा सा होता हैं। भ्रामर मधु, जो बिल्लौरी शीशे के जैसा होता है, रक्तपित्तको नाश करता है; मूत्र और जड़ता करनेवाला तथा भारी है।

नया शहद अभिष्यन्दी और चिकना तथा कफनाशक और सर

यानी दस्तावर होता है; पर पुराना शहद मलको बाँधने वाला, रूखा, मेद नाशक और अत्यन्त लेखन होता है। प्रमेह, मेद और अतिसार नाश करनेमें "पुराना शहद" ही अच्छा होता है। आग और धूपमें गरम किया हुआ शहद खानेमें प्राणनाशक होता है।

आजकल ठग लोग शहदको भी नक़ली लाते हैं। कोई खाँड़की चाशनी ले आते हैं और कोई मुर्दोंके ऊपरका शहद ले आते हैं। अतः खूब परीक्षा करके शहद लेना चाहिये। कपड़ेकी बत्तीपर शहद लगाकर दियासलाई दिखानेसे जल उठने वाला शहद अच्छा होता है। असली शहद काग़ज़पर रखनेसे काग़ज़ नहीं गलता, पर खाँडकी चाशनी से काग़ज़ गल जाता है। असली शहदको कुत्ता नहीं खाता। तीनों तरहसे परीक्षा करके शहद लेना चाहिये अथवा अपने सामने छत्तेसे निकलवाना चाहिये। शहदकी प्रमेह-चिकित्सामें बड़ी ज़रूरत रहती है, इसीसे हमने शहदपर इतना लम्बा लेख लिखा है। मदनपाल निघंटुमें लिखा है—

मधु शीतं लघु स्वादु रूक्षं ग्राहि विलेखनम्।
चक्षुष्यं दीपनं स्वर्यं व्रणशोधन रोपणम्॥

शहद शीतल और हलका है, स्वादु और रूखा है, मलको बाँधता है, लेखन है, आँखोंको मुफीद है, अग्निको जगाने वाला है, स्वरमें हितकारी है, घावोंको शोधता और भरता है।

संस्कृतमें "मधु" फारसीमें "शहद" अरबीमें "असल" कहते हैं। यूनानी हकीमोंने लिखा है, शहदका रङ्ग, लाल, पीला और सफ़ेद होता है। यह दूसरे दर्जेका गरम और अव्वल दर्जेका रूखा होता है। गरम मिज़ाजवालों तथा मस्तिष्कको हानि करता और सिर दर्द करने वाला है। अनार, सिरका और धनिया इसके दर्पको नाश करने वाले हैं। इसकी मात्रा २ तोले तक है। यह दोषोंको साफ करता, कफको छाँटता, व्यर्थकी चिकनाई को दूर करता; जलोदर, स्तम्भ और सब तरहकी वायु नाशक है; पेशाब, दूध और आर्तवकी प्रवृत्ति करने

जाता है : वस्ति और गुर्देकी पथरीको तोड़ता है ; आमाशय और यकृतको बल देता है ; मस्तक और छातीको साफ करता है। हकीम जालीनूसकी रायमें सर्दीके रोगोंके लिए इससे अच्छी और दवा नहीं है।

(५) शिलाजीत जिस तरह प्रमेहकी उत्कृष्ट महौषधि है; उसी तरह सोनामाखी और रूपामाखीभी प्रमेहमें अमृत हैं। इनको सारगणकी औषधियोंकी भावना देकर, सारगणकी औषधियोंके साथ पीना चाहिये। इनके सेवनसे ज्वर, कोढ़, पाण्डु रोग, प्रमेह और क्षय नाश हो जाते हैं। जो सोनामाखी मधुर और सोने कीसी कान्ति वाली हो, वह उत्तम होती है। रूपामाखी खारी और चाँदी-जैसी अच्छी होती है। प्रमेहमें कुलथी पथ्य है; पर रूपामखी और सोनामाखी सेवन करने वाले प्रमेह-रोगीको कुलथी और कबूतरका मांस नुक़सानमन्द है। इस बातको ध्यान रखकर रोगीसे कह देना चाहिये।

नोट—शिलाजीत और रूपामाखी एवं सोनामाखी प्रभृति उपधातुओंको शोधकर काममें लाना चाहिये। बिना शोधी सोनामाखी या रूपामाखी सेवन करनेसे, अग्नि मन्द होती, बलनाश होता; नेत्ररोग, कोढ़, गण्डमाल और फोड़े होते हैं। इनके शोधनेकी विधि आगे लिखी है।

(६) अगर रोगीके पिड़िका हो जायँ, तो वैद्यको सबसे पहले जोंक लगवाकर वहाँका ख़राब ख़ून निकलवा देना चाहिये। इसके बाद गाय या बकरीके पेशावसे उन्हें दिनमें दो बार धुलवाना चाहिये। इसके बाद, उनपर कोई दवा लगानी चाहिये। इनकी उपेक्षा करना ठीक नहीं। पिड़िका नाशार्थ गूलरके दूधका लेप या सोमराजीके बीजोंका लेप अथवा बबूलकी ताज़ा पत्ती, छोटी इलायची और कत्थेका चूर्ण एकत्र करके बुरकना परीक्षामें अच्छा साबित हुआ है। आगे पिड़िका-चिकित्सामें हमने ये सब बातें लिखी हैं। पिड़िका हो जानेपर, खानेकी दवामें मकरध्वज प्रभृति सब से अच्छे हैं।

बङ्गसेन महोदय लिखते हैं—पिड़िकामें पहले खून निकलवा देना चाहिये। अगर पक गई हो, तो नश्तर लगा देना चाहिये। फिर बकरीके दूध, बनस्पतियोंके काढ़े या अन्य तीक्ष्ण पदार्थोंसे पिड़िकाओंको साफ करके; इलायची आदि पदार्थोंके कल्कसे बना तेल लगाना चाहिये; जिससे घाव भर जायँ। अमलतास आदिके क्वाथसे उद्वर्तन करके, सालसार आदिके काढ़ेसे सींचना चाहिए एवं चने प्रभृतिका भोजन खानेको देना चाहिए।

(७) प्रमेहमें जौको सभीने रायदी है। आजकलके डाक्टर भी ख़ासकर मधुमेहमें जौका सेवन अच्छा समझते हैं। हमारे यहाँ लिखा है—जौकी पिट्ठी एक महीने तक शहदके साथ सेवन करनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं। लिखा है—

मेदघ्ना बद्धमूत्राश्च समाः सर्वेषु धातुषु।
यावस्तस्माद्धितिशिष्यन्ते प्रमेहेषु विशेषतः॥

जौ मेदको नाश करने वाले, मूत्रको रोकने वाले और सब धातुओंको समान करने वाले हैं, इसी कारणसे जौ प्रमेहमें विशेष हितकारी हैं।

इसी वजहसे कितनेही विद्वानोंने जौका सत्तू प्रमेहमें हितकर लिखा है; क्योंकि वह रूखा, लेखन, अग्निदीपक, हल्का, दस्तावर कफ तथा पित्त नाशक होता है।

भावप्रकाशमें लिखा है—सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, पाढ़, सहंजनेकी जड़, बायबिडङ्ग, हींग, कुटकी, छोटी बड़ी कटेरी, हल्दी, दारुहल्दी, अजवायन, सुपारी, शालपर्णी, अतीस, चीतेकी छाल, काला नोन, ज़ीरा, हाऊबेर, और धनिया—इन सबको एक-एक तोले लेकर, पीसकूट कर छान लो। पीछे इनके चूर्णके साथ, चार सेर और ८ तोले जौके सतूमें चौबीस तोले घी और चौबीस तोले शहद मिलाकर लड्डू बना लो। इनको "त्रिकुटाद्य मोदक" कहते हैं। इनमें से रोज़ लड्डू खानेसे अत्यन्त दारुण प्रमेहभी नष्ट हो जाता है।

गायके खाये हुए जौओंको, गायके गोबरमेंसे चुनकर, गोमूत्रकी भावना देकर या न देकर, गायके उदश्वित यानी आधा जल-मिले माठेके साथ अथवा नीमके या मूँगके रसके साथ खानेसे प्रमेह नष्ट हो जाता है। एक मास तक, पानीके साथ, जौका आटा खानेसे भी प्रमेह नष्ट हो जाता है। प्रमेह-रोगीको जौ सेवन करनेकी अनेकोंने अनेक विधियां लिखी हैं; इसलिए वैद्यको, प्रमेह रोगीका इलाज करते समय, "जौ" को न भूलना चाहिये; क्योंकि प्रमेहमें "जौ" परमोपकारी चीज़ है।

(८) प्रमेह आराम हुआ या नहीं, इसकी परीक्षा पेशाबसे ही ठीक हो सकती है। शास्त्रोंमें लिखा है—

> प्रमेहिणो यदा मूत्रमनाविलम पिच्छिलम्।
> विशदं तिक्तकटुकं तदारोग्यं प्रपद्यते॥

जब प्रमेह-रोगीका पेशाब साफ, पिच्छिलता—लिबलिबापन-रहित, विशद, कड़वा और कटुरस-युक्त हो, तब उसे आराम हुआ समझना चाहिये।

सामान्य चिकित्सा

सामान्य चिकित्सामें, प्रमेहकी एकही दवा बीसों प्रकारके प्रमेहोंको आराम करती है। उसमें—कफज प्रमेह है, पित्तज प्रमेह है या वातज प्रमेह है,—इस तरहकी परीक्षा करनेकी जरूरत नहीं; पर विशेष चिकित्सामें प्रमेहकी किस्में जाननेकी जरूरत है; अर्थात् यह कफज प्रमेह है या पित्तज प्रमेह है या वातज प्रमेह है इत्यादि। कफज प्रमेहका नुसखा पित्तज प्रमेह-रोगीको नहीं दे सकते। ऐसा करने से भयानक हानि हो जानेकी सम्भावना है; क्योंकि पित्तज- प्रमेह-रोगीको शीतल दवा देनी चाहिये और दी जायगी गरम, तो हानि होगी ही। हाँ, विशेष चिकित्सासे रोग आराम जल्दी होता है; पर रोगकी किस्म, और उसके अशांश जानना तथा वैसाही नुसखा तजवीज करना जरूरी है। यह काम अनुभवी और विद्वान् वैद्यही कर सकते हैं, इसीसे हम यहाँ पहले प्रमेहकी "सामान्य चिकित्सा" लिख रहे हैं।

ग़रीबी नुसखे।

(१) महुआ की छाल ६ माशे और काली मिर्च ४ रत्ती—इन दोनों को सिल पर, जलके साथ, पीस कर पीनेसे असाध्य प्रमेह भी नाश हो जाते हैं।

(२) सेंधा नमक, घी, काली मिर्च और घीग्वार का गूदा—इनके सेवन करने से प्रमेह अवश्य नाश हो जाते हैं। कहा है—

> सिंध्वाज्य मरिचोपेतां कौमारीं च ततस्तथा।
> त्रिफलाज्ययुतं गन्धं शस्तं सर्व प्रमेहिनाम्॥

ऊपर के नं० २ नुसखेके सिवा—त्रिफला, शुद्ध गन्धक और घी को

मिलाकर सेवन करने से समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं।

और भी कहा है—

गन्धकं पलमानन्तु गोदुग्धेन विशोध्य च।
शर्करासंयुतं कार्यं मरुत्पित्त कफार्त्तिनुत्॥
तुष्टिपुष्टिकरो नित्यं रुचिकृन्नेत्ररोगजित्।
वीर्यक्षयं प्रमेहं च कुष्ठपित्तरुजं हरेत्॥

चार तोले गन्धक को, गायके दूधमें शोधकर, मिश्रीमें मिलाकर खानेसे वात, पित्त और कफके रोग नाश होते हैं, तृप्ति होती है, नित्य रुचि होती है, नेत्र-रोग नाश होते हैं एवं वीर्य-क्षय, प्रमेह, कोढ़ और पित्तके रोग शान्त होते हैं।

नोट—चार तोले गंधक एक बार में ही न खा लेना। अपने बलाबल के अनुसार १।२ या ४ माशे की मात्रा तजवीज करके, उसमें मिश्री मिलाकर खाना चाहिये। यह नुसखा प्रमेह पर रामबाण है।

(२) त्रिफले का चूर्ण, शहदके साथ, चाटने से पुराना प्रमेह भी नाश हो जाता है।

नोट—त्रिफला तीन फलोंको कहते हैं। वे ये हैं:—(१) हरड़, (२) बहेड़ा, (३) आमला। इन तीनोंको मिलाकर "त्रिफला" कहते हैं। खाली त्रिफला कह देनेसेही पसारी समझ जाते हैं; पर हरड कितनी, बहेड़ा कितना और आमला कितना लेना चाहिये, इस बातको वैद्योंके सिवा बहुत कम लोग जानते हैं। शास्त्रों में लिखा है—

एका हरीतकी योज्या द्वौच योज्यौ विभीतकौ।
चत्वार्यामलकान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्तिता॥

एक हरड़, दो बहेड़े और चार आमले,—इनको "त्रिफला" कहते हैं। एक हरड़ वजनमें दो बहेड़ोंके बराबर होती है और दो बहेड़े चार आमलोंके बराबर होते हैं। इस तरह इन तीनों फलों की तोल बराबर हो जाती है। उत्तम मोटी हरड़ प्रायः २ तोलेकी होती है, बहेड़ा प्रायः एक तोलेका होता है और आमला आधे तोले का होता है। इस तरह १ हरड़=२ तोलेके; २ बहेड़े=२ तोलेके; ४ आमले=२ तोलेके। मगर सबका समान वज़न लेनेसे "त्रिफला" दस्तावर, गरम और पेशाबकी थैलीमें गरमी करने वाला हो जाता है। अगर रोगीके रोगमें कफके अंश जियादा

हों अथवा उसे कब्ज़ रहता हो, तो इसी तरह त्रिफला लेना ठीक है। अगर रोगी का मिज़ाज गरम हो या उससे त्रिफला खाया न जाय, तो मात्रा से आधी मिश्री मिला देनी चाहिये। अथवा हरड़ १ भाग, बहेड़ा २ भाग और आमला तीन भाग लेना चाहिये। इस तरह बढ़ा-बढ़ाकर भाग लेनेसे त्रिफला गरमी नहीं करता। आज-कलके गरम-मिज़ाज वालोंके हक़में यह अच्छा प्रमाणित हुआ है। नेत्ररोग नाश करने के लिये भी त्रिफला इसी तरह बढ़ाकर लेना ठीक है।

त्रिफले की आयुर्वेदमें बड़ी तारीफ है। प्रमेह पर इसको देनेकी प्रायः नये पुराने सभी वैद्योंने राय दी है। वैद्यरत्नमें लिखा है—

> चूर्णं फलत्रिक भवं मधुनावलीढ़ं।
> हन्ति प्रमेहगदमाशु चिरप्रभूतम्॥

"त्रिफलेका चूर्ण" शहदमें मिलाकर लेने से पुराना प्रमेह शीघ्र ही नाश हो जाता है।

और भी कहा है—

> मधुना त्रिफलाचूर्णमथवाश्मजतुद्भवम्।
> लोहजं वा भयोत्थं वा लिहेत्मेह निवृत्तये॥

"त्रिफले का चूर्ण" शहदमें मिलाकर चाटनेसे प्रमेह नाश हो जाता है; "शिलाजीत" शहदके साथ चाटने से प्रमेह नाश हो जाता है; "लोह भस्म" शहद के साथ चाटने से प्रमेह नाश हो जाता है अथवा हरड़ का चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से प्रमेह नाश हो जाता है। इन चारों में से किसी भी नुसखे के सेवन करने से प्रमेह नाश हो जाता है। अगर त्रिफले का चूर्ण, शुद्ध शिलाजीत और शहद तीनों मिलाकर चाटे जायँ, तब तो कहना ही क्या? त्रिफलेके सम्बन्धमें "शार्ङ्गधर" में लिखा है—

> त्रिफलामेहशोथघ्नी नाशयेद्विषमज्वरान्।
> दीपनी श्लेष्मपित्तघ्नी कुष्ठहन्त्री रसायनी॥
> सर्पिर्मधुभ्यां संयुक्ता सेव नेत्रामयाञ्जयेत्॥

त्रिफला—प्रमेह, शोथ-सूजन और विषमज्वरोंको नाश करता है, भूख लगाता, कफ पित्तको नाश करता, कोढ़ को दूर करता और

रसायन है; यानी रोग नाश करके उम्र बढ़ाने वाला है। त्रिफलेको घी और शहद के साथ, लगातार कुछ दिन, सेवन करने से आँखों के सब रोग निश्चयही नाश हो जाते हैं।

नोट—घी और शहद साथ लेने हों, तो भूल कर भी बराबर बराबर न लेने चाहियें। अगर शहद ६ माशे लिया जाय, तो घी १ तोले लिया जाय।

मात्रा—त्रिफले को कूट कर कपड़-छन कर लो और किसी साफ शीशीमें भर कर रखदो। इसकी मात्रा ३ माशे से १ तोले तक है। जवान आदमी को १ तोले त्रिफलेका चूर्ण १ तोले शहदमें चटानेसे बहुत लाभ होते देखा है। कितनोंहीके प्रमेह नाश हो गये। सवेरे शाम, दोनों समय, चाटना चाहिये। त्रिफलेका चूर्ण फाँककर, कोरा जल पी लेने से भी लाभ होता है; पर दस पाँच दिन त्रिफला सेवनसे प्रमेह आराम नहीं हो जाता। रोगकी कमी-बेशीके अनुसार, एक मास दो मास और ज़ियादा-से-ज़ियादा ६ मास चाटना चाहिये। इसके चाटने से ६ मासमें घोर प्रमेह भी नाश हो जाता है, इसमें शक नहीं।

यह न समझना चाहिये, कि त्रिफला मामूली चीज़ है; इससे क्या होगा ? त्रिफला, रोग नाश करनेमें, दूसरा अमृत है। वैद्यक-शास्त्रमें लिखा है:—

मृता यस्त्रिफलायष्टि चूर्णं मधुघृतान्वितम्।
दिनान्ते लेढि नित्यं सरत्तौ चटकूवद् भवेत्॥

त्रिफलेका चूर्ण, शहत, घी और कान्तिसार—इन सबको मिलाकर, नित्य, रातके समय, सेवन करने से पुरुष उसी तरह, मैथुन कर सकता है; जिस तरह लाल चिड़िया मुनियाके साथ मैथुन करता है और थकता नहीं।

"शार्ङ्गधर" में लिखा है:—

क्षौद्रे वा त्रिफला क्वाथः पीतो मेदहरः स्मृतः
शीतो भूतं तथोष्णाम्बु मेदोहृत् क्षौद्रसंयुतम्॥

त्रिफलेका काढ़ा, शहदके साथ, पीनेसे मेदो वृद्धि या बेढङ्गी मुटाई नाश होती है; उसी तरह गरम पानीको, शीतल होने पर, शहदके साथ पीने से मेद-वृद्धि नाश होती है।

और भी कहा है—

फल त्रिकोद्‌भवं क्वाथं गोमूत्रेणैव पाययेत्
वातश्लेष्मकृतं हन्ति शोथं वृषण संभवम्

त्रिफलेका काढ़ा, गोमूत्रके साथ, पीनेसे बादी और कफसे पैदा हुई फोतोंकी सूजन दूर हो जाती है ।

नोट—त्रिफलेके काढ़ेमें शहद मिलाकर पीने से कामला रोग नाश हो जाता है । काढ़ेके लिये त्रिफला अढ़ाई तोले लेना चाहिये और उसे १ पाव जलमें औटाना चाहिये । पीछे छान कर, शीतल होने पर, उसमें तीन माशे शहत मिलाकर पी लेना चाहिए ।

(४) हल्दीके पिसे-छने चूर्णमें शहद और आमलेका स्वरस मिलाकर चाटने से, निश्चय हो, प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

नोट—हल्दी—वही हल्दी जिसे आप दाल सागमें डालते हैं—मामूली चीज़ नहीं, बड़ी गुणकारी है । यह कड़वी, तेज, रूखी और गर्म है । इससे चमड़े के सब रोग नाश हो जाते हैं । प्रमेह, पाण्डु-पीलिया और सूजन तथा फोड़े-फुन्सियों को भी यह नाश करती है । कहते हैं, हल्दी को पानीमें पीस कर सूजन पर लगानेसे सूजन नाश हो जाती है । कच्ची हल्दीको गुड़में मिलाकर खिलानेसे बालकोंके पेटके कीड़े मर जाते हैं । तेल या उबटनमें हल्दी मिलाकर शरीर पर मलने से शरीर का रङ्ग सुन्दर होता है । तेल में हल्दी डालकर मलने से चमड़े के रोग नष्ट हो जाते हैं । चूना और हल्दी मिलाकर और गरम करके लगानेसे पीड़ा और सूजन शान्त होती है । आयुर्वेद में, जैसा हमने ऊपर लिखा है, हल्दी के चूर्ण को कच्चे आमलों के स्वरसमें मिलाकर खानेसे प्रमेह का नाश होना लिखा है । हकीम लोग भी हल्दी को प्रमेह-नाशक कहते हैं । हल्दी से सड़े से सड़े घाव आराम हो जाते हैं । अगर आप को प्रमेह है, तो आप ऊपरके हल्दी वाले नुसखे को अवश्य सेवन करें; अवश्य लाभ होगा ।

प्रमेह नाश करने के लिए ' हल्दी" बड़ी ही उत्तम चीज है । किसी ग्रन्थमें लिखा है:—

सक्षौद्रं रजनी चूर्णं लेहनं निष्कद्वयं तथा ।
असाध्यं नाशयेन्मेहं विद्या वागीशको रसः ॥

चार माशे हल्दीके चूर्णमें "शहत" मिलाकर चाटने से असाध्य प्रमेह भी नाश हो जाता है । इसको विद्यावागीश रस कहते हैं ।

मात्रा—जवानके लिये आमलोंका स्वरस या चूर्ण एक तोले, हल्दी दो माशे और शहद एक तोले काफी होगा।

(५) गिलोय या गुर्च के स्वरस में "शहद" मिलाकर पीनेसे सब तरहके प्रमेह नाश होते हैं। कहा है:—

गुडूच्या स्वरसः पेयो मधुना सह मेहजितः॥

नोट—नीम पर चढ़ी ताजा गिलोय लाकर कुचल लो और कपड़े में रख कर रस निचोड़ लो। कूटते समय इसमें पानी मत मिलाना। गिलोय के १॥ तोले स्वरस में १ तोले शहद मिलाकर, २१ दिन, पीनेसे सब तरह के प्रमेह नाश हो जाते हैं। गिलोयके दो तोले स्वरस में १ माशे हल्दी का चूर्ण मिलाकर पीने से भी प्रमेह नाश होजाते हैं। गिलोय के दो तोले स्वरसमें ६ माशे शहद डाल कर पीना भी अच्छा है। इस योग से वातज और पित्तज प्रमेह निश्चय ही आराम होते हैं। परीक्षित है।

कहा है:—

पीत्वा सक्षौद्रममृतासंजयति मानवः।
प्रमेहं विंशति विधं मृगेन्द्र इव दन्तिनम्॥

शहद और गिलोयका स्वरस पीनेसे बीसों प्रमेह इस तरह नाश हो जाते हैं; जिस तरह सिंह हाथी को नष्ट कर देता है।

नोट—'शार्ङ्गधर' में लिखा है—अमृतास्वरसोहन्ति क्षौद्रयुक्तो हि कामलाम्। अर्थात् गुरुच का स्वरस शहद के साथ पीने से कामला—पीलिया नाश हो जाता है।

लोलिम्बराज महोदय भी कहते हैं—

समधुच्छिन्नास्वरसो नानामेहनिवारणः।
वदन्ति भिषजा सर्वे शरदिन्दुनिभानने॥

हे शरद् ऋतुके चन्द्रमाके समान मुँहवाली! गिलोय को कूट कर, उसके निचोड़े हुए रसमें शहद मिलाकर पीनेसे सब तरहके प्रमेह नाश हो जाते हैं—यह सभी वैद्यों की राय है।

नोट—प्रमेह पर यह योग भी आमलेके योगकी तरह ही रामबाण है। आमलों के चार तोले स्वरसमें ६ माशे शहद और १ माशे हल्दी मिलाकर दोनों समय पिलाने से समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं। पित्तज प्रमेहोंके नाश होने में तो सन्देह ही

नहीं। मगर गिलोय और आमले के स्वरस क्रम-से-क्रम ८० दिन तक पीने चाहियें । परीक्षित हैं ।

गिलोय मामूली चीज नहीं है । इससे बहुतसे रोग नाश होते हैं:—

(१) गिलोयके दश माशे रसमें १ माशे शहद और १ माशे सेंधानोन मिलाकर खरल करने और आँजने से तिमिर, आँखोंकी खुजली, काचविन्दु तथा सफेद और काले भागके सब रोग नाश हो जाते हैं ।

(२) गिलोयका काढ़ा छोटी पीपर एक या दो रत्ती मिलाकर पीने से कफसे हुआ जीर्णज्वर नाश हो जाता है, इसमें ज़रा भी शक नहीं ।

(३) गुडची घृतके सेवनसे वातरक्त और कोढ़ नाश हो जाते हैं । अगर गिलोय का घी बनाना हो, तो गिलोयको पीसकर लुगदी बनालो । फिर कड़ाहीमें लुगदी, घी और दूध डालकर पकालो और घीमात्र रहने पर उतारलो ।

सूचना—गुरुच घीके साथ बादीको, गुड़के साथ कब्ज़को, मिश्रीके साथ पित्तको और मधुके साथ कफको, अरण्डीके तेलके साथ वातरक्तको और सोंठके साथ आमवातको नष्ट करती है । ये अनुपान याद रखने चाहियें । जहाँ जैसा उचित हो, वहाँ वैसाही अनुपान देना चाहिये ।

(६) आमलों के १ तोले स्वरस में १ तोला शहद डालकर पीने से भी बीसों प्रकारके प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

नोट—आमलोंके १ तोले स्वरसमें १ तोले शहद और २ माशे हल्दी मिलाकर पीनेसे भी प्रमेह नाश हो जाते हैं । अगर ताजा आमले न मिलें, तो सूखे आमले लेकर पीस छान लो और एक तोले चूर्णमें १ तोले शहद डालकर चाट जाओ ।

वैद्यजीवन कर्त्ताने लिखा है—

स्फुरत्सुन्दरी दारमन्दारदामप्रकामभिरास्तनद्वन्द्व रम्ये ।
हरिद्रारजो मात्तिकाभ्यां विमिश्रः शिवायः कषायः प्रमेहापहारी ॥

हे प्रकाशमान और सुन्दर मन्दारके फूलों की माला से यथेच्छ मनोहर और रमणीय स्तनों वाली स्त्री ! आमलों के काढ़े में हल्दी और शहद मिलाकर पीनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

नोट—दो या अढ़ाई तोले आमलोंके काढ़े में १ तोला शहद और २ माशे हल्दी का चूर्ण, शीतल होने पर, मिलाकर पीना चाहिये । बहुत लिखना फिजूल है ; आमले के स्वरसमें शहद और हल्दी मिलाकर सेवन करने की नये पुराने सभी आचार्यों ने भूरि भूरि प्रशंसा की है और यह नुसखा है भी ऐसा ही । परीक्षित है

(७) दो माशे शुद्ध शिलाजीत को, एक तोले शहद में मिलाकर, २१ दिन, चाटनेसे सब प्रमेह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—शिलाजीत के शोधने की तरकीब और असली नकली की पहचान आगे लिखी है।

(८) त्रिफलेका चूर्ण और शुद्ध शिलाजीत को शहदमें मिलाकर सेवन करने से बीसों प्रमेह निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—त्रिफले का चूर्ण १ तोले, शुद्ध शिलाजीत २ माशे और शहद १ तोले,—इन को मिलाकर जवान आदमी चाट सकता है। अगर रोगी कम-उम्र या कमजोर हो, तो मात्रा घटा लेनी चाहिये।

(९) २ माशे शुद्ध शिलाजीत, ६ माशे शहदमें मिलाकर, चाटनेसे सब प्रमेह नाश हो जाते हैं।

शिलाजीतकी महिमा न पूछिये।

लिखा है—

सर्वानुपानैः सर्वत्र रोगेषु विनियोजिते।
जयत्यभ्यासतो नूनं तांस्तान् रोगान्न संशयः॥

विचार-पूर्व्वक, अलग-अलग अनुपानोंके साथ, शिलाजीत लेनेसे समस्त रोग नाश हो जाते हैं।

एलपिप्पली संयुक्तम् मासमात्रं तु भक्षयेत्।
मूत्रकृच्छ्रं मूत्ररोधं हन्ति मेहं तथा क्षयम्॥

छोटी इलायची और पीपलके चूर्णके साथ "शिलाजीत" सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र, मूत्रावरोध,—पेशाबका रुकना, प्रमेह और क्षयी रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—यह नुसखा भी परमोत्तम है। इलायची १ रत्ती, पीपर १ रत्ती और शिलाजीत २ माशे—तीनोंको मिलाकर सेवन करना चाहिये। इन चीजोंका वजन घटाया बढ़ाया भी जा सकता है। यह बात रोगी पर निर्भर है। अगर रोगी कमजोर हो, तो शिलाजीत १ माशे ही काफी होगा।

शिलाजीत, छोटी इलायची, शंखपुष्पी और मिश्री—सबको कूट-

पीसकर चूर्ण बनालो। इसमेंसे चार माशे चूर्ण, पानीके साथ, खाने सेभी प्रमेह चले जाते हैं।

नोट—सूरज की तपत से जब पहाड़ तपते हैं, तब उनमें से धातुओं का सार रूप गोंद-जैसा पतला पदार्थ निकलता है, उसे ही "शिलाजतु" या "शिलाजीत" कहते हैं। पर असली शिलाजीत बहुत कम हाथ आता है। बेचने वाले पहाड़ी बन्दरों का पाखाना बेचते हैं, जो रूप-रङ्गमें शिलाजीत-जैसाही होता है; पर वह कामका नहीं होता। इसलिये शिलाजीत खूब परीक्षा करके लेना चाहिये।

शिलाजीत परीक्षा।

शिलाजीत की परीक्षा इस तरह करनी चाहिये:—

(क) शिलाजीत में से ज़रा सा लेकर आगपर डालदो। अगर उसके आग पर डालने से धूआँ न उठे, तो उसे उत्तम समझो।

(ख) शिलाजीतको बिना धूएँ की आग पर रखो। अगर शिलाजीत अच्छा होगा, तो वह लिङ्गेन्द्रिय की तरह खड़ा हो जायगा।

(ग) ज़रासा शिलाजीत एक तिनके की नोकमें लगाकर पानी के भरे कटोरे में डालो। अगर उसके तारसे होकर, वह जलमें बैठ जाय, तो उसे अच्छा समझो।

(घ) शिलाजीत को नाकसे सूँघो; अगर उसमें गोमूत्र की सी बदबू आवे, वह रङ्गमें काला और पतले गोंद-जैसा हो तथा वज़न में हल्का और चिकना हो और उसमें बालू रेत आदि न हों; तो उसे उत्तम समझो।

शिलाजीत खरीदते समय चारों तरहसे परीक्षा करलो। एक परीक्षा से सन्तोष मत करलो। अगर शिलाजीत चारों परीक्षाओं में ठीक निकले, तो खरीदो; अन्यथा मत खरीदो।

शिलाजीत के गुण और लक्षण।

सभी तरहके शिलाजीत स्वाद में चरपरे, कड़वे, कषैले तथा

दस्तावर, कटुपाकी, उष्ण-वीर्य, रस रक्त आदि धातुओंको सुखाने वाले और मिले हुए कफ आदि दोषों को अपनी शक्तिसे हटाकर निकाल देने वाले होते हैं।

रस, उपरस. पारा, रत्न और लोहेमें जो गुण होते हैं, वे ही सब गुण शिलाजीत में होते हैं; क्योंकि शिलाजीत धातुओं का सार होता है, जो गरमी पाकर पहाड़ों पर बह आता है। शिलाजीत बुढ़ापे और मृत्युको जीतने वाला, वमन, कम्पवायु, बीसों प्रकार के प्रमेह, पथरी, शर्करा, रेगमसाना, सोज़ाक, कफक्षयी, श्वास, वातज बवासीर, पीलिया, मृगी, उन्माद-पागलपन, सूजन, कोढ़ और क्रमि रोग यानी पेटके कीड़ोंको नाश करनेवाला है। किसी-किसीने श्लीपद, फील-पाँव या हाथीपाँव और गुल्म नाशक भी लिखा है। किसीने विषम ज्वर नाशक भी लिखा है। इतने सब रोगों पर शिलाजीत ऐसा ही होगा, पर हम परीक्षा नहीं कर सके। प्रमेह प्रभृति दो चार रोगों पर इसका आश्चर्य फल देखा है। हमारी रायमें प्रमेह की यह अव्वल दर्जे की दवा है। मोटे शरीर को सुखाकर पतला करनेमें भी यह अव्वल दर्जे की दवा है। शास्त्रों में इसकी बड़ी तारीफ़ लिखी है। लिखा है, जो इसे चार सौ तोले तक खा लेता है, वह शतायु होता है; यानी १०० साल तक जीता है। मगर इतने शिला-जीतके खाने को, यदि दो माशे रोज़ भी खाया जाय, तो ६ साल आठ महीने लगें। पहले लोग आज कलके लोगों की तरह जल्द-बाज़ न होते थे। वे अपनी आरोग्यता और आयु-वृद्धि के लिये बरसों तक ऐसे पदार्थ खाया करते थे, इसीसे वे लोग हज़ार-हज़ार वर्ष तक जीते थे। इसमें शक नहीं; उस समय के मनुष्यों को ५ सेर शि-लाजीत खानेमें सात-सात साल न लगते थे। इतना शिलाजीत वह प्रायः १ सालमें ही पचा जाते थे, क्योंकि बली होते थे। इन दिनों अगर कोई उतना शिलाजीत खाले, तो लाभके बदले हानि उठावे। ख़ैर; अगर आपको प्रमेह हो, तो आप शुद्ध शिलाजीत बे-खटके सेवन

करें; पर शुद्ध करके और पथ्यके साथ; आपका प्रमेह-राक्षस से अवश्य पीछा छुट जायगा। वाग्भट्ट महोदय कह गये हैं—

> मधुमेहित्वमापन्नो भिषग्भिः परिवर्जितः।
> शिलाजतु तुलामद्यात् प्रमेहार्तः पुनर्नवः॥

वैद्यों का त्यागा हुआ—असाध्य समझा हुआ मधुमेही अगर मात्रा से ४०० तोले या ५ सेर शिलाजीत (६-७ या ४ सालमें) खाले; तो फिर उसका चोला नया हो जाय। इसमें कोई शक नहीं, कि असाध्य या वैद्यों के त्यागे हुए प्रमेह-रोगी के जीवन की आशा "शिलाजीत" पर ही है।

शिलाजीत शोधने की विधि।

शास्त्रमें लिखा है—(१) गायके दूध, (२) त्रिफले के काढ़े, और (३) भाँगरे के स्वरसमें भावना देने और सुखा लेने से शिलाजीत का मैल निकल जाता है—वह शुद्ध हो जाता है। एक दिन गाय के दूधमें भावना देकर—भिगो और मसलकर—सुखा दो, दूसरे दिन त्रिफले के काढ़ेमें भावना देकर सुखादो और तीसरे दिन भाँगरेके रसमें भावना देकर सुखा लो। इस तरह शोधा हुआ शिलाजीत गरम होता है।

सार वर्गकी औषधियों की भावना देने से भी शिलाजीत खाने योग्य हो जाता है और उन्हीं औषधियोंके काढ़ेके साथ सेवन भी किया जाता है।

शिलाजीत सेवन-विधि।

(क) वमन विरेचन आदि द्वारा शरीरको शुद्ध कर लेने या क़य और जुलाब से कोठा साफ करलेने के बाद, अगर शिलाजीत सेवन किया जाता है, तो ज़ियादा फ़ायदा करता है।

(ख) शिलाजीत को सवेरे ही, सूर्य निकलने के बाद, सार वर्ग की दवाओंके जलमें पीसकर अथवा शहद या दूध प्रभृति में मिलाकर लेना चाहिये ।

(ग) शिलाजीत और भिलावे सेवन करने वाले को एक समान पथ्य परहेज करने पड़ते हैं । सवेरे का खाया शिलाजीत पच जाने पर, जङ्गली जानवरों का मांस-रस—शोरवा खाना चाहिये या इसके साथ भात खाना चाहिये अथवा जौ की रोटी या जौ की बनी और कोई चीज़ खानी चाहिये । प्रमेहमें जौ अमृत है ।

---

(१०) शहद, पीपल और शिलाजीत में एक से ३ रत्ती तक "निश्चन्द्र अभ्रक भस्म" मिलाकर सेवन करने से बीसों तरह के प्रमेह निश्चय ही नाश हो जाते हैं । परीक्षित है । शिलाजीत की मात्रा १ माशे से दो माशे तक है । अपने बलाबलके अनुसार मात्रा तजवीज कर लेनी चाहिए ।

(११) एक या दो माशे शिलाजीतको, मिस्री-मिले दूधके साथ, खाने से बीसों प्रकारके प्रमेह नष्ट हो जाते हैं, इसमें शक नहीं ।

(१२) शुद्ध शिलाजीत, बङ्ग भस्म, छोटी इलायची के दाने और नीली झाँईका वंसलोचन,—इन चारोंको बराबर-बराबर लेकर, शहद के साथ खरल करके, रत्ती या दो दो रत्ती की गोलियाँ बनालो । सवेरे-शाम, अपने बलाबलके अनुसार, एक या दो गोली खाकर ऊपर से गायका दूध पीनेसे प्रमेह, बहुमूत्र—पेशाब का बहुत और बारम्बार होना, नाताक़ती और धातु-विकार निश्चय ही आराम हो जाते हैं ।

नोट—छोटी इलायची और वंसलोचन को महीन पीस कर, तब बङ्ग और शिलाजीत में मिलाना चाहिए । बङ्ग भस्म राँगे की भस्म को कहते हैं । प्रमेह नाश करने में जैसा शिलाजीत रामबाण है ; बङ्ग भी वैसी ही है ।

(१३) सेमल की छालका रस, शहद और हल्दीके चूर्णके साथ, खानेसे बीसों प्रमेह निश्चय ही आराम हो जाते हैं ।

नोट—सेमल का पेड़ बड़ा ऊँचा और पुराना होता है. इसको संस्कृत में "शाल्मलि" और बङ्गला में "शिमुल" कहते हैं। इस के वृक्षमें काँटे होते हैं, इससे इस पर चढ़ने में कठिनाई होती है। इसमें खूब सुर्ख फूल लगते हैं। चैतके महीने में फूलों को देखकर बड़ा आनन्द आता है। इस पेड़ की रूई गद्दे तकियों में भरी जाती और बड़ी ही मुलायम होती है।

(१४) सेमल की छाल के रसमें, शहद और हल्दी का चूर्ण मिलाकर—इस रस से "बङ्गभस्म" खाने; यानी अपने बलानुसार एक या दो रत्ती "बङ्गभस्म" शहद में मिला और चाटकर, ऊपर से शहद-हल्दीमिला सेमर का रस पीने से प्रमेह इस तरह भागते हैं, जिस तरह सिंहको देख कर हाथी भागते हैं *।

जवान आदमी को चाहिये, कि एक या दो रत्ती बंगभस्म ६ माशे शहद में मिलाकर चाट ले। ऊपर से दो तोले सेमल की छाल के स्वरस में १ तोले शहद और २ माशे हल्दी का चूर्ण मिलाकर पीजावे, ये सब चीज़ें कमो-वेश भी की जा सकती हैं।

नोट—सेमल की छालका का काढ़ा "क्षरा प्रमेह" में अत्युत्तम है।

(१५) हरड़ोंके पिसे-छने चूर्णको शहदमें मिलाकर, नित्य, खानेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं।

(१६) "वैद्य विनोद" में लिखा है—जो नित्य सवेरेही "पोहकरमूलका चूर्ण" उचित अनुपानके साथ सेवन करता है और रातको छोटी हरड़ोंका चूर्ण खाता है, उसके प्रमेह इस तरह दूर भागते हैं, जिस तरह शंकरके स्मरणसे पाप दूर भागते हैं। कहा है—:

प्रातः पिबेत्पुष्करमूलचूर्णं पथ्याच रात्रौ प्रतिघस्समति।
तस्य प्रमेहाः प्रलयं प्रयान्ति पापानि शम्भोः स्मरणादयथा॥

(१७) अपने बलाबल अनुसार दो से चार तोले तक तिल सवेरेही खानेसे प्रमेह और बहुमूत्र रोग नाश हो जाते हैं, यह बात "वैद्य-विनोद" में लिखी है। जैसे—

---

* शाल्मलित्वग्रसोपेतं सक्षौद्रं रजनीरजः।
वङ्गभस्म हरेन्महान्मेहान्पञ्चानन इव द्विपान्॥

पलं तिलानामशितम् प्रभाते निहन्ति मेहं बहुमूत्रतां च।

नोट—प्रमेह की नहीं कह सकते, पर सच होनेमें शक नहीं। हाँ, बहुमूत्र रोगमें तिलोंका सेवन निस्सन्देह रामबाण है। तिल और गुड़को मिलाकर खूब कूटना चाहिये और फिर उसी तिलकुटेको खाना चाहिये। पेशाबोंके बहुत होनेमें अवश्य लाभ होगा; यानी इससे पेशाब कम आयेंगे।

(१८) छोटी दूधीको छायामें सुखाकर, उसमें बराबरकी शक्कर या मिश्री मिला दो। उसमेंसे एक तोलेभर खाकर, ऊपरसे पाव भर गायका दूध पीलो। इस तरह लगातार करनेसे प्रमेह अवश्य नाश हो जाते हैं।

(१९) दारुहल्दी, मुलेहटी, त्रिफला और चीतेकी जड़की छाल—इन चारोंको मिलाकर दो या तीन तोले लेकर, काढ़ा बनाकर, निरन्तर कुछ दिन, पीनेसे प्रमेह निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

(२०) त्रिफला, दारुहल्दी, इन्द्रायण और नागरमोथा—इन चारोंके काढ़ेमें, सिलपर जलके साथ पीसी हुई "हल्दी की लुगदी और शहद" मिलाकर, रोज़, कुछ दिन, पीनेसे प्रमेह रोग निश्चय ही भाग जाते हैं।

नोट—"इन्द्रायण" के स्थानमें 'देवदारु" भी लेते हैं। त्रिफला, देवदारु, दारुहल्दी और नागरमोथेके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं। बड़ा अच्छा नुसखा है। इसमें "हल्दीका चूर्ण" मिलाना और भी अच्छा है।

(२१) जौ की पिट्ठी, एक मासतक, शहदके साथ खानेसे प्रमेह अवश्य नाश हो जाते हैं। कहा है—

भक्षयेन्मधुना मासं प्रमेही यवपिष्टकम्।
मेदोघ्ना बद्धमूत्राश्च समाः सर्वेषु धातुषु॥
यवास्तस्माद्विशिष्यन्ते प्रमेहेषु विशेषतः॥

जौ की रोटी या पिट्ठी १ या २ महीने खानेसे प्रमेहमें निश्चय ही लाभ होता है; क्योंकि जौ मेदको नाश करने वाला, मूत्र को रोकने वाला और सब धातुओंको समान करने वाला है; इसीसे प्रमेह रोगमें जौ विशेष हितकर है।

(२२) गायके खाये हुए जौओं को उसके गोबर में से चुन लो। इच्छा हो गोमूत्रकी भावना दे दो, इच्छा न हो न दो। उन्हें गाय के उदश्वित नामक माठेके साथ या नीमके रसके साथ अथवा मूँगके रसके साथ सेवन करो। अवश्य प्रमेह नाश होगा।

नोट—प्रमेहवालेके हकमें "जौ" बड़ीही उत्तम चीज है। परीक्षित है

(२३) शीशमके पत्ते २ तोले और काली मिर्च दो माशे—इन दोनोंको एक पाव जलमें पीस-छानकर पीनेसे प्रमेह, सोज़ाक और शरीरकी गरमी शान्त हो जाती है। खटाई मिठाईसे बचना चाहिये।

(२४) चिरमिटीके पत्तोंका एक या दो तोले रस अथवा कमती रस, गायके एक पाव दूधके साथ, पीनेसे प्रमेह अवश्य नाश हो जाते हैं।

नोट—सफेद चिरमिटीके रसमें मिश्री और सफेद जीरा मिलाकर पीनेसे मूत्र-कृच्छ्र रोग आराम हो जाता है। चिरमिटीकी जड़ दूधमें पकाकर और शक्कर मिलाकर खानेसे धातु का गिरना बन्द हो जाता और वीर्य बढ़ता है।

(२५) रेवन्दचीनी आठ तोले, मिश्री आठ तोले और सूखे सिंघाड़े आठ तोले लेकर, कूट-पीसकर छान लो। इसमें से नौ माशे चूर्ण, निराहार मुँह, भोजनसे पहले, पाव भर गायके दूधके साथ, खानेसे बहुत पुराना प्रमेह भी अवश्यही नष्ट हो जाता है।

(२६) महानीमकी पकी और कच्ची निबौलियाँ लाकर छायामें सुखाकर, पीस-कूट कर चूर्ण बना लो। इसमें से १ तोला चूर्ण "चाँवलके धोवन" के साथ खानेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं।

"वैद्य विनोद" में लिखा है—

महानिम्बस्य वीजानि षट च निष्काः छपेषितः।
पलं तन्दुलतोयस्य घृतंनिष्क द्वयं तथा॥
एकीकृत्य पिबेत्सर्वं हन्ति मेहं पुरातनम्॥

दो तोले महानीमके वीजोंको चार तोले चाँवलोंके धोवनमें

पीसकर और उसमें दो तोले "घी" डालकर पीनेसे सब तरहके पुराने प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।

नोट—इस तरह आज़माने का मौक़ा तो हमें नहीं मिला। उस तरह तो मुफीद है ही; कदाचित इस तरह उसकी अपेक्षा अधिक लाभप्रद हो।

(२७) बबूलकी नरम-नरम कोंपलें, एक तोले लाकर, सिलपर पीस लो और बराबरकी पिसी मिश्री मिला दो। इसको खाकर पानी पीनेसे, २१ दिनमें और कभी-कभी जल्दी ही, सब प्रमेह नाश हो जाते हैं। यह दवा आज़मूदा है; कभी फेल नहीं होती—अपना चमत्कार शीघ्रही दिखाती है। इससे स्वप्नदोषऔर धातुगिरना प्रभृति सभी रोग नाश होते हैं।

नोट—अगर बबूलकी हरी पत्तियाँ न मिलें, तो सूखी पत्ती आधी लेनी चाहिएँ। मात्रा ४ माशे की है।

(२८) बबूलकी फलियाँ, जिनमें बीज न आये हों, लाकर छायामें सुखाओ और कूट पीसकर, मिश्री मिलाकर, खाओ; प्रमेह अवश्य भाग जायगा। फली और पत्ती समान लाभ दिखाती हैं। बबूलके फूल भी प्रमेहको नाश करते हैं।

नोट—फलियों का चूर्ण ६ माशे लेना चाहिये। अगर इस नुसखे पर १ पाव गायका दूध पिया जाय, तो और भी अच्छा। बराबरकी मिश्री चूर्ण में मिला ली जाय अथवा दूधमें डाल दी जाय तो उत्तम हो। आधापानी मिला दूध पीना भी अच्छा है।

(२९) पलाश यानी ढाकके फूल एक तोलेमें, छै माशे मिश्री मिलाकर, २१ या ३१ दिन, खाने और ऊपरसे शीतल जल पीने या शीतल जलमें, भाँगकी तरह, फूलोंको पीस-छानकर पीनेसे बीसों प्रमेह नाश हो जाते हैं।

(३०) सफेद सेमलके कन्दके बारीक-बारीक टुकड़े करके सुखालो और पीछे कूटकर चूर्ण बना लो। रोज़, सवेरेही, इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, १ तोले घी, ६ माशे मिश्री और ३ रत्ती जायफलके चूर्ण में

मिलाकर खानेसे प्रमेह नाश हो जाते और बल-वीर्य बढ़ता है। परीक्षित है।

नोट—अगर सेमलका कन्द न मिले, तो सेमल की छालका चूर्णही सेवन करना चाहिये।

(३१) साफ पत्थर पर ज़रा सा पानी डालकर "निर्मली" को चन्दनकी तरह घिस लो। उसके २ माशे घिसे हुए रसमें ६ रत्ती कालीमिर्च मिलाकर चाटनेसे समस्त धातुरोग नष्ट हो जाते हैं। बड़ी उत्तम चीज़ है। अनेक बार परीक्षा की है।

(३२) दूधमें तालमखाना पकाकर खानेसे प्रमेह रोग जाता रहता है।

नोट—तालमखाने का चूर्ण मिश्री मिलाकर खाने और ऊपरसे "धारोष्ण दूध" पीनेसे प्रमेहमें लाभ होता है। तालमखाने, मूसली और गोखरूके चूर्ण को खाकर, मिश्री मिला धारोष्ण दूध पीनेसे धातु रोगमें बड़ा उपकार होता है। परीक्षित है।

(३३) केलेके पेड़के भीतरी भागको छायामें सुखाकर, पीस-कूट कर चूर्ण बना लो। इसमें से ६ माशे या १ तोले चूर्ण मिश्री मिला कर खाने और ऊपरसे जल पीनेसे प्रमेह आराम हो जाता है।

नोट—एक पके केले में "६ माशे घी" मिलाकर सवेरे शाम खानेसे चन्द रोजमें ही प्रमेह, प्रदर और धातु-विकार नाश हो जाते हैं। अगर किसीको सर्दी जान पड़े, तो चार बूँद "शहद" भी मिलाले। केला प्रमेह नाशक है।

(३४) खैर वृक्षके अंकुर ४ तोले भर और सफेद ज़ीरा १ तोले गायके दूधमें पीस-छान और मिश्री मिलाकर, सवेरे-शाम पीनेसे प्रमेह नाश हो जाता है तथा मूत्रकृच्छ्र रोग भी जाता रहता है।

नोट—खैर के वृक्ष वनमें बड़े बड़े होते हैं। इसी की लकड़ी से खैरसार और कत्था बनता है।

(३५) आध पाव साफ गेहूँ रातको पानीमें भिगोदेने और सवेरे ही सिलपर पीस, मिश्री मिला, कपड़े में छानकर पीने से प्रमेहमें

आश्चर्य चमत्कार दीखता है। कमसे कम ७ दिन तो देखो। परीक्षित है।

(३६) सत्यानाशीके पत्तोंके दो तोले रसमें दो तोले घी मिला कर, पाँच दिनतक, दिनमें एक बार सेवन करने से प्रमेह अवश्य आराम हो जाता है।

(३७) कुड़े की छाल, विजयसार, दारुहल्दी, नागरमोथा और त्रिफला—इनका काढ़ा पीने से सब तरह के प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।

नोट—विजयसार को बँगला में "पियाशाल" कहते हैं। यह रसायन है; प्रमेह, गुदा के रोग, कफ पित्त और खून-विकार आदि नाशक है। इसकी मात्रा २ माशे की है।

(३८) पाँच तोले बिनौलों एक पाव जलमें भिगोदो। सवेरे ही उन्हें मलकर पानीको छानलो; बिनौलोंको फेंक दो और छने हुए पानीको कड़ाहीमें चढ़ाकर, उसमें तीन तोले मिश्री डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब शहद-जैसी चाशनी हो जाय, उतार लो और शीतल करके चाट जाओ। हमने देखा है, इस नुसखेके २१ दिन सेवन करने से समस्त प्रमेह आराम हो जाते हैं। खासकर वह प्रमेह, जिसमें शहद या तेल सा पेशाब होता है, जिस पर चींटियाँ और मक्खियाँ लगती हैं तथा जिसमें प्यास बहुत लगती और पेशाब बहुत होते हैं, इस उपायसे अवश्य ही आराम हो जाता है।

(३९) सेमल की सूखी मूसली २ माशे को कूट-पीस कर और उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर खाने और ऊपरसे गायका धारोष्ण दूध पीनेसे प्रमेह नाश होकर बल-वीर्य की वृद्धि होती है। परीक्षित है।

(४०) चार माशे हल्दीके चूर्णमें "शहद" मिलाकर चाटने से असाध्य प्रमेह भी नाश हो जाता है। इसको "विद्यावागीश रस" कहते हैं।

नोट—कोई आश्चर्य की बात नहीं। हल्दी, आमले, त्रिफला, गिलोय, शिलाजीत, सेमल की छाल या मूसली और बङ्गभस्म ये सब प्रमेह की उत्कृष्ट दवाएँ हैं।

(४१) मुलेठी १॥ तोले, गुलनार ३ तोले, काहूके बीज ४॥ तोले और सम्हालू के बीज ५ तोले लेकर पीस-कूटकर छानलो। इसमें से ६ या ८ माशे चूर्ण, सवेरे ही, कोरे कलेजे, भोजनसे पहले, फाँककर, ऊपर से जल पीनेसे सब तरह के प्रमेह या धातुरोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। कमसे कम २—३ हफ़्ते सेवन करना ज़रूरी है।

(४२) खैर, खाँड़, देवदारू, हल्दी और नागरमोथेका चूर्ण एक तोले या ६ माशे रोज़ सेवन करने से समस्त प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।

नोट—इन सबको बराबर बराबर लाकर पीस-छानकर चूर्ण बनालो।

(४३) लौंग, चितक, सफ़ेद चन्दन, नागरमोथा, खस, छोटी इलायची, काली अगर, बंसलोचन, असगन्ध, शतावर, गोखरू, जायफल, गिलोय, निशोथ, तगर, नागकेशर और कमल गट्टे की गिरी (हरी पत्ती निकाल कर) इन सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस छानलो और सब चूर्णमें बराबर कीमिश्री मिला दो और रख दो। इसकी मात्रा ६ माशे से लेकर एक तोले तक है। सवेरे ही एक मात्रा खाकर, ऊपरसे जल पीने से बीसों प्रमेह नाश हो जाते हैं। अव्वल दर्जे की दवा है।

(४४) शतावरको पीस कूटकर शतावरके ही रसमें २१ भावना दो और फिर सुखालो। सूखने पर बराबर की पिसी मिश्री मिलाकर रख दो। इसकी खूराक चारसे छै माशे तक है। सवेरे शाम एक-एक मात्रा खाकर, ऊपर से गरम दूध पीने से पेशाब के रोग, धातुरोग, प्रमेह, बवासीर, दस्तकी कब्जियत प्रभृति रोग निश्चय ही शान्त हो जाते हैं।

(४५) केवड़े की जड़ को पानीमें उबाल कर दो तोले रस नि-

काल लो । पीछे उसमें दो तोले शक्कर मिला सेवन करो। इस नु-सखे से प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

(४६) कांडोल की छालमें पानी डालकर पीस लो और रस निकाल लो। इसके एक या दो तोले रसमें मिश्री मिलाकर पीओ। इससे प्रमेह अवश्य ही नाश हो जाते हैं ।

(४७) कवाबचीनी का चूर्ण शक्कर मिलाकर या मिश्री मिला-कर छै छै माशे की मात्रा से दिनमें चार छै बार फाँक कर, ऊपर से पानी पीने से प्रमेह, खास कर छहों पित्तज प्रमेह, अवश्यही नाश हो जाते हैं। माञ्जिष्ठ या रक्त प्रमेह में तो यह नुसखा बड़ा ही शान्ति-दायक है। अगर सभी प्रमेहों में इसको कुछ दिन सेवन कराया जाय और पीछे अन्य दवा दी जाय, तो जल्दी लाभ हो।

(४८) बड़ी इन्द्रायण की जड़, त्रिफला और हल्दी—इनको बराबर-बराबर आठ-आठ माशे लेकर, काढ़ा बनाकर और शहद मि-लाकर पीनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं।

नोट—इन दवाओं का निकाढ़ा या हिम भी दिया जाता है। शहद ३ माशे काढ़ा शीतल होने पर मिलाना चाहिए।

(४९) ग्वारपाठे या घीग्वार का गूदा आध सेर निकालो और उसे हाथोंसे खूब मथो। फिर क़लईदार कड़ाईमें गायका आध सेर घी डालकर गरम करो। घी कलमलाते ही उसमें ग्वारपाठेका गूदा डाल दो और २०।२५ मिनट तक मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। इसके बाद उसी कड़ाहीमें गेहूँ की मैदा १ पाव और चीनी आध सेर भी डालदो और पकाओ। जब लड्डू बनाने लायक़ हो जाय, उतार कर आधी-आधी छटाँकके लड्डू बनालो। सवेरे ही, भोजन से पहले, अपने बलाबल अनुसार एक या दो लड्डू खाकर ऊपरसे गायका दूध पीओ। यह नुसखा परीक्षित है। इसके १५ दिन सेवन करने से प्रमेह रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। अगर यह नुसखा ३१ या ४० दिन सेवन किया जाय, तब तो क्या कहना ? इसके सेवन से

महा दुर्बल भी बलवान और मोटा-ताज़ा हो जाता है ; क्योंकि इसके सेवन करनेसे मांस और वीर्य खूब जल्दी बढ़ते हैं। भूख भी खूबही लगती है।

नोट—अगर ग्वारपाठेके रसमें पानी न मिलाया जाय और भभकेसे अर्क निकाल लिया जाय, तो और भी सुभीता हो। इस अर्ककी मात्रा एक से दो तोले तक है। इसअर्क में दूध या मिश्री अथवा शहद मिलाकर पीनेसे भी प्रमेहमें बड़ा उपकार होता है। कईबार परीक्षा की है। पहले भूख बेतहाशा बढ़ती है।

(५०) गिलोय, आमले और गोखरू,—इन तीनोंको आध-आध पाव लेकर खूब कूट पीसकर छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, सवेरे ही, ६ माशे घी और ३ माशे शहदमें मिलाकर कुछ दिन खानेसे प्रमेह नाश होकर बेइन्तहा बलवीर्य बढ़ता है। परीक्षित है।

(५१) मुलेठी, गिलोय, आमले, हरड़, बहेड़ा, सफेद मूसली, स्याह मूसली, बिदारीकन्द, नागकेशर और शतावर—इन दसोंको दो दो तोले लाकर पीस-छानकर रखलो। इसमें से छै छै माशे चूर्ण, सवेरे ही, ६ माशे घी और ३ माशे शहदके साथ चाटनेसे, एक मासमें, सब प्रमेह नाश होकर बे-अन्दाज़ बलवीर्य बढ़ता है। अव्वल दर्जेकी दवा है। परीक्षित है।

(५२) कौंचके बीज, बरियाराकी जड़, शतावर, गोखरू, ककही की जड़ और तालमखाने—इन छहोंको एक-एक छटाँक लाकर, कूट-पीसकर छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, सवेरेही गायके पाव भर दूधके साथ, लेनेसे प्रमेह और धातुरोग निश्चयही नष्ट हो जाते हैं।

नोट (१)—ककही, ककहिया, कँघी और कंगही, एक ही दवा के नाम हैं। संस्कृत में अतिबला कहते हैं। इसको दूध और मिश्री के साथ पीने से प्रमेह अवश्य नाश हो जाता है।

नोट(२)—बरियारा को संस्कृत में बला और खिरेंटी कहते हैं। हिन्दी में बरियारा, खिरेंटी और बीजबन्द कहते हैं। इसकी जड़की छालके चूर्ण को, दूध और मिश्रीके साथ, खानेसे मूत्रातिसार निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है। बरियारा

की जड़ बड़ी वीर्यवर्द्धक और पुष्टिकर है। यह वात पित्त जीतनेवाली और रुके हुए कफ को शोधनेवाली है।

(५३) खस-खसके बीज, गोखरू, दालचीनी, भुना हुआ धनिया, भुने हुए छिले चने और सालम मिश्री—इन सबको दो दो तोले लेकर पीस छान लो। शेषमें, सारे चूर्णके वज़नके बराबर मिश्री मिला दो। इसकी मात्रा ६ से ८ माशे तक है। एक मात्रा सवेरे ही खाकर, ऊपरसे गायका दूध पीनेसे समस्त धातुरोग नष्ट हो जाते हैं। १ मास सेवन करना चाहिये।

(५४) शंखाहूली १ छटाँक, छोटी इलायचीके दाने १ छटाँक, शुद्ध शिलाजीत १ छटाँक, तवाखीर आध पाव और मिश्री आधपाव, इन सबको कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्ण की मात्रा ६ से ८ माशे तक है। इसे फाँककर, ऊपरसे गायका कच्चा—धारोष्ण दूध या बासी जल पीनेसे बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—तवाखीर को संस्कृत में तवक्षीर और पयःक्षीर आदि कहते हैं। हिन्दी में तवाखीर, फारसी में तवाशीर और अङ्गरेजी में अरारूट कहते हैं। यह प्रमेह, पाण्डु, मूत्रकृच्छ, मूत्राश्मरी आदि नाशक है। यह सिंघाड़े के आटे, वनगाय के दूध और जौ प्रभति से बनती है तथा जौ की और वन गाय के दूध की उत्तम होती है।

शङ्खाहूली के शङ्खपुष्पी, कोडिल्ला आदि कई नाम हैं। इसके फूल बहुत छोटे छोटे और शङ्ख-जैसे होते हैं। इसकी मात्रा ६ रत्ती की है।

(५५) कालीमिर्च, लौंग, चिरौंजी, छुहारे, बादाम, लालचन्दन, छोटी इलायची, तज, तेजपात, पीपर, सफेद ज़ीरा, स्याह ज़ीरा, धनिया, सोंठ, पीपरामूल, नागरमोथा, कौंचके बीजोंकी गिरी, शतावर, सफेद मूसली, स्याहमूसली, तवाखीर और कमलगट्टेकी गिरी, (हरीपत्ती निकाल कर)—इन सबको दो दो तोले लेकर कूट-पीसकर छान लो। इसके बाद इस चूर्णमें एक सेर मिश्री पीसकर मिला दो। इस चूर्णकी मात्रा ८ माशेसे एक तोले तक है। सवेरेही एक मात्रा खाकर, गायका धारोष्ण दूध पीनेसे सारे प्रमेह नष्ट होकर बलवीर्य बढ़ता है। बड़ा अच्छा नुसखा है। परीक्षित है।

(५६) बबूलकी बिना बीजोंकी छायामें सुखाई फली १ तोले, तालमखाना ६ माशे, बीजबन्द ३ माशे और मिश्री ३॥ तोले—इन सबको पीस-छानकर चूर्ण बनालो । इसमें से ६ माशे चूर्ण, सवेरेही, फाँककर ऊपरसे गायका एक पाव दूध पीनेसे प्रमेह नष्ट हो जाता, और धातु गिरना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

(५७) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा और शोधी हुई गूगल,—इन सबको कूट-पीसकर, खरलमें डालो और ऊपरसे शहद और गोखरूका काढ़ा डाल-डालकर खूब घोटो, जब मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंके सवेरे-शाम खानेसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी और प्रदर रोग नष्ट-हो जाते हैं । अव्वल दर्जेका नुसख़ा है ।

नोट—गूगल शोधकर लेना । गूगल गिलोय के स्वरस में मिलाकर धूपमें सुखा लेने से शुद्ध हो जाती है ; अथवा गिलोय और त्रिफले के काढ़े में गूगल के टुकड़े करके पका लेने से गूगल शुद्ध और मुलायम हो जाती है । गूगल के सम्बन्ध में और भी इसी भाग में आगे लिखा है । जो गूगल आग में डालने से जल जाय, गरमी में रखने से पिघल जाय, गरम जल में डालने से पानी-जैसी हो जाय—वही गूगल दवा के काम की होती है । गूगल एक पेड़ का गोंद है । गरमी के मौसम में सूरज की तेजी से निकलती है । मात्रा २ माशे की है । महिषाक्ष और हिरण्याक्ष दो तरह की गूगल होती है । माहिषाक्ष भौंरे और अँजन के रङ्ग की और हिरण्याक्ष सोने क रङ्ग की होती है । हिरण्याक्ष मनुष्यों के लिए अच्छी है । महिषाक्ष भी कभी-कभी काम में आती है ।

(५८) सोंठ, गोलमिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा और आमला, इन सब को बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान लो । फिर चूर्णके बराबर ही शुद्ध गूगल भी मिला दो और खरलमें डालकर घोटो । ऊपरसे गोखुरूका काढ़ा डालते जाओ । जब मसाला गोलियाँ बनाने योग्य हो जाय, गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंके सेवन करनेसे प्रमेह, वातरोग, वायुसे खून बिगड़ना, मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं ।

(५९) सालम मिश्री, शीतल चीनी, दालचीनी, रूमी मस्तगी,

मीठा सोरंजन और बोजीदान—ये सब छै छै माशे और मिस्री १ तोले लेकर सबको पीस-छानकर चूर्ण बनालो। इसकी मात्रा ३ से ८ माशे तक है। अनुपान बकरीका दूध है। इसके २१ दिनतक खानेसे प्रमेह आदि धातुरोग नष्ट होकर, खून और वीर्य बढ़ते एवं रुकावट होती है। अव्वल दर्जेकी आज़मूदा दवा है। इसको सेवन करते समय तेल, लालमिर्च, गुड़, खटाई और दहीसे परहेज़ रखना चाहिये।

(६०) हरड़का छिलका, बहेड़ेका बकला, गुठली निकाले आमले, हल्दी, बबूलके फूल और छोटी दूधी, इन छहोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूटकर छानलो। इसमें चूर्णके वज़नके बराबर मिस्री मिलाकर रखदो। इसकी मात्रा ६ माशे से एक तोले तक है। अनुपान गायका पावभर दूध। इसके सेवनसे दस्त साफ होता, भूख बढ़ती और प्रमेह रोग नष्ट होता है। प्रथम श्रेणीकी दवा है।

नोट—दूधी तीन तरह की होती हैं। सब में दूध निकलता है। छोटी और बड़ी दूधी मशहूर हैं। इसका सर्वांग दवा के काम आता है। मात्रा २ माशे की है। यह वीर्य बढ़ानेवाली, पेशाब लानेवाली एवं वात, कफ और कीड़े नाश करनेवाली है।

(६१) सिरसके बीज, ढाकके बीज और मिस्री,—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो। मात्रा ८ माशेसे १ तोले तक। अनुपान गायका दूध। इसके रोज़ खानेसे प्रमेह नाश होकर धातु गाढ़ी होती है। बड़ी अच्छी ग़रीबी दवा है। परीक्षित है।

(६२) हल्दी, शहद, खैर और शीशेकी भस्म—इन चारोंको उचित मात्रा और अनुपानसे सेवन करनेसे निश्चयही प्रमेह चला जाता है। परीक्षित है।

नोट—हल्दी २ माशे, खैर २ माशे, शीशे की भस्म १ या २ रत्ती, इनको एक तोले शहद में मिलाकर चाटो और ऊपर से धारोष्ण दूध एक पाव पीओ।

(६३) निश्चन्द्र अभ्रक भस्म, त्रिफला और हल्दीको शहदमें

मिलाकर चाटनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं, इसमें ज़रा भी शक नहीं ।
"वैद्य रत्न" में लिखा भी है—

निश्चन्द्रमाभ्रकं भस्म सवरारजनीरजः ।
मधुनालीढमचिरात्प्रमेहान्विनिवृंतति ।

नोट—इस नुसखेके उत्तम होनेमें जरा भी शक नहीं । अभ्रकभस्म १ से ४ रत्ती तक, त्रिफला ३ माशे से १ तोले तक, हल्दी २ से ४ माशेतक और शहद १ तोले तक दे सकते हैं । रोगीको देखकर मात्रा तजवीज करनी चाहिये ।

(६४) अभ्रक भस्म एक से चार रत्ती तक, एक माशे पीपर और ६ माशे शहद में मिलाकर चाटने और ऊपरसे दूध पीनेसे, प्रमेह, श्वास, विष-रोग कोढ़, वायु, पित्तकफ, कफक्षय, क्षतक्षय, संग्रहणी, पीलिया और भ्रम ये सब नाश होते हैं । परीक्षित है ।

(६६) वायबिडंग, सोंठ, गोलमिर्च और पीपर, इनको बराबर-बराबर ले पीस-छान लो । इसमेंसे बलाबल अनुसार ३ माशेसे ६ माशे तक चूर्ण लेकर, उसमें एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म मिलाकर अन्दाज़से शहद भी मिला लो और चाट जाओ । इस नुसखेसे क्षय, पाण्डुरोग, ग्रहणी, शूल, आम, कोढ़, श्वास, प्रमेह, अरुचि, खाँसी, मन्दाग्नि और समस्त उदर रोग—पेटके रोग नाश होकर भूख बढ़ती है । परीक्षित है ।

(६५) छोटी इलायची, गोखरू और भुइँ आमला—इनको बराबर-बराबर ले पीस-छानलो । १ से ४ माशे तक इस चूर्णमें, अभ्रक भस्म एक या २ रत्ती मिलाकर खाने और ऊपरसे मिश्री-मिला गायका दूध पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और प्रमेह निश्चयही नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—भुइँ आमले को भुइ आँवरा या भूम्यामलकी कहते हैं । दवा के काम में इसके फल लेते हैं । मात्रा २ माशे की है ।

(६६) गिलोय और मिश्री के ६ माशे चूर्ण में १ या २ रत्ती अभ्रक भस्म मिलाकर खाने और दूध पीनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है ।

नोट—कफके रोगोंमें अभ्रकभस्मको कायफल, पीपल और मधुके साथ देना अच्छा है। पित्तके रोगोंमें गायके दूध और चीनीके साथ देना हित है। धातु-पातमें त्रिफलेके चूर्णके साथ, स्तम्भनके लिए भाँगके साथ और धातु बढ़ानेको लौंग और शहदके साथ अभ्रक भस्म सेवन करनी चाहिए।

(६७) दो रत्ती वंग भस्म और ४ रत्ती इलायचीका चूर्ण—इन दोनों को तोले भर या कम शहदमें मिलाकर चाटने और ऊपरसे "हल्दी का चूर्ण मिला आमलोंका काढ़ा" पीनेसे घोर प्रमेह भी नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—पहले बङ्गभस्म और इलायची के चूर्ण को शहत में मिलाकर चाट जाना चाहिये। तीन तोले आमलोंका काढ़ा बनाकर और उसमें २ माशे हल्दी मिलाकर ऊपरसे पी जाना चाहिये। अगर रोगी बलवान हो, तो चार पाँच तोले आमलोंके काढ़े मे आधा तोले हल्दीका चूर्ण भी मिला सकते हैं।

(६८) एक या दो रत्ती वंग भस्म तुलसीके पत्तोंके साथ अथवा शहद और मिस्रीके साथ खानेसे प्रमेह नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—ताक़तके लिए वंगभस्म दूध या जायफलके साथ लेनी चाहिये। स्तम्भन के लिए वंगभस्म पानमें या भाँगमें अथवा कस्तूरीमें लेनी चाहिये। शरीर-पुष्टिके लिये तुलसीके पत्तोंके रस में लेनी चाहिये। अगर लिंग बढ़ाना हो; तो लौंग, समन्दरफल और पानोंके रसमें वंगभस्म पीस कर, लिंग पर लेप करना चाहिये।

सूचना—वंगभस्म, शीशाभस्म और अभ्रकभस्म प्रभृति बनाने की विधि आगे लिखी हैं।

(६९) बेलकी जड़ और गोखरू—दोनों को समान-समान लेकर, पीस-कूट कर छान लो। इसमें से १ तोले चूर्ण गरम पानीमें भिगोदो। फिर, इसमें ज़रासी मिस्री मिलाकर रोज़ पीओ। इस नुसख़े से नया प्रमेह शीघ्र ही चला जाता है। परीक्षित है।

(७०) बड़-वृक्षके फल लाकर छाया में सुखा लो। सूख जाने पर कूट-पीस कर कपड़-छन करलो। जितना यह चूर्ण हो, उतनी ही बढ़िया मिस्री पीस कर मिलादो और एक अमृतबान या बोतल

में रख दो। इसमें से नौ नौ माशे चूर्ण, सवेरे शाम, फाँक कर ऊपर से गायका दूध पीने से प्रमेह रोग नाश होकर, वीर्य पुष्ट और बलवान होता है। परीक्षित है।

(७१) बिदारीकन्द चार तोले; सेमल की नयी मूसली चार तोले, गोखरू दो तोले और कमल गट्टे की गिरी (हरी पत्ती निकाल कर) दो तोले,—सबको लाकर, कूट-पीस कर, कपड़-छन कर लो और जितना वज़न इस चूर्णका हो, उतनी ही मिस्री पीसकर इसमें मिला दो और रख दो। इसमें से एक तोले चूर्ण सवेरे और एक तोले शाम को फाँक कर ऊपर से गायका दूध पीने से प्रमेह नाश होकर धातु गिरना और स्वप्न-दोष होना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

पं। (७२) आमले चार तोले, आमाहल्दी ४ तोले और मिस्री ४ तोले—इन तीनों को मिलाकर और छानकर रख दो। इसमें से ६ माशे चूर्ण २१ दिन खानेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७३) तुख़्मरिहाँ ५ तोले ३ माशे, अकरकरा तीन तोले ६ माशे और मिस्री ८ तोले नौ माशे—इन तीनोंको पीस कूटकर छान लो और बासन में रखदो। इसमेंसे १० माशे चूर्ण लेकर, उसमें १ रत्ती वङ्गभस्म अथवा मूँगे की भस्म मिला लिया करो और इस चूर्णको फाँक कर, अधौटा गरम दूध मिस्री मिलाकर उपरसे पी लिया करो। इस नुसखेके,सुबह-शाम, सेवन करने से, १ मासमें, प्रमेह नाश हो जाता और बेहन्तहा बलवीर्य्य बढ़कर शरीर तैयार हो जाता है। लाल मिर्च, खटाई, मिठाई, गुड़, तेल, दही और स्त्री-प्रसंङ्ग से परहेज रखना चाहिये। परीक्षित है।

(७४) आध पाव त्रिफला और आध पाव गोखरू लाकर पीस कूटकर छान लो। इस चूर्ण में से ६ माशे से १ तोले तक चूर्ण ३ माशेसे एक तोले तक शहद में मिलाकर चाटने से पेशाब की जलन समेत लाल पीले और सफेद प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७५) प्रमेह रोगी अगर चूहेकी तीन चार लेंड़ी दूधके साथ कुछ दिन सेवन करे, तो प्रमेह से छुटकारा पा जाय।

(७६) भुनी हुई अलसी १ तोले और जेठी मधु या मुलेठी १ तोले, इन दोनोंका काढ़ा कुछ दिन तक सवेरे-शाम पीनेसे प्रमेह नाशहो जाता है। परीक्षित है।

(७७) पारेके योगसे बनी हुई वङ्ग भस्म, रोज़ सवेरे, एक चाँवल भर, मलाईके साथ खानेसे प्रमेह समूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(७८) फिटकरी को आग पर फुलाकर रख लो। उसमें से २ माशे फिटकरी को एक चीनीके प्याले में रखकर, ऊपर से पानी भर दो और घोल दो। फिर इस प्याले में पेशाब करो। जब पेशाब की हाजत हो, तभी यही काम करो। ऐसा करने से प्रायः २।३ सप्ताह में प्रमेह चला जाता है। अगर किसी खाने की दवाके साथ यह नुसखा काममें लाया जाय, तो औरभी उत्तम हो। परीक्षित है।

(७९) गिलोयका स्वरस २ तोले, शहद ६ माशे, हल्दी का चूर्ण ६ रत्ती और सफेद चन्दन का बुरादा ३ रत्ती,—इन सबको मिलाकर, सवेरे-शाम सेवन करनेसे प्रमेह रोग मय जलन के नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(८०) त्रिफलेको पीसकर पानीमें घोलदो और उसी पानीमें "चने" भिगोदो। उन चनोंको रोज़ सवेरे खा जाओ। आपका प्रमेह आराम हो जायगा; पर कमसे कम २१ दिन ऐसा करो।

(८१) त्रिफला और त्रिकुटा लाकर पीस-कूटकर छानलो। इसमें से ६ माशे चूर्ण, ६ माशे शहद में मिलाकर चाटने से अथवा जलमें घोल कर पीनेसे प्रमेह आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८२) तोले या दो तोले आमलोंका चूर्ण, शहदमें मिलाकर, २।३ महीने, चाटने से प्रमेह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(८३) एक तोले सौंफ को, जलके साथ, भाँग की तरह पीसकर,

एक मिट्टी या पत्थरके बर्तन पर कपड़ा रखकर, उसीमें सौंफकी लुगदी रखदो और ऊपरसे आध सेर या डेढ़ पाव जल डाल कर छानलो। इस "सौंफ-जल" को सवेरे शाम पीनेसे प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।

(८४) नीम की भीतरी सफेद छाल पाँच तोले लाकर कुचल लो और रातको "गरम जल"में भिगादो। सवेरे ही मलकर कपड़ेमें छान लो और ज़रासी मिश्री मिलाकर पी जाओ। इस नुसखे के कुछ दिन सेवन करने से गरमी रोग और प्रमेह दोनों आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८५) पकी हुई केलेकी गहर, आमलों का खरस, मिश्री और शहद,—इन सबको एकत्र मिलाकर, कुछ दिन सेवन करने से प्रमेह या पानी-समान धातु का गिरना आराम हो जाता है।

नोट—पका हुआ केला और ६ माशे घी मिलाकर खानेसे प्रमेह या धातु गिरना आराम हो जाता है। अगर सरदी करे, तो माशे, दो माशे या तीन माशे शहद मिला लेना चाहिये। परीक्षित है।

(८६) अडूसे का खरस १ तोला, गुर्च या गिलोय का खरस १ तोला और मधु १ तोला—इन तीनोंको मिला कर पीने से प्रमेह, खासकर सफेद धातुका गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(८७) अनार के फूलों की कली, कत्था और मिश्री—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। इसमें से ६ माशे चूर्ण, जलके साथ, खाने से सब प्रमेह आराम हो जाते हैं।

(८८) खाँड़ और इलायची का चूर्ण करके खाने से समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं।

(८९) चीनी के शर्बत में बड़ी इलायची का चूर्ण डालकर पीने से समस्त प्रमेह आराम हो जाते हैं।

(९०) शोधी हुई गन्धक गुड़में मिलाकर खाने और ऊपर से दूध पीनेसे बीसों प्रमेह, २१ दिन में, चले जाते हैं। गंधक की मात्रा ४ माशे से १ तोले तक है। गुड़ बराबर लेना चाहिये। परीक्षित है।

(८१) दो माशे शुद्ध शिलाजीत को ज़रा से जल में घोल कर पीने और ऊपर से मिश्री-मिला दूध पीने से बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है

(८२) त्रिफले का चूर्ण १ तोले, हल्दीका चूर्ण २ माशे और शहद १ तोलेमें २ रत्ती अभ्रक भस्म मिला कर खानेसे १ मासमें बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है

अमीरी नुसखे ।

रस-चिकित्सा ।

(८३) "चाँदी की भस्म" चार चाँवल से १ रत्ती तक, इलायची १ माशे, तेजपात १ माशे और दालचीनी १ माशे—इन तीनों के तीन माशे चूर्ण में मिलाकर खाने से बीसों प्रमेह नाश हो जाते हैं। इसमें ज़रा भी शक नहीं।

(८४) बबूल की छाल, कटहल की छाल और महुए की छाल—इनको ६।६ माशे लेकर, जलके साथ पीस लो और उसमें रत्ती आधी रत्ती "चाँदी की भस्म" मिलाकर खाओ। निश्चय ही सब प्रमेह नष्ट हो जाँयगे।

(८५) गूलर के फलोंका चूर्ण १ तोले लेकर; उसमें १ रत्ती "ताम्र भस्म" रख कर खाने से बीसों प्रमेह निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

(८६) तुलसीके पत्तोंके साथ "बङ्ग भस्म" खाने से प्रमेह नाश हो जाते हैं।

नोट—तुलसी सफेद और काली दो तरह की होती हैं। गुण में दोनों समान हैं। मात्रा—१ माशे की है।

(८७) गोरखमुंडी और गोखरू के रसमें मिश्री मिलाकर, उस रस

में "वङ्गभस्म" खाने से समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं। समय—सवेरे सेवन करना चाहिये।

नोट—गोरखमुण्डी छोटी और बड़ी दो तरह की होती हैं। मात्रा दो माशे की है।

(९८) पान और मिर्चोंके साथ "लोहा भस्म" खाने से प्रमेह नाश हो जाते हैं।

(९९) त्रिफले के चूर्ण के साथ "लोहा भस्म" खाने से बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।

(१००) पान के साथ "जस्ताभस्म" खानेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं।

(१०१) शहद, पीपल और शिलाजीत में १ या २ रत्ती "अभ्रक भस्म" मिलाकर खानेसे निश्चय ही बीसों प्रमेह शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०२) इलायची, गोखरू, भुइँ आमला, मिश्री और गायके दूधके साथ रत्ती भर "अभ्रक भस्म" खाने से प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०३) गुरुच और मिश्री के साथ "अभ्रक भस्म" खाने से प्रमेह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०४) तुलसी के पत्तों या शहद और मिश्री के साथ रत्ती भर "वङ्ग भस्म" खाने से प्रमेह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०५) जायफल, जावित्री और लौंगके साथ "वङ्ग भस्म" खानेसे धातु रोग जाते रहते हैं।

१०६ प्रमेह कुठार रस।

छोटी इलायची के बीज	... ...	२ माशे।
भीमसेनी कपूर	...	२ मा

मिश्री	२ माशे
आमले	२ ,,
जायफल	२ ,,
गोखरू	२ ,,
सेमल की छाल	२ ,,
शुद्ध पारा	२ ,,
शुद्ध गन्धक	२ ,,
बङ्ग भस्म...	२ ,,
लोह भस्म	२ ,,

बनाने की तरकीब—पहले पारे और गन्धक को खरलमें डालकर खूब घोटो; जब काजली हो जाय, तब उसमें बङ्गभस्म और लोहा भस्म मिलाकर घोटो। इन चारों के अलावः, बाकी दवाओंको हिमामदस्ते में कूट-पीस कर कपड़-छन करलो। उसके बाद इस चूर्ण को भी उसी खरल में डालकर फिर घोटो। जब सब एक दिल हो जायँ, शीशी में भरकर रख दो। यही "प्रमेह कुठार रस" है।

सेवन विधि—इस रसमें से १ माशे या १॥ माशे रस, छै माशे या तोले भर शहद में मिलाकर चाटनेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं।

१०७ योगराज गुटी

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, चीता, कालीमिर्च, भुनी—हींग, अजमोद, सिरस, सफेद जीरा, स्याह जीरा, रेणुकाके बीज, इन्द्रजौ, पाढ़, वायविडङ्ग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारङ्गी की जड़, बच, मरोड़फली, तेजपात, देवदारु, पीपर, कूट, रास्ना, नागरमोथा, सेंधा नोन, छोटी इलायची, गोखरू, हरड़, धनियाँ, बहेड़ा, आमला, दालचीनी, खस, जवाखार और तिल—इन सबको एक-एक तोले लेकर, खूब महीन कूट-पीस कर छान लो। इसके बाद; इस चूर्णका

जितना वज़न हो उतनी ही "शुद्ध भैंसा गूगल" लो। पीछे सबको खरलमें डाल कर, ऊपरसे "घी" दे दे कर, खूब कूटो। जब एक दिल हो जाय, चने या बेर के समान गोलियाँ बना कर, चिकने बर्तन में, रख दो।

इन "योगराज गुटियों" को अलग-अलग अनुपानोंके साथ सेवन करने से शुक्र-दोष, प्रमेह, वायुरोग, आमवात, मृगी, वातरक्त, कोढ़, दुष्टव्रण, बवासीर, तिल्ली, वायुगोला, उदर रोग, अफारा, मन्दाग्नि, श्वास, खाँसी, अरुचि, नाभिशूल, कृमिरोग, क्षय, हृद्रोग, उदावर्त और भगन्दर रोग नाश होते हैं।

मात्रा—तीन माशेसे इस दवाको शुरू करें और हर सातवें दिन इतनीही बढ़ाकर एक तोले तक पहुँचा दें। वैसे तो इसकी मात्रा जवानको ६ माशे की है।

पथ्यापथ्य—इस दवाके सेवन करने में मैथुन और खाने पीने का कोई परहेज़ नहीं; अर्थात् इन गोलियों के सेवन करने वाले को खानपान और स्त्री-भोग की कोई क़ैद नहीं। वह इच्छानुसार आहार-विहार कर सकता है।

योगराज गुटीकी

सेवन-विधि ।

रोगों के नाम ।	अनुपान ।
सब तरहके वात रोगोंमें	रास्नाका काढ़ा
प्रमेहमें	दारुहल्दीका काढ़ा
वातरक्तमें	गिलोयका काढ़ा
पीलियामें	गोमूत्र
मेद-वृद्धि (मुटाई रोगमें)	शहद
सफेद या काले कोढ़में	नीमका काढ़ा
शूल में	मूलीका काढ़ा
चूहेके विषमें	पाड़लकी जड़का काढ़ा
उग्र नेत्र-रोग में	त्रिफलाका काढ़ा
समस्त उदर रोगों में...	पुनर्नवादि काढ़ा

गूगल शोधनेकी विधि

किसी कलईदार देगची में अन्दाज से त्रिफला और पानी भरदो और ऊपर से कपड़ा बाँध दो। उस कपड़े पर भैंसा गूगल पीसकर रख दो और फिर ढक्कन बन्द करके, नीचे से मन्दी-मन्दी आग लगाओ। इस तरह गूगल शुद्ध हो जायगी। एक सेर गूगल शोधने को१ सेर त्रिफला कूटकर डाल दो और पानी ५।६ सेर डालो।

गूगल शोधनेकी दूसरी विधि

एक पाव त्रिफला और आध पाव गिलोय को अधकचरा करके, एक बर्तन में डालदो और ऊपरसे तीन चार सेर पानी डालकर रात को भिगो दो। सवेरे ही उसे आग पर चढ़ाकर काढ़ा बनाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतारकर काढ़ा छानलो।

इस काढ़े को कलईदार या लोहे की कढ़ाही में रखकर आगपर चढ़ादो और कढ़ाहीके दोनों कुन्दों या कानों में एक लम्बी लकड़ी आड़ी पिरो दो। एक सा कपड़े में एक पाव भैंसा गूगल बाँधकर, पोटली सी बना लो और उस पोटली को उसी लकड़ीमें बाँधकर, कढ़ाही में लटका दो। मगर इस तरह लटकाओ कि, गूगल काढ़े के भीतर रहे। नीचे मन्दी-मन्दी आग लगाओ। हाँ, पोटली को झोली की तरह रखना; यानी उसका मुँह खुला रखना। हलवाइयों की सी लोहेकी डोरी, जिससे वे खाँड़ को निकालते हैं, से उसी कढ़ाहीमेंसे काढ़ा भर-भरकर, उस गूगल-वाली थैलीमें डालो और कलछीसे या झरसे गूगल को चलाते भी रहो। दस बारह दफा काढ़ा थैलीमें डालनेसे सारी गूगल कढ़ाहीमें छन-छनकर निकल जायगी। जब कपड़ा खाली हो जाय, कपड़े को निकाल लो। उसमें गूगल का मैल रह जाय, उसे फेंक दो। उस कढ़ाहीमें जो गूगल-मिला काढ़ा रहेगा, उसे धीरे-धीरे धार बाँधकर निकाल लो; मैल-मिट्टी कढ़ाहीमें नीचे रह जायगा। नितारे हुए काढ़े को फिर आगपर चढ़ाकर, मन्दी मन्दी आग लगाओ और झरसे चलाते रहो, ताकि गूगल जले नहीं; जब गाढ़ा हो जाय, उतार लो। शीतल होने पर, हाथोंमें "घी" चुपड़कर, गूगल की गोलियाँ बनाकर रखलो। यह शुद्ध गूगल है। यही सब दवाओंमें डालने योग्य है। अगर कढ़ाही साफ न हो, तो गायके गोबरसे साफ करलो। गोबर से गूगल फौरन छूट जायगी।

१०८ प्रमेहारि शर्बत

बबूलकी छाल, पीपरके पेड़की छाल, महुएकी छाल, कटहलकी छाल, सफेद चन्दनका बुरादा और गिलोय,—इन पाँचोंको आध-आध पाव लेकर जौकुट करलो और रातको मिट्टीके या क़लईदार बर्तनमें, दस सेर जल डालकर, भिगो दो। सवेरे उसे क़लईदार कड़ाहीमें डाल कर मन्दाग्निसे पकाओ। जब चौथाई जल रह जाय, काढ़ा छान लो। उस काढ़ेमें १ सेर मिश्री मिलाकर, फिर आग पर चढ़ाओ। दूध-मिले पानीके छींटे दे देकर मैल साफ करलो। जब शर्बत की चाशनी हो जाय, ज़मीन पर बूँद टपकानेसे न फैले, उतार लो और छानकर बोतलोंमें भर दो। सेवन विधि—इसमेंसे १ या १॥ तोले शर्बत रोज़ चाटनेसे पित्तज प्रमेह निश्चयही शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है।

१०९ प्रमेह मर्दन रस

शुद्ध पारा	२ तोले
शुद्ध गंधक	४ तोले
त्रिफला	१२ तोले
त्रिकुटा	१२ तोले
नागरमोथा	१२ तोले
वायबिडंग	१२ तोले
चीतेकी छाल	१२ तोले
शुद्ध लोह-कीट	६० तोले

बनानेकी विधि—पहले गंधक और पारेको खूब खरल करो। जब काजल सी कजली हो जाय, रख लो। त्रिफला, त्रिकुटा, नागरमोथा, वायविडंग और चीतेकी छालको कूट-पीसकर कपड़-छान

करलो । लोह-कीटको भी पीस-छान लो । शेषमें पारे और गन्धककी कजली, त्रिफला प्रभृतिके चूर्ण और लोह-कीट सबको खरलमें डाल खूब घोटो । जब घुट जायँ, शीशीमें रख दो । यही "प्रमेह-मर्दन-रस" है ।

रोग नाश—इस रसके सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र, बीसों प्रमेह, मधुमेह, पथरी और आठों शुक्रदोष नाश होते तथा बूढ़ा भी जवान हो जाता है ।

मात्रा—यह नुसख़ा वृन्दका है । उन्होंने एक तोलेकी मात्रा लिखी है, पर हमारी रायमें आजकल इतनी मात्रासे लाभके बदले हानि ही होगी; अतः बलाबल अनुसार एक या दो माशे से आरंभ करना चाहिये । अगर उतनेसे कोई उपद्रव न हो, निर्विघ्न पच जाय, तो तीन या चार माशे से अधिक न लेना चाहिये ; यानी बलवान से बलवान को २।३ या ४ माशे रस काफी होगा । हमारा आज़मूदा नहीं, पर वृन्द के नुसख़े अक्सर अचूक होते हैं । फिर इसमें जो चीज़ें हैं, उनके ऊपर विचार करनेसे मालूम होता है, कि यह नुसख़ा अवश्य ही शीघ्र फलप्रद होगा ;

नोट—पारा और गंधक शोधनेकी विधि "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ ५७५-८० में देखिये और लोहकीट के लिए तीसरे भागके पृष्ठ ४०१-२ देखिये

११० रतिवल्लभ चूर्ण

सक़ाक़ुल मिस्री	...	...	...	...	८ तोले
बहमन सफ़ेद	...	...	...	...	२ तोले
बहमन सुर्ख़ ...	...	...	...	...	२ तोले
सालम मिस्री	...	...	...	...	२ तोले
दालचीनी ...	...	...	...	...	२ तोले
सफ़ेद मूसली	...	...	...	...	४ तोले

स्याह मूसली	... ...	४ तोले
छुहारे	... ...	४ तोले
छोटी इलायचीके बीज	... ...	२० माशे
गोखरू—	... ...	२० माशे
गावज़ुबाँ	... ...	२० माशे
मिश्री	... ...	३२ तोले

इन सब चीज़ोंको पीस-कूटकर छानलो और बोतलमें भरकर रख दो । इसके सेवनसे दिल, दिमाग़में ताक़त आती, शरीर तैयार होता, धातु पुष्ट और गाढ़ी होती तथा स्त्री-प्रसंगकी इच्छा बेतहाशा बढ़ जाती है । यह चूर्ण हमने कितनेही रोगियोंको दिया और हरबार सफलता मिली । इसकी जितनी प्रशंसा करें थोड़ी है । जिनके पेशाबमें वीर्य जाता हो, जिनकी धातु पतली हो, वे इसे अवश्य सेवन करें; उनकी इच्छा पूरी होगी । परीक्षित है

सेवन विधि—इसकी मात्रा जवानको तोले—भर की है । सवेरे ही, भोजनसे पहले, एक खूराक चूर्ण खाकर, ऊपरसे गायका थन-दुहा धारोष्ण दूध पीना चाहिये ।

१११ प्रमेहघ्न चूर्ण

नागौरी असगन्ध और विधारा—दोनों बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूटकर छान लो । सवेरेही इसमेंसे ९ माशे चूर्ण फाँक कर, गाय का दूध मिश्री मिला कर पीनेसे प्रमेह आदि धातुरोग नाश होकर, शरीर खूब बलवान और मोटा-ताज़ा होता है । कमसे कम ४० दिन सेवन करना चाहिये । परीक्षित है । बूढ़ों के लिये तो अमृत ही है ।

११२ वसन्तकुसुमाकर रस

सोनेकी भस्म		१ तोले
निश्चन्द्र सौ आँचकी अभ्रक भस्म	... ...	१ तोले

फौलाद भस्म या कान्तिसार			...	...	१॥ तोले
बंगेश्वर	...	...	...	...	१॥ तोले
मूँगेकी भस्म	...	...	...	...	२ तोले
मोतीभस्म	...	..	...	...	२ तोले

बनानेकी विधि—इन छहों भस्मोंको बढ़िया खरलमें—जिसमें पत्थर न घिसे—डालकर खूब घोट लो। पीछे; नीचे लिखी चीज़ोंकी एक-एक भावना दोः—

(१) गायका दूध।
(२) अड़ूसेका स्वरस।
(३) ताज़ा हल्दीका स्वरस।
(४) केलेकी जड़का स्वरस।
(५) गुलाबके फूलोंका स्वरस।
(६) मालतीके फूलोंका स्वरस।
(७) कस्तूरी।
(८) शुद्ध कपूर।
(९) तुलसीकी पत्तियोंका स्वरस।

इनमें से प्रत्येकको एक दिनमें एक भावना* देना अच्छा है। अगर ताज़ा हल्दी न मिले, तो सूखी हल्दीको पीसकर काढ़ा बना लेना चाहिए और उसीसे भावना देनी चाहिए। गुलाबके फूलोंके स्वरसके बजाय, बढ़िया अर्क गुलाबकी भावना भी दे सकते हो। भावना देनेके बाद चूर्णको सुखाकर, साफ शीशीमें भर कर रख दो। यही "वसन्त कुसुमाकर रस" है। प्रमेह नाश करने में यह प्रसिद्ध है। कोई अभागा ही आराम नहीं होता, वरनः यह सबको आराम करता है।

---

*किसी चीज़की कज्जलीमें या किसी दवाकी लुगदी या कल्कमें किसी दवा के काढ़े या स्वरसको डालकर मलने और सुखा लेनेको "भावना देना" कहते हैं। जैसे; ऊपरकी मिली हुई भस्मोंको दूधमें मल कर सुखा लो। बस, यही एक भावना हुई।

सेवन विधि—शास्त्रमें लिखा है—

> गुंजा द्वयं ददीतास्य मधुनासर्वमेहनुत्।
> सिताचन्दन संयुक्तश्चाम्लपित्तादि रोगजित्॥

इस वसन्तकुसुमाकर रसको, १ या २ अथवा आधी या चौथाई रत्तीकी मात्रासे, शहदके साथ सेवन करनेसे समस्त—बीसों—प्रमेह आराम हो जाते हैं और मिश्री तथा सफेद चन्दनके साथ सेवन करने से अम्लपित्तादि रोग नाश हो जाते हैं।

परीक्षासे मालूम हुआ है कि, इसको "शहद"के साथ सेवन करने से कफ वातसे उपजे प्रमेह नाश हो जाते हैं। मिश्री और चन्दनके साथ या अर्क़ गुलाब, मिश्री और सफ़ेद चन्दनसे बने "शर्बतचन्दन" के साथ सेवन करने से पित्तज प्रमेह और अम्ल पित्तादि रोग नाश हो जाते हैं। जिनका प्रमेह किसी दवा से न जाय, वे इसे ज़रूर सेवन करें। ताक़तवर और सर्द मिज़ाज वाले को दो रत्ती भी पच जाता है—गरमी नहीं करता। गरम मिज़ाज वालेको चौथाई रत्ती से शुरू करना चाहिये।

नोट—सोना भस्म, फौलादभस्म और मोती भस्म आदि बनानेकी विधि इसी पुस्तकके शेषमें देखें।

११३ धातुरोगान्तक चूर्ण

मिश्री	९ छटाँक	१ तोले	८ माशे
छुहारे	७ ,,	१ ,,	८ ,,
रूमी मस्तगी	०	२ ,,	४ ,,
सफेद मूसली	०	२ ,,	४ ,,

बनानेकी विधि—सब दवाओंको अलग-अलग कूट-पीस कर छानो। जब चारों अलग-अलग कुट जायँ, काँटेसे तोल-तोल कर मिला दो। सबको एक साथ कूटने से यह दवा क्या—कोई भी दवा अच्छी नहीं बनती।

सेवनविधि—इस चूर्ण की मात्रा दो से साढ़े तीन तोले तक है।

इसे सन्ध्या समय फाँक कर, ऊपरसे गायका औटा दूध पीना चाहिए। अगर न भावे, तो ज़रासी मिश्री मिला लेनी चाहिए। अगर दूधके औटनेके समय ६ माशे घी मिला दें और शीतल हो जाने पर उसमें ३ माशे मधु भी मिला दें और पी जावें, तो क्या कहना! पर यह अनुपान बलवानों के लिए अच्छा है। हमने इसे दोनों तरह देकर खूब चमत्कार देखा है। कोई ८।७ बरससे हम इसे आज़मा रहे हैं। हमें यह नुसखा किसी आधुनिक ग्रन्थसे मिला था। नाम हमें याद नहीं और जहाँ यह नुसखा हमारी परीचित-नुसखोंकी पुस्तकमें लिखा है, किसी भी नुसखेका असली उद्गम-स्थान नहीं लिखा!! नक़ल करते समय हमें यह ख़याल नहीं था कि, शायद हम कभी कोई वैद्यक-सम्बन्धी ग्रन्थ लिखेंगे।

११४ लोध्रासव

पठानी लोध, ...	१ तोला
कपूर	१ ,,
पोहकरमूल	१ ,,
छोटी इलायची	१ ,,
मूर्वा	१ ,,
वायविडंग	१ ,,
त्रिफला...	१ ,,
अजवायन	१ ,,
चव्य	१ ,,
प्रियंगूफूल	१ ,,
चिकनी सुपारी	१ ,,
इन्द्रायणकी जड़की छाल	१ ,,
कड़वा चिरायता	१ ,,
कुटकी	१ ,,

भारंगी	१ तोला
तगर	१ ,,
चीतेकी जड़की छाल	१ ,,
पीपरामूल	१ ,,
कूट	१ ,,
अतीस	१ ,,
ईख	१ ,,
पाढ़ी	१ ,,
कालीमिर्च	१ ,,
मोथा	१ ,,
इन्द्रजौ	१ ,,
नागकेसर	१ ,,
अर्जुन वृक्षकी छाल	१ ,,
जवासा...	१ ,,

बनानेकी तरकीब—इन सब दवाओंको जौकुट करके, रातके समय, बारह सेर पानीमें डालकर, मिट्टीके बासनमें, भिगो दो। सवेरे ही कलईदार बर्तनमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान लो और डेढ़ सेर शहद मिला कर किसी चीनीके बासन या घी के चिकने बासनमें रखकर, ऊपरसे ढक्कन देकर, ढक्कन की सन्धियोंको मुल्तानी मिट्टी और कपड़े की तहें देकर बन्द कर दो, जिससे ज़राभी साँस न रहे। इसे १५ दिन इसी तरह रक्खा रहने दो— छेड़ो मत। १५ दिन बाद खोलकर कपड़ेमें छान लो और बोतलों में भरदो। यही "लोध्रासव" है।

रोगनाश—

लोध्रासवोऽयं कफपित्तमेहान्क्षिप्रं निहन्याद्द्विपलप्रयोगात्।
पाण्डवामयार्शांस्यरुचिं ग्रहण्या दोषं बलासं विविधं च कुष्ठम्॥

इस लोध्रासव से "कफ पित्त जनित" प्रमेह नाश होते हैं। इनके

सिवा, पीलिया, बवासीर, अरुचि, ग्रहणी और कोढ़ प्रभृति आराम होते हैं। हम इतने रोगों पर आज़मा नहीं सके, पर इसमें शक नहीं कि, कफ पित्तज प्रमेह-रोगी इससे कई साफ आराम हो गये।

माचा—६ माशेसे दो तोले तक।

समय—सवेरे शाम।

नोट—बहुत से वैद्य कहते हैं, इससे बातज बवासीर भी आराम होती है। वैद्य लोग आज़मा कर देखलें। वातज बवासीरका आराम होना सम्भव है।

इन्द्रायण दो तरह की होती हैं:—(१) बड़ी, (२) छोटी। एक इन्द्रायण के फल लाल नारङ्गी के जैसे होते हैं और दूसरी के पीले फल होते हैं; पर फूल सफेद होते हैं। इसके फल का गूदा दवा के काम में आता है। मात्रा ६ रत्ती से २ माशे तक है। बङ्गला में बड़ी को "बड़वाकाल" और छोटी को "राखालशशा" कहते है। यह उपविष और घातक है।

११५ सुधारस।

वङ्ग भस्म	... ६ माशे
छोटी इलायची	... ६ माशे
बन्सलोचन	... ६ माशे
सत्त गिलोय	... ६ माशे
शिलाजीत का सत्त...	... ६ माशे
अबीध मोती	... २ माशे
चाँदीके वर्क़	... २४ नग

इन सबको खरलमें डालकर, ऊपर से अर्क़ गुलाब बढ़िया दे देकर घोटो। गिरती धातुको रोकने में यह रस रामबाण है। अनेक प्रमेह-रोगी इस से आराम हुए हैं। जिसे दिया वही चङ्गा हो गया। धातु रोगी इस "सुधारस" को अवश्य सेवन करें। सचमुच ही यह यथा नाम तथा गुण है। परीक्षित है।

सेवन विधि-इसकी माचा ४ रत्ती से १ माशे तक है। एक माचा खाकर ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध पीना चाहिये

११६ प्रमेह सुधा।

मोती की सीपी की भस्म	४ तोले
सफेद मूसली दिल्ली की	१० ,,
तज सूरती	१० ,,

इन तीनों को कूट पीस और छानकर शीशी में रखदो। इसके ४० दिन सेवन करने से निश्चय ही बीसों प्रमेह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है। हमने कितनी ही बार आज़माइश की है।

नोट—सीप कई प्रकार की होती हैं। मोती की सीप खरीदने में धोखा मत खाना। मोती की सीप प्रायः ७-८ इञ्च लम्बी और ५ या ७ इञ्च चौड़ी होती है तथा दो अङ्गुल के करीव मोटी होती है। सीपके भीतर चेचक के दाने जैसे कितने ही दाने उभरे रहते हैं, उन्हीं में मोती रहते हैं। मोती निकाल लिये जाते हैं, सीप रह जाती है। वही मोतीकी सीप लेनी चाहिए और उसकी भस्म कर लेनी चाहिए। उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे लिखी है।

११७ सेमल पाक

सेमल की छाल	ऽ॥
इलायची...	५ तोले
दालचीनी	५ ,,
तेजपात	५ ,,
लौंग	५ ,,
जायफल	५ ,,
नागकेशर	५ ,,
नागरमोथा	५ ,,
धनियाँ	५ ,,
वंसलोचन	५ ,,

सोंठ	५ तोले
पीपर	५ ,,
मिर्च	५ ,,
असगन्ध	५ ,,
हरड़	५ ,,
फौलादभस्म	५ ,,
गुड़	ऽ२ सेर
दूध	ऽ१ सेर

बनाने की विधि—पहले सेमल की छाल को पीस कर दूधमें मिला दो और औटाओ; जब खोआ हो जाय, रख दो। इलायची से हरड़ तक की सब दवाओं को कूट-पीस कर छान लो। गुड़को कड़ाही में डाल और थोड़ा पानी देकर औटालो—जब गाढ़ासा हो जाय, उसे उतार लो और फौरन ही खोआ, दवाओं का चूर्ण और फौलाद भस्म मिलाकर खूब एक-दिल करो और थाली में जमा दो या तोले-तोले भर के लड्डू बना लो।

सेवन विधि—एक लड्डू रोज़ खाने से समस्त प्रमेह नष्ट होजाते हैं। रामबाण दवा है। परीक्षित है।

नोट—अगर किसी वजह से इतना पाक न बना सको; तो सब चीजों को आधा-आधा ले लेना या चौथाई-चौथाई ले लेना। जब लाभ दीखे और बना लेना। ४० दिन खाने से गवारको भी लाभ दीखने लगता है।

११८ किशोर गुग्गुल।

गिलोय २ सेर, गूगल भैंसा १ सेर और त्रिफला १ सेर—इन तीनों को कूट-कुचल कर, एक बर्तन में डाल कर, ऊपर से १६ सेर पानी मिला दो और चूल्हे पर चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब आठ सेर पानी रह जाय, उतार कर काढ़े को छान लो। छने

हुए काढ़े को फिर आग पर रखकर पकाओ। जब गाढ़ा होने पर आवे, उसमें सोंठ, मिर्च, पीपर, बायबिड़ङ्ग और त्रिफला दो दो तोले लेकर पीस-कूटकर मिला दो। इसके बाद निशोथ एक तोले, दन्ती की जड़ एक तोले और गिलोय ४ तोले को भी पीस कूट कर उसी में मिला दो। पकते समय भर प्रभृति से चलाते रहो, जिस से दवा पैंदे में न लगे। जब गाढ़ा हो जाय, नीचे उतार लो। हाथों में "घी" चुपड़ कर तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना लो। इस "किशोर गूगल" के सेवन करने से सूजन, व्रण, गोला, कोढ़, उदर रोग, वातरक्त, खाँसी, मन्दाग्नि, पीलिया और प्रमेह रोग नाश हो जाते हैं।

११६ गुग्गुल आदि बटी

१	शुद्ध गूगल	१ पाव
२	सोंठ...	२ तोला
३	गोल मिर्च	२ "
४	हरड़	२ "
५	बहेड़ा	२ "
६	आमला	२ "
७	हल्दी	२ "
८	रूमी मस्तगी...	२ "
९	सालिम मिश्री	२ "
१०	इलायचीके दाने	२ "
११	पीपल	२ "

गूगल को पहले शोध लो। शोधी हुई गूगल को पानी में मिलाकर, कड़ाहीमें डालकर, आग पर चढ़ा दो और मन्दी-मन्दी आग से पका कर लेईसी कर लो। जब लेई सी हो जाय, उसमें सोंठ प्रभृति दसों दवाओं के पिसे-छने चूर्ण को मिला कर खूब चला दो।

जब गूगल और दवाओंका चूर्ण दोनों खूब मिल जायँ, उतार लो और तीन-तीन माशे की गोलियाँ बनालो। इन "गुग्गुल आदि बटियोंके" सेवन से प्रमेह रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

मात्रा—३ माशे की। अनुपान—गरम जल। समय—सवेरे और शाम।

नोट—गूगल वही अच्छी होती है, जो भैंसाकी आँखों की तरह लाल होती है। भैंसा के नेत्रों-जैसी होनेसे ही उसे महिषाक्ष या भैंसा गूगल कहते हैं।

१२० प्रेमहान्तक बटी

भीमसेनी कपूर	१	माशे
कस्तूरी	१	माशे
अफीम	४	माशे
जावित्री	४	माशे

इन चारों को खरल में डालकर घोटो और ऊपर से बँगला पानों का, निकाल कर रक्खा हुआ, रस छोड़ते जाओ। जब ८।१० घण्टे घुटाई हो जाय, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से प्रमेह में तत्काल फायदा होता है; साथ ही वीर्य बढ़ता और गाढ़ा होता है।

सेवन विधि—सवेरे-शाम एक एक गोली खाकर, ऊपर से दूध पीना चाहिये।

नोट—अफीम ६ माशे लेकर, एक कटोरी में रखकर, पाव आध पाव जल में घोल कर, एक मोटे कपड़े में छानलो। कपड़े में मिट्टी और मैला रह जायगा, असल माल पानी में मिलकर कपड़े से नीचे निकल जायगा। उस पानी को आग पर चढ़ाकर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ; जब गाढ़ा हो जाय, उतार लो। यह अफीम शुद्ध है।

भीमसेनी कपूर बनाने की विधि।

कपूर २ तोले, समुद्रफेन ३ माशे, रसौत ३ माशे, छोटी इलायची के बीज ६

माशे, केसर १॥ माशे, कस्तूरी ६ रत्ती, निर्मली ३ माशे, नागरमोथा ३ माशे और अगर ३ माशे—इन नौ चीजोंको साफ धोये हुए खरल में डालकर, गुलाब-जल दे दे कर घोटो। पीछे इसकी एक टिकिया सी बना लो।

काँसीकी थाली में इस टिकिया को रखकर, ऊपर से फूल-काँसी का कटोरा औंधा रख दो। थाली और कटोरे की सन्धियों को, पानी में साने हुए उर्द के आटेसे, बन्द कर दो; जिससे हवा न आ जा सके। इसके बाद थाली को तीन ईंटों पर रख दो और थाली के नीचे ' घी का चिराग" ऐसी मोटी बत्ती डालकर जला दो, जिससे दीपक की लो छोटी अँगुली जितनी मोटी उठती रहे ; यह चिराग़ कोई तीन या ३॥ घण्टे तक जलता रहना चाहिये। कटोरे के ऊपर, रेज़ी का कपड़ा ८ १० तह करके और पानी में तर कर के रख दो। अगर कपड़ा सूखने लगे, तो ऊपर से थोड़ा-थोड़ा ठण्डा जल टपकाते रहो। इस तरह करने से तीन घण्टे में "भीमसेनी कपूर" तैयार हो जायगा और वह ऊपर के कटोरे में लगा मिलेगा। कटोरे के जोड़ छुड़ाकर, कपूर को निकाल कर, शीशी में रख लो। यह कपूर बड़ी ही काम की चीज है। उपरोक्त गोलियों के सिवा, इससे और बहुत काम निकलते हैं। इससे आँखों के सुरमे भी बहुत ही बढ़िया तैयार होते हैं।

१२१ आमलक्यादि मोदक

आमले (गुठली निकले हुए)	३ तोले
हरड़का बक्कल	३ ,,
बहेड़ेका छिलका...	३ ,,
नागकेशर	८ ,,
दालचीनी	८ ,,
लौंग	८ ,,
छोटी इलायचीके बीज	८ ,,
तुख्मरिहाँ	८ ,,
कौंचके बीज	१६ ,,
धनिया...	१६ ,,
सफेद ज़ीरा	१६ ,,

इन ग्यारह चीज़ों को पीस-कूट कर कपड़छन कर लो। इस "आमलक्यादि मोदक या चूर्ण" के ४० दिन सेवन करने से सब तरहके प्रमेह निश्चयही नाश हो जाते हैं और साथही बल-वीर्य बढ़ता है।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ६ माशे से ८ माशे तक है। हरेक खूराकमें बराबरका घी और मिश्री मिला कर, सवेरे-शाम, खाना और ऊपरसे दूध पीना चाहिये। जैसे; ६ माशे चूर्ण लेना तो ३ माशे घी और ३ माशे मिश्री लेना।

१२२ न्यग्रोधादि चूर्ण

बड़वृक्ष की छाल, गूलरकी छाल, पीपलके पेड़की छाल, सोना-पांठा, अमलतासका गूदा, आमकी छाल, कौंचके पेड़की छाल, जामुन की छाल, अर्जुनकी छाल, चिरौंजी, नागरमोथा, मुलेठी छिली हुई, लोधकी छाल, वरनाकी छाल, कूट, करंजुआ, महुएकी छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला, कुड़ेकी छाल और शुद्ध भिलावेके फल—इन २२ दवाओं को दो दो तोले लेकर, पीस-कूट कर छान लो और शीशीमें रखदो। इस चूर्ण के ३०।४० दिन तक सेवन करने से बीसों प्रकारके प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं तथा प्रमेह-पिड़िकायें पैदा नहीं होतीं। इस चूर्णकी विद्वानोंने जैसी तारीफ की है, वैसाही है।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ६ माशे की है। इसे "शहद" के साथ चाटकर, ऊपरसे "त्रिफलेका काढ़ा या निकाढ़ा" पीना चाहिए। अकेले त्रिफला और शहदही प्रमेहके काल हैं। अगर इनके साथ "न्यग्रोधादि चूर्ण" भी सेवन किया जाय, तब तो प्रमेहके नाश होनेमें सन्देह ही क्या?

१२३ प्रमेहान्तक चूर्ण।

कच्चे सिंघाड़े (सूखे) ... ... २ तोले

ईसबगोलकी भूसी	...	...	...	२	तोले
मैदा लकड़ी ...	...	...	...	२	,,
कौंचके बीज ...	...	...	...	२	,,
धनिया ...	...	...	...	२	,,
गोखरू ...	...	...	...	२	,,
बीजबन्द ...	...	...	...	२	,,
सेमलका गोंद ...	...	...	...	२	,,
ढाकका गोंद ...	...	...	...	२	,,
बबूलका गोंद ...	...	...	...	२	,,
समन्दरकी सीप	...	...	...	२	,,
तालमखाने ...	...	...	...	२	,,
काहूके बीज ...	...	...	...	६	,,
मिश्री ...	...	...	...	१५	,,

बनाने की विधि—इन सबको पीस-कूटकर छानलो और अमृत-बानमें रखदो। इसके सेवन करने से प्रमेह आदि धातुरोग नष्ट होकर, धातु गाढ़ी होती, बलवीर्य और कान्ति बढ़ती एवं शरीर खूब पुष्ट होता है। मगर इतने रोग दस पाँच दिनमें नाश नहीं हो जाते। कम-से-कम ४० दिन खानेसे अपूर्व चमत्कार दीखता है। जिनके पेशाबमें वीर्य जाता है, उनके लिये यह चूर्ण रामबाण है। परीक्षित है।

सेवन-विधि—१ तोले चूर्ण खाकर, ऊपरसे पाव डेढ़पाव गायका "धारोष्ण दूध" पीना चाहिए।

नोट—ईसबगोल को संस्कृतमें "ईषद्गोल" और फारसी में 'इसागुला" कहते हैं। यह अत्यन्त पुष्टिकारक मधुर, काबिज तथा रक्तातिसार नाशक है। यह जरा वादी, तो करता है, पर कफ पित्त को नाश करता है। यह मिश्र और ईरान में होता है। इसके बीज तीन तरह के होते हैं—(१) काले, (२) लाल, और (३) सफेद। काले बीज दवा के काम के नहीं; सफेद बीज सर्वोत्तम होते हैं।

मैदा लकड़ी एक दरख्त की जड़ है। बाहर से काली और भीतर से पीलापन

लिए सफेद होती है तथा स्वाद में फीकी होती है। इसकी मात्रा ५ माशे की है। बदल "बाल छड़" और "अकरकरा" है।

१२४ प्रमेह गजकेसरी वटी।

पीपल	६ माशे
नागरमोथा	६ "
लौंग	६ "
सौंफ	६ "
छोटी हरड़	६ "
दालचीनी, ...	६ "
रूमी मस्तगी	६ "
तालमखाना	६ "
मीठे इन्द्रजौ	६ "
बड़ी इलायची	६ "
आमला	६ "
बालछड़	६ "
छोटी इलायची	६ "
गोल मिर्च	६ "
सफेद मिर्च	६ "
अगर	६ "
अगर बिलसाँ	६ "
अकरकरा	६ "
कुचला (शुद्ध)	१ तोले
जायफल	६ माशे
शहद	३२ तोले
कंकोल	६ माशे

बनाने की विधि—शहदको अलग रखदो। कुचलेको शोध लो। इसके बाद, शहद के अलावः— इक्कीस दवाओंको पीस-कूट कर छानलो। पीछे शहदकी चाशनीमें सब चूर्ण को मिलाकर, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो।

रोग—इन गोलियोंके ४० या ८० दिन सेवन करने से सारे प्रमेहादि धातुरोग नाश होकर नयी जवानी आती है; कामदेव बहुत ज़ोर करता, भूख बढ़ती और शरीर सोनेकी तरह चमकता है। इनके सिवा आतशक-गरमी, गठिया और बादीके रोग भी नाश हो जाते हैं।

सेवन विधि—भोजनसे पहले, बड़े सवेरे ही, एक गोली खानी चाहिए।

नोट—कुचला शोधनेकी विधि चिकित्साचन्द्रोदय दूसरे भागके २७२ पृष्ठमें देखिये,

१२५ प्रमेहान्तक खीर

गायके एक पाव दूध में एक तोला "ईसबगोल" डाल कर पकाओः जब पक जाय, ज़रासी सेलखड़ी पीसकर मिला दो, यही "प्रमेहान्तक खीर" है। इस खीर के सवेरे ही खाने और भूख लगने पर भोजन करने से, एक मास में, प्रमेह, धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, धातु का पतलापन एवं धातु-सम्बन्धी अन्य रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

१२६ सर्व प्रमेहनाशक चूर्ण

सफ़ेद चन्दन, नागरमोथा, खस, छोटी इलायची के बीज, लौंग, चीता, कूट, काली अगर, बंसलोचन, असगन्ध, शतावर, जायफल,

गिलोय, गोखरू, निशोथ, तगर, नागकेशर और कमलागट्टे की गिरी—इन सब को कूट-पीसकर छान लो और बराबर की मिश्री मिलाकर रख लो। इसकी मात्रा १ तोले की है। इस चूर्ण के कुछ दिन लगातार खाने से बीसों प्रमेह नष्ट होजाते हैं। परीक्षित है।

१२७ त्रिकुटाद्य गुटिका

त्रिकुटा	१ पाव
त्रिफला	१ पाव
शुद्ध गूगल	२ पाव

बनाने की विधि—पहले गूगलको शोधलो। जब ढीलीसी हो जाय, अलग रखदो। त्रिकुटा और त्रिफलाकी छहों चीज़ोंको कूट-पीसकर छानलो। पीछे गूगल और इस चूर्ण को खरलमें घोटो; ऊपरसे गोखरूका काढ़ा डालते जाओ। जब सब चीज़ें एक-दिल हो जायँ, मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनालो। देश, काल और बलका विचार करके, एक या दो गोली नित्य खाने से समस्त प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। ये गोलियाँ वात-अनुलोमक; यानी अपानवायुको निकालने वाली, वातरोग, वातरक्त, मूत्राघात, मूत्र-दोष और प्रदरको नाश करने वाली हैं। सबसे बड़ी बात यह कि, इनपर कोई पथ्य-परहेज़ नहीं; रोगी तबियत चाहे सो खा सकता है।

१२८ गोक्षुराद्यवलेह

पत्ते, फल और जड़ समेत "गोखरू" पाँच सेर लाकर, ज़रा अध-कचरा सा करके, चौगुना यानी २० सेर जल डालकर पकालो। जब जलते-जलते चौथाई यानी पाँच सेर जल रह जाय, उतारकर कपड़े

में छान लो। इस छने काढ़ेको, क़लईदार कड़ाहीमें, फिर आगपर चढ़ाकर, मिश्री अढ़ाई सेर मिला दो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब गाढ़ा हो जाय इसमें—

सोंठ, पीपल, गोलमिर्च, नागकेसर, दालचीनी, छो० इलायची, जायफल, कोहके फूल और खीरेके बीज हरेक आठ-आठ तोलेका—पीस-छानकर पहले से रखा हुआ चूर्ण (ऊपर की चाशनीमें) डालदो; और बत्तीस तोले नीली भांई वाला बंसलोचन पीसकर है और मिला दो; और फिर कड़ाही को फौरन उतार लो। यह चाटने लायक़ रहना चाहिए, क्योंकि अवलेह है।

रोग नाश—इस अवलेहके सेवन करने से पेशाबकी जलन, पेशाबका रुकना, धातुदोष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तप्रमेह (छठा पित्तज प्रमेह), पथरी रोग और मधुमेह,—ये रोग नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा चार तोलेकी लिखी है; पर अपने बलाबल अनुसार विचार कर खानी चाहिए।

१२९ असवादि योग

विजयसार, चिरौंजी, साल, खैर और सारवर्गकी दवाएँ—इन सबको पीस-छानकर रखलो। इस चूर्णके सेवन करनेसे वह मधुमेह रोगी भी आराम हो सकता है, जिसे अन्य वैद्योंने असाध्य समझ कर त्याग दिया हो।

१३० प्रमेहान्तक चूर्ण

गोखरू, तालमखाना, सफ़ेद मूसली, स्याह मूसली, शतावर, कौंचके बीजोंकी गिरी, उटंगनके बीज, सूखे सिंघाड़े, ईसबगोलकी भूसी, बबूलका गोंद, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, तोदरी ज़र्द, तोदरी

सुर्ख़, कसेरू, लिह्सौड़ा और रूमी मस्तगी,—इन सबको दो-दो तोले लेकर, कूट-पीसकर छानलो और फिर चूर्णके वज़नके बरा-बर पिसी मिश्री भी मिला दो और किसी साफ बर्त्तनमें रखदो।

रोग—इसके सेवनसे बीसों प्रमेह नाश होकर, बल-वीर्य और कान्ति बढ़ती है। खाने वालेका शरीर खूब तैयार होता है। धातु खूब गाढ़ी होती और स्त्री-प्रसंगमें बड़ा आनन्द आता है।

सेवन विधि—जवानके लिये इस चूर्णकी मात्रा १ तोलेकी है। सवेरे-शाम चूर्ण फाँककर, ऊपरसे गायका "धारोष्ण दूध" एक पाव पीना चाहिए। २१ दिनमें ही यह अपूर्व चमत्कार दिखाता है। अगर ४० दिन तक खा लिया जाय और स्त्रीसे परहेज़ रखा जाय, तब तो कहना ही क्या ? परीक्षित है।

१३१ कामिनी मानमर्दन चूर्ण

शतावर	४ तोले
गोखरू	४ „
कुलींजन	४ „
विदारीकन्द	४ „
कौंचके बीजोंकी गिरी	४ माशे
उटंगनके बीज	४ „
पीपर	४ „
इलायची छोटी	४ „
नागकेसर	४ „
सफेद मूसली	४ „
लालचन्दन	४ „
करीला	४ „
गिलोय	४ „

वंसलोचन ... ... ४ माशे ।

बनाने की विधि—सब दवाओंको पीस-कूटकर छान लो। फिर पत्थरके बड़े खरलमें चूर्णको डाल, "सेमरके स्वरस"को २१ भावना या पुट दो। इसके बाद "डाभके रस" की २१ भावना दो, और शेषमें इसे छायामें सुखा दो। सूख जाने पर, चूर्णके वज़नकी बराबर, मिश्री पीसकर मिला दो और साफ़ बासनमें भर कर रख दो।

रोग—यह चूर्ण हमारा बहुत बारका परीक्षित है। इसके सेवन करने से बीसों प्रमेह नाश होकर अपार बल-वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ता है। इस चूर्णके सदा सेवन करने वालेकी कामिनी दासी हो जाती है। चालीस दिनमें ही यह अपूर्व चमत्कार दिखाता है। यथा नाम तथा गुण है। परीक्षित है।

सेवन विधि—सवेरे-शाम, बलाबल अनुसार, ६ माशे से १ तोले तक चूर्ण खाकर, ऊपरसे गायका १ पाव धारोष्ण दूध पीना चाहिये।

१३२ हरिशंकर रस

निश्चन्द्र अभ्रक भस्म, पारेकी भस्म और शुद्ध तूतिया—तीनों को एक-एक तोले लेकर, खरलमें डालो और सात दिनतक "आमले के स्वरस"की भावनायें दो। फिर दो-दो या तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। प्रमेह नाश करने में यह रस रामबाण है। इससे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं। पहले एक गोलीसे शुरू करना चाहिये। ज्यों ज्यों माफ़िक़ आता जाय; दो या ३ गोली तक बढ़ा देना चाहिए। इससे अधिक न लेना चाहिए। कहा है—

मृताभ्रसूतकं तुत्थं धात्रीफलनिजद्रवैः।
सप्ताहं भावयेत स्वल्पे रसोऽयं हरिशंकरः॥
माषमात्रां वटीं खादेत् सर्वमेह प्रशान्तये॥

नोट(१)—यह रस हमने "वैद्यविनोद" से लिया है। दो तीन बार परीक्षा करने

पर अच्छा साबित हुआ, इसीसे लिखा है। हमने एक-एक माशे की गोलियाँ न बनाकर, दो दो रत्ती की गोलियाँ बनाईं। इसमें शक नहीं, किसी-किसी को तीन-तीन गोली तक निर्विघ्न पच गईं।

नोट (२)—किसी दवा के चूर्ण या कजली को किसी दवा के स्वरस या काढ़े में भिगो कर, मर्दन करने और सुखा लेने को "भावना" देना कहते हैं।

१३३ चंद्रप्रभा वटी।

१	कपूर	३ माशे
२	दूधियाबच	३ ,,
३	नागरमोथा	३ ,,
४	मीठा चिरायता	३ ,,
५	गिलोय	३ ,,
६	देवदारु	३ ,,
७	हल्दी	३ ,,
८	अतीस	३ ,,
९	दारुहल्दी	३ ,,
१०	पीपरामूल	३ ,,
११	चीते की जड़की छाल	३ ,,
१२	धनिया	३ ,,
१३	त्रिफला	३ ,,
१४	चव	३ ,,
१५	वायविडङ्ग	३ ,,
१६	गज पीपर	३ ,,
१७	सौंठ	३ ,,
१८	पीपर	३ ,,
१९	गोलमिर्च	३ ,,
२०	सोनामक्खीकी शुद्ध भस्म	३ ,,

२१	जवाखार	२ ,,
२२	सज्जी खार	२ ,,
२३	सेंधा नोन	२ ,,
२४	काला नोन	२ ,,
२५	विड़ नोन	२ ,,
२६	निशोथ	१० ,,
२७	दन्ती	१० ,,
२८	तेजपात	१० ,,
२९	दालचीनी	१० ,,
३०	छोटी इलायचीके बीज	१० ,,
३१	बन्सलोचन	१० ,,
३२	कान्तिसार	२० माशे
३३	मिस्री	२॥ तोले
३४	शुद्ध शिलाजीत	५ तोले
३५	शुद्ध गूगल	५ तोले

बनाने की विधि—एक नम्बर कपूर से बन्सलोचन तक की ३१ दवाओं को, सोनामक्खी की भस्म को छोड़कर, कूट-पीस कर कपड़-छन करलो। इसके बाद, उस पिसे-छने चूर्णमें कान्तिसार या फौलाद भस्म, सोनामक्खी की भस्म, शिलाजीत और गूगल को मिलाकर, पानी दे देकर, खरलमें घोटो। गूगल छटाँक भर जलमें घोलकर, ज़रा गरम करके लेईसी कर ली जाय, तो अच्छी तरह मिल जायगी। जब सब दवाएँ एक-दिल हो जायँ, रत्ती-रत्ती या दो-दो रत्ती की गोलियाँ बनालो। इन्हीं गोलियों को "चन्द्रप्रभा बटी" कहते हैं। प्रमेह नाश करने में ये मशहूर हैं। वास्तव में, ये प्रमेह को आराम करती हैं। इनके सम्बन्धमें लिखा है—

> चन्द्रप्रभेति विख्याता सर्वरोगप्रणाशिनी।
> प्रमेहान्विंशति कृच्छ्रं मूत्राघातं तथाश्मरीम्॥

चन्द्रप्रभा गोलियाँ समस्त रोग नाश करनेवाली; बीसों प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और पथरी को आराम करने वाली हैं।

हमने यह नुसखा कितनी ही बार आजमाया, सभी प्रमेहों को आराम करता है; पर कही कहीं असफलता भी होती देखी। लेकिन कफवात के प्रमेहों में तो यह शायद ही कभी फेल होता हो। प्रमेह-रोगियों को इसे अवश्य सेवन करना चाहिए।

वैद्य-विनोद कर्त्ता और वृन्द प्रभृति विद्वानोंने तो यहाँ तक लिखा है—कुपथ्य से हुए अरोचक, वमन और शूल-समेत प्रमेह नाश हो जाते हैं और कष्टसाध्य इन्द्रिय-सम्बन्धी गाँठ, अन्त्रवृद्धि, अण्डवृद्धि, कामला, पाण्डु, कोढ़, प्लीहा, उदर रोग, भगन्दर, श्वास, खाँसी, नेत्र-रोग, मन्दाग्नि, दारुण मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, शूल, अफारा, भगंदर, पथरी और पुरुषोंके शुक्र या वीर्य के रोग आराम हो जाते हैं। इन गोलियों से औरतों का आर्तव रोग (मासिक रोग) नाश होता और बाँझ के पुत्र होता है। वैद्य लोग परीक्षा कर देखें, कि प्रमेहोंके सिवा और रोगोंको भी ये आराम करती हैं या नही।

वैद्यक ग्रन्थोंमें इन गोलियों की प्रत्येक दवाका वजन और तरह लिखा है। हमारे इस नुसखे में कुछ कमी-वेशी है। शास्त्रों में लिखा है कि, इन दवाओं को खरल करके, गायके घी से गोलियाँ बना लेनी चाहियें। भोजन के पहले "शहद" के साथ खानी चाहियें और पीछे रोगानुसार, इन पर छाछ, दही का पानी, बकरे का मांस, जङ्गली हिरन का मांस, दूध या शिलाजीत पीना चाहिये। अफसोस है कि, हम प्रमेहके सिवा और रोगोमें इन्हें आजमा नहीं सके।

सब ने हमारे नं० १ कपूर से नं २५ बिड़नोन तक की दवाएँ एक-एक कर्ष या एक एक तोले, गूगल बत्तीस तोले, शिलाजीत १२ तोले, लोह भस्म ८ तोले, बंसलोचन ४ तोले, मिश्री १६ तोले, निशोथ १६ तोले, दन्ती १६ तोले, त्रिसुगन्ध (दालचीनी, तेजपात और इलायची) १६ तोले लिखी हैं। दवाएँ सब प्रायः एक ही हैं। दो एक दवामें फर्क है। किसीने रास्ना ली है, तो दूसरे ने गिलोय और भेद नहीं। मात्रा भी एक तोले की लिखी है। पर इस जमाने में १ तोले की मात्रासे रोगी सीधा यमालय पहुँचेगा। जिनकी इच्छा शास्त्र-विधि से गोलियाँ बनाने की हो, वे सब चीजों को इस नोटमें लिखे-प्रमाण से लेकर गोली बनालें और परीक्षा करें; कदाचित इस तरह बनानेसे ये उपरोक्त सभी रोगों को आराम करें। हमने जिस तरह बनाई और आजमाई उस तरह लिखा ही है। हम केवल प्रमेहों पर

परीक्षा कर सके हैं। यों तो ये सभी प्रमेहों को आराम करती हैं, पर कफ वातज प्रमेहोंको निश्चय ही शान्त करती हैं।

सूचना—कान्तिसार या फौलाद-भस्म वही अच्छी होती है, जो जलके भरे कटोरे में डालनेसे तरने लगती है। पानी पर पड़ी हुई भस्म पर, आप चन्द गेहूं के दाने डाल दें; अगर कान्तिसार या लोह भस्म उत्तम होगी, तो गेहूँ पानी पर तैरते रहेंगे; अगर खराब होगी, तो डूब जायँगे। हमने इस तरह बारम्बार परीक्षा की है।

गूगल शोधनेकी तरकीब इसी भागके पृष्ठ ७५ में लिखी है, और शिलाजीत शोधने की विधि इसी भागके पृष्ठ ५२—५३ में लिखी है। गूगल और शिलाजीत शोध कर ही काममें लाने चाहिएँ

१३४ प्रमेहारि बटी।

जायफल	२ तोला
लौंग	२ ,,
जावित्री	२ ,,
छो० इलायची	२ ,,
अकरकरा	२ ,,
दालचीनी	२ ,,
त्रिकुटा	२ ,,
केसर	२ ,,
चीते की छाल	२ ,,
असगन्ध नागौरी	२ ,,
शतावर	२ ,,
गोखरू (१२)	२ ,,
लोह सार	१३॥ माशे
मिस्री	ऽ॥/

बनाने की विधि-इन पहली बारह दवाओं को कूट-पीस कर कपड़-छन करलो। इसके बाद इस चूर्णमें साढ़े तेरह माशे "लोहसार" मि-

लाकर, एक-दिल करलो। सबके अन्तमें, अढ़ाई पाव मिस्री पीसकर मिला दो और जलके साथ खरल करके, नौ नौ माशे की गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर, ऊपर से १ पाव दूध पीने से बीसों प्रमेह निश्चय ही चले जाते हैं। इसके सिवा, वीर्यमें स्तम्भन-शक्ति भी बढ़ती है। परीक्षित है

१३५ कामिनी-मद-धूनक रस।

शुद्ध पारा	...	१ तोला
शुद्ध गन्धक	...	१ तोला
धतूरे के शुद्ध बीज	...	२ तोला

बनाने की तरकीब, पहले गन्धक और पारे को, कोई ८-१० घण्टे घोटो; पीछे धतूरे के बीज डालकर घोटो; शेषमें, धतूरे के बीजों का तेल डाल-डालकर, कोई ३।४ घण्टे खरल करलो और शीशी में रख दो। यही "कामिनी-मद-धूनक रस" है। इसके सेवन करने से बीसों प्रमेह नाश होते,वीर्य बढ़ता और स्त्री को द्रवित करने की सामर्थ्य होती है।

सेवन विधि—इसमें से १ रत्ती रस, मिश्रीके साथ, खाना चाहिये। बड़ी ही उत्तम चीज है। कहा है:—

रसगन्धकयोः पिष्टी तत्समं धूर्त्तबीजकं।
मर्द्दयेद्ध त्तैलेन कामिनीमदधूनकः॥
वल्लोऽस्य सितयायुक्तः सर्वान्मेहान्निकृन्तति।
द्रावणो मैथुने स्त्रीणां सेवनाद्वीर्यदार्ढ्यकृत्॥

नोट—कामी पुरुषोंको यह रस अवश्य खाना चाहिए। पारा शोधने की विधि "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ ५७७—७८ में और गन्धक शोधने की विधि पृष्ठ ५७५ में तथा धतूरे के बीज शोधने की विधि पृष्ठ ५७२ में लिखी है।

१३६ कामिनी-मदभञ्जन बटी

BVCL 03935
615.536
H212C(H)

मोतियों से भरी सीपी ...

तालमखाना	...	...	...	...	५ तोले
मिश्री	...	...	...	...	५ ,,

बनाने की विधि—पहले मोतियों से भरी सच्ची सीपको खरल में डालकर, तीन दिन तक, खरल करो। खरल होने पर, तालमखाने और मिश्री को पीस-छान कर मिला दो; फिर ऊपर से बड़का दूध दे कर घोटो; घुट जाने पर छोटे बेर-समान गोलियाँ बना लोऔर छायामें सुखालो।

सेवन विधि—सवेरे ही, पहले दिन, एक गोली खाकर, ऊपर से गायका दूध पीओ। शामको गोली मत खाओ। दूसरे दिन, सवेरे-शाम, दोनों समय, एक-एक गोली खाओ। तीसरे दिन, दो-दो गोली सवेरे-शाम खाओ। इसी तरह एक-एक गोली बढ़ाकर, सात दिन खाओ। स्त्री से दूर रहो।

रोग नाश—इन गोलियों के ७ दिन खाने से प्रमेहादि धातु-रोग नाश हो जाते हैं, नाम भी नहीं रहता। अगर कोई ४० दिन खाले, तब तो कहना ही क्या ? परीक्षित है।

१३७ प्रमेहान्तक शर्बत ।

गिलोय	...	...	...	...	ऽ१ सेर
गोखरू	...	...	...	...	ऽ१ सेर
सफेद चन्दनका बुरादा	...		...	...	१६ तोले।

बनानेकी विधि—गोखरू, गिलोय और चन्दन को कूट-पीसकर, रातके समय, क़लईदार बासनमें, साढ़े सात सेर पानी डालकर, भिगो दो। सवेरे ही आग पर चढ़ाकर पकाओ। जब दो भाग पानी जल जाय, उतार कर काढ़ा छान लो। उस काढ़ेमें २ सेर "मिश्री" डालकर पकाओ। जब पकने लगे, उसमें कच्चा दूध और पानी मिलाकर

थोड़ा-थोड़ा देते जाओ, इस तरह मैल छँटेगा; मैलको झरसे उतारते जाओ। बीच-बीचमें ज़रा-ज़रा सा शर्बत, झर से लेकर, एक लकड़ी के तख़्ते या पत्थर पर टपकाते रहो। जब वह चाशनी न बहे—हाथमें चिप-चिप करे, तब उतार लो और छानकर बोतलोंमें भरदो। अगर तीन बोतल माल मिले, तो उत्तम समझना; कम रहनेसे जम जायगा और ज़ियादा रहने से सड़ जायगा। परीक्षित है।

सेवन विधि—इसमें से एक या दो तोले शर्बत चाटने से प्रमेह नाश हो जाते हैं—यह बात ग्रन्थोंमें लिखी है; पर पित्तज प्रमेह के नाश होनेमें तो सन्देह ही नहीं। और प्रमेहों—जैसे वात पित्तज प्रमेह—में भी लाभ होता है।

शिलाजतु वटी।

शुद्ध शिलाजीत	...	...	...	४ माशे
लोह भस्म	...	...	...	२ माशे
सोना मक्खी की भस्म		...	...	२ माशे

इन तीनों को एकत्र खरल करो और दो दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। इनमें से एक-एक गोली सवेरे-शाम मक्खन या मलाईमें मिलाकर खाने से प्रमेह और सफेद धातु का गिरना बन्द हो जाता है। यह नुसख़ा "वैद्य" का है। लेखक का परीक्षित है।

शतावरादि चूर्ण।

शतावर, तालमखाना, कौंचके बीज, गोखरू, तोदरी, सफेद मूसली, गुलसकरी, काली मूसली और बरियारा—इन सबको एक-एक छटाँक लाकर, कूट-पीस-छानकर, चूर्ण कर लो। इसकी मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है। एक मात्रा चूर्ण फाँक कर, गाय का "धारोष्ण"

दूध पीना और स्त्री से दूर रहना चाहिये। इसके २१ या ३१ दिन सेवन करने से पतली धातु गाढ़ी होती और धातुका पेशाब के साथ गिरना बन्द होता है। परीक्षित है।

प्रमेहान्तक बटी।

बङ्गभस्म	१ तोले
शुद्ध शिलाजीत	१॥ तोले
लोहभस्म (२)	१ तोले
अकरकरा	३ माशे
नारियल की गिरी	१ तोले
छुहारा	१ तोले
केशर	४ माशे
बादाम की गिरी	६ माशे
जायफल	१ तोले
मिश्री	३ तोले

बङ्गभस्म आदि पहली तीन दवाओंको अलग रखकर, अकरकरादि सातों चीज़ोंको पीस-कूटकर कपड़-छन करलो। पीछे इस चूर्ण में बङ्ग, लोहभस्म और शिलाजीत मिलाकर घोटो और आध-आध माशे की गोली बना लो। जवान और बलवान १ से २ गोली तक खा सकता है। सवेरे शाम एक-एक या दो-दो गोली खाकर, ऊपर से मिश्री-मिला दूध पीनेसे प्रमेह जड़से नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

प्रमेह-पिड़िका-चिकित्सा

सब से पहले जोंकें लगवाकर, पिड़िका-स्थानका खून निकलवा दो। अगर पिड़िका पकगई हो, तो नश्तर से सलामत निकाल दो। जोंक लगवाकर, पिड़िका को "गाय या बकरी के मूत्र से" दिन में दो बार धोओ। पीछे नीचे लिखे उपाय करो, जिससे घाव भर जायँ:—

(१) बबूल की हरी पत्तियाँ दो तोले लाकर, एक कटोरी में रक्खो और कटोरी को आग पर रख दो। थोड़ी देर में, पत्तियाँ जलकर ख़ाक हो जायँगी। उस भस्म को महीन पीस लो। फिर; छोटी इलायची के चार दाने लेकर आग में जला लो और पीसकर पत्तियों की भस्म में मिला दो। शेष में; तीन माशे कत्था महीन पीस-छानकर, उन दोनों के चूर्ण में मिला दो। फिर; सबको एक दिल करके शीशी में भर दो। पिड़िकाओं के लिए, यह चूर्ण या बुरका सर्वोत्तम और परीक्षित है।

लगाने की विधि—साबुन या निर्मली के पानी से पिड़िका को धोकर और कपड़े से पोंछकर, उस पर ज़रासा "रेंडी का तेल" चुपड़ दो, और ऊपर से यही बुरका, शीशी में से निकाल कर, बुरक दो। इस तरह करने से, प्रायः १ सप्ताह में, असाध्य पिड़िका भी नाश हो जाती है।

(२) पत्थर पर पानी डालकर, नीम की छाल और मुर्दासंग बराबर-बराबर घिसो। पहले छाल को घिस लो; फिर मुर्दासंग को

उसीपर घिस लो, और इस लेप को पिड़िका पर लगा दो। यह भी परीक्षित लेप है।

(३) पिड़िका पर गूलर का दूध लगाने से भी बहुत जल्द लाभ होता है। सोमराजीके बीज पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है।

(४) पिड़िकावाले को अनन्तमूल, श्यामलता, मुनक्का, निसोत,§ सनाय, कुटकी, बड़ी हरड़, अड़ूसे की छाल, नीमकी छाल, हल्दी, दारूहल्दी और गोखरू के बीजों का काढ़ा बनाकर पिलाना बहुत लाभदायक है।

(५) पिड़िकावाले को मकरध्वज या सारिवादि लौह अथवा सारिवाद्यासव भी परम हित हैं।

(६) पिड़िका-स्थान को पक जाने पर चिरवा दो। फिर बकरी के मूत्र आदि तीक्ष्ण पदार्थों से साफ करके; 'एलादि गण'† की दवाओं के कल्कके साथ बने हुए तेल को लगाकर, घाव को भरदो। 'आरग्वधादि गण'‡का उचित काढ़ा पिलाना, 'शालसारादिगण'*के योग्य काढ़े से पिड़िकाओं को सींचना और चने प्रभृति खिलाना भी हितकारी है।

---

§निसोत—इसे हिन्दीमें "सफेद निशोथ" और बङ्गलामें "श्वेततेउड़ी" कहते हैं।

†इलायची, तगर, पादुका, कूट, जटामांसी, गन्ध तृण, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, प्रियंगु, रेणुका, नखी, सेंहुड़, चोर पुष्पी, गठिवन, गन्दाविरोजा, चोरक, बाला, गूगल, राल, घण्टा, पाटला, कुन्दूर खोटी, अगर, चूकशाक खसकी जड़, देवदारू, केशर और नागकेशर—ये सब "ऐलादिगण" या इलायची आदि हैं।

‡आरग्वधादि गण—कवाँच, मैनफल, केवड़े का फूल, कुरैया, अकवन, काँटेदार बैगन, रक्तलोध, मूर्वा, इन्द्र जौ, छातिम की छाल, नीम की छाल, पीतझारी, लीलझारी, गुरुच, चिरायता, महाकरंज, नाटा करंज, डहर करञ्ज; परवलकी पत्ती, चिरायते की जड़ और करेला,—इन सबको "आरग्वधादिगण" या अमलताशादि कहते हैं। ये कफ, विष, मेद, कोढ़, ज्वर, खुजली और कय को नाश करती हैं।

*शाल, आसन, खैर, पपरिया खैर, तमाल, छपारी, भोजपत्र, मेढ़ासिङ्गी, तिनिस, चन्दन, लाल चन्दन, सीसों, सिरस, पियाशाल, धव, अर्जुन, सागवान, करञ्ज, डहर करञ्ज, लताशाल, अगर और कालिया काष्ठ,—इन सबको "शालसारादि गण" कहते हैं। इनसे कोढ़, प्रमेह, पाण्डु, कफ और मेद रोग नाश होते हैं।

कफज प्रमेहों की चिकित्सा ।

उदकमेह

(१) उदक-प्रमेहमें दो तोले नीमकी अन्तर छाल लाकर, एक मिट्टी की हाँड़ी में, एक पाव जल डालकर, पकाओ। जब आधा या चौथाई पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो और शीतल होने पर, काढ़े में १ तोले "शहद" मिलाकर पीनाओ। अगर गरमी जान पड़े, तो नीम की दो तोले छाल को कुचल-कर, १ पाव पानी में भिगो दो, और रात को खुली छतपर रख दो। सवेरे ही मल-छानकर और "शहद" मिलाकर पी लो। इस तरह दोनों समय—सवेरे-शाम—इस काढ़े या हिम के पीने से "उदक प्रमेह" नाश हो जाता है; पर कम-से-कम ४० दिन पीना ज़रूरी है।

(२) धाय के फूल, अर्जुन वृक्ष की छाल, साल वृक्ष की छाल और सफेद चन्दन,—इन चारों को दो तोले लेकर, ऊपर की विधि से काढ़ा बनाकर और "शहद" मिलाकर पीने से "उदक प्रमेह" चला जाता है। अगर दवा खुश्की लावे, तो काढ़ा न बनाकर, ऊपर की विधि से "हिम" बनाकर और शहद मिलाकर पीना चाहिये। परीक्षित है।

(३) पारिजात के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से उदक प्रमेह नाश हो जाता है ।

(४) हरड़, कायफल, नागरमोथा और लोध के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से उदक प्रमेह नाश हो जाता है ।

इक्षु प्रमेह

(५) अरणी के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने या हिम बनाकर पीने से इक्षु प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(६) पाढ़, बायबिडङ्ग, अर्जुन की छाल और धमासे के काढ़े में "शहद" डालकर पीने से इक्षु प्रमेह नाश हो जाता है ।

सुरा प्रमेह

(७) नीम की अन्तरछाल के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने या हिम में "शहद" मिलाकर पीने से सुरा प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(८) कदम्ब की छाल, शाल वृक्ष की छाल, अर्जुन वृक्ष की छाल और अजवायन के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से सुरा प्रमेह नाश हो जाता है ।

(९) सेमल के पेड़ की छाल का काढ़ा पीने से सुरा प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

सान्द्र प्रमेह

(१०) सातला की जड़ की छाल का काढ़ा ४० दिन तक पीने से सान्द्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(११) हल्दी और दारूहल्दी के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से सान्द्रमेह जाता रहता है।

(१२) हल्दी, दारूहल्दी, तगर और वायविडङ्ग के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से सान्द्रमेह जाता रहता है।

पिष्ठ प्रमेह

(१३) हल्दी और दारूहल्दी का काढ़ा पीने से पेशाब में पिसान आना बन्द हो जाता है। पिसान आना बन्द हो जाने पर, कोई बढ़िया दवा देनी चाहिये। लेकिन जब तक चाँवल-धुला पानी सा आना बन्द न हो जाय, यही काढ़ा देना चाहिए। परीक्षित है।

(१४) अगर के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से पिष्ठमेह नाश हो जाता है।

(१५) दारूहल्दी, वायविडङ्ग, खैरसार और धौ के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से पिष्ठ प्रमेह नाश हो जाता है।

(१६) अडूसे का स्वरस १ तोले, गिलोय का स्वरस १ तोले और शहद १ तोले—सबको एकत्र मिलाकर सेवन करने से चाँवलों के धोवन-जैसा पेशाब का होना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) फुलाई हुई फिटकरी ६ माशे, एक केले की गहर में मिलाकर खाने से, २१ दिन में, असाध्य सफेद प्रमेह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

शुक्र मेह

(१८) शुक्रमेही को सफेद दूब की जड़, शैवाल और करंज की गिरी का काढ़ा या हिम पीना हितकर है। परीक्षित है।

(१९) देवदारू, कूट, अगर और चन्दन के काढ़े में "शहद" डालकर पीने से शुक्रमेह नाश होता है ।

(२०) सफेद दूब, कसेरू, दुर्गन्ध करंज की गिरी, कायफल, नागरमोथा और शैवाल या सिवार का काढ़ा पीने से शुक्रमेह नाश होता है ।

(२१) सफेद गुलबाँस की गाँठ, गाय के दूध में घिसकर, ७ दिन पीने से शुक्रमेह या पेशाब में मिलकर धातु का गिरना आराम होता है ।

(२२) सफेद सेमल के छोटे से कन्द का चूर्ण "मिश्री" मिलाकर खाने से शुक्रमेह या वीर्यपतन नाश होता है ।

नोट—सेमल की छाल के चूर्ण में मिश्री मिलाकर फाँकने और गरम जल पीने से "मूत्रकृच्छ्र" आराम होता है ।

(२३) बाग़ की कपास के दो तीन पत्ते रोज़ मिश्री मिलाकर, सवेरे ही खाने से शुक्रमेह—मूत्र के साथ वीर्य गिरना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

(२४) सफेद सेमल की छाल २ तोले को गाय के दूध में पीस लो और उसमें १ या २ माशे सफ़ेद ज़ीरा तथा १ तोले मिश्री मिलाकर, सवेरे-शाम, १४ दिन, पीनेसे "पेशाब के साथ वीर्य जाना या शक्कर जाना" आराम होता है । परीक्षित है ।

(२५) कायफल की छाल और नारियल का रस मिलाकर, ७ दिन, पीने से "धातुप्रमेह" नाश हो जाता है

सिकता मेह

(२६) चीते की जड़ की छाल के काढ़े में "शहद" डालकर पीने से सिकतामेह आराम हो जाता है । अगर गरमी मालूम हो, तो

"हिम" पीना चाहिए; यानी रात को चौता भिगोकर, सवेरे मल-छानकर "शहद" मिलाकर पीना चाहिए। परीक्षित है।

(२७) दारुहल्दी, अरणी, त्रिफला और पाढ़ के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से भी सिकतामेह नाश हो जाता है।

नोट—दवा देने से पहले सिकतामेह है या शर्करा रोग है, इसका निश्चय कर लेना ज़रूरी है। सिकतामेह में पेशाब के साथ सफेद बालू सी आती है, पर शर्करा में लाल बालू आती है। अगर शर्करा हो, तो पेठे के रस में हींग और जवाखार मिलाकर सेवन करने से शर्करा रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है। इस नुसखे से "पथरी रोग" भी जाता रहता है।

शीत मेह

(२८) शीतमेह में पाढ़ी और अगर का काढ़ा या हिम "शहद" मिलाकर पीने से अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(२९) पाढ़ी, चुरनहार और गोखरू के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से भी लाभ होता है।

नोट—सुश्रुत में शीत प्रमेह की जगह "लवणमेह" लिखा है।

शनैर्मेह

खैर के पेड़ की छाल का काढ़ा या हिम "शहद" मिलाकर पीने से शनैर्मेह मिट जाता है। परीक्षित है।

(३०) अजवायन, खस, हरड़ और गिलोय, के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने या इन्हीं के हिम में "शहद" मिलाकर पीने से शनैर्मेह आराम हो जाता है।

लाला मेह।

(३१) लालामेही को त्रिफले का काढ़ा या हिम "शहद" मिलाकर पीने से लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—लालामेह को ही 'फेन प्रमेह" कहते हैं। दोनों के एक ही लक्षण और एक ही दवा है।

(३२) त्रिफला, अमलतास और दाख—इनके काढ़े में "शहद" मिलाकर पीनेसे लाला-प्रमेह या फेन प्रमेह आराम होता है। परीक्षित है।

(३३) जामुन की छाल, आमले, चीतेकी छाल और सतौना के काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीने से लाला-मेह नष्ट होता है।

नोट—कफज प्रमेह दस प्रकार के होते हैं। इनके जितने नुसखे लिखे हैं, उन में जवान के लिए ,काढ़े की दवायें, चाहे एक हो चाहें चार या छः—मिलाकर दो तोले लेनी चाहियें। १ पाव पानी में काढ़ा औटाकर, आधा या चौथाई रहने पर उतार लेना चाहिये और शीतल होने पर, शहद ३ माशे से १ तोले तक मिला-कर पीना चाहिये। काढ़ा, बिना ढकना दिये, मिट्टी की हाँडी में औटाना चाहिये। अगर रोगी का मिज़ाज गरम हो, काढ़ा खुश्की लावे; तो काढ़े की दवाओं को शीतल जल में, रात को, भिगोकर, सवेरे ही मल-छान कर, मिश्री मिलाकर, पीना चाहिये। सभी नुसखों में कमो-वेश "शहद" जरूर मिला लेना चाहिये।

कफ के प्रमेह दस होते हैं, उन दसों की चिकित्सा हम ने अलग-अलग लिखी है। यदि यह मालूम हो जाय, कि यह कफज प्रमेह है, पर यह न मालूम पड़े कि, दस कफज प्रमेहों में से यह अमुक प्रमेह है; जैसे उदक मेह है, शीत मेह है, शनैः मेह है इत्यादि ' उस दशा में, कफजप्र मेहों की "सामान्य चिकित्सा" कर-ने में कोई ऐब या दोष नहीं। अगर प्रमेह ठीक कफज होगा; यानी दसों में से कोई एक होगा, तो सामान्य चिकित्सा से अवश्य लाभ होगा। हाँ, यदि अनाड़ी-पन से पित्तज प्रमेह को कफज समझ कर इलाज किया जायगा, तो आराम होने के बजाय बीमारी बढ़ेगी। सारांश यह, पहले देखो कि प्रमेह रोग है कि नहीं। अगर देखो कि प्रमेह है, तब इस बात की जाँच करो कि, प्रमेह कफ का है या पित्त का अथवा वातका। अगर मालूम हो, कि कफज है, तो पता लगाओ, कि दसों में से कौनसा है। जब मालूम हो जाय, कि अमुक है, तब उसी की दवा दो। अगर ठीक पता न लगे, पर कफज प्रमेह होनेमें सन्देह न हो, तो आगे लिखे नुसखे काम में लाओ :—

कफज प्रमेहों की सामान्य चिकित्सा ।

(३४) त्रिफला, दारुहल्दी और नागरमोथा—इन तीनों के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से कफ के सब प्रमेह आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—त्रिफला जब लो, तब हरड़ १ भाग, बहेड़ा २ भाग और आँवले ४ भाग लो । इस तरह काढ़ा मूत्राशय में गरमी नहीं करता ।

(३५) नागरमोथा, हरड़, लोध और कायफल बराबर-बराबर, ६।६ माशे लेकर, एक पाव पानी में काढ़ा बनाओ । जब आधा पानी रह जाय, छान कर शीतल कर लो और १ तोला "शहद" मिलाकर पीलो । इस नुसखे से "१मास में" कफ के दसों प्रमेह नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

पित्तज प्रमेह-चिकित्सा ।

क्षार मेह

(३६) क्षार-मेह वाले को त्रिफला का "हिम" पीना हितकर है । परीक्षित है ।

(३७) पाढ़ के काढ़े में "शहद" डालकर पीने से भी क्षार-प्रमेह आराम होता है । अगर काढ़ा गरमी करे, तो "हिम" देना चाहिये ।

नोट—पित्तज प्रमेहों में "हिम" अधिक फायदा करता है । दवा को रात को भिगो कर, सवेरे ही मल-छान कर और उसमें शहद ३ माशे या ६ माशे मिलाकर पीना चाहिये । इसी को "हिम" कहते हैं ।

नील प्रमेह

(३८) पीपल के पेड़ की छाल का काढ़ा या हिम "मधु" मिलाकर पीने से नील-प्रमेह आराम होता है । परीक्षित है ।

(३९) पीपल वृक्ष का पञ्चाङ्ग, पीस-कूट कर चूर्ण बनालो। इस चूर्ण में से ६ माशे चूर्ण, गाय के दूध के साथ, पीने से नील प्रमेह आराम होता है। परीक्षित है।

(४०) हरड़, आमले, खस और नागरमोथा इन चारों के काढ़े या हिम में "शहद" मिलाकर पीने से नील प्रमेह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

काल प्रमेह ।

(४१) नीमकी अतर छाल, परवल के पत्ते और शाखा, आमले और गिलोय, इन चारों के काढ़े या हिम में "मिश्री" मिलाकर पीनेसे काल प्रमेह आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इस में "शहद" भी मिला सकते हैं। इस नुसखे को, दोनों समय, ४० दिन तक सेवन करना चाहिये।

हरिद्र प्रमेह ।

(४२) मोथा, हरड़, पद्माख और इन्द्रजौ, इन चारों का काढ़ा या हिम पीने से हारिद्र प्रमेह आराम हो जाता है।

(४३) पठानी लोध, सुगन्धवाला, सफेद चन्दन और धव के फूल, इन चारों का काढ़ा या हिम भी हरिद्र-प्रमेह को नाश करता है।

नोट(१)—ऊपर के दोनों नुसखे परीक्षित हैं। अगर हारिद्र मेही को दस्त साफ न होता हो, तो पहले "अमलताश का काढ़ा" पिलाकर दस्त करा देने चाहिएं, तब उपरोक्त काढ़ों में से कोई सा देना चाहिये।

नोट(२)—हारीत ने एक 'पीत प्रमेह' लिखा है। उसके लिये उन्होंने नील कमल, खस, हरड़, आमले और नागरमोथा—इनका काढ़ा "शहद" मिलाकर पीने को लिखा है। उन्होंने पीत प्रमेह के लक्षण नहीं लिखे, पर जान पड़ता है "हारिद्र" और "पीत प्रमेह" एक ही हैं।

ईसबगोल १ पाव सांझ को भिगो दो; सवेरे ही उसमें एक "नीबू" निचोड़ो और १॥ तोले "मिश्री" डालकर पीजाओ। इससे १५ दिन में पीला प्रमेह चला जाता है।

माञ्जिष्ठ प्रमेह।

(४४) नीमकी छाल, अरजुन वृक्ष की छाल और कमलगट्टे की गिरी—इन तीन का काढ़ा या हिम माञ्जिष्ठ-प्रमेह को आराम करता है।

(४५) कबाबचीनी या शीतल मिर्च को महीन पीस-कूट कर छान लो और बराबर की "मिश्री" मिला दो। इस चूर्ण की मात्रा ४ माशे की है। दिन में तीन चार बार फाँक कर, ऊपर से जल पीने से माञ्जिष्ठ प्रमेह और बहुधा छहों पित्त के प्रमेहों में बड़ा उपकार होता है। अगर यह नुसखा इन छहों प्रमेहों में पहले कुछ दिन सेवन कराया जाय, तो बड़ा लाभ हो। परीक्षित है।

नोट—माञ्जिष्ठ प्रमेह और रक्त प्रमेह में गरमी का ज़ोर बहुत होता है; रोगी घबरा जाता है। ऐसी हालत में पहले शीतलचीनी का चूर्ण तीन-तीन माशे, दो-दो घण्टों पर फँकाकर, एक गिलास जल पिलाना चाहिये। इन प्रमेहों में या पित्त के सभी प्रमेहों में ५।७ दिन इस चूर्ण के सेवन करने के बाद, दूसरा नुसखा देने से खूब जल्दी लाभ होता है। जब पेशाब साफ होने लगे, तब कोई धातु रोग नाशक, धातु वर्द्धक दवा खिलानी चाहिए, जो हमने इस पुस्तकके नपुंसक-अध्याय में आगे लिखी हैं।

रक्त-प्रमेह।

(४६) प्रियंगू के फूल, लाल कमल के फूल, नीलकमल के फूल, और ढाक के फूल—इन चारों के काढ़े या हिम में "मिश्री" मिला कर पिलाने से अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—रक्त प्रमह में शीतल चीनी दस पाँच दिन फाँककर, तब दूसरी दवा खाने से खूब जल्दी लाभ होता है। रोगी को आराम होने का विश्वास हो जाता है। उसके दिल-दिमाग की गरमी निकल जाती है। पीछे, माञ्जिष्ठ प्रमेह में, जो कवाबचीनी का नुसखा लिख आये हैं, वह रक्त प्रमेह में बहुत ही अच्छा है।

(४७) लिहमीढ़ों का काढ़ा भी रक्त-प्रमेह में बड़ा गुण दिखाता है।

(४८) जसवन्ती और ककाही, दोनों, की तोले-तोले भर पत्तियों को सिल पर पीस कर, तीन तोले "मिश्री" मिला लो और छान कर पीलो। इस तरह करने से २१ दिन में लाल-प्रमेह चला जाता है।

पित्तज प्रमेहों की सामान्य चिकित्सा।

(४९) परवल, नीम की छाल, आँवले और गिलोय,—इनका काढ़ा पित्तज प्रमेह नाशक है। परीक्षित है।

नोट—शहद तीन माशे से ६ माशे तक मिला लेना चाहिये अथवा मिश्री जैसी जरूरत हो। सब दवाएँ ६—६ माशे लेनी चाहियें ; कुल मिलाकर २ या २॥ तोले।

(५०) खस, लोध, अर्जुन की छाल और सफेद चन्दन के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से पित्तज प्रमेह आराम होते हैं।

(५१) खस, नागरमोथा, मुलेठी और हरड़ के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से पित्तज प्रमेह आराम होते हैं।

(५२) लोध, आमाहल्दी, दारूहल्दी और धाय के फूल के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तज प्रमेह आराम हो जाते हैं।

(५३) सोंठ, अर्जुन की छाल, सौंफ और कमल के काढ़े में "शहद" मिला कर देने से पित्तज प्रमेह शान्त हो जाते हैं।

(५४) सिरस की छाल, धनियां, अर्जुन की छाल और नागकेसर के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तज प्रमेह आराम हो जाते हैं।

(५५) फूल प्रियंगू, लाल कमल, नील कमल और ढाक के फूलों के काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से पित्तज प्रमेह आराम हो जाते हैं।

नोट—यह नुसखा सभी पित्तज प्रमेह नाश करता है ; पर छठे रक्त प्रमेह को तो एकदम आराम करता है।

(५६) आमलों के चार तोले स्वरस में, १ माशे "हल्दी" और ६ माशे "शहद" मिलाकर पीने से सभी प्रमेह—बीसों प्रमेह—आराम हो जाते हैं, पर पित्तज प्रमेहों के नाश होने में तो ज़रा भी शक नहीं। परीक्षित है।

गिलोय के दो तोले स्वरस में ६ माशे "शहद" मिलाकर, दोनों समय, पीने से वात और पित्त के प्रमेह निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

नोट—ये नुसखे प्रायः ६० दिन सेवन करने से पूर्ण रूप से रोग नाश कर देते हैं। गिलोय के स्वरस और आमले के स्वरस वाले ये दोनों नुसखे सभी प्रमेहों पर अच्छे हैं, पर पित्तज प्रमेहों में तो शायद कभी ही फेल होते हों। गरीब लोगों को, प्रमेह होनेपर, इन दोनों में से कोई नुसखा ३—४ मास तक सेवन करना चाहिये।

(५७) धनिया, जीरा और स्याह जीरा—इन तीनों को कूट-पीस-छान कर चूर्ण बनालो। इस चूर्ण से पित्तज प्रमेह नाश हो जाते हैं। मात्रा ६ माशे की है।

(५८) गुलाब के ताज़ा फूल पाँच नग में, तीन माशे "मिश्री" मिलाकर खाने और ऊपर से गाय का दूध पीने से दस्त साफ होता, पेशाब की जलन मिटती, पीलापन जाता, प्रदर रोग नाश होता, धातु का विकार शान्त होता, खूनी बवासीर और पित्त के विकार मिटते हैं। परीक्षित है।

(५९) वायविडंग, दारूहल्दी, धाय के फूल, सोनापाठा, नील-कमल, इलायची छोटी, पेठा और अर्जुन की छाल—इस काढ़े में "शहद" मिलाकर पीने से पित्त के प्रमेह इस तरह नष्ट होते हैं ; जिस तरह वज्र से पर्वत नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

मिश्रित चिकित्सा

मधुमेह ।

(६०) पपरिया कत्था, खैर, और सुपारी का काढ़ा मधुमेह* को नाश करता है ।

वसा मेह ।

(६१) अरनी का काढ़ा पीने से वसामेह शान्त हो जाता है ।

हस्ति प्रमेह ।

(६२) पाढ़, सिरस की छाल, जवासा, मूर्वा, तेंदू, ढाक के फूल और कैथा—इनका काढ़ा हस्ति प्रमेह को नाश करता है ।

नोट—वृन्द वैद्यक में "जवासे" की जगह "कौंच" या दुःस्पर्शा लिखा है ।

घृत प्रमेह ।

(६३) गिलोय और चीते की छाल का काढ़ा घृत प्रमेह को नाश करता है ।

(६४) पाढ़, कुड़े की छाल, हींग, कुटकी और कूट के चूर्ण से घृत प्रमेह नाश होता है ।

---

*सभी प्रकार के प्रमेह, बहुत दिनों तक इलाज न होनेसे "मधुमेह" हो जाते हैं। मधुमेह में पेशाब मधु—शहद की तरह गाढ़ा, मीठा, पिङ्गल वर्ण और लिबलिबा होता है । रोगीका शरीर भी मीठा हो जाता है । मधुमेह में जिस दोषकी अधिकता रहती है, उसी दोष के लक्षण देखने में आते हैं । चिकित्सामें देर होनेसे पिड़िकायें पैदा हो जाती हैं । यों तो सभी प्रमेह कष्टसाध्य होते हैं; पर मधुमेह और पिड़िका मेह तथा माता-पिता के दोष से हुए प्रमेह असाध्य होते हैं । मधुमेह में जौकी रोटी, गरम करके रक्खा हुआ शीतल जल, घोड़े हाथी की सवारी, कसरत; पैदल घूमना, मूँग, मसूर या चने की दाल का रस, कच्चा केला, परवल, मक्खन-निकाला दूध, आमले, कागजी नीबू, पका केला, जामुन और कसेरू आदि पथ्य या हितकर हैं ।

नपुंसकता और धातुरोग

हस्त मैथुन का नतीजा।

यों तो इस जगत् में सदा-सर्वदासे मर्द और नामर्द दोनोंही होते चले आये हैं, पर आजकल जिस तरह नामर्दों की बहुतायत है, उस तरह पहले न थी। क्योंकि पहले के लोग संसारप्रवेश करने या गृहस्थी में क़दम रखने से पहले पूर्ण ब्रह्मचर्य्य व्रत का पालन करते और आयुर्वेद-विद्या या शरीर-सम्बन्धी विद्या को पढ़-समझकर ही विवाह-शादी करते थे। आजकल तो जिसे देखो वही टके कमाने की विद्या में लगा हुआ है। जिस शरीर से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है, जिस शरीर से टका कमाया जाता है, उस शरीर की रक्षा की विद्या को कोई नहीं पढ़ता। यही वजह है कि, लोग अनजान होने के कारण, नाना प्रकार के प्रकृति-विरुद्ध, नियम-विरुद्ध या शास्त्र-विरुद्ध कर्म कर-करके, अपने शरीर, पुंसत्व और अपनी आयु का नाश करके, छोटी उम्र में ही, कालके गाल में समा जाते हैं।

आज-कल सृष्टि के नियमों के विपरीत हस्त-मैथुन, गुदामैथुन और अयोनि मैथुन प्रभृति की बहुत चाल हो गई है। इन कुकर्मों के कारण से ही, आज प्रायः पचीस फी सदी भारतवासी बल-वीर्य-हीन नपुंसक हो रहे हैं। प्रायः ८० फी सदी भारतीय प्रमेह-

राक्षस के पञ्जेमें फँसे हुए, अपनी ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं। बहुत क्या—इन सृष्टि-नियम-विरुद्ध सत्यानाशी चालोंने इस देशको बिल्कुल बेकाम कर दिया है। नीचे हम केवल हस्त-मैथुन या हथरस के सम्बन्धमें दो चार बातें कहना चाहते हैं। पाठक देखें, कि उससे क्या-क्या हानियाँ होती हैं:—

सृष्टि-नियमोंके विपरीत—क़ानून क़ुदरत के ख़िलाफ़ अथवा नेचर के क़ायदोंके विरुद्ध आनन्दकारक असर पैदा करने लिये—मज़ा उठाने के लिये, बेवक़ूफ़ और नादान लोग, नीचों की सुहबत में पड़ कर, शिश्न या लिङ्गेन्द्रिय को हाथसे पकड़ कर हिलाते या रगड़ते हैं, उससे थोड़ी देरमें एक प्रकार का आनन्दसा आकर वीर्य निकल जाता है,—इसीको "हस्तमैथुन" या "हथरस" कहते हैं। अँगरेज़ी में इसे मास्टर बेशन, सेल्फ़पोल्यूशन, डेथ डोलिङ्ग, हैल्थ डिस्ट्रॉइङ्ग प्रभृति कहते हैं। इस सत्यानाशी क्रियाके करने वाले का शरीर कमज़ोर हो जाता है, चेहरे की रौनक़ मारी जाती है, मिज़ाज चिरचिरा हो जाता है, सूरत-शकल बिगड़ जाती है, आँखें बैठ जाती हैं, मुँह लम्बा सा हो जाता है और दृष्टि नीचे की ओर रहती है। इस कामके करने वाला सदा चिन्तित और भयभीत सा रहता है; उसकी छाती कमज़ोर हो जाती है; दिल और दिमाग़ में ताक़त नहीं रहती; नींद कम आती है; ज़रासी बातसे घबरा उठता है; रातको बुरे बुरे स्वप्न आते हैं और हाथ पैर शीतल रहते हैं। यह तो पहले दर्जे की बात है। अगर इस समय भी यह बुरी आदत नहीं छोड़ी जाती, तो नसें खिंचने और तनने तथा सुकड़ने लगती हैं। पीछे मृगी या उन्माद आदि मानसिक रोग हो जाते हैं। इनके अलावः स्मरण-शक्ति या याद्दाश्त कम हो जाती है, बातें याद नहीं रहतीं, शरीरमें तेज़ी और फ़ुरती नहीं रहती, काम-धन्धे को दिल नहीं चाहता, उत्साह नहीं होता, मन चञ्चल रहता है, बात-बातमें वहम होने लगता है, दिमाग़ी काम तो हो ही नहीं सकते, पेशाब करने की इच्छा बार-

स्राव होती है और पेशाबके समय कुछ दर्द भी होता है, लिङ्गका मुँह लाल-सा हो जाता है, बारम्बार वीर्य गिरता है और पानी की तरह गिरता रहता है, स्वप्न-दोष होते हैं, फोतों में भारीपनसा जान पड़ता है। इसके बाद, धातु-सम्बन्धी औरभी अनेक भयङ्कर रोग हो जाते हैं। इस तरह हथरस करने वाला, अपने दुर्भाग्य से, पुरुषत्वहीन—नामर्द हो जाता है। इस कुटेव में फँसने वाले जवानीमें ही बूढ़े हो जाते हैं। उठते हुए लड़कों की बढ़वार रुक जाती है, शरीर की वृद्धि और विकाशमें रुकावट हो जाती है, आँखें बैठ जाती हैं, उनके इर्द-गिर्द काले चक्कर से बन जाते हैं, नज़र कमज़ोर हो जाती है, बाल गिर जाते हैं, गञ्ज हो जाती है, पीठके बाँसे और कमरमें दर्द होने लगता है, और बिना सहारे बैठा नहीं जाता इत्यादि। इन बुराइयों के सिवा जननेन्द्रिय या लिङ्गेन्द्रिय निर्बल हो जाती है, उसकी सिधाई नष्ट हो जाती है, बाँकापन या टेढ़ापन आ-जाता है, शिथिलता या ढीलापन होजाता है तथा स्त्री-सहवास की इच्छा नहीं होती। होती भी है, तो शीघ्र ही शिथिलता हो जाती है अथवा शीघ्रही वीर्यपात होजाता है। कहाँ तक लिखें, इस एक कुचा-लमें अनन्त दोष हैं। नामर्दी के जितने मुख्य-मुख्य कारण है, उनमें हथरस और गुदा-मैथुन सर्वोपरि हैं। इन या ऐसी ही और कुटेवों के कारण, आज भारत के करोड़ों वर सन्तान-हीन होगये हैं, स्त्रियाँ व्यभिचारिणी और कुलटा हो गईं और हो रही हैं। अत: हम इस अध्यायमें "क्लीवता" "नामर्दी" या "नपुंसकत्व" और "धा-तुरोग"के निदान, लक्षण और चिकित्सा खूब समझा-समझाकर विस्तारसे लिखते हैं। आशा है, हमारे भारतीय भाई, हमारे इस परिश्रमसे लाभान्वित होकर, हमारी मिहनतको सफल करेंगे।

नपुंसकके सामान्य लक्षण।

(नामर्दकी मामूली पहचान)

जिस पुरुषके प्यारी और वशीभूत स्त्री हो, पर वह उससे नित्य

मैथुन न कर सके। अगर कभी करे भी, तो साँस चलने के मारे घबरा जाय, शरीर पसीने-पसीने हो जाय, इच्छा पूरी न हो, चेष्टा व्यर्थ जाय, लिंग ढीला और बीजरहित् हो,—जिस पुरुषमें ऐसे लक्षण हों, वह नपुंसक या नामर्द है। दूसरे शब्दोंमें यों समझिये कि, जो पुरुष अपनी मन-चाही, प्यारी और वशीभूत स्त्रीसे रोज़ मैथुन न कर सके, अगर कभी करे तो पसीनोंसे तर हो जाय, हाँपने लगे, जननेन्द्रिय या लिंग तैयार न हो, चेष्टा करने से भी सफलता न हो,—वह मर्द कहने भर का मर्द है, वास्तवमें "नामर्द" है।

पुंसत्व और नपुंसकत्वका एकमात्र कारण वीर्य्य।

नपुंसकता किसे कहते हैं ?

यों तो नपुंसकता या नामर्दीके बहुत से कारण हैं, पर असली कारण "वीर्य" है। "चरक"में लिखा है—"नपुंसकता केवल वीर्य-दोष से होती है। वीर्य-दोषसे पुरुष नपुंसक हो जाता है और वीर्य की शुद्धिसे उसकी शुद्धि हो जाती है; यानी वीर्यके शुद्ध और निर्दोष होनेपर पुरुष पुरुष हो जाता है; अर्थात् मैथुन करनेमें समर्थ हो जाता है। "भावप्रकाश"में लिखा है:—

क्लीवः स्यात्सुरताशक्तस्तद्भावः क्लैव्यमुच्यते।
तच्च सप्तविधं प्रोक्तं : निदानं तस्य कथ्यते॥

जो पुरुष स्त्रीके साथ मैथुन नहीं कर सकता, उसे "क्लीव"—नपुंसक या हिंजड़ा कहते हैं। क्लीवके भाव या धर्मको क्लैव्य या नामर्दी कहते हैं। यह क्लीवता या नामर्दी सात तरहकी होती है:—

सात प्रकार की नामर्दी।

(१) मानसिक क्लैव्य—मन-सम्बन्धी नामर्दी।

(२) पित्तज क्लैव्य—पित्त बढ़नेकी वजह से हुई नामर्दी।
(३) वीर्यजन्य क्लैव्य—वीर्यके कारणसे हुई नामर्दी।
(४) रोगजन्य क्लैव्य—रोगकी वजहसे हुई नामर्दी।
(५ (शिराछेदजन्य क्लैव्य—वीर्य वाहिनी नसोंके छिदने से हुई नामर्दी।
(६) शुक्रस्तम्भजन्य क्लैव्य—मैथुन न करने से हुई नामर्दी।
(७) सहज क्लैव्य—जन्मकी या पैदायशी नामर्दी।

(१) मानसिक क्लैव्य* ।

(मनकी नामर्दी)

मैथुन करने वाले पुरुषका मन जब भय, शोक अथवा क्रोध आदि दुःखदायी विकारोंसे बिगड़ जाता है, अथवा जिस स्त्री को पुरुष नहीं चाहता, उसके साथ मैथुन करता है, तब उसका शिश्न या लिङ्ग गिर जाता है—ढीला हो जाता है,—ऐसी क्लीवता या नामर्दीको "मानसिक क्लैव्य" या मनसे सम्बन्ध रखने वाली नामर्दी कहते हैं।

हिकमतके ग्रन्थोंमें भी लिखा है:—"अगर दिलमें किसी प्रकारका भय या बुराई बैठ जाय अथवा स्त्रीके पास जाने वाला पुरुष मनमें पहले ही से ऐसे विचार करे कि, मैं उससे कुछ भी न कर सकूँगा अथवा शर्मा जावे—तो चैतन्यता नहीं होती—शिश्नमें तेज़ी और सख़्ती नहीं आती। दिलमें जब बुरे विचार उठ आते हैं अथवा भय लगता है, तब अक्सर ऐसा ही हुआ करता है; चाहे शरीर पूर्णतया निरोगही क्यों न हो, चाहे वीर्यकी अधिकता ही क्यों न हो। बहुतसे पुरुषोंका स्वभाव एक ही स्त्री से सहवास करने का होता है। जब कभी वे उस स्त्री को छोड़कर, दूसरी के पास जाते हैं,

*क्लीव और नपुंसक शब्द संस्कृत के हैं। इनका अर्थ बोल-चाल की भाषा में "नामर्द या मुखन्नस" है। क्लैव्य और नपुंसकत्व दोनों भाववाचक शब्द हैं। स्त्री से मैथुन न कर सकना—क्लैव्य, नपुंसकत्व, नपुंसकता या नामर्दी है

तब उनकी कामेच्छा नहीं होती, उनका शिश्न तैयार नहीं होता। बहुत करके वह स्त्री कँवारी और युवती हो, तब तो ऐसा अवश्य ही होता है। क्योंकि मूढ़ आदमी डर जाता है और भयके कारण उसके मनमें अरुचि उत्पन्न हो जाती है ; और इसी से उसे प्रसंगेच्छा नहीं होती। क्योंकि भय, शोक, लज्जा प्रभृति सुस्तीके ज़बर्दस्त कारण हैं। अगर पुरुष संभोगके समय भय और लज्जा न रक्खे, दिलमें हिम्मत रक्खे, तो उसे नदामत न उठानी पड़े—लज्जित न होना पड़े।

अनेक बार जब किसी मुँहफट, बेहया, बूढ़ी, ज़बर्दस्त या दुष्टा स्त्रीसे प्रसङ्ग का काम पड़ जाता है, तब ये स्त्रियाँ ऐसी बातें कह देती हैं, जिनसे अच्छे वीर्यवान पुरुष के दिलमें भी, अपने पुरुषत्व के सम्बन्धमें, शङ्का हो जाती है, वह अपने तईं नामर्द समझने लगता है ; और उसका अपने तईं नामर्द समझना या उन स्त्रियोंकी बातोंका उसके मन पर प्रभाव पड़ना ही, उसे सच्चा नामर्द बना भी देता है; यानी वह, सब तरह से सच्चा मर्द होने पर भी, नामर्द हो जाता है। ऐसी बातों का दिल पर असर होने से, जब कभी वह प्रसङ्ग को तैयार होता है, उसे वही बातें याद आजाती हैं। फलाँ स्त्री ने यह कहा था कि; 'तुम तो किसी कामके नहीं हो, तुमसे कुछ भी नहीं हो सकता।' ऐसा ख़याल होते ही, फिर प्रसङ्ग के लिए शिश्न तैयार नहीं होता। लजा जाने, रञ्जीदा होने, भयभीत होने या चिन्ता-मग्न होने पर, जो मैथुन करने बैठते हैं, उनके मन पर लज्जा और शोकादि का बोझा पड़ने से चैतन्यता होती ही नहीं; अगर होती भी है, तो नहीं के समान। ऐसी अवस्थामें, मूर्ख लोग यह तो नहीं समझते कि, हमें जिस वक़्त किसी तरह का भय हो, लज्जा हो या चिन्ता हो, मैथुन न करना चाहिए। वे ऐसी हालत में भी मैथुन करते हैं और सफल न होने पर, अपने तईं नामर्द मान लेते हैं। इस मान लेने का परिणाम, उन्हें सदा—जब तक उनका वहम चला नहीं जाता—नामर्द ही बनाये रखता है। जब-जब वह मैथुन करते हैं, तभी-तभी उन्हें अपनी

नामर्दी का ध्यान हो आता है, और फिर वह नामर्दों का सा ही काम करने लगते हैं ।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है—"जिस तरह हो सके, पुरुष अपने विचारों को ठीक करे और दिल-दिमाग़ को ताक़तवर बनाने की चेष्टा करे, क्योंकि अगर दिल और दिमाग़ ही बलवान होंगे, तो फिर ऐसी बोदी बातें क्यों मनमें बैठेंगी और यह दिलकी नामर्दी क्यों पैदा होगी ?"

वैद्यको चाहिये, कि ऐसे नामर्द का इलाज हाथमें लेते ही उससे पूछले—"क्यों जी ! स्त्री से अलग रहने या सोनेकी हालत में तो तुमको तेज़ी होती है न ? स्त्री-प्रसङ्ग की इच्छा होती है न ?" क्योंकि मानसिक क्लीव को स्त्रीसे अलग रहने की हालतमें चैतन्यता अवश्य होती है ; पर औरत के सामने आते ही, वह निकम्मा हो जाता है, उसे चैतन्यता नहीं होती । स्त्री और उस पुरुष दोनोंके ही हज़ार कोशिश करने पर भी, चैतन्यता नहीं होती । वैद्यको जब इस बातका निश्चय हो जाय, कि यह रोगी "मानसिक क्लीव" है—मनका नामर्द है, असल में नामर्द नहीं—तब उसको नब्ज़-नाड़ी आदि देखकर, उससे कहना चाहिये कि भाई, तुम तो पूरे मर्द हो, तुममें ज़रा भी दोष नहीं, यह सब तुम्हारे मनका वहम है । इस तरह धीरज और तसल्ली देनेके सिवा, उसे दिल-दिमाग़ और वीर्यको ताक़तवर और पुष्ट करनेवाली कोई अच्छी दवा भी दे देनी चाहिये, और साथ ही उस दवाकी लम्बी-चौड़ी तारीफ भी कर देनी चाहिये । बस, इन उपायों से मानसिक क्लीव—मनका नामर्द चङ्गा हो जायगा ।

पित्तज क्लैव्य ।

पित्त-वृद्धि की नामर्दी ।

चरपरे, खट्टे, गरम और खारी प्रभृति पित्तको बढ़ाने वाले प-

दार्थों के अत्यन्त खाने-पीने से पित्त बढ जाता है। पित्त के बढ़ने से वीर्य्य क्षय हो जाता है, और इसलिये पुरुष क्लीव या नपुंसक हो जाता है। इस तरह जो क्लीवता—नपुंसकता या नामर्दी होती है, उसे "पित्तज क्लैव्य" कहते हैं और जिसे यह नामर्दी होती है, उसे "पित्त-वृद्धि के कारण से हुआ नामर्द कहते" हैं।

जिस तरह शरीर में वीर्य्य की कमी होने से पुरुष नामर्द हो जाता है; उसी तरह वीर्य्यमें विकार या दोष होनेसे भी नामर्द हो जाता है। ऐसे नामर्दों का वीर्य्य एक-दम पानी-जैसा पतला हो जाता है। इसका कारण लिख आये हैं; फिर भी, संक्षेप में, कहे देते हैं। जो लोग लालमिर्च, खटाई, नमकीन, खारी और गरम तथा रूखे पदार्थ बहुत ही ज़ियादा खाते-पीते हैं, उनका पित्त बहुत ही बढ़ जाता या कुपित हो जाता है। फिर वह वीर्य्य पैदा करनी वाली धातुओं को ही बिगाड़ कर कमज़ोर कर देता है, जिससे नवीन वीर्य्य पैदा होने का सोता ही बन्द हो जाता है। मौजूदा वीर्य्य बेकाम हो जाता है, नया पैदा नहीं होता, इससे पुरुष नामर्द हो जाता है। अतः जिन्हें स्त्री-सुख भोगना हो, अच्छी सन्तान पैदा करनी हो, स्त्री को राज़ी रखना हो, वे लालमिर्च, खटाई, नमकीन, खारी और गरम पदार्थों से बचें। साथ ही अताइयोंकी बातोंमें आकर, धातु या वीर्य्य बढ़ाने को कच्ची-पक्की बङ्गभस्म, शीशाभस्म, लोहाभस्म आदि न खावें अथवा तेज़ी लाने को अफीम, भाँग और कुचला प्रभृतिका सेवन न करें। इन से बड़ी हानि होती है। कच्ची भस्म या अशुद्ध भस्म नाना प्रकारके रोग कर देती हैं, जिनके कारण से ज़िन्दगीही ख़राब हो जाती है। नशे की चीज़ों से क्षणिक उत्तेजना तो होती है; पर, फिर लोग जल्दी ही बिल्कुल नामर्द हो जाते हैं। अफ़ीम तो नामर्द बनाने में सब से ऊपर है; यद्यपि अफीम से वीर्य्यका स्तम्भन होता है—मैथुनमें देर लगती है, पर पीछे लगातार खाने से देर भी नहीं लगती और शिथिलता या ढीलापन बढ़ता जाता है, मैथुनेच्छा होती ही नहीं।

वैद्यजी! आपके हाथमें यदि नामर्द रोगी आवे, तो पहले यह देखो कि, वह किस तरह का नामर्द है। यदि वीर्य की कमी से नामर्द है, तो वीर्य बढ़ाने वाली दवा खिलाइये; पर साथही वीर्यकी कमीके कारण—अति मैथुन या शोक-चिन्ता आदि को भी बन्द कराइये। जब तक कारण नहीं त्यागे जायँगे, रोगी कभी आराम न होगा। यदि रोगी वीर्य-दोषसे नामर्द हुआ हो, तो वीर्य-दोषकारक अहार-विहारों से रोगीको परहेज़ करवाइये। यदि रोगी अमृत भी खाय, पर लालमिर्च, खटाई प्रभृति पित्तकारक पदार्थों को न त्यागे, तो आराम हो नहीं सकता—उसकी पित्त-कोप से हुई नामर्दी जा नहीं सकती।

वीर्य-दोष वाले नामर्दका वीर्य पानी-जैसा पतला या फटा हुआ सा रहता है। यह आदमी मैथुन करता है, तो शीघ्र ही स्खलित हो जाता है, कुछ भी आनन्द नहीं आता। किसी-किसी को चैतन्यता होती ही नहीं; और किसी को होती है, तो ज़रा देरमें ही फिर सुस्ती आजाती है—मनोरथ पूरा नहीं होता। ऐसे रोगी के चित्त पर गरमी और सुस्ती रहती है; अतः उसे गरम पदार्थों से सदा रोकना चाहिये; क्योंकि एक तो ऐसे ही उसके चित्त पर गरमी और सुस्ती रहती है और गरम पदार्थों से वह औरभी बढ़ जाती है। ऐसे रोगी को तो वीर्य को शुद्ध करने और उसे बढ़ाने वाले पदार्थ या दवाएँ देनी चाहियें। नीचे लिखे हुए नुसख़े ऐसे नपुंसकों के हक़में अच्छे हैं:—

(१) बिदारीकन्दमें बिदारीकन्दकी भावना देकर, उसे यथा-विधि खिलाओ।

(२) आमलों में आमलोंके स्वरस की ७ भावनाएँ देकर, और सुखाकर "घी शहत" के साथ खिलाओ।

(३) बिदारीकन्द और गोखरूके चूर्णमें "मिश्री" मिलाकर, तोले भर रोज़ खिलाओ।

(४) मुरब्बे के आमले चाँदी के वर्क़ लगाकर खिलाओ ।

(५) शतावरी पाक, मुरब्बा पाक या कूष्माण्ड पाक खिलाओ ।

(६) ईसबगोल की भूसी में बराबर की "मिश्री" मिलाकर, ६ से १० माशेतक, फँकाओ और ऊपर से "मिश्री-मिला दूध" पिलाओ ।

नोट—हमने ये नुसखे और अन्य नुसखे, मय बनाने और खाने की तरकीबों के, आगे लिखे हैं ।

वीर्यजन्य क्लैब्य ।

(वीर्य्य की कमी से नामर्दी ।)

जो पुरुष मैथुन तो बहुत करता है, पर वीर्यको पैदा करने वाले या बढ़ाने वाले पदार्थों अथवा बाजीकरण औषधियोंका सेवन नहीं करता, उसे मैथुनेच्छा या शहवत प्रायः नहीं होती ; क्योंकि अत्यधिक स्त्री-प्रसङ्ग करने से जो वीर्य-क्षय होता है, उसकी पूर्ति नहीं होती और बिना वीर्यके चैतन्यता हो नहीं सकती । इस तरह, वीर्यकी कमीसे, जो नामर्द हो जाता है, उसे "वीर्यजन्य क्लीव" कहते हैं ।

अल्प-वीर्य नपुंसक को चैतन्यता या शहवत तो होती है, पर बिना वीर्यपात हुए ही सुस्ती आजाती है, लिङ्ग शिथिल या ढीला हो जाता है। बाज़-बाज़ औक़ात वीर्य गिरता ही नहीं; अगर गिरता है, तो दो चार बूँद मात्र । ऐसे पुरुषसे स्त्री सन्तुष्ट नहीं होती, अतः ऐसा मर्द नामर्द ही है ।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है—"जब वीर्य कम हो जाता है, तब प्रसङ्ग की इच्छा नहीं होती ; क्योंकि चैतन्यता का कारण वीर्य है । वीर्य चौथे पचाव का फोक है । जब भोजन अवयवोंमें बँट जाता है, तब उसका फोक रगोंसे टपक-टपक कर वीर्य पैदा करता है। वीर्य वह मल है, जिसके जमने से हड्डी, झिल्ली और गजरूफ प्रभृति अवयव पैदा होते हैं । वीर्यका ख़मीर असल दिमाग़से कानके पीछेकी

दोनों रगोंमें उतर कर आता है। ये दोनों रगें भेजे से मिलकर उतरी हैं और प्रत्येक प्रधान और अप्रधान अवयव की एक शाखा इन रगोंमें आ मिली है और ये रगें फोतोंसे जा मिली हैं। ईश्वर की महिमा है कि, वह मल जो इन रगोंमें आता है, फोतों में पहुँचते ही किसी क़दर सफेद और गाढ़ा हो आता है। जिस तरह स्त्रीका ख़ून, उसकी छातियों में पहुँच कर, दूध बन जाता है; उसी तरह भोजन का सार इन रगोंमें पहुँचकर और वहाँ से फोतों में उतर कर, सफेद और गाढ़ा हो जाता है।

सभी वैद्य-हकीम कहते हैं, कि स्त्री और पुरुष दोनों में वीर्य है। वीर्यका मल कानों की पिछली नसोंसे आता है, इसका सुबूत यह है, कि जब ये दोनों कानोंके पीछे की रगें काट डाली गईं; तब पुरुषकी जनन-शक्ति जाती रही। दूसरे; इन रगोंका खून दूधके जैसा होता है। इस बातका प्रमाण, कि वीर्य प्रत्येक अवयव से टपक-टपक कर इन दोनों नसोंमें आता है,—यह है कि, इन नसों में से ज़रा सा भी दूध-जैसा खून निकालनेसे जितनी कमज़ोरी आती है, उतनी दूसरी जगह का डबल या दूना ख़ून निकालने से भी नहीं आती। मतलब यह है, कि चैतन्यता का कारण "वीर्य" है और उसकी कमी होने से चैतन्यता भी कम होती है। अगर वीर्य की कमी होती है; तो शरीर दुबला हो जाता है, देहमें बल नहीं रहता, रङ्ग पीलासा हो जाता है, भोजन की इच्छा कम होती है तथा शिश्न या लिङ्गेन्द्रिय दुर्बल और सूखी सी रहती है इत्यादि।

जो लोग मैथुन तो रात-दिन करते हैं; पर शक्ति-वर्द्धक, धातु-पौष्टिक, बाजीकरण पदार्थों के सेवन करने का नाम भी नहीं लेते, वे वीर्य-भण्डार के कम होनेसे नामर्द हो जाते हैं। बहुतसे मूर्ख, दिनमें दो दो और तीन-तीन बार, वीर्यको हस्त-मैथुन या हथरस से निकाल कर, वीर्यके फ़क़ीर हो जाते हैं। आयुर्वेद में, ७० सालकी उम्र के बाद, वीर्य का एकदम कम हो जाना लिखा है; पर आजकल तो ५०

या ६० सालकी उम्र में ही पुरुष निकम्मे और वीर्य-हीन हो जाते हैं। अगर लोग, हर शीत काल या जाड़े में, धातुवर्द्धक औषधियाँ सेवन करते रहें, तो उनका वीर्य कभी कम न हो और वे ६० साल की उम्र में भी संसार का सुख अच्छी तरह से भोगते रहें। पर, आजकल तो लोग पैसे की धुन में ऐसे मस्त रहते हैं कि, उन्हें अपने शरीरका भी ध्यान नहीं रहता। जो लोग वीर्य को खर्च तो करते हैं, पर बढ़ाते नहीं, वे शीघ्रही—असमय में ही—मर जाते हैं। सबसे बड़ी दुःख की बात यह होती है कि, अधिकांश लोग एक स्त्रीके मर जाने पर दूसरी शादी ४०।५० और ६० सालकी उम्रमें भी कर लेते हैं। शादीमें हज़ारों खर्च कर देते हैं, पर जिस वीर्य से शादी का आनन्द मिलता है, जिससे पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है, उसकी वृद्धि का उपाय नहीं करते! अभी हाल की एक आँखों-देखी घटना पाठकों को सुनाते हैंः—

हमारे पड़ौस में एक...वाड़ी सज्जन रहते हैं। आपने कोई ४५ सालकी उम्रमें दूसरी शादी की है। चौदह सालकी नई दुलहन आई है। आपने कोई पाँच छै महीने खूब चरखा चलाया। सारा सञ्चित वीर्य-भण्डार खाली कर दिया। अब वे निकम्मे होगये हैं। उनकी नव-परणीता पीन-पयोधरा, नवयौवना, नवेली छबीली दूसरों के काम आ रही है। आप उसे खान-पान और वस्त्रालङ्कारोंसे सन्तुष्ट करने के लिये, खूब धन खर्च करते हैं; पर धनसे भी कहीं स्त्री सन्तुष्ट होती है? वह जितनाही अधिक खाती-पीती है; उतनीही उसकी कामाग्नि अधिकाधिक प्रज्ज्वलित होती है। धिक्कार है! उनको जो चढ़ी उम्र में शादी करते और उनसे भी अधिक उन्हें, जो शादी तो करते हैं, पर वाजीकरण औषधियाँ सेवन नहीं करते।

ऐसे नामर्द अगर वैद्य के पास चिकित्सार्थ आवें, तो वैद्य को चाहिए, कि उन्हें स्त्री के पास जाने की सख्त मनाही करदे, और निम्न-लिखित बल-वीर्य्य बढ़ानेवाले, वायुनाशक, तर-गरम पदार्थ सेवन करने की सलाह दे:—

(१) दूध, घी, रबड़ी, मलाई, मोहनभोग आदि ।

(२) उर्द की दाल की खीर ।

(३) उर्द के लड्डू ।

(४) आम्रपाक ।

(५) असगन्धपाक ।

(६) मूसलीपाक ।

(७) बादाम का हलवा ।

(८) मलाई का हलवा ।

(९) गोखरू पाक ।

नोट—ये सब पदार्थ और पाक प्रभृति तो वीर्यजन्य नामर्दी नाश करने के लिये अच्छे हैं ही। इनके सिवा, औरभी अनेक नुसखे हमने बल-वीर्य बढ़ाने वाले आगे लिखे हैं। इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि, वीर्य की कमी वाले को प्रमेह नाशक पदार्थ या दवाएँ भूलकर भी न दी जायँ एवं धातु-भस्म आदि भी न दी जायँ। इस थोड़े वीर्य की नामर्दी के रोग में, वायु नाशक, तर-गरम और वीर्य-वर्द्धक पदार्थ अतीव हितकर हैं।

रोगजन्य क्लैव्य ।

(रोगों से नामर्दी ।)

लिंगेन्द्रिय में किसी प्रकार का भयङ्कर रोग होने या अन्य रोगों के कारण से जो नामर्दी होती है, उसे "रोगजन्य क्लैव्य" या रोग की वजह से हुई नामर्दी कहते हैं।

खुलासा यह है, कि जिनको सोज़ाक या उपदंश आदि रोग हो जाते हैं, उनको स्वप्नदोष, वीर्यक्षय या प्रमेह प्रभृति रोग हो जाते हैं। इससे उनका वीर्य दिन-दिन छीजता और कम होता रहता है; साथ ही वीर्य में दोष भी हो जाते हैं। इसलिए ऐसे लोग नामर्द हो जाते हैं; मैथुन के समय उनकी लिंगेन्द्रियाँ जवाब दे देती हैं।

बेचारे बड़ी-बड़ी कोशिशें करते हैं, पर सफल-काम नहीं होते। स्त्रियों से लज्जित होकर, हकीम वैद्य या डाक्टरों की खोज करते हैं। अगर किसी अनाड़ी या अताई से पाला पड़ जाता है, तब तो हालत पहले से भी ख़राब हो जाती है। उस समय ये लोग एक और बड़ी बात यह करते हैं, कि दस पाँच दिन में ही मर्द बनकर प्राणवल्लभा को सन्तुष्ट करना चाहते हैं। पर असम्भव सम्भव कैसे हो सकता है? दो चार लालची और स्वार्थी चिकित्सकों को ठगाकर निराश हो जाते हैं और फिर दवा का नाम भी नहीं लेते। इस तरह, इस जगत् में आकर भी संसार-सुख से वञ्चित रहते हैं। ऐसे नामर्दों की आजकल भारत में कमी नहीं।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है :—"बहुत ही ज़ियादा मिहनत करने, बहुत समय तक बीमार रहने, बहुत भूखों मरने और स्वाभाविक गरमी को दूर करनेवाले पदार्थों के सेवन करने से हृदय में दुर्बलता हो जाती है। दिल और दिमाग़ के कमज़ोर होने से कामोत्पादक-शक्ति उत्पन्न नहीं होती—शहवत या प्रसंगेच्छा नहीं होती। ऐसे पुरुष की नाड़ी में गरमी और कमज़ोरी होती है। वह स्त्री-प्रसङ्ग बहुत ही कम कर सकता है। यदि कभी करता है, तो चित्त में प्रसन्नता नहीं होती। प्रसंग के बाद मूर्च्छा या बेहोशी सी आती और प्यास लगती है। ऐसा पुरुष, लज्जा और भय के विचारों से, सम्भोग करने से रुक जाता है; क्योंकि ऐसे पुरुष के दिल-दिमाग़ कमज़ोर हो जाते हैं।

"इस दशा में, जैसा कारण हो उसके अनुसार, दिल को मज़बूत करना चाहिये; अर्थात् दिलको ताक़त बख़्शनेवाली या हृदय को बलवान करनेवाली पुष्टिकारक दवाएँ सेवन करनी चाहिएँ। शोक, फ़िक्र और चिन्ता से बचना चाहिये। रूपवती सुन्दरी स्त्री अपने पास रखनी चाहिए; क्योंकि काम-शक्ति बढ़ाने में मनोमोहिनी सुन्दरी स्त्री के समान और दवा नहीं है।

"आमाशय या कलेजे के कमज़ोर हो जाने से भी नामर्दी हो जाती है। इनके कमज़ोर होने से अच्छा खून बहुत कम बनता है; इसी से वीर्य्य भी कम तैयार होता है, क्योंकि वीर्य तो खून से ही तैयार होता है। वीर्य तैयार नहीं होता, इसी से सम्भोग-शक्ति घट जाती है। इस हालत में, भोजन या अन्य विषयों की इच्छा कम हो जाती है; पाचनशक्ति निर्बल हो जाती है तथा प्रकृति के अन्य उपद्रव उठ खड़े होते हैं। इस दशा में, कारण के अनुसार, दोषी अवयव और उसकी प्रकृति को बलवान और ठीक करना उचित है।

"दिमाग़ की कमज़ोरी से भी नामर्दी का तअल्लुक है। जब दिमाग़ कमज़ोर हो जाता है, तब काम-शक्ति बढ़ानेवाला मर्ज़ मूत्रेन्द्रिय तक नहीं पहुँचता, इससे मूत्रेन्द्रिय या लिंग को वीर्य्य का ज्ञान नहीं होता, और जब तक लिंग को वीर्य्य के खटके नहीं मालूम होते—मैथुनेच्छा हो नहीं सकती। इस दशा में, इन्द्रियाँ ज्ञानशून्य हो जाती हैं, सुस्ती घेर लेती है और प्रसंग की इच्छा एकदम कम हो जाती है। दिमाग़ की कमज़ोरीवाले नपुंसक को रात में जागने से नुक़सान पहुँचता है; पर गरमी से लाभ पहुँचता है। अगर रोग गरमी से होता है, तो गरमी से हानि होती है; पर, अगर रोग तरी से होता है, तो तरी से हानि होती है और हम्माम या स्नानागार में सम्भोग की इच्छा नहीं होती; किन्तु तरी से रोग होने पर, खुष्क चीज़ों से लाभ होता है। अगर दिमाग़ में खुश्की होती है, तो तर पदार्थों से लाभ होता है। इस दशा में, कारण के विरुद्ध, गरमी और सर्दी का ख़याल करके, दिमाग़ या मस्तिष्क को बलवान करनेवाली माजून पाक या चूर्ण सेवन कराने से लाभ होता है।

"गुर्दों में कमज़ोरी होने या कोई और रोग होने से भी पुरुष की प्रसंगेच्छा कम हो जाती है। जब तक गुर्दे बलवान नहीं होते, प्रसंगेच्छा भी बलवती नहीं होती। गुर्दे जितनेही बलवान होते

हैं, चैतन्यता उतनीही अधिक होती है। 'अस्बाब'का लेखक लिखता है—'वीर्य का मैल, नलियों द्वारा, कलेजे से गुर्दों की तरफ जाता है और इन्हीं में पानी से साफ होता है। गुर्दों से वह उस नली में जाता है, जो गुर्दों और फोतों के दर्म्यान है। इस नली में बहुत से गोल-गोल चक्कर पड़े हुए हैं। इन में वीर्य पकता और सफेद होकर फोतों में जाता है। गुर्दों की गरमी से ही वीर्य बन जाता है। इसी से जिसके गुर्दों में बीच के दर्जे की गरमी होती है, वह वीर्यवान और अधिक सम्भोग-शक्तिवाला होता है। अगर गुर्दों में कमज़ोरी या कोई रोग हो, तो गुर्दों का इलाज करना चाहिये। इनके निरोग और बलवान होते ही, नामर्दी नाश होकर, पुंसत्व प्राप्त होता है।"

शिराछेदजन्य क्लैव्य।

(नस कटने से नामर्दी)

किसी कारण से वीर्यवाहिनी नसों के छिद जाने या कट जाने से भी लिङ्ग में चैतन्यता नहीं होती। ऐसी नामर्दीको "शिराछेद जन्य क्लैव्य" या नस छिदनेसे हुई नामर्दी कहते हैं।

यही बात, उधर, हम "तिब्बे अकबरी" के हवालेसे लिख आये हैं कि, कानके पीछे की वे दोनों नसें, जो फोतों तक गई हैं, अगर काट दी जाती हैं, तो पुरुषकी काम-शक्ति नष्ट हो जाती है; क्योंकि ये दोनों नसें वीर्य-वाहिनी हैं। शरीर के समस्त अङ्गों से वीर्य बनने का मसाला इनमें टपक-टपक कर आता है और इनके द्वारा गुर्दों में होकर और पककर फोतों में पहुँचता और वहाँ गाढ़ा होता है। अगर ये दोनों नसें कट जायँ या छिद जायँ; तो पुरुष में पुंसत्व कैसे रह सकता है?

हमारे यहाँ भी लिखा है, वीर्य-वाहिनी नसों और मर्म-स्थानों

के कट जाने, छिद जाने, टूट फूट जाने, फोतोंके कुचल जाने, गुदा और फोतोंके बीचकी नसके कट जाने, कानके पीछेकी नसके कट जाने आदि से भी पुरुष नामर्द हो जाता है। ऐसे नामर्द का इलाज होना असम्भव है; इसी से हम यहाँ कोई उपाय नहीं लिखते।

नोट—"वङ्गसेन" में लिखा है—"महता मेढ्ररोगेण चतुर्थी क्लीवता भवेत्।" यानी लिङ्ग के बहुत बड़े होने के कारण चौथी क्लीवता—नपुंसकता—होती है।

शुक्रस्तम्भ क्लैव्य।

(वीर्य के रुकने से नामर्दी)

जिस पुरुष का शरीर हृष्ट-पुष्ट हो, जिसे काम सताता हो, स्त्री-प्रसङ्ग की इच्छा होती हो; पर वह पुरुष मैथुन न करे, इस कारणसे; यानी बारम्बार रुकने से वीर्य हर्ष को प्राप्त नहीं होता। जब वीर्यमें हर्ष नहीं होता, तब चैतन्यता कैसे हो सकती है? यानी पहले तो मन चलने पर भी स्त्री-प्रसङ्ग नहीं करता, किन्तु जब वीर्य शान्त हो जाता है, तब फिर करना चाहता है; उस समय लिङ्ग में तेज़ी नहीं आती और इस वजह से वह मैथुन कर नहीं सकता; इसीसे ऐसी नामर्दी को "शुक्रस्तम्भ क्लैव्य" या वीर्य रुकने की नामर्दी कहते हैं।

खुलासा यों समझिये, कि वीर्य के रुके रहने, कभी भी स्त्रियों का ध्यान न करने, स्त्रियों की बात न करने और उन्हें न देखने और न छूने प्रभृति कारणों से वीर्य स्थिर हो जाता है—अपने स्थान से चलायमान नहीं होता; इससे पुरुषके चेहरे पर खूब तेज और कान्ति होने पर भी, शरीर मज़बूत और बलवान होने पर भी, वह स्त्री-प्रसङ्ग कर नहीं सकता, क्योंकि बिना वीर्य के लिङ्ग में चैतन्यता, तेज़ी और सख्ती हो नहीं सकती।

ऐसे नामर्द का इलाज दवा-दारु से हो नहीं सकता। ऐसे रोगी को नाच-गाना देखना, हल्की बढ़िया शराब पीना, स्त्रियों को चुम्बन और मर्दन करना, मनोहर उपन्यास या शृङ्गार रस की पुस्तकें पढ़ना प्रभृति कर्म हितकर हैं। ऐसे-ऐसे कामों से वीर्य पतला होकर, अपनी जगह से चलने लगता और फिर चैतन्यता होकर स्त्री के पास जानेकी इच्छा होने लगती है। बस, इस तरह ऐसी नामर्दी चली जाती है।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है—"जब वीर्य अपनी जगह पर रुका रहता है, अपने स्थान से नहीं चलता, तब चैतन्यता नहीं होती और पुरुष नामर्दसा हो जाता है। यह हालत अक्सर उनको होती है, जो भाँग, चरस, अफीम और पोस्ता प्रभृति बहुत ही ज़ियादा खाते-पीते हैं। ऐसे लोगोंका वीर्य अधिक निकलता है और गाढ़ा तथा ठिठरासा होता है। इन्हें पूरी रुकावट नहीं होती, पर वीर्य बड़ी मिहनत के बाद गिरता है, जिससे थकाई और बेचैनी बहुत जान पड़ती है। इस हालत में, वीर्य को गरम और उत्तेजित करने वाली दवायें या अन्य पदार्थ सेवन करने से लाभ होता है। जैसे—जरुनी, माजून लबूब, माजून बुजूर प्रभृति खिलानी चाहियें। अथवा गोखरू और सोंठ के काढ़े में, ताज़ा दूध और अखरोट का तेल मिलाकर हुकने करने चाहिएँ अथवा बिनौलोंकी मींगी, अकरकरा, बहरोज़ा, शेर की चर्बी और नारियल का तेल मिलाकर, एक कपड़ा उसमें भिगोकर, उस कपड़े को गुदा में रखना चाहिये।"

तिब्बे अकबरी में औरभी लिखा है—"बहुत समय तक स्त्री-सङ्ग का मौक़ा न पड़नेसे वीर्य की पैदायश उसी तरह बन्द हो जाती है; जिस तरह बालक का दूध छुड़ाने के पीछे, दूध की उत्पत्ति बन्द हो जाती है; यानी जिस तरह स्त्री अपने हालके पैदा हुए बच्चे को यदि दस-बीस दिन दूध नहीं पिलाती, तो फिर उसके स्तनों में दूध नहीं आता। बस, ठीक इसी तरह अगर पुरुष बहुत दिनों तक

स्त्री-प्रसङ्ग नहीं करता; तो उसके शरीर में वीर्य की उत्पत्ति बन्द हो जाती है। ऐसा पुरुष अगर मैथुन करना चाहता है, तो उस का लिङ्ग चैतन्य नहीं होता, इसी से वह "नामर्द" कहलाता है। इस दशा में; चैतन्यता और उत्तेजना पैदा करने वाले पदार्थ काम में लाना हित है। जैसे:—

(१) सुरीले गले वाली या कोकिल-कण्ठी स्त्रियों के गीत सुनना।

(२) सितार और तम्बूरा सुनना।

(३) पशुओं को सम्भोग करते देखना।

(४) स्त्रियों की बातें सुनना।

(५) खूबसूरत स्त्रियों को देखना, उन से हँसना, बोलना और उन्हें चूमना प्रभृति।

(६) रसीली पुस्तकें पढ़ना।

(७) कामोद्दीपक पदार्थ खाना। जैसे; अण्डों की ज़र्दी, बकरी या मुर्गी के बच्चों का मांस प्रभृति।

(८) सोसन का तेल, खेरी का तेल, मोम और बैलका पित्ता—इन चारों को मिला कर फोतों और पेड़ू पर मलना अथवा "अक-रकरा" बिनौलों के तेल में मिलाकर मलना।

(९) लिङ्गेन्द्रिय को सख्त करने के लिए "फरफयून, मुश्क—कस्तूरी और अकरकरा" इन तीनों को एक-एक माशे लेकर, जम्बक़ के तेल या चमेली के तेल में मिलाकर, लिङ्ग के अगले भाग को छोड़ कर, ऊपरी भाग पर मलना चाहिये।"

(१०) हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है, शरीर का जो अवयव जिस काम के लिए बनाया गया है, अगर उससे वही काम लिया जाय, तब तो वह बलवान और काम का बना रहता है; अगर उससे वह काम नहीं लिया जाता, तो वह कमज़ोर हो जाता है। इसी वजह से हकीमों ने लिखा है कि, सम्भोग करने से मनुष्य बलवान और

हृष्ट-पुष्ट रहता है और सम्भोग न करने से कमज़ोर और दुबला हो जाता है। असल बात यह है कि, बहुत दिनों तक सम्भोग न करने से मूत्रनली या लिंगेन्द्रिय सुकड़ जाती है। इस दशा में, कुछ गरम जल मूत्रनली पर डालना चाहिए। इससे छेद नर्म और ढीले होते तथा तरी पहुँचती है। इसके बाद, मूत्र-स्थान के चारों ओर "भेड़का दूध" धीरे-धीरे मलना चाहिए।

सहज क्लीव।

(जन्म का नामर्द।)

जो पुरुष जन्म से ही क्लीव या नामर्द होता है, उसे "सहज क्लीव" या "जन्म का नामर्द" कहते हैं।

माता-पिता के वीर्य्य-दोष या गर्भ के विकार से "सहज क्लीव" या जन्म के नामर्द पैदा होते हैं। आयुर्वेद-ग्रन्थों में लिखा है कि, माँ-बाप के वीर्य दोष से, पूर्व्व-जन्म के पापों से, गर्भ में वीर्य बहनेवाली नसों में दोष होने से, वीर्य के सूख जाने से वीर्य का क्षय होता है। इस तरह जो बालक पैदा होते हैं, उनके पुरुषचिह्न—शिश्न नहीं होता। इनको हींजड़ा, ज़नखा या मुख़न्नस कहते हैं। इनके पुरुष-चिह्न नहीं होता। दूसरे वह होते हैं, जिनके पुरुष-चिह्न तो होता है, पर वह निर्जीव या निकम्मा होता है—ख़ाली पेशाब करने के काम का होता है। ऐसे जन्म के नामर्दों का इलाज हो नहीं सकता; इसी से चरक, सुश्रुतादि ने जन्मके नामर्द को असाध्य या लाइलाज कहा है। पूर्व-आयुर्वेद-आचार्य्यों ने लिखा है :—

असाध्यं सहज क्लैव्यमर्मच्छेदाच्चयद् भवेत्।

सब तरह के नामर्दों में, जन्म के नामर्द और नस काट जाने या लिङ्ग अथवा फोतों के पिस जाने प्रभृति से हुए नामर्दों का इलाज हो नहीं सकता। ये असाध्य हैं। इन दो को छोड़कर, बाक़ी पाँचों प्रकार के नामर्दों का इलाज हो सकता है।

नोट—आसेक्य, ईर्ष्यक, कुम्भिक, महापंढ और सौगन्धिक नपुंसक इसी जन्मके नामर्दके भेद हैं। क्योंकि ये पाँचों नपुंसक भी जन्म से ही नपुंसक होते हैं। ये ध्वजभंग नपुंसकके भी पांच भेद हैं। इनका जिक्र हम यहीं करेंगे, क्योंकि ये भी जन्म से ही ऐसे होते हैं।

(१) आसेक्य नपुंसक।

माता-पिता के अत्यल्प—बहुत ही कम वीर्य होने पर भी यदि गर्भ रह जाता है, तो "आसेक्य नपुंसक" पैदा होता है। ऐसा पैदा हुआ लड़का दूसरे पुरुष से अपने मुँह में मैथुन कराता है। जब मैथुन करनेवाले का वीर्य गिरता है, तब वह नपुंसक उसे खा जाता है। उस वीर्य्य के खालेने से उस नपुंसक का लिंग चैतन्य होता है और तब वह अपनी स्त्री से मैथुन करता है। ऐसे नपुंसकको "मुख योनि" भी कहते हैं।

(२) ईर्ष्यक नपुंसक।

जो मनुष्य अपने-आप मैथुन कर नहीं सकता, पर जब वह किसी दूसरे को मैथुन करते देखता है, तब मैथुन करने लगता है; यानी दूसरे को मैथुन करते देखकर, उसके लिंग में चैतन्यता होती है, उसे "ईर्ष्यक नपुंसक" या "दृग्योनि" कहते हैं।

(३) कुम्भिक नपुंसक।

जो पुरुष बिना स्वयं गुदा-मैथुन कराये अपनी स्त्री से मैथुन

नहीं कर सकता, उसे "कुम्भिकनपुंसक" कहते हैं। कुम्भिक नपुंसक, इच्छा करने से, अपनी स्त्री के साथ संगम कर नहीं सकता। जब उसे मैथुन करना होता है, तब वह पहले किसी दूसरे पुरुष से अपनी गुदा-भंजन कराता है। गुदा-भञ्जन से उसकी इन्द्रिय चैतन्य होती है। इसके बाद वह स्त्री से मैथुन करता है। कोई-कोई यह कहते हैं कि, जो पुरुष लौंडेबाज़ होते है, वे अपने शिथिल लिङ्ग से पहले स्त्री से गुदा-मैथुन करते हैं, तब कहीं उनके लिङ्ग में तेज़ी आती है। इसके बाद वह स्त्री से योनि-मैथुन करते हैं। ऐसे पुरुषों को "कुम्भिक नपुंसक" और "गुदयोनि" भी कहते हैं।

कुम्भिक नपुंसक कैसे पैदा होते हैं, इस विषय में काश्यप ने कहा है कि, ऋतुकाल में अल्प रेतवाला पुरुष यदि अल्परज वाली स्त्री से मैथुन करता है, तो उस स्त्री की काम शान्ति नहीं होती—अतः वह दूसरे पुरुष से मैथुन करने की इच्छा करती है। उसके जो पुत्र पैदा होता है, वह "कुम्भिक नपुंसक" पैदा होता है।

(४) महाषंढ नपुंसक ।

जो पुरुष ऋतुकाल में—मैथुन के समय—आप स्त्री के नीचे सोता है और स्त्री को अपने ऊपर चढ़ाकर मैथुन कराता है या आप नीचे से मैथुन करता है, उससे यदि गर्भ रह जाता है, तो जो पुत्र पैदा होता है, उसकी सारी चेष्टायें स्त्री की सी होती हैं। वह लड़का स्त्री की तरह आप नीचे सोकर, अपने लिङ्ग पर दूसरे पुरुष से वीर्य गिरवाता है। ऐसे नपुंसक को "महाषंढ नपुंसक" कहते हैं।

नोट—महाषंढ नपुंसक दो तरहके होते हैं। उनमें से एकके सम्बन्धमें ऊपर लिख ही आये हैं। दूसरा यह है, कि स्त्री ऊपर और पुरुष नीचे—इस तरह

गर्भ रहने से अगर कन्या पैदा होती है, तो उस कन्या की सारी चेष्टायें पुरुषके जैसी होती हैं ; यानी वह दूसरी स्त्रियोंको अपने नीचे सुलाकर, मर्दकी तरह, अपनी योनि से उनकी योनिको रगड़ती है। ऐसी स्त्रीको "नारी षंढ नपुंसक" कहते हैं। अगर इस तरह दो स्त्रियाँ भगसे भगको रगड़कर मैथुन करती हैं, तो दोनोंका रज गिरता है और उससे यदि गर्भ रह जाता है, तो पैदा होने वाली सन्तानके शरीरमें हड्डियाँ नहीं होतीं। वह पैदा हुई सन्तान अपने हाथ पैर नहीं समेट सकती ; दूसरा कोई उसके हाथ-पैरोंको चाहे जिस ओर झुका दे। ऐसे बालक पैदा होने की खबरें अक्सर अखबारोंमें छपती रहती हैं। ऐसे बालक जीते नहीं ; कोई पैदा होते ही और कोई एक दो दिन जीकर मर जाते हैं।

(५)—सौगन्धिक नपुंसक।

जो पुरुष दुष्ट योनि में पैदा होता है, उसके लिङ्ग में दूसरे का लिङ्ग और योनि सूँघने से चैतन्यता आती है ; यानी जब वह दूसरे के लिङ्ग और योनि को सूँघता है, तब उसका लिङ्ग तय्यार होता है। ऐसे नपुंसक को "सौगन्धिक नपुंसक" और "नासा-योनि" भी कहते हैं।

नोट—आसेक्य, सौगन्धिक, कुंभिक और ईर्ष्यक—चारों नपुंसकोंमें वीर्य होता है, केवल "महापंढ' में वीर्य नहीं होता। वीर्य होने पर भी, उन चारों को नपुंसक इस लिये कहते है कि, वे विना वेजा कामोंके मैथुन कर नहीं सकते।

"चरक" से

नपुंसकों के और चार भेद।

महर्षि चरक ने नपुंसक चार तरह के माने हैं। जैसे:—

(१) बीजोपघात क्लीव।

(२) ध्वजभंग क्लीव।

(३) जरासम्भव क्लीव।

(४) वीर्य-क्षय क्लीव।

नोट—(१) जो वीर्यमें किसी तरहका विकार होने से मैथुन नहीं कर सकता उसे "वीजोपघात क्लीव" कहते हैं । (२) जो लिंगमें सूजन, फोड़े फुन्सी य और रोग होने से मैथुन नहीं कर सकता, उसे "ध्वजभंग क्लीव" कहते हैं । (३ जो बुढ़ापे के कारण, वीर्य क्षय होने से, मैथुन नहीं कर सकता, उसे "जरासम्भव क्लीव" कहते हैं । (४) जो पुरुष चिन्ता, भय और क्रोध आदि से वीर्य क्षय हो जाने के कारण मैथुन नहीं कर सकता, उसे "वीर्य क्षय क्लीव" कहते हैं ।

(१) बीजोपघात क्लीव ।

जो बीज के उपघात या वीर्य में किसी तरह का विकार होने से मैथुन नहीं कर सकता, जिसके वीर्य का रङ्ग पीला हो जाता है, शरीर कमज़ोर हो जाता है और पीलिया, तमकश्वास, कामला, अनायासश्रम—थकान आदि से पीड़ित होता है—उसे "बीजोपघात क्लीव" कहते हैं ।

कारण ।

नीचे लिखे कारणों से बीजोपघात क्लीवता पैदा होती है:—

(१) ठण्डे, सूखे और खट्टे पदार्थ खाने से ।

(२) विरुद्ध भोजन करनेसे । जैसे दूध मछली एक साथ खाना ।

(३) कच्चा अन्न या खट्टे कषैले और चरपरे पदार्थ खाने से ।

(४) बहुत ही शोच-फ़िक्र या चिन्ता करने से ।

(५) हर समय भयभीत रहने से ।

(६) बहुत ही ज़ियादा स्त्री-प्रसङ्ग करने से ।

(७) दुश्मन के जादू टोने से ।

(८) शरीर में रस-रक्त आदि धातुओं की कमी होने से ।

(९) बहुत ही ज़ियादा मिहनत करने से ।

(१०) स्त्री के आनन्द को न समझने से ।

(११) वमन विरेचन आदि में गड़बड़ होने से

(१८) वात, पित्त और कफके बढ़ने से।

(१६ व्रत उपवास प्रभृति करने से।

सारांश यह है कि, रूखे-सूखे, खट्टे-खारी, कसैले और चरपरे पदार्थ खाने; रात-दिन चिन्ता में डूबे रहने, डरने, व्रत-उपवास करने, ज़ियादा मिहनत करने, स्त्री से सदा अलग रहने आदि कारणों से पुरुष का वीर्य दूषित या विकृत हो जाता है; अतः संसार-सुख-भोगने की इच्छा रखने वाले पुरुषों को उपरोक्त कारणों से सदा बचना चाहिए। हमने आँखों से देखा है, अव्वल दर्जे के कामी पुरुष चिन्ता-फ़िक्र में ग़र्क़ रहने, डरने और अत्यधिक परिश्रम करने से साफ नपुंसक हो गये। जिनसे एक दिन भी स्त्री बिना न रहा जाता था, वे महीनों स्त्री का नाम नहीं लेते। यदि कभी स्त्री बेचारी इच्छा करती भी है, तो आपको भूँभल आती है। सचमुच ही अधिक चिन्ता, क्रोध, व्रत, उपवास और अत्यधिक परिश्रम पुरुष के पुंसत्व के शत्रु या मर्द को नामर्द बनाने वाले हैं।

चिकित्सा—जिन कारणों से रोग हुआ हो, उनको त्यागो और और वीर्य को शुद्ध करने वाली तथा बढ़ाने वाली चीज़ें या दवाइयाँ खाओ।

ध्वजभङ्ग क्लीव।

जिसे ध्वजभङ्ग रोग होता है, उस पुरुष के लिङ्ग में सूजन और पीड़ा होती है, लिङ्ग का रङ्ग सुर्ख़ होता है, उस पर फोड़े-फुन्सी होते हैं, मांस बढ़ जाता है, चाँवलों के माँड़ जैसा अथवा काला और लाल पदार्थ लिङ्ग से गिरता रहता है अथवा काला, नीला, लाल और ख़राब ख़ून निकला करता है। लिङ्ग आग से जलासा हो जाता है; मूत्राशय, फोते और जाँघों के जोड़ों में घोर दाह—जलन और पीड़ा होती है, लिङ्ग से कभी गाढ़ा और कभी

पीला पदार्थ गिरता है, सूजन गीली और मन्दी होती है, मवाद थोड़ा निकलता है और सूजन देर में पकती है, और कभी जल्दी ही पक जाती है, लिङ्ग में कीड़े पड़ जाते हैं, बदबू आती है, सुपारी गल जाती है, लिङ्ग और फोते दोनों गलकर गिर जाते हैं। इस रोगी को ज्वर, श्वास, भ्रम, मूर्च्छा और वमन प्रभृति रोग भी सताते हैं।

कारण।

ध्वजभङ्ग क्लीवता के नीचे लिखे कारण हैं :—

(१) खट्टे खारी और नमकीन पदार्थ खाना।

(२) विरुद्ध भोजन करना।

(३) कच्चा अन्न खाना।

(४) पानी बहुत पीना।

(५) विषम अन्न और भारी चीज़ें खाना।

(६) दही दूध और अनूपदेश के पशुओं का मांस अधिक खाना।

(७) किसी रोग से दुबला हो जाना।

(८) कम-उम्र लड़की या कन्या से मैथुन करना।

(९) जिस स्त्री के योनि न हो, उससे मैथुन करना।

(१०) गुदा-मैथुन करना।

(११) जिसकी योनि पर बड़े-बड़े बाल हों, उससे मैथुन करना।

(१२) जिस स्त्री ने बहुत दिनों से मैथुन न किया हो, उससे मैथुन करना।

(१३) रजस्वला से मैथुन करना।

(१४) बदबूदार योनि में मैथुन करना।

(१५) सोमरोग वाली स्त्री से मैथुन करना।

(१६) मतवाले की तरह मैथुन करना।

(१७) अति हर्ष से मैथुन करना।

(१८) गधी, घोड़ी, गाय, भैंस आदि से मैथुन करना।

(१९) लिङ्ग में किसी तरह चोट लगना।

(२०) लिङ्ग को रोज़ न धोना।

(२१) चाकू, उस्तरा, दाँतों अथवा नाखूनों से लिङ्ग पर घाव होना।

(२२) लकड़ी आदि से लिङ्ग पर चोट लगना।

(२३) लिङ्ग का पिस जाना।

(२४) लिङ्ग को मोटा करने या बढ़ाने के लिए शूक आदि प्रयोग करना।

(२५) वीर्य का दूषित हो जाना।

मतलब यह है कि, उपरोक्त २५ कारणों से, लिङ्ग में, "ध्वजभङ्ग रोग" हो जाता है। ध्वजभङ्ग वाला मैथुन कर नहीं सकता, अतः वह भी एक प्रकार का नपुंसक होता है। जो लोग लड़कों से गुदा-मैथुन करते हैं, उनके मुँह में ....। अताइयोंकी विधि से लिङ्ग को मोटा करना चाहते हैं, मतवालों की तरह अँधाधुन्ध मैथुन करते हैं, छोटी लड़कियों से मैथुन करते हैं, अत्यधिक जल पीते हैं या मिर्च खटाई बहुत खाते हैं, वे इन बातों पर ध्यान दें। सृष्टि-नियम के विरुद्ध या आईन-विरुद्ध काम करना, सदा, हानिकारक है। परमात्मा ने स्त्री ही इस काम के लिए बनाई है। उसी से पुरुष को मैथुन करना उचित है। स्त्री में भी इस बात का ध्यान रखना चाहिये, कि वह रजस्वला तो नहीं है, योनि पर बड़े-बड़े बाल तो नहीं हैं, एकदम काम-उन्मत्त तो नहीं है। मतवाले की तरह ज़ोर से मैथुन करने से लिङ्ग ... ... इधर-उधर जाता है, जिससे बड़ी सख्त चोट लगती * है। ...... के

* बहुत से अज्ञानी जोर ज़ोर से मैथुन करने में आनन्द समझते हैं; यह उनकी भूल है। यह काम जितना ही आहिस्ता-आहिस्ता किया जाता है; उतना ही

मुख में देने से दाँत लग जाते हैं और उससे भयङ्कर विष पैदा होकर घाव हो जाते हैं । ये सब परले सिरे की बेवक़ूफ़ी के काम हैं । जिन्हें इन सत्यानाशी कामों की लत हो, वे इन्हें मौत से भी भयङ्कर समझ कर त्याग दें । अगर वे इनको न त्यागेंगे; तो ध्वज भंग क्लीव होकर, संसार में बदनामी और बेइज्जती के साथ, गल-गल कर मरेंगे और कई केसों में, मालूम हो जाने पर, सरकार हिन्द के मुजरिम भी होंगे ।

जरासम्भव नपुंसक ।

छोटी, मध्यम और बड़ी—ये तीन अवस्थायें होती हैं । इन तीनोंमें से बड़ी या बुढापे की अवस्थामें, बहुधा, वीर्य क्षीण हो जाता है; इसलिये पुरुष नपुंसक सा हो जाता है; यानी बुढ़ापे में मैथुन कर नहीं सकता । ऐसे नपुंसक को "जरा सम्भव नपुंसक" कहते हैं ।

बुढ़ापा आने पर, उत्तम-से-उत्तम पदार्थ हलवा, खीर, मोती, मूँगा प्रभृति खाने पर भी मनुष्य तन-क्षीण, वीर्य-हीन और निर्बल हो जाता है । इस अवस्था में, पित्तकी गरमी जब शान्त हो जाती है; तब वायुका ज़ोर बढ़ता है । वायु बालोंको सफेद कर देता है । पित्त प्रकृति वालों के बाल जल्दी सफेद होते हैं और कफ प्रकृति वालों के देर में । बूढ़ों को वायुनाशक और कफवर्द्धक दवाएँ अच्छी होती हैं ।

कारण ।

बुढ़ापेमें नपुंसकता नीचे लिखे कारणों से होती है:—

(१) रस रक्त मांस मेद आदि धातुओंके क्षीण होने से ।

(२) वीर्य बढ़ाने वाली दवाओं के न खाने से ।

आनन्द मिलता है और कामिनी की भी काम-शान्ति हो जाती है; लिङ्ग की नसें टूटने और स्त्री को भी चोट लगने का डर नहीं रहता । ये सब "काम शास्त्र" न पढ़ने के नतीजे हैं ।

(३) बल, वर्ण और इन्द्रियों के क्षीण होने से।

(४) उम्रका उतार होने से।

(५) भूखा-प्यासा रहने से ; यानी समय पर खाना-पीना न करने से।

(६) अधिक मिहनत करने से।

मतलब यह है, जो पुरुष, बुढ़ापेमें भी, स्त्री-सुख भोगना चाहते हैं, उन्हें अपने रस रक्तादि धातुओं को बढ़ाने के उपाय करने चाहिएँ ; बल-वीर्य-वर्द्धक वायु नाशक औषधियाँ, हर साल, शीतकालमें, खानी चाहिएँ ; भोजन ठीक समय पर करना चाहिये। अपनी ताक़त से कम मिहनत करनी चाहिये। बुढापे को रोकने के लिये "रसायन" सेवन करनी चाहिये। शरीरमें सदा "नारायण तेल" या "चन्दनादि तेल" लगाना चाहिये। अगर स्थिति अच्छी न हो, तो काले तिलों का तेल ही लगाना चाहिये। आँखोंमें नित्य "त्रिफले के पानी" के छींटे देने चाहिएँ। "त्रिफले का चूर्ण" मिश्री मिलाकर सेवन करना चाहिये; क्योंकि बुढ़ापे में आँखों की रोशनी कम हो जाती है, दाँत जवाब दे देते हैं और घुटनों तथा पीठ के बाँसे में पीड़ा होने लगती है। कम-से-कम नीचे लिखे काम, बुढ़ापे से बचने को, अवश्य करने चाहियें :—

(१) शरीर में रोज़ तेल लगाना चाहिये।

(२) सिरमें तेल लगाना चाहिये और कानों में तेल डालना चाहिए।

(३) "स्वास्थ्यरक्षा" में लिखा "अमीरी दन्त-मञ्जन" रोज़ दाँतोंमें मलना चाहिये अथवा कड़वे तेल में "सेंधानोन" पीस और मिलाकर उसीसे दाँत मलने चाहियें या काले 'तिलों' के तेलके कुल्ले करने चाहियें। अगर ये उपाय पहले से ही किये जायँ, तो बुढ़ापे में दाँत हरगिज़ तकलीफ न दें।

(४) आँखों में त्रिफला-जलके छींटे देने चाहियें। त्रिफला "मिश्री" मिलाकर सेवन करना चाहिये।

(५) असगन्ध और विधायरा—दोनों बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लेने चाहियें। पीछे ६ माशेसे १ तोले तक यही चूर्ण फाँक कर, ऊपर से गायका "धारोष्ण दूध" पीना चाहिये। बूढ़ों के लिये यह चूर्ण दूसरा अमृत है। अगर कोई चार पाँच महीने तक इसे लगातार खा ले, तो स्त्री-प्रसङ्ग में जवानों से अधिक पराक्रम दिखा सके।

क्षयक्लीव नपुंसक।

अत्यन्त चिन्ता, अति शोक, अति क्रोध, अति भय, ईर्ष्या, उत्कंठा और उद्वेग करने तथा रूखा अन्न सेवन करने, कमज़ोर होने पर भी निराहार रहने, थोड़ासा खाने और उसके भी हृदय में रखे रहने वगैरः-वगैरः कारणों से—सब धातुओं में असल धातु "रस" क्षीण हो जाता है। जिसकी ऐसी हालत होती है, वह दिन-दिन क्षीण और निर्बल होता जाता है। उसके रक्त आदि धातु क्षीण होने लगते हैं। फिर सब धातुओं का अवसान—परिणाम—वीर्य भी क्षीण हो जाता है। जब वीर्य क्षीण हो जाता है, तब मनुष्यको घोर व्याधियाँ घेर लेती हैं और वह मर जाता है। अतः आरोग्य-सुख चाहने वालोंको अपने वीर्य की रक्षा अवश्य करनी चाहिये। क्योंकि थोड़ी सी भी ग़फ़लत से यह रोग, असाध्य होकर, प्राण नाश कर देता है।

नोट—कोई कोई आचार्य लिंग और फोतों के गिर पड़नेके "ध्वज भंग" और "क्षयंज क्लीव"को असाध्य कहते हैं। चिकित्सा—पहले कारणों को त्यागना चाहिये। उसके बाद, यथोचित उपाय करने चाहिएँ।

दूषित शुक्र आर्त्तव

वीर्य के दूषित होनेके कारण ॥

असल में, मनुष्य में वीर्य का ही पुरुषार्थ है। वीर्य नहीं, तो पुरुषार्थभी नहीं। जिस तरह कीड़े मकोड़ों का खाया, आग से जला हुआ, काल और जल से दूषित बीज हरा-भरा नहीं होता; उसी तरह दूषित वीर्य से गर्भ नहीं रहता; अगर रह भी जाता है; तो सन्तान रोगी और अल्पायु होती है। जिसके खाँसी, क्षय, प्रमेह, मृगी, उन्माद, गठिया, गरमी या सोज़ाक आदि रोग होते हैं,—वह यदि मैथुन करता है और गर्भ रह जाता है, तो उसकी औलाद को भी यही रोग होते हैं। कोढ-रोगी यदि सन्तान पैदा करता है, तो उसके नाती-पोतों तक के कोढ़ होता है। इसी से वाग्भट ने कहा है—

शुद्ध शुक्रार्त्तवंस्वस्थं संरक्तं मिथुनं मिथः।

अगर पुरुष का वीर्य और स्त्रीका आर्त्तव शुद्ध हो एवं शरीर में कोई रोग न हो; तभी स्त्री-पुरुष को मैथुन करना चाहिये; क्योंकि रोगी की सन्तान भी रोगी होगी। अल्प वीर्य या दूषित वीर्य वाले की सन्तान भी अल्पवीर्य वाली या दूषित वीर्य वाली होगी। मतलब यह निकला कि, माता-पिता के दूषित शुक्र आर्त्तव होने

की हालत में मैथुन करने से सन्तानका भी वीर्य दूषित होता है; यानी वीर्य के दूषित होनेका पहला कारण, दूषित वीर्य वाले माँ-बाप हैं।

इसके सिवा नीचे लिखे कारणों से भी वीर्य दूषित हो जाता है:—

(१) बहुत ही ज़ियादा स्त्री-प्रसंग करने से।

(२) दण्ड-कसरत करने से।

(३) अपनी प्रकृति या मिज़ाज के ख़िलाफ़ खाना खानेसे।

(४) कुसमय में मैथुन करने से।

(५) गरमी या सोज़ाकवाली स्त्री के साथ मैथुन करने से।

(६) बैठे रहने से।

(७) रूखे, कड़वे, कषैले, नमकीन, खट्टे, खारी और गरम पदार्थ खाने-पीने से।

(८) मधुर, चिकने और भारी भोजन करने से।

(९) बुढ़ापे से।

(१०) चिन्ता, शोक और अविश्वास आदि से।

(११) शस्त्र, खार या अग्नि के प्रयोग से।

(१२) भय और क्रोध से।

(१३) क्षय रोग अथवा धातुओं के दूषित होने से।

मतलब यह है, कि इन १३ कारणों से वातादि दोष, अलग-अलग या सब मिल कर, वीर्य बहाने वाली नाड़ियों में घुसकर, वीर्य को दूषित—पतला, बदरंग या बदबूदार प्रभृति कर देते हैं। शुक्र के दूषित होने से ही स्वप्न-दोष* वगैरः होने लगते हैं।

---

* हमने वीर्य के दोष दूर होने, पतलापन नाश होकर गाढ़ा होने या स्वप्न-दोष मिटने अथवा स्तम्भन होने वगैरः के नुसखे आगे लिखे हैं। एक परीक्षित नुसखा "स्वप्नदोष"-नाशक याद आगया, उसे यहाँ लिखते हैं। जिन्हें स्वप्नदोष होता हो, वे अवश्य सेवन करें:—अफीम ४ चाँवल भर, कपूर २ रत्ती और शीतल-चीनी ६ रत्ती—इन तीनों को मिलाकर, रात को, सोते समय, रोज खाकर जरा सा जल पीलें। ईश्वर-कृपा से "स्वप्नदोष" आराम हो जायगा। ६ माशे मोचरस में ४ तोले मिश्री मिलाकर, रोज सवेरे ही, फाँकने और धारोष्ण दूध पीने से भी धातु गाढ़ी होती और स्वप्नदोष आराम हो जाता है।

दूषित शुक्र के भेद।

दूषित वीर्य आठ प्रकारका होता है:—(१) फेनदार या झागवाला, (२) सूखा, (३) ख़राब रंगका, (४) सड़ा हुआ, (५) लिबलिबा, (६) गाढ़ा, (७) धातुके साथ मिला हुआ, और (८) अवसाद आदि।

वात-दूषित वीर्यके लक्षण।

बादीकी वजहसे वीर्य झागवाला, सूखा, कुछ गाढ़ा, थोड़ा और क्षीण होता है। यह वीर्य गर्भके कामका नहीं होता। एक वैद्यक-ग्रन्थमें लिखा है—वायुसे दूषित वीर्य रंगमें काला और लाल होता है तथा उसमें चोंटने की सी पीड़ा होती है।

पित्त-दूषित वीर्य के लक्षण।

पित्त से दूषित वीर्य नीला, पीला और अत्यन्त गरम होता है। उसमें बुरी बदबू आती है। जब निकलता है, तब लिंगमें दाह या जलन होती है। वैद्यक-ग्रन्थोंमें लिखा है—पित्तसे दूषित वीर्यका रंग पीले, नीले प्रभृति रंगोंका होता है तथा उसमें चूसने की सी पीड़ा होती है। पित्त-दूषित वीर्यमें राध की सी बदबू आती है।

कफ-दूषित वीर्य के लक्षण।

कफसे वीर्यवाहिनी नाड़ियोंके मार्ग बन्द हो जाते हैं और इससे वीर्य अत्यन्त गाढ़ा हो जाता है। एक वैद्यक-ग्रन्थमें लिखा है कि, कफ-दूषित वीर्यका रंग सफेद होता है तथा उसमें मन्दी-मन्दी पीड़ा होती है और वह गाँठदार होता है।

पित्त-वात से दूषित वीर्य के लक्षण।

पित्त-वात से वीर्य क्षीण होता है।

रुधिर-दूषित वीर्य के लक्षण।

रुधिर-दूषित वीर्य का रंग लाल होता है तथा उसमें चूसने की सी पीड़ा होती है। ऐसे वीर्य में मुर्दे की सी दुर्गन्ध आती है।

सन्निपात से दूषित वीर्य के लक्षण।

सन्निपातसे दूषित वीर्य में सब दोषोंके रंग पाये जाते हैं, पीड़ा होती है और उसमें पेशाब तथा पाखानेकी सी दुर्गन्ध आती है।

चोट प्रभृति से दूषित वीर्य के लक्षण।

अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करने और चोट लगने से पुरुषके खून-मिला हुआ वीर्य निकलता है।

अवसादि वीर्य।

अवसाद आदि वीर्य बड़ी तकलीफ से गाँठके समान निकलते हैं।

शुद्ध वीर्य के लक्षण।

जो वीर्य चिकना, गाढ़ा, मलाई-जैसा, लिबलिबा, मीठा, दाह-रहित और चिकने बिल्लौरी शीशेके समान होता है, वह शुद्ध होता है।

नपुंसक-चिकित्सामें ध्यान देने योग्य बातें।

(१) अगर आपके पास कोई रोगी आवे और वह अपने तईं कमज़ोर कहे, तो आप उसकी बारीकी से जाँच करें। ऐसा न हो, कि आप रसरक्त और वीर्य आदिकी कमी वाले को "प्रमेह नाशक" दवा देने लगें और प्रमेह वाले को "नपुंसकत्व नाशक"। मतलब यह है, कि रोगकी खूब परीक्षा करके चिकित्सा करनी चाहिये। अगर आपको ठीक तौर से यह मालूम हो जाय, कि रोगी नपुंसक है, तो इस बातका पता लगाइये, कि सात तरहके या चार तरके नपुंसकोंमें से यह कौनसा नपुंसक है। अगर आपका रोगी सहज क्लीव—जन्मका नामर्द—हो अथवा नसें कट जाने से नामर्द हो या क्षयक्लीव हो; तो आप चिकित्सा न कीजिये। अगर आप चिकित्सा करेंगे, तो आराम तो होगा नहीं, बदनामी बेशक आपके पल्ले पड़ेगी। हाँ, इनके सिवा, बाक़ी रहे हुए प्रकारोंके नपुंसक हों, तो आप बेशक इलाज करें। जिन के पुरुष-चिह्न ही नहीं, उनका इलाज तो कदाचित धनवन्तरि भी न कर सकें; पर यदि यथायोग्य पुरुष-चिह्न हो, नसें ठीक हों, ईश्वरकी इच्छा हो, रोगीका पुण्य हो और सद्वैद्य मिल जाय; तो कदाचित जन्मका नपुंसक भी चंगा हो जाय ; पर ऐसा प्रायः कभी ही होता है।

(२) अगर आपको "मानस क्लैव्य" के लक्षण जान पड़ें, तो आप रोगीको तसल्ली दें और विश्वास दिलावें कि, तुझे कुछ भी रोग नहीं है

तेरे मनका वहम मात्र है। अगर इतने से सुधार न हो, तो आप उसके दिल-दिमाग़को ताक़तवर बनाने वाले उपाय करें; क्योंकि दिल और दिमाग़के बलवान होने से, उसके दिलके वहम निकल जायँगे। इस विषयमें हम उधर लिख आये हैं।

(३) अगर आपके रोगी को पित्त वर्द्धक आहार विहारोंसे नामर्दी हुई हो, तो आप ऐसे रोगीको शीतल और चिकनी औषधियाँ तजवीज करें; क्योंकि ठण्डी और चिकनी दवाओं से ही पित्तके विकार शान्त होकर, सौम्य धातुओंको वृद्धि और बिगड़ी हुई की शुद्धि हो सकती हैं। जैसे—विदारीकन्दमें विदारीकन्दकी भावना देकर सेवन कराओ। आमलोंके सूखे चूर्णमें ताज़े आमलोंके रसकी भावना देकर खिलाओ। पेठा पाक अथवा आगे लिखी माजून आदि खिलाओ; साथही जिन पित्तकारक आहार विहारोंसे रोग हुआ हो, उन्हें बन्द कराओ; क्योंकि बिना कारणोंके बन्द किये आराम हो नहीं सकता।

(४) अगर आपका रोगी वीर्यकी कमीसे नामर्द हो, तो आप सबसे पहले उसके रोगके कारण बन्द करें—रूखी, सूखी, गरम एवं नशीली चीज़ें सेवन करने से रोकें। इसके बाद बल-वीर्य बढ़ाने वाले दूध, रबड़ी, मावा, मलाई, बादामका हलवा, उड़दकी खीर, उड़दके लड्डू, असगन्ध पाक, मूसली पाक, आम्र पाक, गोखरू पाक आदि सेवन करनेकी सलाह दें; पर धातुभस्म या प्रमेह नाशक दवा भूल कर भी न दें; क्योंकि इस रोगमें धातुओंकी वृद्धि करनी पड़ती है और प्रमेहमें मेद प्रभृति धातु और दोष घटाने होते हैं।

(५) अगर आपका रोगी रोगजन्य क्लीव हो, किसी रोगके कारणसे नामर्द हो, हस्त-मैथुन, गुदा-मैथुन या पशुयोनि-मैथुनसे अपनी मैथुन शक्तिको खो बैठा हो; तो पता लगावें, कि उसकी इन्द्रियमें क्या दोष है। अगर उसने हस्त-मैथुन किया होगा, तो उसकी इन्द्रियमें बाँकापन होगा—वह आगे से मोटी और पीछे से पतली होगी, नीली-नीली नसें चमकती होंगी, उनमें दूषित पानी भर गया होगा,

इन्द्रियमें तेज़ी या चैतन्यता न होती होगी—वह ढीली रहती होगी, उसमें छूने से कुछ न मालूम होता होगा, वह सूनीसी होगी। अगर लिंगेन्द्रिय में कोई विष या वाहियात तिला वगैरः लगाया होगा, तो लिंगेन्द्रिय पक गई होगी या सूख गई होगी या स्पर्श-ज्ञान-शून्य हो गई होगी अथवा शीतल हो गई होगी। आप अच्छी तरहसे पता लगाकर यथोचित उपाय करें। हम इन दोषों के नाश करने वाले अनेक तिले और लेप आदि आगे लिखेंगे, पर चन्द परीक्षित उपाय बतौर उदाहरणके यहाँ भी लिखते हैं:—

लिंगेन्द्रिय की शीतलता पर सेक।

अगर लिङ्गेन्द्रिय शीतल हो गई हो, तो हमारी लिखी आगे की पोटलियोंसे या इस पोटली से सेक कराओ। जैसे—अरण्डके बीज १ तोले, पुराना गुड़ १ तोले, तिल १ तोले, बिनौलोंकी गिरी १ तोले, कूट ६ माशे, जायफल ६ माशे, जावित्री ६ माशे, अकरकरा ६ माशे, पुराना गोला या खोपड़ा १ तोले और शहद दो तोले,—इन सब-को कूट-पीसकर पोटली बना लो। मन्दी आगपर थोड़ा सा बक-रीका दूध औटाओ और ऊपरसे उस गरम दूधमें इसी पोटली को डुबो-डुबोकर, लिङ्गपर (अगला भाग छोड़कर) सेक करो। परीक्षित नुसख़ा है। ११ दिनमें शीतलता जाती रहेगी।

दूसरा सेक।

केंचुआ, बीरबहुटी, नागौरी असगन्ध, आमाहल्दी और भुने चने—इन सबको "गुलाबके तेल" में पीसकर पोटली बना लो और आगपर तपा-तपाकर १४ दिन सेक करो। इस सेकसे कितने ही दोष मिट जाते हैं।

सेक के साथ खाने की दवा।

साथही बड़ा गोखरू १३॥ माशे और काले तिल १३॥ माशे दोनोंको पीस कर छान लो। फिर; इस चूर्ण को सेर भर गायके दूधमें

पकाओ। जब खोआ हो जाय, खालो। यह एक मात्रा है। इस खोये के ४० दिन खाने से और ऊपर के सेक करने से अवश्य लाभ होगा

लिंग की शिथिलता-शून्यता नाशक तैल।

अगर स्पर्शज्ञान न हो या कम हो अथवा ढीलापन बहुत हो, तो "कौड़िया लोबान" चार तोले लेकर, पहले "करौंदोंके रस" में खरल करो; इसके बाद चार तोले "घी" डालकर खरल करो। फिर "पाताल यंत्र"* की विधि से तेल निकाल लो और शीशी में भर लो। जब लगाना हो, पहले लिंगेन्द्रिय पर "हल्दी का चूर्ण" मलो; इसके बाद सींवन सुपारी छोड़ कर, बाक़ी हिस्सेमें, इस तेलको रोज़, ३० मिनट तक, मलो। २१ दिनमें लिङ्ग दुरुस्त हो जायगा। अगर इतना न होसके, तो खाली "लोबान का असली तेल रोज़ लगाओ" और ऊपर से "पान" सेंक कर बाँधो।

अगर लिङ्गेन्द्रिय बाँकी होगई हो, तो चमेली के पत्तोंका तेल लगाओ। इस रोग पर चमेली का तेल या चमेली के पत्तों का तेल उत्तम है। हमने इसके कई नुसख़े आगे लिखे हैं। एक आज़माया हुआ नुसख़ा यहाँ भी बतलाये देते हैं:—तिली के १२ तोले तेल को कड़ाही में चढ़ाओ; ऊपरसे चमेली के पत्तों का स्वरस ६ तोले डालदो और साथही "कूट, सुहागा और मैनसिल" दो-दो तोले पीस-छानकर डाल दो। जब चमेली का रस जल जाय, तेल को उतार लो और शीशी में भर कर रखदो। इस तेलको सींवन और सुपारी छोड़कर, हर दूसरे दिन यानी एक दिन बीचमें छोड़कर, आध घण्टे रोज़ मलो। कोई डेढ़ महीने में, कैसाही बाँकापन या टेढ़ापन हो मिट जायगा और सख़्ती आ जायगी।

अगर नसों में पानी भर गया हो, नसें नीली-नीली दीखती हों;

* पाताल यन्त्र की विधि चि० च० दूसरे भाग के अन्त में चित्र देकर समझाई है, वहाँ देख लो।

तो हमारे आगे लिखे तिलोंमें से कोई तिला लगाओ ; अथवा माल-कांगनी आध सेर, जमालगोटा पावभर, लौंग आधपाव, जायफल आधपाव, दालचीनी आधपाव और जावित्री आधपाव—इन सब को पीस-कूटकर "पाताल यन्त्र" से तेल निकाल लो। सींवन-सुपारी छोड़कर, बाक़ी लिङ्ग पर इस तेल को रोज़ मलो। ऊपर से "पान" सेक कर बांध दो। जब तक छोटी-छोटी फुन्सियाँ न निकलें, ऐसाही करते रहो। फुन्सियोंके निकलते ही, तिला मलना बन्द करदो और "सौ बार का धोया मक्खन" लगादो। अथवा "चिकि चन्द्रोदय" तीसरे भागके पृष्ठ ४४६ में लिखी कपूर, कत्था और सिंदूर वाली "चंतारि मरहम" लगाओ अथवा और कोई उत्तम मरहम लगाओ।

इन उपायों से अथवा हमारे आगे लिखे हुए बढ़िया-बढ़िया तिलोंके लगाने से लिङ्गेन्द्रिय के दोष मिटकर नामर्द मर्द हो जायगा। यदि तिले के साथ कोई उत्तम दवा भी खाई जाय, तो और भी अच्छा हो।

(६) अगर आपका रोगी वीर्यके रुके रहने—बहुत दिनों तक स्त्री का नाम भी न लेने—से नामर्द हुआ होगा, तो आपको वह हृष्ट-पुष्ट और तेजवान दीखेगा। उसे आप रूपवती स्त्रियों से मुहब्बत करने, उनका गाना सुनने, इत्रं आदि सूँघने, फूलोंकी माला धारण करने, नाच यां थियेटर देखने और हल्की शराब पीने प्रभृति की सलाह दें। इन उपायों से उसको उमङ्ग आवेगी—वीर्य अपनी जगह छोड़ेगा और उसकी इच्छा मैथुन करने की हो जायगी।

(७) अगर आपका रोगी चढ़ी उम्रका बूढ़ासा हो और वह अवस्था के उतार से स्त्री-प्रसङ्ग न कर सकता हो, तो आप यथोचित उपाय करें; पर ध्यान रखें कि बूढ़ापेमें वायु का ज़ोर रहता है। वायुकी अधिकता के कारण, भोजन का सार—रस—शरीरमें ठीक काम नहीं करता। इसलिये आप उसे गरम दूध, हलवा, मोहन भोग, खीर

आदि खाने की सलाह दें । "असगन्ध और विधायरे का चूर्ण" धारोष्ण दूधके साथ खाने की सलाह दें और लालमिर्च, नमक, खटाई से परहेज़ करावें । ऐसे रोगी को यह चूर्ण ३।४ महीने खाना और औरत से परहेज़ करना चाहिये । इन दोनों दवाओं का चूर्ण बूढ़ों को जवान बनाने वाला है । अगर यह बुढ़ापे से कुछ पहले खाया जाय, तो बाल सफ़ेद ही न हों। अगर वृद्ध रोगीके पैरों और कमर में पीड़ा हो; तो आप उसे वातनाशक पाक या अन्य औषधि दें; क्योंकि "पातजोरी और बुढ़ापे में वायुका ज़ोर बढ़ जाता है । ऐसे रोगियोंको मेथी के लड्डू या असगन्ध पाक या लहसन पाक प्रभृति दें ; अथवा उसे कुछ दूर टहलाकर, सुहाता-सुहाता गरम दूध "शहद" मिलाकर, खड़े-खड़े पिलवावें । सोंठका चूर्ण २ माशे फाँक कर, गरम दूध पीना भी गोड़ों के दर्द में अच्छा है । कुचले की गोलियाँ भी उत्तम हैं; पर मेथी पाक या कुचला प्रभृति आँखों के लिए कुछ नुक़सानमन्द हैं । अतः इन्हें देते समय, रोगीके नेत्र आदि का विचार करलें । अगर रोगीको सांसका रोग हो, तो उसे "निश्चन्द्र अभ्रक भस्म"—शहद, अदरख के रस और पीपर के साथ सेवन करावें । एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म, दो रत्ती पीपर, २ माशे शहद और इतना ही अदरख का रस—श्वास और खाँसी के लिए परमोत्तम है । यह नुसखा सरदी के श्वास के लिये है और बुढ़ापे में "श्वास" बहुधा सरदी से ही होता है । सरदी के श्वास में जो दवा दी जाय, वह "गरम तर" होनी चाहिये ; मगर गरमीके श्वास में दवा "सरद तर" दी जानी चाहिये । अगर गरमीके श्वास में सरदी के श्वास को और सरदी के श्वास में गरमी के श्वास को दवा दे दी जायगी; तो भयानक हानि होगी । लिख चुके हैं, कि बुढ़ापे में श्वास रोग प्रायः सरदी से होता है ; फिर भी, जाँच अवश्य कर लेनी चाहिये । अगर श्वास रोग गरमी से होता है, तो कण्ठ की नली चौड़ी हो जाती है, जिसके कारण रोगी को हौंकनी सी लग जाती है; पर सरदी के श्वास में कण्ठ-नली सुकड़

जाती है, जिससे श्वास रुक रुक कर या टूट टूट कर आता है। आयुर्वेद में पाँच प्रकार के श्वास लिखे हैं; पर मनुष्यों को बहुधा "तमक श्वास" हुआ करता है और यह श्वास रोग सरदीसे होता है। इसके विपरीत "प्रतमक श्वास" गरमी से होता है।

आज-कल हमारे देश-भाई न तो "आयुर्वेद" पढ़ते हैं और न "काम-शास्त्र" इस लिये वे स्त्री-सम्भोग के नियम नहीं जानते। वे लोग समझते हैं, कि सम्भोगके क्या नियम होंगे। पर नियम और कायदे सभी कामों के हैं; विना नियम और कायदों के जो काम किये जाते हैं, उनका फल अच्छा नहीं होता। अँगरेज लोग बिना नियम के कोई काम नहीं करते; इसी से वे निरोग, हृष्ट-पुष्ट, वली और आयुष्मान् होते हैं; पर भारतीय इसके खिलाफ रोगग्रस्त, दुर्बल और अल्पायु होते हैं। उनके यहाँ "सम्भोग-विषय" पर बड़ी अच्छी-अच्छी पुस्तकें हैं। उन्हें पढ़कर स्त्री-पुरुष रोगों से बचते हैं। अमेरिका के डाक्टर फूट की लिखी "साइक्लोपेडिया ऑव् पोप्यूलर मैडीकैल साइन्स ऐण्ड सैक्सुएल साइन्स" नाम्नी पुस्तक सम्भोग-विषय पर बहुत ही अच्छी है। हमने उसकी चन्द बातें ली हैं। यदि हम सारा क्या, चौथाई विषय भी लेते, तो भारत के नई रोशनी के जैन्टिलमैन "अश्लील "अश्लील" की पुकार मचा देते। इसी से हमने चन्द जरूरी बातें ही उक्त पुस्तक और हिकमत की पुस्तकों से ली हैं। हमें कानून भी मानना है और लोगों के तानों से भी बचना है। राज-कानून के खिलाफ कोई भी काम करना तो हमें पसन्द ही नहीं। राजा चाहे देशी हो या विदेशी—उसका कानून, हमारी तुच्छ मति में, सभी को मा-

नना चाहिये । पर, जिस विषय को हम लिखने बैठे हैं, उसमें यदि हम अश्लील अज़ों के नाम भी न लिखें, तो हम नहीं समझते, हम या और कोई लेखक महोदय अपने सैक्सुएल साइन्स या सम्भोग-सम्बन्धी खयालात किस तरह जाहिर कर सकते हैं।

हमारी इच्छा है कि, भारत से हस्त-मैथुन,गुदा-मैथुन, अयोनि-मैथुन, परस्त्री-गमन, वेश्या-गमन प्रभृति उठ जायँ—नेस्तनाबूद ही हो जायँ । साथ ही जो लोग इन कुकर्मों के कारण नपुंसक हो गये हैं, वे चंगे हो जायँ और भविष्य में नपुंसक न हों। इसी से हमें एक-एक बात तीन-तीन जगह, ढँग बदल-बदल कर, लिखनी पड़ी है। यदि लोग हमारी लिखी बातों को याद रखेंगे, इस भाग का दस पाँच वार पाठ कर जायँगे, तो अवश्य ही बड़ा उपकार होगा। हम दावे के साथ कह सकते हैं, कि अनेक ग्रन्थ होने पर भी "प्रमेह, नपुंसकता और वीर्य-रोगों पर" इस से अच्छा, इससे विस्तृत और इससे सरल हिन्दी-ग्रन्थ भारतवासियों के हाथ पहले न आया होगा।

स्त्री-भोग सन्तान के लिये।

परमात्माने स्त्री और पुरुष का जोड़ा इसी लिये बनाया है कि, उसकी रची हुई सृष्टि चली जाय, संसार से जीवधारी लोप न हो जायँ, जन्म-मरणका चक्र बराबर चलता रहे, उस बाग़वान का बाग़ नेस्तनाबूद न हो जाय। प्राचीन कालके ऋषि-मुनियोंने शादी-विवाह की चाल भी इसी लिये चलाई थी, कि ईश्वर की इच्छा पूरी होती रहे; हज़ारों-लाखों वृक्षों और पौधों के रोज़ सूखने और मरजाने पर भी, उस माली का बाग़ सदा हरा भरा और सरसब्ज़ बना रहे। इसी गरज़ से उन्होंने लिखा है, कि जिस के घरमें पुत्र-रत्न नहीं उसका घर, हर तरहकी सम्पत्ति—यहां तक कि अष्ट सिद्धि नव निद्धि और अनेक नातेदार और बन्धु-बान्धव होने पर भी, सूना है। चाणक्य ने कहा है:—

॥ अपुत्रस्य गृहशून्यं सर्वं शून्या दरिद्रता।

पुत्र-हीन का घर सूना होता है और जिसके घरमें धन-हीनता दरिद्रता होती है, उसको सभी सूना होता है।

"वाग्भट्ट" के उत्तर स्थान में लिखा है:—

अच्छायः पूतिकुसुमः फलेनरहितो द्रुमः।
यथैकश्चैकशाखश्च निरपत्यस्तथा नरः॥ १॥
स्खलद्गमनमव्यक्तवचनं धूलिधूसरम्।
अपिलालाविलमुखं हृदयाह्लादकारकम्॥ २॥
अपत्यं तुल्यता केन दर्शनस्पर्शनादिषु।
किं पुनर्यद्यशो धर्ममानश्रीकुलवर्द्धनम्॥ ४॥

जिस तरह छायाहीन, दुर्गन्धित फूलों वाला और एक शाखा वाला वृक्ष अच्छा मालूम नहीं होता; उसी तरह सन्तान-हीन पुरुष अच्छा नहीं दिखता।

चञ्चल चाल वाली, तोतली बोली बोलने वाली, धूलि-धूसरित मुख और शरीर वाली, मुख से लार टपकाने वाली सन्तान परमानन्ददायिनी होती है; अर्थात् बालकों की चञ्चल और चपल चाल, तोतली बोली—टूटी-फूटी बातें, धूलसे सना हुआ मुँह और शरीर तथा लारका गिरना प्रभृति मनमें परमानन्द करते हैं। ऐसे बच्चोंके देखने से मनमें जिस आनन्दका उदय होता है, उसे लिखकर बताना असम्भव नहीं, तो कठिन ज़रूर है। सारांश यह है कि, सन्तानका मुख देखने में जो आनन्द है, उसकी तुलना और किसी भी आनन्द से की नहीं जा सकती।

जितना आनन्द सन्तान को देखने और छूने वगैरः से होता है; उतना आनन्द किसके दर्शन और स्पर्शन से मिल सकता हैं? अर्थात् सन्तानके समान आनन्दवर्द्धक और दूसरा कोई भी नहीं है। फिर; यदि सन्तान यश, धर्म, मान, शोभा और कुलको बढ़ाने वाली हो, तब तो कहना ही क्या?

सारांश यह है कि, सन्तान अवश्य होनी चाहिये। अब यह विचारना चाहिये, कि सन्तान किस तरह होती या हो सकती है? सन्तान की उत्पत्ति स्त्री-पुरुष के मैथुन-कर्म से होती है। यह नियम

है कि, दो चीज़ोंके मिलने से तीसरी चीज़ पैदा होती है। जिस तरह दो बादलों के मिलने या रगड़ खाने से बिजली पैदा होती है; उसी तरह स्त्री-पुरुष के मिलने या मैथुन करने से सन्तान होती है; अतः स्त्री-पुरुष को सन्तानोत्पत्तिके लिए मैथुन करना ही चाहिये।

सन्तान के लिए शुद्ध रज-वीर्य की ज़रूरत।

जिस तरह अच्छी ज़मीन और उत्तम बीज से उत्तम फल देने वाला वृक्ष लगता है; उसी तरह उत्तम और शुद्ध रज-वीर्य से उत्तम सन्तान होती है; दूषित रज-वीर्य्य से दूषित या ख़राब औलाद होती है। इसी से महर्षि वागभट्ट महोदय लिख गये हैं:—

शुद्धे शुक्रार्त्तवे स्वस्थं संरक्तं मिथुनं मिथः।
स्नेहैः पुंसवनैः स्निग्धं शुद्धं शीलित बस्तिकं॥

जब पुरुषका वीर्य्य और स्त्री का आर्त्तव या रज शुद्ध और निर्दोष हो, शरीरमें कोई रोग न हो, स्त्री पुरुष दोनों ही आपस में अनुरक्त हों; तब स्नेह, पुंसवन और वमन-विरेचन आदि से वीर्यको गाढ़ा और चिकना करके मैथुन करना चाहिये।

सारांश यह, कि जब आपको कोई रोग हो, आपका वीर्य पतला या गरम हो अथवा किसी दोष से दूषित हो, हरगिज़ मैथुन न करें। ख़ासकर, सन्तानार्थ तो भूलकर भी न करें। अगर आप रोगावस्था में मैथुन करेंगे, तो आपका रोग भयङ्कर रूप धारण कर लेगा। ज्वर की अवस्था में मैथुन करने से रोगी बेहोश होकर मर जाता है, खाँसीमें मैथुन करने से खाँसी अमृत से भी आराम नहीं होती और अन्तमें क्षय रोग होकर रोगी मर जाता है। इसी तरह और रोगोंमें भी समझिये। इसके सिवा अगर गर्भ रह जाता है, तो जो सन्तान पैदा होती है, वह भी सारी ज़िन्दगी रोगोंमें फँसी रहती है, उसे क्षण भर को भी सुख नहीं मिलता। कोढ़ी यदि स्त्री-प्रसङ्ग करता है,

तो उसकी औलाद भी कोढ़ी होती है। उपदंश या सोज़ाक-रोगी अगर मैथुन करता है, तो उसकी स्त्री को भी ये भयङ्कर रोग हो जाते हैं। अतः बीमारी और दूषित रज वीर्य्य होने की हालत में, कभी मैथुन न करना चाहिये। दूषित रज-वीर्य से दूषित सन्तान होती है; इसके सिवा, दूषित वीर्य्य से बहुधा गर्भ ही नहीं रहता। "चरक" में लिखा है :—

> बीजं यस्माद्व्यवायेषु हर्षयोनिसमुत्थितम् ।
> शुक्रं पौरुषमित्युक्तं तस्माद्वक्ष्यामितच्छृणु ॥
> यथाबीजमकालाम्बु कृमिकीटाग्निदूषितम् ।
> न विरोहतिसन्दुष्टं तथा शुक्रं शरीरिणाम् ॥

हर्ष से और लिङ्ग तथा योनिके आपस में मिलने या एक दूसरे को छूने से पुरुष का बीज अथवा शुक्र उठता है—चैतन्यता या शहवत होती है, यह हम पहले ही कह चुके हैं। अब हम वीर्य के दोषों की बात कहते हैं। जिस तरह असमय में जल बरसने, कीड़ों द्वारा बीज के खाये जाने अथवा आगसे जलने से बीज नहीं उगता, उसमें अँकुए नहीं फूटते; उसी तरह प्राणियों के दूषित बीज या वीर्य से सन्तान पैदा नहीं होती।

मतलब यह, दूषित वीर्य्य गर्भके काम का नहीं। अव्वल तो दूषित या ख़राब वीर्य से गर्भ रहताही नहीं। यदि रह भी जाता है, तो अनेक प्रकार की रोगों वाली, अल्पायु, अङ्गहीन, निर्बुद्धि और कुरूपा सन्तान जनमती है; अतः वीर्य की सदा रक्षा करनी चाहिए। उसे दूषित होने से सदा बचाना चाहिये। वीर्य किन कारणों से दूषित होता है अथवा किन कामों से बचने से वीर्य शुद्ध रहता है, यह हम पीछे, इसी भाग में, अच्छी तरह लिख आये हैं। अत; यहाँ फिर लिखना व्यर्थ है। हाँ, इस सम्बन्ध में जो कुछ हमने उधर नहीं लिखा है, उसे यहाँ लिखना बुरा नहीं।

वाजीकरण औषधियाँ।

संसार में मनुष्य के लिये "रसायन" और "वाजीकरण" औषधियोंका सेवन परमोपकारी है। जिन औषधियों के सेवन करने से मनुष्य मृत्यु और बुढ़ापे से बच सकता है, उन्हें "रसायन" कहते हैं और जिन औषधियों या आहार-विहारों के सेवन करने से मनुष्य स्त्रियों के साथ, बिना हारे, घोड़ों की तरह मैथुन कर सकता है, उन्हें "वाजीकरण" कहते हैं। आयुर्वेद में लिखा है:—

> यथा वाजी मदोन्मत्तो धावतो वडवा शतम्।
> तथा नारी नरस्तेन वाजीकरणमुच्यते॥

जिस तरह मदोन्मत्त घोड़ा सैकड़ों घोड़ियों पर दौड़ता है; उसी तरह जिन औषधियों के सेवन करने से पुरुष स्त्रियों में आसक्त होता है, उन्हें "वाजीकरण" कहते हैं:—

वाग्भट्ट महोदय लिखते हैं:—

> वाजीकरणमन्विच्छेत्सततं विषयी पुमान्।
> तुष्टिः पुष्टिरपत्यं च गुणवत्तत्र संश्रितम्।
> अपत्य सन्तानकरं यत्सद्यः संप्रहर्षणम्॥
> वाजीवाऽतिबलो येन यात्यप्रतिहतोंगनाः।
> भवत्यतिप्रियः स्त्रीणां येन येनोपचीयते॥
> तद्वाजीकरणं तद्धिदेहस्योर्जस्करं परम्॥
> अल्पसत्त्वस्य तु क्लेशैर्बाध्यमानस्य रागिणः।
> शरीरक्षयरक्षार्थं ... वाजीकरणमुच्यते॥

निरन्तर विषयी या कामी पुरुष को "वाजीकरण" औषधियों की इच्छा रखनी चाहिये—उसे वाजीकरण औषधियाँ शौक और चाह के साथ सेवन करनी चाहियें; क्योंकि वाजीकरण में तुष्टि-पुष्टि और सन्तान है; अर्थात् वाजीकरण औषधियाँ सेवन करने से मन में प्रसन्नता होती है, शरीर पुष्ट और बलवान होता है तथा सन्तान

या पुत्र-जैसे अमूल्य रत्न की प्राप्ति होती है। "वाजीकरण" सन्तान देनेवाला और तत्काल आनन्द करने वाला है।

जिसके सेवन करने से पुरुष घोड़ेकी तरह बलवान और अप्रतिहित सामर्थ्य वाला होकर, युवती स्त्रियों को भोगता है; उनका प्यारा होता और वृद्धिको प्राप्त होता है, उसे "वाजीकरण" कहते हैं। वाजीकरण देहमें अत्यन्त बल-पराक्रम करता है।

निर्बल या कमज़ोर पुरुषों के दुःख दूर करने, उनका प्रेम निवाहने और उनके शरीर की रक्षा के लिये "वाजीकरण" कहते हैं।

जिस वाजीकरण के आश्रय तुष्टि, पुष्टि और सन्तान हैं; जो यश-मान और धन-धर्म तथा कुलको बढ़ाने वाला पुत्र दे सकता है; जो युवती स्त्रियोंका गर्व्व खर्व्व करके, उन्हें पुरुषकी दासी बना सकता है; संसार में उससे बढ़कर और कौनसा पदार्थ है? ऐसे वाजीकरण को कौन सेवन करना न चाहेगा? एक पुरुष-चिह्न-हीन नपुंसक इसे न चाहें तो न चाहें; उनके सिवा, पुरुष-मात्र इसे चाहेंगे। एक ज़माना था, जब भारतवासी सदा-सर्वदा, विशेष कर शीतकाल या मौसम सरमा में, वाजीकरण औषधियों को अवश्य सेवन करते थे; इसीसे वे महा बलवान और पराक्रमी होते थे। उनकी सन्तानं भी रूपवती, बलवती और बुद्धिमती होती थी एवं उनकी स्त्रियाँ सच्ची पतिव्रता और भारतका मस्तक ऊँचा करने वाली होती थीं। उनको आज-कलकी तरह आधि-व्याधियों का शिकार न न होना पड़ता था और इसी से दम-दम में वैद्य-डाक्टरों का मुँह देखना न पड़ता था। वे पूर्णायु भोग कर, संसार में अपनी कीर्त्ति छोड़कर, सच्ची मृत्यु आने पर, सुखसे देह त्यागते थे। अकाल-मृत्यु उनके दर्शनों से काँपती थी। जब से भारतीयों ने आयुर्वेद का पढ़ना छोड़ा, आयुर्वेद-विद्या केवल धन्धा करने वाले वैद्यों की विद्या होगई; उन्होंने बिना काम-शास्त्र पढ़े ही स्त्री-प्रसङ्ग करना शुरू कर दिया; तबसे अधिकांश लोग "वाजी करण" किस चिड़िया

का नाम है, यह भी नही जानते। जानते हैं, केवल वैद्य-विद्यासे रोटी कमा खाने वाले वैद्य-मात्र। वाजीकरण औषधियों का व्यवहार घट जाने या न रहने से ही—यहाँ के निवासी अल्प-वीर्य, अल्पायु, अल्प-पुरुषार्थी, अल्प-धनी और अल्प-बुद्धि होगये। उन पर दूसरे देश वालोंने अपना सिक्का आ जमाया, उन्हें गुलाम और दास बना दिया। बक़ौल यूनानी यात्री मेगास्थनीज़के, जिस भारतमें ढूँढने और खोज करने से भी व्यभिचारिणी या पर-पुरुष-रता स्त्रियाँ न मिलती थीं, सर्वत्र पतिव्रता-ही-पतिव्रता नज़र आती थीं; अब उसी भारतमें, अन्यान्य देशों की तरह, अपतिव्रता और कुलटाओं की भरमार हो रही है। जिस तरह दो अढ़ाई हज़ार वर्ष पहले, कुलटा देखने को न मिलती थी; उसी तरह अब सच्ची पतिव्रता किसी-किसी भाग्यशालीके घरमें ही होती हो तो होती हो। ये सब आयुर्वेद न पढ़ने और वाजीकरण तथा रसायन औषधियों के न सेवन करने का ही फल है। आज कोई विरला ही पुण्यात्मा होगा, जिसे "प्रमेह" न हो; आज कोई विरला ही खुशक़िस्मत होगा, जिसका वीर्य निर्दोष, समुचित गाढ़ा, सफेद और प्रसङ्ग में आनन्द देने वाला हो। आयुर्वेद-ग्रन्थोंमें लिखा है—"मैथुनमें, बहुत ही जल्दी वीर्यपात होने पर भी, यदि गर्भ रह जाता है, तो पैदा होने वाली सन्तान कमज़ोर होती है और यदि उचित से अधिक देरमें वीर्य स्खलित होता है, तो क्रोधी और पित्त-प्रकृति यानी गर्म-मिज़ाज वाली औलाद पैदा होती है।"

आजकल जिसे देखो उसीको धातु पतली है, जिसे देखो उसी को गर्म-बादी या उष्णवात का मर्ज़ है। आजकल ऐसे लोगों की इफ़रात है, कि जो स्त्रीके दर्शन करते ही धोती ख़राब कर देते हैं; स्वर्ग-द्वार में जाना तो दूर की बात है, द्वार पर ही मुक्त हो जाते हैं। आज कौन वेदमंत्र पढ़कर सन्तानार्थ मैथुन कर सकता है? जितनी देर में वेद-मन्त्र समाप्त न होगा, उससे पहले ही करम फूट जायेंगे। लोगोंमें स्तम्भन-शक्ति ज़रा भी नहीं। जिसे देखो वही

"स्तम्भन वटी" की खोजमें है। स्तम्भनकारक औषधि लोग मँगाते हैं, विज्ञापन-बाज़ों को ठगाते हैं; पर उनका मनोरथ पूरा नहीं होता। जब तक वीर्य शुद्ध, पुष्ट और शीतल न होगा; इच्छानुसार स्तम्भन हज़ार कोशिश करने पर भी न होगा। जिन्होंने बचपन में हथरस या गुदा-मैथुन किया है, जिन्होंने चिन्ताको अपनी साथन बना रक्खा है, जिन्हें स्त्री-भोगके क़ायदे नहीं मालूम, जिन्होंने—साल-दर-सालकी तो बड़ी बात है,—जीवन में कभी भी बाजीकरण औषधियों का सेवन नहीं किया, उनको स्तम्भन हो नहीं सकता; उनका वीर्य इच्छामत रुक नहीं सकता; उनकी प्राणवल्लभा उनसे सन्तुष्ट हो नहीं सकती; उनके घरसे कलह जा नहीं सकता; वे अपनी प्राणेश्वरी के लिए चाहे जितने वस्त्रालङ्कार क्यों न दें, सोने और जवाहिरात से उसे जड़ ही क्यों न दें। बहुत लिखने से यह ग्रन्थ बढ़ जायगा और उतना बढ़ाना हमें अभीष्ट नहीं; इसलिये हम इस विषय को यहीं खतम करके, सम्भोग-सम्बन्धी अन्य आवश्यक बातें लिखते हैं;—

स्त्री-गमनका उचित समय।

हम लिख आये हैं, कि प्राचीन कालके भारतीय, एक मात्र सन्तान पैदा करने के लिये ही शादी करते थे; आज-कल की तरह विषय-लालसा पूरी करने को विवाह-शादी न करते थे। हमें रघुवंशका एक श्लोक याद आया है, उससे पाठकों को हमारी इस बात पर यक़ीन हो जायगा। महाकवि कालिदासने महाराजा दिलीपके सम्बन्धमें रघुवंशके प्रथम सर्गमें लिखा है:—

स्थित्यै दण्डयतो दण्ड्यान् परिणेतुः प्रसूतये।
अप्यर्थ कामौ तस्यास्तां धर्मएव मनीषिणः॥

उस सुपण्डित राजाके अर्थ और काम भी धर्मरूपमें परिणत हो

गये थे, क्योंकि लोकस्थितिके लिये वह अपराधियोंको दण्डित करता था और सन्तानके लिये उसने विवाह किया था ।

कहिये पाठक ! अब तो सन्देह नहीं रहा, कि प्राचीन कालके अधिकांश भारतीय केवल सन्तानार्थ विवाह करते थे । वे लोग, विवाह करके, सन्तान उत्पन्न करना—अपना धर्म और फ़र्ज़ समझते थे । चूँकि ऋतुकालमें, शास्त्रमें लिखी रात्रियोंमें, मैथुन करने से गर्भ रहने की सम्भावना रहती है ; अतः वे ऋतु-काल के सिवा अन्य दिनों में स्त्री-प्रसंग न करते थे और ऋतुकालमें ऋतुदान न करने या प्रसंग न करने में अपने तईं दोष-भागी समझते थे । एक बार रघुवंशी दिलीप महाराज स्वर्गको गये थे । जब युद्धमें जय लाभ करके भारतको लौटने वाले थे, उन्हें याद आगई कि अमुक दिन रानी ऋतु-स्नान करेंगी; अतः वे शीघ्रता से चले । राहमें, वे वशिष्ठाश्रममें आये; पर ऋतुदानका समय निकल जानेके ख़याल से, जल्दीमें, मुनिकी गौ-सुरभि की प्रदक्षिणा करना भूल गये और अपनी राजधानी में आ गये । उन्होंने ऋतुदान किया, पर गर्भ न रहा । सन्तान न होने के ख़याल ने उन्हें अत्यन्त दुखित कर दिया । इसलिए उन्होंने वशिष्ठजी के पास जाकर, उन्हें अपनी हृदयव्यथा सुनाई । ऋषिने विचार कर कहा :—

> धर्मलोपभयाद्राज्ञीमृतुस्नातामिमां स्मरन् ।
> प्रदक्षिणा क्रियार्हायां तस्यां त्वं साधु नाचरः ॥
> अवजानासि मां यस्मादतस्ते न भविष्यति ।
> मत्प्रसूतिमनाराध्य प्रजेति त्वां शशाप सा ॥

जिस दिन आप स्वर्ग से लौट रहे थे, उस दिन रानीने, चौथे दिन, ऋतुस्नान किया था । आप को उसी दिन राजधानी में पहुँचकर, ऋतुदान करनेका ख़याल हो आया । आपको, समय पर न पहुँचने से, धर्मके लोप होनेका भय था; अतःआप जल्दीमें सुरभिकी प्रदक्षिणा करना भूल गये । इसलिए सुरभि ने आपको शाप दिया, कि तुमने

मेरी अवज्ञा की है ; अतः जब तक तुम मेरी सन्तानकी सेवा न करोगे, तुम्हारे सन्तान न होगी ।

पाठक, हमारे इतना लिखने का यही मतलब है, कि आप समझ जायँ, पहलेके लोग ऋतुकालके सिवा अन्य दिनोंमें स्त्री-प्रसङ्ग न करते थे और ऋतुकालके समय प्रसङ्ग न करने में धर्महानि समझते थे । वे लोग आज-कल की तरह जब इच्छा होती थी, स्त्री-गमन न करते थे ; क्योंकि ऋतुसमय गमन करने से वीर्य वृथा नष्ट नहीं होता । उसके फलने-फूलनेकी आशा रहती है । वीर्य समस्त धातुओंका सार है, प्राणी का बल-पुरुषार्थ और जीवन है । उसे गँवारोंके सिवा और कौन वृथा नष्ट करना चाहेगा ?

"मनुसंहिता"में लिखा है:—

> ऋतुकालाभिगामीस्यात्स्वदारनिरतस्सदा ।
> पर्व वर्ज व्रजेच्चैनां तद्व्रतोरति काम्यया ॥
> ऋतुः स्वाभावकिः स्त्रीणां रात्रयः षोडशस्मृताः ।
> चतुर्भिरितरैः सार्द्धमहोभिः सद्धिगर्हितैः ॥

पुरुषको, ऋतुकालमें, अपनी स्त्री के साथ संगम करना चाहिये । अपनी स्त्रीके सिवा, पर-स्त्री गमनका ख़याल भी मन में न लाना चाहिये । अमावस, चौदस प्रभृति पर्वको रात्रियोंमें संगम न करना चाहिये । स्त्रियोंका स्वाभाविक ऋतुकाल सोलह रात्रियोंका है । उनमें से पहलेकी चार रात्रियोंमें गमन करना ठीक नहीं । इसी तरह ग्यारहवीं और तेरहवीं रात भी प्रसंगके लिये ठीक नहीं । शेष बची दस रात्रियोंमें मैथुन करना चाहिये ।

सारांश यह है, कि रजोधर्म होने के दिन से सोलह रात्रियाँ ऋतु-कालकी हैं । इनमें से पहली चार तथा ग्यारहवीं और तेरहवीं रातें प्रसङ्ग करने योग्य नहीं । शेष दसमें प्रसङ्ग करना चाहिए । इस विषयमें मत-भेद है, अतः हम सर्वसम्मत नियम लिखते हैं :—

पहली तीन रातों में तो भूल कर भी स्त्री-सङ्गम न करना चाहिये ।

इन रातोंमें संगम करने से भयङ्कर रोग हो जाते हैं; यहाँ तक कि, पुरुष नपुंसक हो जाता है। आयुर्वेदमें लिखा है:—

रजस्वलां गतवतो नरस्यासंयतात्मनः।
दृष्ट्यायुस्तेजसां हानिरधर्म्मश्च ततो भवेत्॥

रजस्वला के साथ प्रसंग करने से दृष्टि, आयु और तेजकी हानि होती तथा घोर पाप लगता है; अत: ऋतुकालके पहले तीन दिनोंमें स्त्री-प्रसंग न करना चाहिए। चौथे दिन से प्रसंगका दिन गिना जाता है; क्योंकि पहली तीन रातोंमें, स्त्रीकी योनि से रज बहुतही ज़ियादा गिरती रहती है। उस दशामें, प्रसंग करने से वीर्य ठहर नहीं सकता; वह बह आता है। इसके सिवा, स्त्रीके खूनमें जो गरमी होती है, वह पुरुषके लिंग द्वारा उसके शरीरमें प्रविष्ट करके, उसके खूनको गरम कर देती और मस्तिष्क तक पहुँच कर उसे बुद्धिहीन बना देती है। जो रजस्वलाके साथ बारम्बार प्रसंग करते हैं, उन्हें पेशाबके अनेक रोग सोज़ाक, गरमी—उपदंश, मूत्र-कृच्छ्र या भगन्दर प्रभृति हो जाते हैं।

आयुर्वेद-ग्रन्थोंमें लिखा है:—

(१) पुरुष यदि चौथे दिन प्रसंग करता है, तो उसके निरोग और पूर्णायु पुत्र पैदा होता है।

(२) छठी रातमें प्रसंग करने से निश्चयही पुत्र पैदा होता है।

(३) आठवीं रातमें प्रसङ्ग करनेसे भाग्यवान् पुत्र पैदा होता है।

(४) दसवीं रात में प्रसंग करने से धनैश्वर्यमान पुत्र होता है।

(५) बारहवीं रात में प्रसंग करने से बलवान् पुत्र पैदा होता है।

नोट—इस बातको याद रखना चाहिये कि, उत्तरोत्तर रात्रियां सर्वश्रेष्ठ हैं। चौथी रात से छठी, छठी से आठवीं, आठवीं से दसवीं और दसवीं से बारहवीं उत्तम होती हैं। मतलब यह कि, आठवीं रातमें संगम करने से जैसा बलवान और

बुद्धिमान पुत्र होगा, उसकी अपेक्षा दसवीं में प्रसंग करनेसे औरभी बलवान होगा तथा दसवीं से भी अधिक बली बारहवीं में प्रसंग करने से होगा। यह बात हमने स्वयं परीक्षा करके देखी है कि, आठवीं रातमें प्रसंग करने से अवश्यही पुत्र होता और वह बलवान होता है।

(६) पाँचवीं, सातवीं, नवीं और ग्यारहवीं रातों में प्रसंग करने से कन्या पैदा होती है। पाँचवीं की अपेक्षा सातवीं, सातवीं की अपेक्षा नवीं और नवीं की अपेक्षा ग्यारहवीं रात कन्या पैदा करने के लिए उत्तम है।

(७) चौथी, छठी, आठवीं प्रभृति युग्म रातें पुत्र पैदा करने के लिए और पाँचवीं, सातवीं, नवीं प्रभृति कन्या पैदा करने के लिए हैं। उनमें प्रसङ्ग करने से पुत्र होता है और इनमें प्रसंग करने से कन्या होती है। लेकिन तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं रातें गर्भाधानके लिए ठीक नहीं हैं।

(८) चौथी, छठी आदि सम रात्रियोंमें पुरुषका वीर्य ज़ियादा और स्त्री की रज कम रहती है। पाँचवीं, सातवीं प्रभृति विषम रात्रियोंमें पुरुषका वीर्य कम और स्त्री की रज अधिक होती है। यदि पुरुषका वीर्य अधिक होता है, तो पुत्र होता है और यदि स्त्री की रज अधिक होती है, तो कन्या होती है। पुरुषका वीर्य और स्त्री की रज—दोनोंके समान होने से नपुंसक पैदा होता है। अतः यदि पुत्रकी इच्छा हो, तो सम रात्रियोंमें और कन्या की इच्छा हो, तो विषम रात्रियोंमें मैथुन करना चाहिये।

(९) हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है,—"स्त्री-प्रसंगके लिये मौसम बहार या बसन्त ऋतु अच्छी है। सात वारोंमें सोमवार, वृहस्पतिवार और शुक्र की रात प्रसंगके लिये उत्तम हैं। इन तीन दिनों के सिवा और दिनों में मैथुन करने से जो सन्तान होती है, वह चोर और लबार होती है तथा माता को दुःख देती है।

"सोमवार की रात का मालिक चन्द्रमा और मस्तरी वज़ीर है;

अतः सोमकी रातको मैथुन करने से जो सन्तान होती है, वह प्रखरबुद्धि, सन्तोषी और माके हकमें अच्छी होती है ।

"मंगलका स्वामी मिरीख और वज़ीर जोहरा है, अतः मंगलको सहवास करना हानिकर है । अगर मंगलको संगम किया जायगा और गर्भ रह जायगा; तो मरी हुई सन्तान होगी ।

"बुधका मालिक अतारुद और वज़ीर जोहरा है । इस रातमें संगम तो दूर रहा, स्त्री से बात भी न करनी चाहिये ।

"वृहस्पतिका स्वामी मुस्तरी और वज़ीर सूरज है । वृहस्पतिकी रात स्त्री-प्रसङ्गके लिए सब से उत्तम है ।

"शुक्रका स्वामी जोहरा और वज़ीर या मन्त्री चन्द्रमा है । इस दिन विवाह या प्रसंग करना बहुत ही अच्छा है । आजके दिन गर्भ रहने से जो सन्तान होती है, वह विद्वान् और तपस्वी होती है, यह परीक्षा करके देख लिया है ।"

(१०) वैद्यक-ग्रन्थोंमें लिखा है—सवेरे शाम, पर्वके दिन, आधी रातको, गायोंको छोड़ने के समय और दोपहर के समय मैथुन करना हानिकारक है । जिस में प्रभात-कालका मैथुन तो बहुत ही हानिकर है । किसी विद्वान्ने कहा है—

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ।।

सड़ा मांस, बूढ़ी स्त्री, सवेरे का सूरज, तत्कालका जमाया दही, प्रभात-कालका मैथुन और प्रातःकालका सोना,—ये छै तत्काल बलको नाश करने वाले हैं ।

हेमन्त और शिशर ऋतु या पौष-माघमें, गुदगुदे बिस्तरों पर स्त्रियोंसे चित्त प्रसन्न करना, वाजीकरण औषधियाँ सेवन करके उन्हें आलिंगन करके सोना और शक्ति-अनुसार मैथुन करना ठीक है ।

वसन्त या फ़ागुन-चैतमें, बाग़ोंकी सैर करना और युवती से मैथुन करना सुखदायी है ।

ग्रीष्म ऋतु या वैशाख-जेठमें, स्त्री-प्रसङ्ग करना हानिकारक है। अगर रहा ही न जाय, तो पन्द्रहवें दिन कर सकते हैं।

बरसातमें जब बादल छा रहे हों, मन्दी-मन्दी वर्षा हो रही हो, मैथुन कर सकते हैं; पर नित्य मैथुन करना रोग मोल लेना है।

शरद् ऋतु या कातिक-अगहन में, जब दिलचाहे, सरोवर प्रभृतिके किनारे, मैथुन कर सकते हैं।

पौष-माघमें, वाजीकरण औषधियाँ सेवन करके, इच्छानुसार, मैथुन कर सकते हैं। वसन्त और शरद् ऋतु यानी फागुन-चैत और कातिक-अगहनमें, तीन-तीन दिनके बाद मैथुन कर सकते हैं। वर्षा-काल और गरमी के मौसममें, महीने में दो बार मैथुन कर सकते हैं।

जाड़े के मौसममें रात के समय, गरमी में दिनके समय, वसन्त में रात या दिन किसी समय—जब जी चाहे—प्रसङ्ग कर सकते हैं; पर बरसातमें जब बिजली चमकती हो और बादल गरजते हों, तभी कर सकते हैं।

जब शरीर तन्दुरुस्त हो, शरीर में यथेष्ट बल हो, मनमें शोक-चिन्ता ईर्षा-द्वेष आदि विकार न हों और हवा ठीक हो,—भोजन पच गया हो, पर पेट एकदम ख़ाली न हो; तभी मैथुन करना चाहिये। पाख़ाने-पेशाबकी हाजत और भूख-प्यासकी हालत में मैथुन न करना चाहिये। अगर भोजन न पचा हो, शरीर में थकान हो, पहली रातमें जागरण किया हो, मनमें शोक-चिन्ता आदि विकार हों, भूलकर भी, मैथुन न करना चाहिये। इस दशा में, मैथुन करने से बेहोशी प्रभृति उपद्रव हो सकते हैं। मन सुस्त हो, भूख लगी हो, तब भी मैथुन न करना चाहिये। शरीर में गरमी या सरदी हो, तब भी मैथुन न करना चाहिये। अगर बहुत ही मन हो, तो गरमी कम होने पर कर सकते हैं। रूखी प्रकृति वालोंको हम्माम या स्नानागार में और अधिक सरदी में मैथुन हानिकारक है।

कामियों के याद रखने योग्य बातें।

(१) कम उम्रमें स्त्री-प्रसंग करना अनुचित है। छोटी वयस में मैथुन करने या अधिक स्त्री-प्रसंग करने से 'शुक्रतारल्य' रोग हो जाता है; यानी वीर्य पतला हो जाता है। इस दशामें, मल-मूत्र त्यागते समय वीर्य निकल जाता है; स्त्री को देखने या छूने-मात्रसे वीर्य से धोती बिगड़ जाती है; ज़रा भी रुकावट नहीं होती; यानी संगम होते ही अथवा भगदर्शन करते ही वीर्यपात हो जाता है। अगर इस दशा में जल्दी ही इलाज नहीं किया जाता; तो दस्तक़ब्ज़, अजीर्ण, मन्दाग्नि, अतिसार, काममें दिल न लगना, सिर घूमना, चक्कर आना और नेत्रों के इर्द-गिर्द काले-काले दाग़ हो जाना प्रभृति रोग हो जाते हैं। जब रोग बढ़ जाता है, तब लिंगके चैतन्य हुए बिना ही वीर्य गिरने लगता है। फिर, चैतन्यता या शहवत होना ही बन्द हो जाता है अथवा 'ध्वजभंग रोग' आ दबाता है; यानी मर्द नामर्द हो जाता है। गाहे-बगाहे स्वप्न-दोष होने लगते हैं; पर स्त्री-प्रसंगकी शक्ति नहीं रहती। अतः छोटी उम्र में ही स्त्री-प्रसंग या हस्तमैथुन आदि से वीर्य-पात न करना चाहिए। वागभट्ट महोदय कहते हैं:—

> पूर्णषोडशवर्षा स्त्री पूर्णविंशेनसंगता।
> शुद्धे गर्भाशये मार्गे रक्ते शुक्रे अनिले हृदि॥
> वीर्यवन्तं सुतं सूते ततो न्यूनाब्दयोः पुनः।
> रोग्यल्पायुरधन्यो वा गर्भोभवति नववा॥

सोलह सालकी स्त्री अगर बीस सालके पुरुषके साथ मैथुन करती है; साथही गर्भाशय, गर्भाशयकी राह, खून, वीर्य, हवा और हृदय शुद्ध होते हैं; तो वह वीर्यवान् बलवान् पुत्र जनती है। अगर इन अवस्थाओंसे कम उम्रके स्त्री-पुरुष मैथुन करते हैं, तो प्रथम तो गर्भ रहता ही नहीं; अगर रह भी जाता है, तो रोगी, अल्पायु और निर्धन सन्तान होती है।

नोट—सुश्रुताचार्य १६ सालकी स्त्री और २४ सालके पुरुषको गर्भाधान करने या प्रसंग करने की आज्ञा देते हैं। पर; आजकल तो ८।१० वर्षकी लड़की और दस-बारह बरसके लड़कोंकी शादी हो जाती है। माता-पिता १३।१४ सालके कच्चे लड़कों को बहूके पास जबर्दस्ती भेजते हैं। परिणाम यह होता है, कि शीघ्रही लड़कों को "प्रमेह या शुक्रतारल्य" अथवा धातुके पतलेपन का रोग हो जाता है। १८-२० सालके लड़के धातुपुष्टिकी दवा खोजते देखे जाते हैं। हमारे यहाँ ऐसे रोगी जितने आते हैं, उतने और रोगोंके नहीं आते। मारवाड़ियोंमें बाल-विवाहकी बड़ी चाल है; अतः वे ही सबसे जियादा आते हैं। जिन्हें स्त्री-सुखका आनन्द भोगना हो, उत्तम सन्तान पैदा करनी हो, पूरी उम्रतक जीना हो, धर्म- अर्थ-काम-मोक्ष—चतुर्वर्ग—की प्राप्ति करनी हो, उन्हें कम-से-कम महर्षि वाग्भट्टकी आज्ञा पर चलना चाहिये। सुश्रुतकी आज्ञा पालन करना तो बड़े कलेजे का काम है!

(२) वाजीकरण औषधियोंके सेवन करने वाला, शुद्ध वीर्य और निरोग शरीरवाला पुरुष, सोलह वर्षकी उम्र से सत्तर सालकी उम्र तक, मैथुन कर सकता है। सोलह से कम और सत्तर से ज़ियादा उम्रमें मैथुन हानिकारक है। अगर सत्तर सालके ऊपर की उम्र-वाला मैथुन करता है, तो शीघ्रही नष्ट हो जाता है।

नोट—आजकल जन्म-भर शरीरमें तेल न देने और हरसाल वाजीकरण औषधियाँ न खाने से—चालीस पैंतालीस सालकी उम्र में ही—पुरुष स्त्री-प्रसंगके योग्य नहीं रहते। इस उम्र में नहीं,—तो ५०।५५ की उम्रमें; पहले के ७० साल वालों से भी गये-बीते हो जाते हैं।

(३) स्त्री-प्रसंग नियमानुसार करना चाहिए। अधिक स्त्री-प्रसंग करने में असीम हानियाँ हैं। अधिक सहवाससे शोथ—सूजन, खाँसी, क्षय या राजयक्ष्मा (थाइसिस), ज्वर, बवासीर, पीलिया, स्वरभंग, ध्वजभंग-नामर्दी आदि भयंकर और प्राणसंहारक रोग हो जाते हैं। जिन्हें अधिक मैथुन करना हो उन्हें, सदा, वाजीकरण औषधियाँ सेवन करनी चाहियें। आयुष्मान, बुढ़ापे से रहित—जवान, बलवान, हृष्टपुष्ट पुरुषोंको, हर मौसम में, तीन-तीन दिनके बाद और मौसम गरमी में पन्द्रह दिनके बाद स्त्री-प्रसंग करना

उचित है। जो लोग इन नियमोंके विपरीत मैथुन करते हैं, उन्हें उपरोक्त रोगोंके सिवा और भी दुर्जय रोग होजाते हैं और वे अपने समयसे पहले ही मर जाते हैं। कहा है:—

ग्लानिः श्रमश्च दौर्बल्यं धात्विन्द्रिय बलक्षयः।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या रोगाश्चातीव दुर्जयः।
अकालमरणञ्च स्याद्भजतः स्त्रियमन्यथा॥

जो नियम-विरुद्ध या शास्त्र-विधि-विपरीत मैथुन करते हैं, उन्हें ग्लानि, श्रम, कमज़ोरी, धातु और इन्द्रियोंके बलका नाश, क्षय, अण्डवृद्धि—फोते बढ़ना और उपदंश प्रभृति रोग हो जाते हैं और वे अकालमृत्यु से मर जाते हैं।

जो पुरुष धड़ाधड़ मैशीन चलाते हैं, अपने बल से अधिक स्त्री प्रसंग करते हैं, वे अगर पूरी उम्र तक जीना चाहें, सदा निरोग रहना चाहें, लोक-परलोक बनाना चाहें; तो आजसे ही नियमानुसार मैथुन करें। स्त्री-प्रसंगमें सन्तानोत्पत्तिके सिवा और कोई लाभ नहीं। जिन्होंने अपनी उम्रमें अत्यन्त स्त्री-प्रसंग किया, उन्हें हमने पछताते और रोते देखा। एक दिन ऐसा हाल सभी का होता है। ये बूरके लड्डू हैं। जो इन्हें खाता है, वह भी पछताता है और जो नहीं खाता है, वह भी पछताता है।

हमारा अभिप्राय यह नहीं, कि जीवन-भर स्त्री-प्रसंग करना ही न चाहिए। हम कहते हैं, कीजिए, अवश्य कीजिए, पर अधिक न कीजिए। हर चौथे दिनमें रात को, एकबार कीजिए। एक रात में दो-दो और तीन-तीन बार करना, कदापि अच्छा नहीं। दूसरी तीसरी बार करने से वीर्य की जगह खून या खून-मिला वीर्य आता है। अधिक वीर्य नष्ट करने से आँखोंकी रोशनी घट जाती है, असमयमें बाल सफेद होने लगते हैं, नेत्रोंके नीचे काले-काले दाग़, भाँई या चकत्ते हो जाते हैं; २५।३० अथवा ज़ियादा-से-ज़ियादा ४०।५० सालकी उम्र में मृत्यु हो जाती है। जो बहुत ही ज़ियादा मैथुन करते हैं, दिन-

रात उसीमें लगे रहते हैं, वे तो क्षयादि रोगोंके पंजोंमें फँसकर, भर-जवानी में ही अपनी प्राणवल्लभा को रोती-बिलपती छोड़कर, यमराजके मेहमान होते हैं। इसीसे वेदोंमें महीने में एक बार, ऋतु-स्नानके बाद, मैथुनकी आज्ञा है।

(४) जब आपका शरीर सब तरह से निरोग हो, आपका दिल कहीं न लगे, लिंगेन्द्रिय बिना मन चलाये आपही सख़्त हो जाय, स्त्री को देखते ही कलेजा धड़कने लगे, ग़फ़लत-सी होने लगे, उस हालतमें आप अवश्य मैथुन करें। ये कामातुर होने के लक्षण हैं। इस अवस्थामें मैथुन न करने से—मैथुनके वेगको रोकने से—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र और नपुंसकत्व आदि रोग हो जाते हैं। जो कामातुर होने पर भी, बार बार वीर्यके वेगको रोक लेते हैं; वीर्य निकलना चाहता है और लोग निकलने नहीं देते; उनका वीर्य शान्त हो जाता है; फिर इच्छा करने से भी अपने स्थानसे चलायमान नहीं होता। बिना वीर्यके चलायमान् हुए, पुरुष मैथुन कर नहीं सकता। मतलब यह है, कि लिंगेन्द्रियके चैतन्य होने या शहवत होने पर भी, जो मैथुन नहीं करते—वे निश्चयही नामर्द हो जाते हैं। ऐसी नामर्दी को "शुक्रस्तम्भजन्य" या वीर्य रुकने से हुई नामर्दी कहते हैं। इसके सम्बन्धमें हम इसी भागके पृष्ठ १२५ में लिख आये हैं। भगवान् ने जो अंग जिस कामको बनाया है, उससे वही काम लेना चाहिये; पर उचित रूप से। अगर उस अंग से उसका काम न लिया जायगा, तो वह निश्चयही बेकाम हो जायगा। लोहेकी चाबी से अगर काम नहीं लिया जाता, वह नित्यप्रति तालेमें लगाई नहीं जाती, तो उस पर ज़ङ्ग चढ़ जाती है और फिर वह ताले में नहीं लगती, उसे न खोलती है और न बन्द करती है। हमने देखा है, अगर नित्य एक बार मैथुन किया जाता है, तो अपने समय पर नित्य लिङ्गेन्द्रिय में सख़्ती और तेज़ी आजाती है; पर यदि चार-छै महीने एक-दम नहीं किया जाता, तो पहले कुछ कठिनाई होती है; यानी कुछ दिक़्क़त

उठाने के बाद शहवत या कामेच्छा होती है। अतः लिङ्गेन्द्रिय से पेशाब और मैथुन दोनों ही का काम लेना चाहिये ; पर अति सब जगह ख़राब है। खीर का भोजन अमृत-तुल्य है। अगर उचित मात्रासे खाते हैं; तो मनमें प्रसन्नता, तृप्ति और बल-वृद्धि होती है। पर यदि वही खीर अत्यधिक खाई जाय—अनापशनाप उड़ाई जाय; तो अजीर्ण, दस्तक़ब्ज़ और कृमि-रोग प्रभृति रोग पैदा कर दे। रोज़ मैथुन करने से जितना आनन्द आता है, उसकी अपेक्षा तीसरे-चौथे दिन करने से अधिक आता है और तीसरे चौथे दिन की अपेक्षा, महीने में दो, चार या एक बार करने से और भी अधिक आता है। सरांश यह, कामातुर होने पर, काम का वेग होने पर, मैथुन अवश्य करो। जिस तरह छींक, डकार, नींद प्रभृति तेरह वेगोंका रोकना भयङ्कर रोगोत्पादक है ; उसी तरह मैथुन के वेग के रोकने को भी समझिये।

(५) मैथुन जब करो, अपनी ही स्त्री से करो; पराई स्त्रियों या वेश्याओं के साथ मैथुन करने में इतनी हानियाँ हैं, जिनकाउल्लेख हम कर नहीं सकते। अपनी स्त्री में जो आनन्द है, पराई में उसका शतांश भी नहीं। पर-स्त्री में सदा जानकी ख़तरा रहता है। हर समय भय लगा रहता है। जब मनमें भय होगा, स्त्री-प्रसङ्गमें आनन्द कदापि न आयेगा। भयातुर पुरुष को पूरे तौर से शहवत ही नहीं होती। ऐसे मौक़ों पर, लोग ज़बर्दस्ती लिङ्गेन्द्रिय को चैतन्य करने की कोशिश करते हैं। अनेक बार वह चेष्टा करने पर भी चैतन्य नहीं होती और यदि होभी जाती है; तो पूरा आनन्द नहीं आता ; क्योंकि डरके मारे दिल धड़कता रहता है। इसके सिवा, अपनी स्त्री की अपेक्षा पराई स्त्री और वेश्या के साथ गमन करनेसे वीर्य भी ज़ियादा निकलता है। यह सब से बड़ी हानि है। फिर; पर-स्त्री में मुहब्बत भी नहीं होती। वह केवल काम-शान्ति या गहने-कपड़ों के लालच से आपकी हुई है। जबतक आप उसकी इच्छा पूरी करेंगे, वह

आपको रहेगी; जहाँ इसमें बाधा पड़ी अथवा कोई आपसे अच्छा देने वाला या काम-शान्ति करने वाला मिला, वह आपको फौरन से पहले त्याग देगी। जो अपने व्याहता को छोड़ कर, दूसरे पुरुष से प्रेम करती है, उसे नित-नये पुरुषों की चाट लग जाती है। कहा है:—

एक नारि जब दो से फसी; जैसे सत्तर वैसे असी

पर-पुरुषरता स्त्रियोंको किसीसे भी सच्ची मुहब्बत नहीं होती। जब वे अपने सात फेरों के व्याहता की न हुईं; तब यारों या धरे खसमों की कैसे होंगी? किसी ने ठीक ही कहा है:—

कागज की भसम क्या भसमन में? धरो खसम क्या खसमन में?
सौ रूपैया क्या रुपैयान में? एक बेटा क्या बेटान में?

जिन्होंने भी पर-नारियों पर नीयत डिगाई, उनका अन्तमें बुरा ही हुआ। रावण ने सीता पर मन डिगाकर, अपना सर्व्वनाश कराया और प्राणतक खोये। जयद्रथ ने द्रौपदी पर नीयत डिगाकर अपना घोर अपमान कराया। भीम ने उसकी एक ओर की मूँछें और सिर मूँडकर, द्रौपदी के सामने ही लातें लगाईं। कीचक ने भी द्रौपदी के कारण ही अपनी जान गँवाई। स्वयं त्रिलोकीनाथ भगवान् विष्णुने, जलन्धर-पत्नी—वृन्दाके साथ व्यभिचार करके, नीचा देखा। दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा कहलाने वाले, सम्राट्कुल-तिलक शाहन्शाह अकबर ने, पर-स्त्री-गामी होने के कारण, अपनी घोर बदनामी कराई। शेषमें, बीकानेर की एक सती-साध्वी रानीने शिक्षा देकर, उनकी खोटी लत छुड़ाई। परनारी के फेर में पड़ने वालों का सर्वस्व स्वाहा हो जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है—

परनारी पैनी छुरी, तीन ठौरते खाय।
धन छीजे, जोबन हरे, मुए नरक ले जाय॥

पर-नारियाँ से बचने के लिये, अपने-हिन्दुओं के धर्म-शास्त्र—"मनुसंहिता" के रचयिता मनु महाराज ने कहा है:—

> ऋतुकालाभिगामी स्यात् स्वादरे निरतः सदा ।
> ब्रह्मचर्य्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन् ॥

जो पुरुष अपनी ही स्त्री से सन्तुष्ट रहता है और ऋतु-काल में उसी से संगम करता है, वह, गृहस्थाश्रम में रह कर भी, ब्रह्मचारी के समान होता है ।

नीति-शास्त्र में भी लिखा है:—

> मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् ।
> आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः ॥

जो पर-स्त्रियों को अपनी जननी—माताके समान, पराई दौलत को मिट्टी के ढेलेके समान और समस्त प्राणियोंको अपने समान देखता है, वही पण्डित या बुद्धिमान है ।

जो लोग अपनी स्त्रियों को त्याग कर, पर-स्त्री-गमन या वेश्या-गमन करते हैं,—उन्हें क्षण-भर को भी सुख नहीं मिलता । बन्धु-बान्धव और अड़ौसी-पड़ौसी उनकी निन्दा करते हैं, घरकी स्त्री दुखी होकर उनको कोसती और घरमें घुसते ही कलह-देवीका सामना करना पड़ता है । जिस घरमें कलह रहता है, हमने आँखों से देखा है, वह घर सत्यानाश हो जाता है । मनुजी ने बहुत ही ठीक कहा है:—

> शोचन्ति यामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
> न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा ।
> सन्तुष्टो भार्य्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्य्या तथैव च ।
> यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वैध्रुवम् ।

जिन घरों में स्त्रियाँ दुखी होकर रात-दिन शोक करती हैं, वे घर शीघ्र ही नाश हो जाते हैं और जिन घरों में ये शोक नहीं करतीं—सदा आनन्द में मग्न रहती हैं, उन घरों की सदा उन्नति होती है ।

जिस घरमें स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री सन्तुष्ट रहती है, दोनों ही एक दूसरे को प्रसन्न रखते हैं, उस घरमें सदा कल्याण रहता है अर्थात् धन-दौलत, सुखैश्वर्य्य और सन्तानकी वृद्धि होती है।

हमने इन आँखों से देखा है कि, जयपुरके एक जौहरी महाशय परले सिरे के पर-स्त्रीगामी थे। आपकी परिणीता पत्नी परमा-सुन्दरी थी, पर वे पाँच-सात रखनी अवश्य रखते थे। घरमें सब तरह के सुखैश्वर्य्य के सामान होने पर भी, उन्हें सदा दुखी रहना पड़ता था। साथही वीर्य-रत्न भी ज़ियादा नष्ट करना पड़ता था। क्योंकि गहने-कपड़े और भोग-विलास तथा धन के लिए ही वे स्त्रियाँ उनके चिपकी रहती थीं। बहुत कहाँ तक लिखें, वे हृष्ट-पुष्ट होते हुए भी रोगों के शिकार बनकर, भर-जवानी में चल बसे। उनका पुत्र भी पिता जी के कुकर्म देखा करता था। उनके मरने के बादसे, वह भी वैसा ही परस्त्रीगामी होगया है। अब सोज़ाक और उपदंश की उस पर सदा कृपा रहती है।

(६) कामी पुरुषों को अपना वीर्य-भण्डार सदा खर्च ही न करना चाहिये। सदा खर्च-ही-खर्च करने और न बढ़ाने से हिमा-लय-समान धन या वीर्य्य भी एक दिन समाप्त हो जाता है। जाड़े में अग्नि तेज़ रहती है ; भारी और पौष्टिक पदार्थ भी पच जाते हैं ; कम-से-कम जाड़े के मौसम में धातुवर्द्धक पदार्थ अवश्य खाने चाहि-एँ। मैथुन करके भी, मिश्री-मिला अधौटा दूध पीना चाहिए। मैथुन के बाद—बदनकी गरमी शान्त होने पर, हाथ-पैर धोकर, दूध पी लेने से जितना वीर्य खर्च होता है, उतना फिर तैयार हो जाता है। स-वेरे ही, बदन में, अपनी प्रकृति के अनुसार "चन्दनादि तैल" या "ना-रायण तेल" मालिश कराकर स्नान करना चाहिये। भोजनके समय हलवा, मोहन भोग, बालाई का हलवा, दूध-चाँवल की खीर या मेवे की खिचड़ी प्रभृति तर, मीठे और पुष्टिकर पदार्थ खाकर दिन

में दो घण्टे सोना चाहिये। जो विषयी पुरुष हमारी इन बातोंपर ध्यान देंगे, उनका बल-वीर्य कभी कम न होगा।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है—"मैथुनके बाद कोई ताक़तवर और तर मिठाई जैसे—मिश्री-मिला अधौटा गायका दूध, रबड़ी, मलाई आदि पदार्थ अवश्य खाने चाहियें। ऐसे पदार्थ खा लेने से, दिल-दिमाग़ में तरी और मज़बूती आती एवं बल-वीर्य नहीं घटता। जितना घटता है, उतना फिर पैदा हो जाता है। 'करावादीन कादरी' में एक प्रकार की ऐसी गोलियाँ लिखी हैं, जिनको मैथुन के बाद खा लेने से गई हुई प्रधान शक्ति फिर लौट आती है। मैथुन किया है, ऐसा मालूम ही नहीं होता।" पाठकों के उपकारार्थ, हम उनके बनाने और सेवन करने की विधि नीचे लिखते हैं:—

मैथुन के पीछे खानेकी गोलियाँ।

मस्तगी ८ माशे और बेंगन के बीज ३ माशे लाकर, पीस-कूटकर छानलो। फिर उस चूर्ण में "अगर का चोया" मिला कर, खरल में, खूब घोटो। घुट जाने पर, कालीमिर्चके समान गोलियाँ बना लो।

मैथुन कर चुकने के बाद, दो या चार गोली खा लेने से फिर पहले-जितनी ही शक्ति हो जाती है। ये गोलियाँ आमाशय को भी बलवान करती हैं।

दूसरा नुसख़ा।

मैथुन के बाद ... माशे घी और ५ माशे शहद में, दश माशे मुलहटी का पिसा-छना चूर्ण मिलाकर चाटने और ऊपर से मिश्री-मिला दूध पीनेसे बे-इन्तहा बल और मैथुन-शक्ति बढ़ती है। कामी पुरुषों को इस नुसख़े का सेवन, बिला नागा, रोज़ शामको, करना चाहिये; चाहे मैथुन करें या न करें। जेठी मधु या मुलहठी वीर्य बढ़ाने और उसका पतलापन नाश करने में रामबाण है।

तीसरा नुसखा ।

सम्भोग कर चुकने के बाद, अगर ज़रासी "सोंठ" डालकर औटाया हुआ दूध पीया जाय, तो बड़ा लाभ हो । इस दूधके पीने से भी गई हुई ताक़त लौट आती हैं । गाय, भैंस और भेड़ का दूध सम्भोग-शक्ति बढ़ाने में परमोत्तम है ।

सुन्दरी नारी भी बल बढ़ानेवाली है ।

मैथुन के बाद शरीरमें तेल मलवाना और रूपवती नारी के नर्मानर्म हाथों से पैरोंके तलवे और पिंडलियाँ मसलवाना भी अच्छा है । कामी पुरुषों के लिए रूपवती कामिनियाँ कल्पवृक्षके समान हैं । इनके साथ रहने, इनको चूमने और हँसी-दिल्लगी करनेसे कामोत्पत्ति होती और संगम करने से आनन्द की प्राप्ति होती है। युवती और सुन्दरी नारियाँ आनन्द और संभोग-शक्ति बढ़ानेमें सर्वोपरि हैं । इनको सुहबत से, शरीर की गरमी और मैथुन करने की शक्ति, निश्चय ही, बढ़ती है । अगर इनके साथ संगम करने से वीर्य अधिक भी निकल जाता है, तोभी ताक़त बहुत ही कम ज़ाया होती है ।

(७) अगर आपका वीर्य स्त्री-प्रसङ्ग करने में शीघ्र ही निकल जाता हो ; तो आप मूर्खों की बातों में आकर "अफीम, भाँग या गाँजे" वगैर: की आदत न डालें । इनसे, आरम्भमें, अवश्य स्तम्भन या रुकावट होगी, पर परिणाम बड़ा भयङ्कर होगा । इनको खाकर मैथुन करनेसे, वीर्य ज़ियादा निकलता और वह गाढ़ा तथा ठिठरा हुआ सा होता है तथा बड़ी मिहनत के बाद निकलता है, इससे बेचैनी और थकावट भी बहुत होती है । लगातार कुछ दिन सेवन करने रहने से, कामोद्दीपक शक्ति जाती रहती है और अच्छा भला मर्द नामर्द हो जाता है ; फिर सुहबत होती ही नहीं । जब आपका वीर्य गाढ़ा, पुष्ट और तर होगा ;उसमें अधिक गरमी न होगी;

तब, इमसाक या स्तंभन की दवा बिना खाये ही, काफी रुकावट होगी। अगर मिर्च, खटाई प्रभृति खाने से आपका पित्त बढ़ गया होगा; तो आपके अच्छी-से-अच्छी रुकावट की दवा खाकर मैथुन करने पर भी, काफी रुकावट न होगी। जिनका वीर्य शुद्ध होता है, अगर वे, कोई उत्तम स्तम्भनकारक पदार्थ खाकर, मैथुन करते हैं; तो उन्हें मामूली से अधिक स्तम्भन या रुकावट होती है। अतः, सब से पहले, वीर्य की गरमी छाँट कर, उसे निर्दोष करना उचित है। अगर स्त्री-प्रसंग में वीर्य के जल्दी निकलने का रोग हो, तो आप नीचे लिखे उपाय करें:—

(क) मिर्च खटाई त्यागकर, सात या चौदह दिन तक, "कबाबचीनी" या शीतल चीनीका चूर्ण, हर दो दो घण्टे में, दिन में छै बार, डेढ़-डेढ़ या दो-दो माशे फाँक कर, एक-एक गिलास "शीतल जल" पीवें। इस उपाय से पेशाब ज़ियादा होकर, वीर्यकी गरमी शान्त होगी और दिल-दिमाग़ शीतल रहेंगे। इस तरह, ८ दिन इस दवा के लेने के बाद, रातको सोते समय, कोई डेढ़ या दो माशे कबाबचीनीका चूर्ण "शहत" में मिला कर ११ या २१ दिन चाटें। परमात्मा की दया से, आपको रुकावट होने लगेगी। शहत में मिलाकर कबाबचीनी, रोज़ रात को एक बार, चाट कर सोजाने से "स्वप्नदोष होना भी बन्द हो जाता है। जिन्हें स्वप्नदोष का रोग हो, वे इसे अवश्य सेवन करें।

(ख) अगर इस उपाय से आपको पूरा लाभ न हो, तो आप कबाबचीनीका चूर्ण, जलके साथ, ८ दिन फाँक कर, नीचे का नुसख़ा काम में लावें। इसके सेवन करने से, आप को अवश्य अधिक स्तम्भन होगा और आप अपनी प्राणवल्लभा को स्खलित या द्रवित करके, अपनी सच्ची दासी बना सकेंगे—

कामिनी-गर्वहारि रस।

अकरक़रा ३ माशे, लौंग ३ माशे, केशर ३ माशे, सोंठ ३ माशे,

पीपर २ माशे, जावित्री २ माशे, जायफल २माशे, लालचन्दन २माशे, शुद्ध गंधक ६ रत्ती, शुद्ध हिंगलू ६ रत्ती और शुद्ध अफीम १ तोले—पहले की लालचन्दन तक की आठों दवाओं को, ६।६ माशे लाकर और अलग-अलग कूट-पीस कर कपड़े में छानलो । फिर; सब को अलग-अलग, तीन-तीन माशे या चौअन्नी-चौअन्नी भर, तोल-तोल कर, साफ खरलमें डालो । ऊपर से ६।६ रत्ती "शुद्ध गंधक" और "शुद्ध हिंगलू" डालो । शेष में, शोधी हुई पतली सी अफीम डाल कर घोटो । घोटते समय, ज़रा-जरा सा पानी भी देते जाओ । जब गोली बनाने योग्य लुगदी हो जाय, तीन-तीन रत्ती की गोलियाँ बनालो और छाया में सुखा कर रख दो । अगर आप की प्रसंगमें रुकावट न होती हो, वीर्य जल्दी निकल जाता हो, तो आप, सोने से पहले, एक गोली खाकर, ऊपर से मिस्री-मिला दूध पीलो । २१ या ४० दिन इन गोलियों के सेवन करने से आप की वीर्य-स्तम्भन-शक्ति और मैथुन-शक्ति निश्चय ही बढ़ जायँगी । वीर्यका पतलापन और ध्वजभंग—नामर्दी नाश करने में यह नुसखा अकसीर का काम करता है । परीक्षित है ।

स्त्री-वशीकरण रस । ·।८·,

वंसलोचन १ तोले, धुली भाँग का चूर्ण ४ तोले, शुद्ध पारा ...र ज्वर शुद्ध गंधक २ माशे, लोहभस्म २ माशे, निश्चन्द्र अभ्रकभस्म ...ा हो जाता माशे, चाँदीकी भस्म २ माशे, सोनेकी भस्म २ माशे और...की सो शिथि-भस्म २माशे, इन सब को खरल में पीस कर, ऊपर...काल, हवा में जाने डाल-डाल कर घोटो । घुट जाने पर, चार-चा...रोग हो जाते हैं । अतः लो । इन में से, अपने बलाबल अनुसार, ...ने न रहें, गरमी शान्त हो ऊपर से दूध पीने से शुक्र या वीर्य क... बाहर जाना चाहिये और तभी ...वट बढ़ती और नामर्दी नाश हो...हिये । हाथ-पाँव धोकर, सोंठ-मिस्री-...ध्वजभंग-रोगी पूरा मर्द हो ... प्रभृति खाने चाहियें । हाँ, मैथुन

अपूर्व्व स्तम्भनकारक चूर्ण ।

१ अकरकरा	३ माशे
२ रिहाँ के बीज	२४ माशे
३ सफेद कन्द	२७ माशे

इन तीनों को पीस-कूट कर छानलो और मैथुन करने से दो घण्टे पहले फाँक लो ; पीछे मैथुन करो। अगर आपका वीर्य्य एक-दम पतला और गरम न होगा, तो आप जबतक "नीबूका रस" न पियें-गे, कदापि स्खलित न होंगे। यद्यपि इस नुसखे में "अफीम" नहीं है, तथापि यह अफीम वालों से अच्छा और सच्चा है। परीक्षित है।

स्तम्भन-कारक ग़रीबी नुसखा ।

इमली के चीएँ तोले भर लेकर, चार दिन तक पानी में भिगो रखो ; पीछे छील कर तोल लो। जितने चीएँ हों, उनसे दूना "पुराना गुड़" उनमें मिला दो और पीस कर एक-दिल करलो। शेष में, चने-समान गोलियाँ बनालो। स्त्रीके पास जानेसे घण्टेया दो घण्टे पहले दो गोली खालो। अगर वीर्य्य स्खलित न हो, तो "नीबू का रस" पीलो।

हर्षोत्पादक लेप

हा। म,

अवश्य सेवचाब:, दालचीनी, अकरकरा और लाल मुनक्के—बराबर-बराबर

(ख) अगरोन पीस लो। पीछे इसमें से कुछ चूर्ण लेकर "शहत" में

कबाबचीनीका चूर्ण; सुपारी छोड़ कर, लिंगेन्द्रिय के ऊपरी हिस्से पर लेप

काम में लावें। इसके से आध घंटे बाद, इस लेप को कपड़े से पोंछ कर,

होगा और आप अपनी प्राणनन्द आयेगा, कि दोनों का दिल प्रसन्न हो

अपनी सच्ची दासी बना सकेंगे—

कामिनी-गर्वहा। में कमज़ोरी न आने पावे, इसका

मैथुन करने से हृदय में जलन हो,

अकरकरा ३ माशे, लौंग ३ माशे, केशर

नी मुख्य दशा से बदल जाय

और वीर्य हमेशाके दस्तूर से देर में निकले; तो स्त्री-संगम त्याग दो और अपने शरीर को दुरुस्त करो। उपरोक्त लक्षण प्रकट होने या कमज़ोरी होने की हालत में मैथुन करना, मौतको बुलाना है। इस हालतमें शरीर को गरम और ताज़ा करो, उसे आराम दो और मन को प्रसन्न करो। जिस खेल-तमाशेमें दिल लगे, उसी में लगो। गाय या भेड़का दूध पीओ। भुने हुए मुर्ग़ीके अण्डे, बादाम या मलाई का हलवा खाओ। अगर बहुत मैथुन करने से शरीर में काँपकँपी आवे, तो सिर या मस्तिष्क पर तेल मलो। शरीर पर "बान या शाद" का तेल मलो। जिनके पट्ठे कमज़ोर होते हैं, उनको स्त्री-प्रसंग से बहुत हानि होती है। अगर अति स्त्री-प्रसंग से आँखों की ज्योति या बीनाई कमज़ोर होने लगे, तो सिर पर तेल मलो और नाक में बादाम, बनफ़शा या कद्दू का तेल डालो। मीठे पानी में स्नान करो और पानी में नेत्र खोलो। आँखों में गुलाब-जल टपकाओ। जब तक पहलेकासा बल न आजाय, हरगिज़ मैथुन मत करो।

(८) स्त्री-प्रसंग कर चुकतेही शीतल जल पीना, शीतल जल से लिंगेन्द्रिय को धोना और स्नान करना हानिकारक है। प्रसंगके समय शरीर गरम हो जाता है। उस दशामें, शीतल जल या शर्बत पीने से ज़ुकाम, कम्परोग या जलोदर हो जाता है अथवा बदन दुखने लगता और ज्वर चढ़ आता है। शीतल पानी से लिंगको धोने से वह निकम्मा हो जाता है, उसकी गरमी मारी जाती है और उसमें नामर्दी की सी शिथिलता या ढीलापन आ जाता है। मैथुन करके, तत्काल, हवा में जाने से भी ज़ुकाम, सिरदर्द और वेदना प्रभृति रोग हो जाते हैं। अतः मैथुन के १५। २० मिनट बाद, जब पसीने न रहें, गरमी शान्त हो जाय, दिलकी धड़कन कम हो जाय, बाहर जाना चाहिये और तभी निवाये जल से लिंगको धोना चाहिये। हाथ-पाँव धोकर, सोंठ-मिश्री-मिला दूध या पेठेकी मिठाई प्रभृति खाने चाहियें। हाँ, मैथुन

करके, घरके भीतर की मोरी पर, पेशाब तत्काल कर लेना चाहिये, जिससे मूत्रनली में यदि कोई वीर्य का क़तरा रह गया हो, तो निकल जाय और पेशाब में जलन या सोज़ाक आदि रोग न हो जायँ।

(१०) अगर आपकी उम्र चालीस या पचास के करीब है, पर आपने अपनी ग़लती से दूसरी या तीसरी शादी कर ली है, तो घबराइये मत। हमारे पीछे "जरासम्भव क्लैव्य" प्रकरण में लिखे हुए उपाय करें। आप जैसों के लिए "अश्वगन्धादि चूर्ण" परमोत्तम है। इस नुसखे को हमने अनेकों बार परीक्षा की है। कितनेही बूढ़े इससे जवान होगये। आप उसे नीचे की तरकीब से बनावें और चार महीने सेवन करें।

अश्वगन्धादि चूर्ण।

नागौरी असगन्ध और विधायरा,—इन दोनों को बराबर-बराबर लाकर, पीस कूटकर छान लो और घी के चिकने बर्तन में रख दो। इसमें से "दश माशे" या तोले भर चूर्ण, सवेरे ही, खाकर, ऊपर से मिश्री-मिला गरम-गरम दूध पीओ। अगर सधे, तो गायका तत्काल-दुहा "धारोष्ण दूध" पीओ। पर जिस दूध को दुहे हुए पाँच मिनट भी होगये हों, उसे बिना औटाये न पीओ। इस "अश्वगन्धादि चूर्ण"* के, चार मास, सेवन करने से मनुष्य दोष-रहित हो जाता है और बालों के सफ़ेद होनेका रोग जाता रहता है। हर साल, चार महीने, सेवन करनेसे, ५० सालका वृद्ध, जवानोंकी तरह, युवती और मदमाती स्त्रियों का गर्व खर्व कर सकता है। यदि इसके साथ-साथ "नारायण तेल" भी मालिश कराकर स्नान किया जाय, तब तो सोने में सुगन्ध हो हो जाय।

*अश्वगन्धा वृद्धदारु समभागं विचूर्णयेत्।
स्थापयित्वा घटे स्निग्धे कर्षमेकं तु भक्षयेत्॥
दुग्धेन प्रातरुत्थाय भवेद्दोषविवर्जितः।
चातुर्मासप्रयोगेण वली पलित वर्ज्जितः॥

नोट—"नारायण तेल" बनानेकी विधि हमने संसार-प्रसिद्ध पुस्तक "स्वास्थ्य-रक्षा" में लिखी है। यद्यपि इस तेल का बनाना कठिन काम है, पर हमने इस तरह लिखा है, कि महा मूढ़ भी इसे बना सके। जो इतने पर भी न बना सकें, हमारे कारखाने से मँगालें। विज्ञापनबाजों के यहाँ से मँगाना, ठगाना है। हमारे यहाँ इसका मूल्य बारह रुपया सेर है। एक मास के लिये तीन पाव या एक सेर तेल काफी है। जिनकी प्रकृति बादी की है, जिनको बुढ़ापे के कारण बादी सताती है और हाथ पैरों या शरीर में दर्द रहता है, वे "नारायण तेल" को अमृत समझें। जिनको ये शिकायतें न हों, वे "चन्दनादि तेल" लगावें। चन्दनादि तेल बूढ़ों को जवान करता है। बनाने की विधि "स्वास्थ्य रक्षा" में लिखी है। हमारे यहाँ १६) रुपये सेर मिलता है।

आमलक्य रसायन ।

सूखे आमलों को पीस-कूट कर चूर्ण कर लो। फिर उस चूर्णमें, ताज़ा आमलों के स्वरस को सात भावना दे-देकर सुखा लो और शीशी में भरदो। इस चूर्ण को, अपने बलाबल-अनुसार, "शहद और मिश्री" के साथ खाने से, एक मास में, बूढ़ा भी जवान हो सकता है।

सूखे विदारीकन्द को पीस कर, उसमें ताज़ा विदारीकन्दके स्वरस को सात भावना देकर, "शहद और मिश्री" मिलाकर सेवन करने से बूढ़ा भी जवान हो जाता है।

असगन्धके चूर्ण में—"घी, शहत और मिश्री" मिलाकर, सवेरे ही, चार तोले रोज़, खाने से, एक मास में, बूढ़ा भी जवान हो जाता है। *

नोट—ये तीनों नुसखे आजमूदा हैं। एक मास में तो बूढ़े को जवान नहीं करते, पर हैं रामबाण। चार छै महीने खाने से बेशक बूढ़ा जवानों से टक्कर लेने लगता है।

---

* धात्रीफलं च स्वरसैर्भावितं सप्तवारितः।
लिहन्ना सकलं चूर्णं धात्रीमधुसितायुतं॥
मासेनैकेन वृद्धोपि युवास्याद्दुग्धपानतः।
विदारीकन्दचूर्णं वा पूर्ववद्गुण वर्द्धनम्॥
वाजिगन्धां प्रभातेयः सितामधुघृतप्लुताम्।
पलप्रमाणां संगृह्य मासात्स्यात्स्थविरोयुवा॥

पर शर्त्त यह है कि, स्त्री-प्रसङ्ग और क्रोध चिन्ता को त्याग दे। ये रसायन-योग, अकाल मृत्यु और बुढ़ापे से बचाने वाले हैं। अगर कोई शख्स इन्हें एक बरस तक खाले, तो निश्चय ही उसकी जवानी फिर लौट आवे।

आप ऊपर कहे हुए नुसख़ों को अवश्य सेवन करें; जब आप के शरीरमें काफी बल-वीर्य हो जाय, नीचे लिखी विधिसे "हरड़" सेवन करें। अगर आप बारहों महीने "हरड़" सेवन करेंगे, तो कोई भी रोग आपके पास न आवेगा:—

हरड़-सेवन-विधि ।

(१) गरमी के मौसम में	...	बराबर भाग, गुड़के साथ
(२) वर्षा-कालमें	... ...	सेंधेनोन के साथ
(३) शरद् ऋतुमें	... .	मिश्री के साथ
(४) हेमन्त ऋतु में	... ...	सोंठ के साथ
(५) शिशिर ऋतु में	... ...	पीपल के साथ
(६) बसन्त ऋतुमें	... ...	शहद के साथ

जलपान ।

जो मनुष्य सवेरे ही उठ कर, तारों की छाया में, आठ चुल्लू पानी रोज़ पीता है,—उसके वात, पित्त और कफ-सम्बन्धी सब विकार दूर हो जाते हैं और वह १०० वर्ष तक जीता है।

जो मनुष्य, सवेरे ही, नाक के छेदों द्वारा, पानी पीता है; उसके शरीर की सुकड़न, बालों की सफेदी, स्वरभङ्ग और नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस जलपान को "उषःपान" भी कहते हैं। इसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। सवेरे ही बासी जल पीने और फिर न सोने से मूत्रकृच्छ्र, पेशाब की जलन, बवासीर आदि अनेक रोग नाश हो जाते और अनेकों को दस्त साफ होने लगता है। अनेक बार परीक्षा की है।

माजून सुकराती ।

देशी अजवायन ... ... १ सेर

गाजर के बीज	...	...	...	...	३ माशे
लौंग	...	...	...	...	३ „
फिटकरी	...	...	...	...	१॥ „
विसवासा (जावित्री)		...	...	...	६ „
सहदाना (तुख्मरिहा)		...	...	...	६ „
जट गुर्गी	...	...	...	...	६ „

बनाने की विधि—इन सातों चीज़ों को पीसकर छान लो। पीछे चूर्ण के वज़न से तिगुना "शहद" मिलाकर माजून बनालो।

रोग नाश—जिन्हें स्त्री-प्रसङ्ग का आनन्द भोगना हो, वे इसे हर साल, कम-से-कम एक महीने तक, सेवन करें। यह माजून आमाशय को बलवान करती, संचित कफको निकालती, लार गिरनेको बन्द करती, पेटके कीड़ों को नष्ट करती और गुर्दों को ताक़तवर बनाती है। हकीम सुकरात कहते हैं; कि अगर कोई, वर्षमें एक हफ़्ते भी, इस माजून को खा लिया करे, तो ये रोग नष्ट हो जायँ और साथ ही असीम बल-पुरुषार्थ बढ़े। अगर इसके खाने पर भी, हकीम-वैद्य के पास जाना पड़े, तो अचम्भे की ही बात हो।

सेवन विधि—इसकी मात्रा नौ माशे की है। सवेरे-शाम साढ़े चार-चार माशे खाना ठीक होगा।

(११) अगर किसी की लिङ्गेन्द्रिय बहुत ही छोटी या दुबली-पतली हो, तो उसे लम्बी या मोटी करने के लिये, पागलों की तरह, बाज़ार में बैठने वाले नीम हकीमों की लच्छेदार बातों में आकर, साँड़े का तेल या अन्य लेप आदि न लगाने चाहियें। इन अताई-उपायों से लिङ्ग तो नहीं बढ़ता, पर उलटे भयङ्कर रोग हो जाते हैं, जिनसे बहुधा लिङ्गेन्द्रिय गल कर गिर जाती और कीड़े पड़ जाते हैं।

लिङ्गेन्द्रियको बढ़ानेके उपाय करने की ज़रूरत नहीं। अगर किसी की इन्द्रिय बहुत ही छोटी हो, तो उसे उपाय करने चाहियें। जवानी या उठती जवानी में इन्द्रिय बढ़ सकती है, पर बुढ़ापे में

नहीं। हाँ, पुष्टि और मुटाई जवानी के उतार में भी हो सकती है। लिङ्गेन्द्रिय बढ़ाने और सख़्त तथा पुष्ट करने के उपाय हम आगे लिखेंगे। यहाँ हम नामी हकीम जालीनूस का "चींटियों का तेल" लिखते हैं, जो हकीम साहब ने स्वयं आज़माया था। वह लिखते हैं; एक लड़के की इन्द्रिय बहुत ही छोटी थी, पर "चींटियों के तेल" से वह काफ़ी बढ़ गई।

जालीनूस वाला चींटियों का तेल।

सात बड़े-बड़े चींटे पकड़ कर एक शीशीमें भर दो और ऊपरसे "नरगिसका तेल" भरदो। बादमें, शीशीमें काग लगा, शीशी को २४ घण्टों तक, बकरीकी मैंगनियोंके बीचमें दबा दो। बादमें, तेलको निकालकर छान लो। सुपारी बचाकर, शेष इन्द्रिय पर इस तेलको बराबर कुछ दिन मलो। ईश्वर-कृपा से कुछ दिन में इन्द्रिय बढ़ जायगी और साथही कामेच्छा भी बलवती हो जायगी।

नोट—एक हकीम साहब कहते हैं, इस तेलको लगाने से पहले, किसी खुरदरे कपड़े से इन्द्रियको रगड़-रगड़ कर लाल कर लेना चाहिये, तब "चींटियोंका तेल" लगाना चाहिये।

अन्य उपाय

(१) बकरीका घी लिंगेन्द्रिय पर लगातार कुछ दिन मलने से लिंगेन्द्रिय पुष्ट और मोटी हो जाती है।

(२) बकरीका घी कुछ रोज़ लगाने के बाद, सूखे केंचुए "सौसन के तेलमें पीसकर" मलो।

(३) सौसनके तेलमें जोंक पीसकर लिंग पर मलो।

(४) लौंग, समन्दर-फल और वंगभस्मको "पानोंके रसमें" खरल करके, लिंग पर लेप करने से लिंग बढ़ जाता है। कहा है—

> देवपुष्पस्य संयोगात्समुद्रफलयोगतः।
> नागपत्र रसैर्लेपल्लिंगवृद्धिः प्रजायते॥

(१२) अगर किसीकी लिंगेन्द्रिय सुस्त हो, उसमें चैतन्यता या सख्ती न आती हो और उसे इस दशामें भी जल्दी ही मैथुन करना हो, तो उसे नीचेका लेप करना चाहिये। यह लेप बहुत दिनोंकी निकम्मी लिङ्गेन्द्रियको, एक घंटेमें, मैथुन योग्य बना देता है:—

चींटियोंका लेप

एक सौ बड़े चींटोंको कूट कर, एक शीशेमें भर दो और ऊपरसे अठारह माशे "रोग़न बलसान या रोग़न सौसन" भरदो। गरमीके मौसम को तेज़ धूपमें, नित्य, आठ दिन तक, इस शीशीको रखो; इसके बाद उठाकर रखदो। जब मैथुन करना हो, इस लेपको किसी पत्ती के पंख से, दोनों पैरोंके तलवों और उँगलियों पर लगा दो और फिर प्रसंग करो। हिकमतमें इस लेपकी बड़ी तारीफ है। कितने ही हकीमोंने इसे आज़मूदा लिखा है।

नोट—यह लेप शीघ्रही काम देता है; इससे यहाँ लिखा है। इन्द्रियका ढीलापन, सुस्ती और हथरस प्रभृतिसे हुए अन्य दोष नाश करने वाले "तिले और लेप" हम आगे लिखेंगे।

(१३) अगर आपको स्त्री-सुख भोगनेकी अधिक इच्छा है, तो आप ज़ियादा शीतल जलसे स्नान न करें, नदियोंके शीतल जलमें खड़े होकर घण्टों तक भजन न करें, जितनी बार पाखाने जायँ उतनी बार स्नान न करें, बर्फ या और किसी शीतल चीज़ पर न बैठें; क्योंकि इन कर्मोंसे पट्ठे निर्बल हो जाते हैं, उनमें एक तरह का अर्द्धाङ्ग हो जाता है, लिङ्ग बिल्कुल निकम्मा तथा वीर्य अधिक और पतला हो जाता है और बिना प्रसङ्ग किये अपने-आप निकल जाता है। मूत्रेन्द्रिय में ज़रा भी बल नहीं रहता और वह दिन-दिन पतली और कमज़ोर होती जाती है। अगर ठण्ढे पानीके छींटे मारने से इन्द्रिय सुकड़ जाय, तब तो इलाज की आशा है; अगर न सुकड़े और बहुत ही पतली-दुबली हो गई हो, तो इलाज की आशा नहीं।

नोट—अगर रोग साध्य हो,तो पट्ठों के अर्द्धाङ्गका इलाज तो अर्द्धाङ्ग-चिकि-

त्सा की तरह करना चाहिये । इस तरह हुए अन्य दोष लेप लगाने, गुदामें कोई दवा रखने या हुकना करने से आराम होजाते हैं । हम इस मौके के लेप, और तिले वगैरः आगे लिखेंगे ।

(१४) हर मनुष्य को अपने दिल-दिमाग और आमाशय का खयाल रखना ज़रूरी है। जिसमें कामी पुरुषके लिये तो इन की ज़रासी भी कमज़ोरी खराब है । अगर आमाशय और कलेजा कमज़ोर हो जाते हैं, तो खून बहुत कम बनता है और जब खून कम बनता है, तब वीर्य्य भी कम बनता है ; क्योंकि वीर्य की जड़ खून है; यानी खून सेही वीर्य बनता है । अगर वीर्य कम बनेगा, तो सम्भोग-शक्ति घट जायगी और पाचन-शक्ति निर्बल हो जायगी एवं अन्य रोग उठ खड़े होंगे । यह तो हुई आमाशय और कलेजे की बात ; अब दिमाग़ या मस्तिस्क के सम्बन्ध में भी सुनिये । अगर दिमाग़ कमज़ोर हो जायगा, तो काम-शक्ति बढ़नेवाला मल लिंगेन्द्रिय तक देर में पहुँचेगा । इस दशा में, लिङ्ग को वीर्य का खटका या ज्ञान न होगा ; बिना वीर्य के खटके के कामोत्पत्ति न होगी ; इन्द्रियाँ ज्ञानशून्य हो जायेंगी और स्त्री-सम्भोग की इच्छा बिल्कुल न होगी । अगर दिमाग़ की कमज़ोरी वाला रात को जागेगा, तो उसे हानि होगी; पर गरमी से लाभ होगा । लेकिन अगर रोग गरमी से होगा, तो गरम चीज़ें नुक़सानमन्द साबित होंगी और अगर रोग तरी से होगा, तो तर चीज़ें नुक़सान पहुँचायेंगी और हम्माम या स्नानागार अथवा जलमें स्त्री-भोग की इच्छा न होगी । तरी से रोग होने पर, सूखी चीज़ों से लाभ होगा ।

अगर दिल-दिमाग़ और आमाशय कमज़ोर हों, तो आप सरदी और गरमी का विचार करके, इनको ताक़तवर बनानेवाली दवाएँ या पदार्थ सेवन करें । दिमाग़ की कमज़ोरी होने पर, खुशबूदार पदार्थ सूँघना, सिर में तेल लगाना और दिमाग़ को बलवान करने वाले पदार्थ या दवा खाना अच्छा है । अगर दिल-दिमाग़ में गरमी

से ख़राबी हो जाय, तो "शर्बत सफेद चन्दन" पीना हितकर है। दिल-दिमाग़ की कमज़ोरी की दशा में, मैथुन भूल कर भी न करना चाहिये । इस दशा में, मैथुन करने से मूर्च्छा, उन्माद और अपस्मार या मृगी प्रभृति रोग हो जायेंगे।

(१५) अगर स्त्री-प्रसंगमें आपका वीर्य थोड़ा और देर से गिरे —आपको अपनी लिंगेन्द्रिय पहले से दुबली और सूखी सी दीखे; तो आप समझलें; कि, आप के शरीर में वीर्य्य की कमी है।

यह रोग गरमी और सरदी से होता है। अगर रोग गरमी से होगा, तो आपका वीर्य गाढ़ा होगा। अगर वीर्य-नलीमें गरमी होगी, तो वीर्यका रंग ज़र्द-पीला होगा और वह जल्दी निकलेगा। इस हालत में, तर पदार्थ खाने-पीने और जल में घुसने से लाभ होगा। अगर वीर्य की नली में सरदी होगी, तो वीर्य गाढ़ा, शीतल और बँधा हुआ होगा और मिहनत से निकलेगा।

अगर वीर्य की नली गरमी और कमज़ोरी से सूखी हो; तो आप दूध, मलाई, हलवा आदि तर और वीर्यवर्द्धक पदार्थ सेवन करें; पानी में तैरें; तेलकी मालिश करावें; खेल-कूद में मस्त रहें; दिल खोल कर हँसें, शोक और चिन्ता को क़तई त्याग दें और ऐसी दवा खावें, जिस से खुश्की या गरमी कम हो और तरी बढ़े।

अगर वीर्य की कमी सर्दी से हो और मूत्रनली सूखी सी या दुबली-पतली हो, तो आप गरमी पैदा करनेवाली चीज़ें या दवाएँ खावें और लगावें। इस दशा में, "मुरब्बा सौंठ" "माजून लबूब" और "माजून गर्म" सेवन करें।

माजून लबूब ।

मीठे बादामों की मींगी, बतम की मींगी, हुब्बे सनोबर की मींगी, ज़लमकी मींगी, फन्दक की मींगी, पिस्तों की मींगी, ताज़ा नारियल की गिरी, सुपारीका फूल, खसखस सफेद, तोदरी सुर्ख, सफेद तिल, अंजरा के बीज, गाजर के बीज, प्याज़ के बीज, शलग़म के

बीज, रतबे के बीज, बहमन सुर्ख़, बहमन सफेद, सोंठ, सकाकुल, पीपर, काली मिर्च, कबाब:, कुरफा, दालचीनी, हिलयून के बीज, चार मग़ज़ और कुलींजन,—इनसब को बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूट कर छान लो और इस चूर्णके वज़न से तिगुने "शहद" में मिलाकर माजून बना लो। शहद को मन्दी आग पर ज़रा जोश देकर, झाग फेंक दो और फिर दवा मिलाकर उतार लो। यही "माजून लबूब" है। वीर्य बढ़ाने में यह परमोत्तम दवा है! जब इस से वीर्य बढ़ेगा, तब लिंगेन्द्रिय की मुटाई भी बढ़ेगी। अगर वीर्य की कमी का रोग सर्दी से होगा, तो यह माजून अवश्य फायदा करेगी और खूब करेगी।

माजून गर्म।

सोंठ, सकाकुल, कुलींजन, अँजरा के बीज, गाजरके बीज, जरजीर के बीज और हिलयून के बीज—इन सातों को बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूट कर छान लो।

फिर शहद और सफेद प्याज़ का स्वरस,—दोनों को मिलाकर, एक क़लईदार बासन में इतना औटाओ कि, प्याज़ का रस जलकर "शहद मात्र" रह जाय।

शेषमें, इस उबाले हुए शहदमें, ऊपरका पिसा-छना चूर्ण मिला-दो और एक साफ अमृतबान में रख दो। यही "माजून गर्म" है।

इस माजून को, अपने बलाबल-अनुसार, सेवन करने से स्त्री-प्रसंग की इच्छा खूब बढ़ती है। जिसे बिलकुल स्त्री-इच्छा नहीं होती, वह भी मस्तीके मारे मस्त हो जाता है

ग़रीबी नुसखा

डेढ़ माशे हींग और पाँच भुने हुए अण्डों की ज़र्दी—इन दोनों को मिलाकर खानेसे स्त्री-प्रसंग की इच्छा खूब बढ़ जाती है।

लिंग पुष्टिकर लेप।

(क) "शहद और बेलपत्रों का स्वरस" मिलाकर, लिङ्ग पर लगाने से लिङ्ग पुष्ट और बलवान हो जाता है।

(ख) शहद में "सुहागा" पीसकर, लिङ्ग पर लेप करने से, निश्चय ही, इन्द्रिय पुष्ट; मोटी और ताक़तवर हो जाती है।

(ग) सिंह की चरबी लिङ्ग पर मलने से चन्द रोज़ में लिङ्ग का दुबलापन और सूखापन नाश होकर, लिङ्ग मोटा, पुष्ट और बलवान हो जाता है।

(१६) आजकल जिसे देखो वही स्तम्भन या इमसाककी दवा की खोज करते देखा जाता है। अनेक लोग अफीम, भाँग प्रभृति खा-खाकर अपने तईं नामर्द बना लेते हैं। यद्यपि हम इस विषय को पीछे लिख आये हैं; तथापि हम "हिकमत" से, इस "शीघ्र-वीर्य पात रोग" के कारण और चिकित्सा, यहाँ, विस्तार से, फिर लिखना उचित समझते हैं; क्योंकि यह रोग आज-कल ८८ फी सदी पुरुषोंजन है। इस रोग के कारण आजकल स्त्री-पुरुषों में सच्चा प्रेमभाव नहीं है।

वीर्य के पतलेपन और जल्दी निकलने के बहुतसे कारण हैं। उनमें से चन्द ख़ास-ख़ास हम नीचे लिखते हैं :—

(१) वीर्य निकालनेवाली शक्तिमें, तरी और खुश्की की वजह से, कमज़ोरी आजाती है और वीर्यपात जल्दी होता है। इस दशा में, वीर्य पतला और रंग में सफेद होता है, तथा उसमें गरमी के चिह्न नहीं होते।

(२) जब किसी कारण से शरीर में वीर्य और ख़ून उचित से अधिक बढ़ जाते हैं; तब वीर्य जल्दी निकल जाता है। इस दशामें, वीर्य न बहुत गाढ़ा होता है न पतला तथा लिंगेन्द्रियमें बल बहुत ज़ियादा होता है। यह तो स्त्री-प्रसंगमें जल्दी वीर्य निकलने की बात हुई। और भी सुनिए :—

नोट—सर्दी और तरी के कारण, वीर्य की नली में सुस्ती और ढीलापन अथवा शिथिलता होने लगती है; इस वजह से वीर्य को रोकनेवाली शक्ति या ताकत भी कम हो जाती है। जब वीर्य को रोकने वाली शक्ति निर्बल हो जाती है, तब वह वीर्य को रोक नहीं सकती। इस दशा में वीर्य अपने-आप बाहर निकल जाता

है । इस हालत में वीर्य पतला होगा और बिना चेतन्यता हुए—बिना लिङ्ग में तेज़ी आये—निकल जायगा । इस के सिवा, सरदी के औरभी चिह्न होंगे । इस में इतना भेद है कि, जब वीर्य रोकनेवाली ताकत या पावर(Power) बहुत ही कमजोर होगी, तब वीर्य नलीमें आते ही बिना चैतन्यता हुए निकल जायगा; लेकिन अगर वीर्य को रोकनेवाली शक्ति या ताकत जियादा कमजोर न होगी, तो वीर्य कुछ चैतन्वता होने के बाद निकलेगा । कभी कभी चेतन्यता होने के आदि में ही वीर्य निकल जायगा और कभी चैतन्यता होने के पीछे अथवा सोनेके बाद। मतलब यह है कि, इस तरह सरदी या तरी का रोग होने पर, अधिक देर तक चैतन्यता हो नहीं सकती ।

बहुतसे पुरुषोंका वीर्य बिना स्त्री-प्रसंगके भी निकलने लगता है, सो अच्छा नहीं । अगर वीर्य वर्द्धक दवाएँ ज़ियादा खाई जाती और स्त्री-प्रसंग किया नहीं जाता, तो वीर्य बहुतसा जमा हो जाता है । इस दशामें, सम्भोग करने से वीर्य बहुत ज़ियादा निकलता है और वह न पतला होता है न गाढ़ा । शरीरमें ज़ियादा वीर्य होने पर, अगर ज़ियादा वीर्य निकलता है, तोभी कमज़ोरी होती है । कमज़ोरीकी दशामें, ज़ियादा वीर्य निकलने से कमज़ोरी औरभी ज़ियादा होती है ।

(२) अगर वीर्यमें गरमी और तेज़ी ज़ियादा होती है, तो वीर्य की नली वीर्यको बहुत जल्दी निकालती है । इस दशामें, जब वीर्य निकलता है, जलन या चुभन सी होती हैं, वीर्यका रंग पीला और उसकी चाशनी हल्की होती है । ऐसे वीर्यके निकलने से, पुरुष को तो कष्ट होता ही है, लेकिन स्त्री भी उस चिरमिराहट से कष्ट पाये बिना नहीं रहती । शीतल जलसे योनि धोने परही उसे चैन आता है । वीर्यमें ऐसी गरमी पित्तकारक पदार्थ—लालमिर्च खटाई प्रभृति-अत्यधिक खाने से होती है । इस दशामें, वीर्य मैथुनके समय तो जल्दी निकल ही जाता है; पर इसके सिवाय यों भी बहने लगता है । वीर्यमें गरमी और तेज़ी रहने से स्वप्नदोष भी होने लगते हैं । किसी-किसी के पेशाबमें जलन भी होती है ।

(४) अगर दिल-दिमाग़, अमाशय और गुर्दे प्रभृति प्रधान अवयव—अज़े—कमज़ोर हो जाते हैं; तो इनके कमज़ोर हो जाने से, और सारे अवयव भी कमज़ोर हो जाते हैं। इस दशामें भी शीघ्र वीर्यपात होने या जल्दी वीर्य निकल जानेका मर्ज़ हो जाता है। असलमें, यह शीघ्र-वीर्य-पतन होनेका रोग कामशक्तिकी निर्बलताके साथ होता है और कामशक्तिकी निर्बलता उस समय होती है, जब शरीरमें वीर्य कम होता है। जब हवा और खूनकी पैदायश कम होती है, जब शरीरमें रक्त कम तैयार होता है, तब वीर्य भी कम बनता है और वीर्यही कामशक्तिका मूल है। मतलब यह है, कि हवा और खून कामशक्ति के बलवान होनेके कारण हैं; क्योंकि खूनसे ही वीर्य बनता है। हवा और खूनकी पैदायशकी कमीका क़ारण "भोजन की क़मी" है। जब शरीरमें वीर्य और खून कम बनते हैं, तब शरीर दुबला हो जाता है, बदनकी ताक़त घट जाती है और रंग पीला सा हो जाता है इत्यादि।

(५) अनेक बार स्त्रियोंकी बातें सुनने या स्त्री-प्रसंग करनेका विचार-मात्र मनमें आने से—वीर्य, मज़ी और वदीका बहना शुरू हो जाता है।

शीघ्र वीर्यपतनकी चिकित्सा।

(१) पहला कारण

अगर शीघ्र वीर्यपात होने या जल्दी वीर्य निकलनेका कारण, तरी और खुश्की या सरदी हो, वीर्यकी रंगत सफेद हो, वीर्य पतला हो और उसमें गरमीके लक्षण न हों, तो नीचेकी विधिसे चिकित्सा करो;—

(१) किसी उत्तम दस्तावर दवा से रोगीका कोठा साफ कर दो। हिकमतमें "अयारजकी टिकिया" दस्त करानेको अच्छी समझी जाती है। वैद्यक-मत से, पीछे पृष्ठ २८-३०में लिखा हुआ "कालादाना

सनाय और कालेनोनका चूर्ण फँका देना अच्छा है । हमने पृष्ठ २९-३० में कई दस्तावर दवायें लिखी हैं । कय कराना और जुलाब देना बड़ी होशियारी चाहता है । अतः "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पहले भागमें जो विरेचन-प्रकरण दिया है, उसे खूब पढ़-समझकर जुलाब देना चाहिये ;—

(२) कोई वमनकारक या कय कराने वाली दवा पिलाकर कय करा देनी चाहिए । वमन कराने में जुलाब देने से भी अधिक होशियारीकी दरकार है, क्योंकि उसमें रोगीकी जानको खतरा तक हो जाता है । अतः वमन करानी हो, तो "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ १२६-१४० तक देख जायँ । वहीं आपको 'वमनकारक औषधियाँ' भी पृष्ठ १३८ में मिल जायँगी । कफके दोषमें—मैनफल, पीपर और सेंधे नोनका चूर्ण, गरम जलसे, खिलानेको लिखा है। अगर नोचेका "काढ़ा" बना लिया जाय, तो और भी अच्छा हो ।

वमनकारक काथ ।

मैनफल	६ माशे
सेंधानोन	६ माशे
पीपर	२ माशे

इन तीनोंको अधकचरा करके, मिट्टीकी हाँडीमें रख, ऊपरसे सेर भर पानी डाल औटाओ ; जब चौथाई जल जल जाय ; यानी तीन पाव रह जाय, उतारकर मल-छान लो और सुहाता सुहाता गरम रोगीको पिलादो । यह काढ़ा "कफ निकालनेको" बहुतही उत्तम है ।

(३) लिंगेन्द्रियकी सींवन और फोतोंकी गोलियों पर, नीचे के तेलों में से कोई सा आहिस्ते-आहिस्ते मलो:—

(१) कूटका तेल ।
(२) नरगिसका तेल ।
(३) [illegible]का तेल ।

(४) आसका तेल ।

(४) "शराब फंजनोस" यानी लोहकीटकी शराब सेवन कराओ।

(५) "माजून खुबसुलहदीद" सेवन कराओ ।

(६) "माजून कमोनी" सेवन कराओ ।

(७) पोदीने के पत्ते, साद, गुलनार, मरवा, कलौंजी और गौया-सूखा—ये चीज़ेंभी अच्छी हैं । इनके सेवन करने और गरम पदार्थ खाने से अवश्य लाभ होगा ।

(८) खानेको उत्तम भोजन दो । अगर रोगी मांस खाता हो, तो "सूखा कलिया," मुतंजन, दालचीनी, सातर और ज़ीरेके साथ खिलाओ ।

शराब फंजनोस ।

कच्चे अंगूरोंका रस...	...	...	२६०	तोले
सिमाक	...	...	२॥	"
माजू	...	...	२॥	"
गुलेनार (अनार के फूल)	...	...	२॥	"
गुलाबके फूल	...	...	२॥	"
कुन्दर (गोंद)	...	...	२॥	"
मूरवा (गोंद)	...	...	२॥	"
धनिया	...	...	२॥	"
सातर	...	...	२॥	"
साद	...	...	२॥	"
मुर	...	...	२॥	"
त्रिकुटा	...	...	२॥	"
शुद्ध लोहेका मैल	...	...	१०	"

<u>बनानेकी तरकीब</u>—इसमें से बारह चीज़ोंको कूट-पीस कर छान लो और "अंगूरोंके रसमें मिलाकर" उबाल लो । जब एक तिहाई या सवा सेर के क़रीब रस रह जाय, उतार कर छान लो, और बोतलमें

रख दो। रोगीके बलाबल-अनुसार मात्रा नियत करके सेवन कराओ। इस शराबसे तरी या सरदी से हुआ "शीघ्र वीर्य निकल जाने का रोग" अवश्य आराम हो जायगा।

नोट—"फंजनोस" लोहकीट या लोहके मैलको कहते हैं। इसीके कारण इस शराबका नाम "शराब फंजनोस" रखा गया है।

नोट (२) फंजनोस या लोहकीट शुद्ध करनेकी विधि हमने "चिकित्साचन्द्रोदय" के तीसरे भागमें खूब समझाकर लिखी है। हिकमत वाले इसे और तरहसे शुद्ध करते हैं। उनकी तरकीब सीधी और आराम की है; अतः उसे भी यहाँ लिखे देते हैं। लोह-मैलकी शोधन-विधि—लोहेके मैलको "अंगूरी सिरके में" डालकर, चौदह दिन-रात ऐसी जगहमें रक्खो, जहाँ धूल या कूड़ा-करकट न गिरे। बस, १४ दिन बाद यह शुद्ध हो जायगा; निकालकर काममें लाओ।

माजून ख़बसुलहदीद ।

छोटी हरड़	२॥ तोले
बहेड़ा	२॥ „
आमला	२॥ „
गोलमिर्च	२॥ „
पीपर	२॥ „
सोंठ	२॥ „
साद	२॥ „
हिन्दी सातरज	२॥ „
सम्बुल	२॥ „
गन्दनेके बीज	१ „
सोयेके बीज	१ „
शुद्ध लोहकीट	३५ „

<u>बनानेकी तरकीब</u>—इन बारह दवाओंको कूट-पीस और छान कर चूर्ण कर लो। इस चूर्णमें "बादामका तेल" इतना मिलाओ, कि यह चूर्ण चिकना हो जाय। इसके बाद, इसमें अढ़ाई-पाव "शुद्ध

शहद" और छै माशे "कस्तूरी" भी मिला दो। बस, यही "माजून खुबसुलहदीद" है। इसे एक साफ़ बर्तन या चौड़े मुँहकी बोतलमें रखकर, काग लगा दो और उठाकर रख दो। छै महीने तक हाथ न लगाओ। बाद ६ महीने के सेवन करो। मात्रा ६ माशे की है।

शीघ्र वीर्यपतनकी चिकित्सा।

(२) दूसरा कारण ।

अगर शीघ्र वीर्यपात होने या जल्दी वीर्य निकलने का कारण—शरीरमें वीर्य और खूनका अधिक बढ़ जाना हो, वीर्य न बहुत पतला हो और न गाढ़ा, लिंगमें ताकत खूब हो और स्त्री-प्रसंगमें वीर्य जल्दी निकल जाता हो—तो आप नीचे लिखी विधि से इलाज करें:—

(१) फस्द खोलो। बासलीककी फस्द खोलना ठीक है।

(२) अगर शरीरमें बल हो, तो भोजनकी मात्रा घटादो।

(३) मांस और शराब प्रभृति खून बढ़ाने वाले पदार्थ छोड़ दीजिये।

(४) सिकंजबीन, खट्टे-मीठे अनारों का रस, नारंगी का शर्बत या अंगूरका शर्बत पीओ।

(५) खून और वीर्य को कम पैदा करने वाले पदार्थ सेवन कराओ। जैसे—मसूर, सिरका, काहूका पानी, धनिये का पानी;—इनको खाओ पीओ। बनफ़शा और कद्दू का तेल हड्डियों पर मलो।

(६) स्त्री-प्रसङ्ग अधिक करो, क्योंकि इस दशा में अधिक मैथुन लाभदायक है।

नोट—खून और वीर्य को घटाने वाली दवा सेवन कराते समय, यह जरूर देख लेना कि, रोग गरमी से है या सरदी से। अगर रोग गरमी से हो, तो सर्द और सरदी से हो, तो गर्म दवा और पथ्य सेवन कराना चाहिये।

शीघ्र वीर्य्य पतन की चिकित्सा ।

(३) तीसरा कारण ।

अगर वीर्य पित्तवर्द्धक आहार-विहारोंसे बिगड़ा हो, गरमी और तेज़ी के कारण—प्रसङ्ग के समय जल्दी से निकल जाता हो और निकलते समय जलन-चुभन या चिरमिराहट करता हो, अथवा गरमी के मारे बिना प्रसङ्ग किये हो स्वप्नमें निकल जाता हो, तो आप नीचे लिखी विधि से चिकित्सा करें:—

(१) शर्बत खुशखाश पीओ ।

(२) चूकेके बीजोंका या खुरफेके बीजोंका शीरा "काहूके बीजों के साथ" सेवन करो ।

(३) ईसबगोल की भूसी ५ माशे और मिश्री ५ माशे,—दोनों को मिलाकर, सवेरे ही, फाँको और ऊपरसे "धारोष्ण दूध" पीओ ।

(४) सूखे आमलों के चूर्णमें आमलों के स्वरसको सात भावना देकर, "शहद और मिश्री मिलाकर" बलानुसार सेवन करो। अथवा विदारीकन्दके चूर्णमें विदारीकन्दके स्वरस की सात भावना देकर, शहद और मिश्री मिलाकर सेवन करो ।

(५) शर्बत नीलोफर, शर्बत बनफ़शा या शर्बत उन्नाब—इनमें से कोईसा शर्बत पीओ। काहूके बीज, खुरफेके बीज, ईसबगोल, कासनीके बीज, धनिया और नीलोफर प्रभृति इस रोग में अच्छे हैं। अतः इनमें से किसीको "उचित रीतिसे" रोगीको सेवन कराओ। ये सब वीर्यको गरमी नाश करके, उसे शीतल कर सकते हैं।

(६) शेख बू अली वीर्य की गरमी शान्त करनेको नीचेके चूर्ण अच्छे बतलाते हैं:—

काहू का चूर्ण ।

१ काहू के बीज १ तोले

२ भाँग के बीज	...	...	...	१ तोले
३ कासनी के बीज	...	...	...	१ तोले
४ सूखा धनिया	...	...	...	१ तोले
५ नीलोफ़र के फूल	...	...	...	१ तोले
६ ईसबगोल	...	...	...	१० तोले

बनाने की विधि—पहली पाँचों चीज़ों को कूट-पीस-छानकर चूर्ण बनालो। इस चूर्ण में "ईसबगोल" को मिला दो; क्योंकि ईसबगोल कूटा नहीं जाता।

सेवन विधि—इस चूर्ण में से चार या पाँच माशे चूर्ण फाँक कर, ऊपर से धारोष्ण (कच्चा) दूध या ताज़ा पानी पीना चाहिये। इस चूर्ण के कुछ दिन सेवन करने से, वीर्य की गरमी निश्चय ही शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

दूसरा चूर्ण।

१ तितली के बीज	...	...	...	३ माशे
२ अनीसूँ	...	...	...	३ "
३ गोखरू	...	...	...	६ "
४ जन्द् बेद्सतर	...	...	...	६ "
५ भाँगके बीज	...	...	...	६ "
६ दम्बुल अखवैन	...	...	...	६ "
७ बन्सलोचन	...	...	...	६ "
८ गुलेनार (अनार के फूल)	...	...	...	३ "
गुलाब के फूल	...	...	...	८ "

बनाने और खाने की तरकीब—इन नौ दवाओं को महीन पीस-कूट और छानकर चूर्ण बनालो। इसमें से ३ या ४ माशे चूर्ण फाँक कर, ऊपर से "शीतल जल" पीने से, वीर्यकी गरमी और तेज़ी शान्त

होकर, वीर्यका बहना या जल्दी निकलना अथवा वीर्य की गरमी के कारण स्वप्न-दोष होना निश्चय ही आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—आजकल शोक चिन्ता अधिक करने, सट्टे का व्यापार करने के कारण हर समय चिन्तित रहने और मिर्च खटाई प्रभृति अधिक खाने से मारवाड़ियों में उष्णवात रोगकी बहुतायत है। इन लोगों के वीर्य पर गरमी बहुत पाई जाती है ; अतः स्त्री को योनिके दर्शन करने मात्र से वीर्य निकल जाता है। हमने ये चूर्ण अनेकों रोगियों को दिये। ईश्वर की कृपासे ९५ फी सदी रोगी आराम होगये। हम वैद्यों से इन दोनों चूर्णों के देने की जोर से सिफारिश करते हैं। शीघ्र वीर्य पतन का रोग गरमी से है या सरदी से या और तरह,—इसके जानने में भूल होने से, ये नुसखे भले ही फेल हों ; वरनः कभी फेल हो नहीं सकते।

शीघ्र वीर्य-पतन-चिकित्सा ।

(४) चौथा कारण ।

अगर शरीर के प्रधान अवयवों के कमज़ोर होने, खून और वीर्य के कम बनने, और इस वजह से काम-शक्ति के दुर्बल होने से वीर्य जल्दी निकल जाता हो ; तो दिल-दिमाग़ में तरावट लाने और वीर्य बढ़ाने वाले पदार्थ सेवन कराओ ; अवश्य खून और वीर्य बढ़ेंगे एवं रोग नाश हो जायगा। इस हालतमें, नीचेके उपाय अच्छे हैं।

(१) बल-वीर्य बढ़ानेवाले ताक़तवर फल खिलाओ। जैसे ;—पका मीठा आम, दूध-मिला अमरस, पका केला, नारियल की गिरी, कच्चे नारियलका फल, नारियलका पानी, पके अंगूर, दाख, खजूर, बादाम, सेब, नाशपाती, ख़रबूज़ा, ताड़फल पका हुआ, मीठा बेर, चिरोंजी, खिरनी, सिंघाड़े, फालसे, मीठा अनार और कसेरू,—ये सब फल वीर्य-वर्द्धक और पुष्टिकारक हैं।

(२) उत्तम से उत्तम भोजन कराओ। जैसे ;—बादामका हलवा, मलाई का हलवा, उड़द की दालकी खीर, बादाम-पाक, नारियल

पाक; मिश्री-मिला गायका दूध, गायका धारोष्ण दूध, दूधका मक्खन, दूध-चाँवल की खीर, मलाई और मिश्री, गेहूँ की रोटी, उड़द की दाल—दालचीनी, तेजपात, इलायची और गोलमिर्च डाली हुई; प्याज़, प्याज़का रस—घी और शहद मिला हुआ, मूँग चाँवल की खिचड़ी, ताज़ा जलेबी, सूजी का हलवा, बाटी और उड़द की दाल, मावा, अधौटा दूध, भीमसेनी सिखरन, शाली चाँवलों का भात और मेवे की खिचड़ी,—ये सब पदार्थ वीर्यवर्द्धक हैं। पेठे की मिठाई, पेठे का साग, परवल और आलूका साग—ये भी वीर्य बढ़ाने वाले हैं।

(३) खूब नींद भर कर सोओ।

(४) हर समय दिल खुश रखो।

(५) स्त्री-प्रसङ्ग का नाम भी न लो।

(६) गाना बजाना करो या सुनो।

(७) बाग़की सैर करो, इत्र सूँघो, फूलोंकी मालाएँ पहनो और गुलदस्ते हाथों में रखो।

(८) पीछे लिखी "माजून लवूब" सेवन करो।

(९) नीचे लिखी "मृगनाभ्यादि बटी" सेवन करो:—

मृगनाभ्यादि बटी।

१ कस्तूरी	...	...	...	२ माशे
२ केशर	...	...	...	४ „
३ जायफल	...	...	...	६ „
४ छो० इलायची	...	...	...	५ „
५ बंसलोचन	...	...	...	७ „
६ जावित्री	...	...	...	८ „
७ सोने के वरक	...	...	...	१ „
८ चाँदी के वरक	...	...	...	२ „

<u>बनाने की विधि</u>—नं० २ से ६ तक की चीज़ोंको पीस-कूट कर

छानलो। फिर चूर्ण में बाक़ी चारों चीज़ें मिला कर, खरलमें डालदो और घोटो तथा ऊपर से "नागर पानोंका स्वरस" देते जाओ। घुटाई ३६ घण्टों तक होनी चाहिये। जब घुटाई होजाय, रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना, छाया में सुखालो। इनमें से १ या दो गोली, मलाई में रख कर, खाने से लिङ्ग की शिथिलता नाश होकर, काम-शक्ति जागती और बढ़ती तथा मरी-से-मरी हुई धातु जी उठती है। परीक्षित है।

शीघ्र वीर्य-पतन-सम्बन्धी शिक्षा।

काम-शक्ति की निर्बलता और शक्ति का सम्बन्ध जिस तरह लिङ्गेन्द्रिय से है; उसी तरह वीर्य के जल्दी या देरसे निकलने का सम्बन्ध भी लिंगेन्द्रिय से ही है। जिन्हें जल्दी स्खलित होने का रोग हो, उन्हें नीचे लिखी बातों पर ध्यान देना चाहिये:—

(१) अगर आपको जल्दी स्खलित होने का रोग है, तो आप बूढ़ी, कुरूपा या कफ-प्रकृति वाली स्त्री से मैथुन न करें।

(२) देरसे वीर्य निकलने के लिये, स्त्री-पुरुष की प्रकृति या मिज़ाजका एक दूसरे के ख़िलाफ़ होना ज़रूरी है। पुरुषका मिज़ाज गरम हो, तो स्त्रीका सर्द होना चाहिये। अगर पुरुष का वीर्य गरमी से जल्द निकल जाता हो, तो स्त्री की योनि ठण्डी होनी चाहिये। अग़र पुरुषमें सरदी या तरी हो, तो स्त्रीकी भग गरम होनी चाहिये; पर ऐसा होना संभव नहीं। अगर स्त्री-पुरुषकी प्रकृति एकसी हो और "विरुद्ध प्रकृति" की दरकार हो, तो मैथुन से पहले "प्रकृति-विरुद्ध" दवाओंका लेप लिंग और योनिमें कर लेना चाहिये।

मानलो, पुरुषका वीर्य गरम होने के कारण निकल जाता है। इस दशामें "सफ़ेद चन्दन, कपूर और सुगन्धवाला"—इन तीनों को जलमें पीस कर लेपसा बनालो। पुरुष इस लेप को अपने लिङ्ग पर

और स्त्री अपनी योनि में लेप करले और मैथुनके समय पोंछ कर मैथुन करें। अवश्य रुकावट होगी।

मानलो, पुरुष का वीर्य सर्दी से जल्दी निकल जाता है, तो इस दशा में, "कबाब: और अकरकरा"—दोनों को पानी के साथ पीस कर, स्त्री-पुरुष भग और लिङ्ग में लेप करलें और मैथुन के समय पोंछ कर मैथुन करें; अवश्य रुकावट होगी।

नोट—ऊपर की विधि बहुतही उत्तम है। वीर्य जल्दी निकलने के मुख्य दो ही कारण हैं—(१) गरमी, और (२) सरदी। इन दोनों की विधि ऊपर लिखी हैं। उन से लाभ भी होता है, पर जिसका वीर्य-पानी की तरह पतला हो और ऐसे ही बहता हो, उसे उपरोक्त विधियोंसे कोई लाभ न होगा; अतः पहले वीर्यको गाढ़ा पुष्ट और निर्दोष कर लेना चाहिये। उसके बाद, यदि स्त्री-पुरुष की प्रकृति मिलजाने से, वीर्य जल्दी निकलता होगा, तो ऊपर की तरकीबें फायदेमन्द साबित होंगी। नीचे के दो नुसखे वीर्य बहने पर अच्छे साबित हुए हैं। इनसे वीर्य गाढ़ा हो जाता है; अतः लिखते हैं:—

शुक्रतारल्य नाशक चूर्ण।

इमली के चीएँ भून कर छील लो और कूट-पीस कर चूर्ण बना लो। फिर; बराबर की "मिस्री" पीस कर मिला दो। इसमें से ६ माशे चूर्ण, रोज़ सवेरे, सात दिन तक, फाँकने से वीर्य का बहना और सोज़ाक आराम हो जाता है

शुक्रतारल्य नाशक लेप।

"नया कायफल" भैंसके दूधमें पीस कर, लिङ्ग पर लेप करने और सवेरे-शाम गरम जलसे धो लेने से वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

नोट—कायफल "नया" होना परमावश्यक है; पुराने कायफल में ये गुण नहीं।

(१७) अपनी पत्नी के सिवा, पर-पत्नी या वेश्याके साथ कभी गमन

मत करो। यदि आपकी खोटी लत न छुटे, आपको कली-कलीका रस लेने का शौक़ ही हो; तोभी रजस्वला, बूढ़ी, रोगिणी, लंगड़ी-लूली, मैली, गरमी, सुज़ाक या प्रदर रोग वाली, गुरु-पत्नी, भिखारिन, शत्रु-पत्नी, कन्या और जिसका काम न जागा हो,—इन स्त्रियोंसे मैथुन हरगिज़ न करें।

रजस्वलाके साथ मैथुन करने से उपदंश—आतशक, सोज़ाक, और भगन्दर आदि रोग हो जाते हैं, बूढ़ीके साथ मैथुन करने से पुरुष बूढ़ा हो जाता है; बूढ़ी क्या—अपनी उम्र से बड़ीके साथ मैथुन करने से भी, बल बुद्धि-हीन एवं तेज-रहित होकर, शीघ्रही रोगी होता और मर जाता है। इसी तरह, अगर छोटी उम्र वाली अपनी उम्रसे अधिक उम्र वाले के साथ मैथुन करती है, तो उसे शीघ्रही "प्रदर रोग, क्षय, खाँसी, तपेदिक आदि" हो जाते हैं। यही कारण है, कि आजकल एक-एक पुरुषकी तीन-तीन शादियाँ होतीं और स्त्रियाँ तपेदिक़ हो होकर मरती चली जाती हैं।

गर्भवतीके साथ मैथुन करने से गर्भगत बालक को कष्ट होता और बहुधा पेटके बच्चे मर भी जाते हैं, इससे हत्या लगती है। यही वजह है, कि आयुर्वेदकारोंने गर्भवतीके साथ गमन करने की मनाही की है। पशु भी गर्भ रह जाने पर मैथुन नहीं करते। रोज़ देखते हैं, जब गायको गर्भ रह जाता है, साँड़ उसे सूँघकर चल देता है, छेड़ता नहीं; पर आजकल अधिकांश मनुष्य पशुओं से भी गये-बीते हो गये हैं।

आयुर्वेद-आचार्योंने लिखा है:—

> गर्भिणी सप्तमान्मासादुपरिष्टाद्विशेषतः।
> निषिद्धात्वष्टमे मासे मैथुनं न समाचरेत्॥

इसका आशय यही है, कि जिनसे रहा ही न जाय, वे छः महीने तक गर्भवतीके साथ मैथुन कर लें; पर सातवें, आठवें या नवें महीने में तो भूलकर भी पास न जाँय। चार महीने बाद ही इस तरह करें

कि, गर्भ को हानि न पहुँचे । अनेक बार, ज़रा ऊँचा-नीचा पैर पड़ने से ही गर्भ गिर जाता है ।

रोगिणी या योनि रोग वालीके साथ मैथुन करने से रोग हो जाते हैं । प्रदर या सोज़ाक-गरमी वाली के साथ मैथुन करने से सोज़ाक या गरमी रोग हो जाते हैं । सोज़ाकसे वह भयङ्कर प्रसिद्ध रोग हो जाता है, जिससे भगवान् ही बचावें । उपदंश होने से लिंगेन्द्रिय सूख जाती, घाव हो जाते, कीड़े पड़ जाते और ध्वजभंग रोगही जाता है । अनेक बार तो लिंग गल कर ही गिर जाता है ।

छोटी उम्र वाली कन्याके साथ मैथुन करने से लिंगके छिल जाने या चोट लगने का भय रहता है । छिल जाने से भी उपदंश की सी पीड़ा हो जाती है ।

जिसका काम न जागा हो, जिसकी खुदकी इच्छा न हुई हो, उसके साथ मैथुन करने से दिल बिगड़ता और वीर्य क्षीण होनेका रोग हो जाता है ।

(१८) अगर आपकी इच्छा पुत्र उत्पन्न करने की हो, तो "वाजी-करण" औषधियों से पुष्ट होकर, ऋतुस्नान के चौथे दिन, स्त्री-गमन कीजिये । अगर आपका वीर्य्य अधिक होगा, तो पुत्र होगा और यदि आर्त्तव अधिक होगा, तो कन्या होगी । मैथुन करते समय, पुरुष प्रसन्न-चित्त से स्त्री-सेवन करे और नीचेके मंत्र का पाठ करता रहे । उधर स्त्री भी, जब तक पुरुषका वीर्य न गिरे, पतिमें ही दिल लगा कर, पति की याद करती रहे । इस तरह रूपवान, बलवान और आयुष्मान् पुत्र होगा ।

गर्भाधान का मंत्र ।

ॐ अहिरसि आयुरसि सर्वतः प्रतिष्ठासि धाता त्वां दधातु ब्रह्मवर्चसा भवेति ।
ब्रह्माप्रजापतिर्विष्णुः सोम सूर्यो तथाश्विनौ भगोथ मित्रावरुणौ वीरं ददतु मे सुतं ॥

अगर गर्भ न रहे ; कई महीने निकल जायँ, पर ज़ाहिरा कोई रोग दोनों प्राणियों को न हो; तो आप नीचे लिखे उपायों में से कोई एक करें :—

सन्तानोत्पादक योग ।

(१) पीपल, अदरख, कालीमिर्च और नागकेशर,—इनको महीन पीस-छान कर और घी में मिलाकर खाने से बाँझ भी गर्भवती हो जाती है ।

(२) नागकेशर और सुपारीका चूर्ण सेवन करने से भी गर्भ रह जाता है ।

(३) गर्भ रहने पर, यदि गर्भवती "ढाक का एक पत्ता" दूध में पीस कर पीती है, तो निश्चय ही वीर्यवान पुत्र होता है । कहा है—

पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणी पयसान्वितं ।
पीत्वा च लभते पुत्रं वीर्यवन्तं न संशयं ।

नोट—ढाक के बीजोंकी राख और हींग,—इन दोनों को दूध में मिला कर पीने से गर्भ नहीं रहता । वेश्याओं के लिये यह अच्छा नुसखा है ।

(४) पुत्रजीव वृक्षकी जड़ "दूध में" पीस कर पीने से दीर्घायु पुत्र होता है ।

(५) पुत्रजीव वृक्षकी जड़ और देवदारु,—इन दोनों को "दूध में पीस कर" पीने से अवश्य पुत्र होता है ।

(६) बिजौरे नीबूके बीज, "बछड़ेवाली गाय के दूध में" पीस कर पीने से निश्चय ही पुत्र होता है ।

(७) नागकेशर "बछड़ेवाली गायके दूध के साथ" पीने से बाँझ के भी पुत्र होता है ।

(८) काले तिल, सौंठ, पीपर, मिर्च, भारंगी और पुराना गुड़ —इन सब को बराबर-बराबर, चार-चार माशे लेकर, पाव भर जलमें औटाओ ; आधा या चौथाई पानी रहने पर उतार लो । इस काढ़े

के २० दिन पीने से स्त्री के गर्भाशयके सभी रोग नाश होकर, निश्चय ही, पुत्र होता है।

सूचना—स्त्रियों के योनि रोग, मासिक धर्म, वन्ध्यादोष प्रभृति के आराम होने के उपाय, फलघृत, सन्तानोत्पादक योग यानी पुत्र देनेवाले उत्तमोत्तम नुसखे, जो हमने इस जीवन में आज़माये और कृष्णाकी कृपासे जो कभी फेल नहीं हुए, अगले—पांचवें भाग में लिखेंगे। विचार तो इसी भाग में लिखने का था, पर कन्या की शादी निकट आ जानेके कारण, मजबूरी है। पाठक क्षमा करेंगे।

(१९) पाठकों को नीचे के तीन पैरों में लिखी हुई बातें कण्ठाग्र रखनी चाहिएँ। निम्न लिखित चीज़ें वीर्य को पैदा करती हैं:—

(१) मिश्री मिला हुआ गायका दूध। (२) गायका धारोष्ण दूध। (३) दूध का मक्खन। (४) चाँवल और दूध की खीर। (५) सेमल का मूसरा या मिश्री और दूध मिले हुए। (६) उड़द और दूध की खीर। (७) मलाई और मिश्री। (८) मलाईका हलवा। (९) बादाम का हलवा। (१०) गेहूँकी रोटियां (११) उड़द की दाल—दालचीनी, तेजपात, इलायची और गोलमिर्च डाली हुई। (१२) प्याज़ या प्याज़ के रसमें घी और शहद मिले हुए। (१३) शतावर। (१४) असगन्ध। (१५) बादाम। (१६) केशर। (१७) दालचीनी। (१८) पके आम खाकर दूध पीना या आम-पाक खाना। (१९) तालमखाना। (२०) सफेद और लाल बहमन। (२१) इन्द्रजौ। (२२) नारियल की गिरी। (२३) चन्दनादि तेल लगाकर नहाना। (२४) छोटी इलायची। (२५) तोदरी। (२६) मीठा अनार। (२७) सवेरे की मैदान की हवा। (२८) बढ़िया गद्दे तकियेदार कसा हुआ पलँग। (२९) रूपवती स्त्री।

नीचे लिखी हुई चीज़ें वीर्य को गाढ़ा करती हैं:—

मोचरस, सेमर का मूसरा, सफेद मूसली, स्याह मूसली, बबूल का गोंद, मखाने, शतावर, बन्सलोचन, असगन्ध, बीजबन्द, रूमी-मस्तगी, लिहसौड़े और काले तिल।

नीचे लिखे पदार्थ मैथुनेच्छाको बढ़ाते हैं:—

(१) दूधमें छुहारे डालकर दूध पकाना और मिश्री मिला पीना। (२) मुर्ग़ का मांस। यह सबसे श्रेष्ठ पदार्थ है। (३) मुर्ग़ी के अण्डे की ज़र्दी में घी और बताशे पकाकर खाना। (४) गायका घी। (५) पिस्ता, बादाम और चिलगोज़े जाड़े में खाना। (६) अबीध मोती। (७) कस्तूरी। (८) कौंच के बीज। (९) अकरकरा। (१०) सालम मिश्री। (११) सकाकुल मिश्री। (१२) सोंठ। (१३) दोनों बहमन। (१४) नारियल की गिरी। (१५) प्याज़ के बीज। प्याज़ का रस। (१६) सफ़ेद ख़सके दाने। (१७) दूध की खीर। मलाई का हलवा। बादाम का हलवा, और पिस्तों की बरफी। (१८) लोंग, गोलमिर्च, दालचीनी, तेजपात और सोंठ डाली हुई "उड़दकी दाल"। (१९) गन्नोंका रस। (२०) अनार। (२१) चाँदनी रात, नवयुवती रमणी, नाच, गाना, और बाजा। (२२) बढ़िया शराब या कोई आसव। (२३) मनकी प्रसन्नता।

बङ्गसेन में लिखा है—जो पदार्थ मीठे, चिकने, प्राणरक्षक, मनमें आनन्द उत्पन्न करने वाले होते हैं, उनको वृष्य या पुष्टिकारक कहते हैं। निम्न-लिखित पदार्थ वृष्य हैं—(१) तैलादि की मालिश, (२) चित्र-विचित्र कपड़े पहनना, (३) चन्दनादि पदार्थों का लेपन, (४) फूल-माला आदि पहनना, (५) गहने पहनना, (६) सुन्दर सजा हुआ मकान, (७) उत्तम पलँग, (८) तोता मैना और मोर आदि का कलरव, (९) सुन्दरी मानिनी स्त्रियों के गहनों की झनकार, (१०) प्यारी स्त्रियों की बात-चीत, (११) सुन्दरी रूपवती यौवनवती शुभ-लक्षणों वाली और रति-कर्म-निपुण स्त्रियाँ,—ये सब मैथुन की चाह बढ़ाने वाले हैं।

नपुंसकता और वीर्य के रोगोंकी

सामान्य चिकित्सा

ग़रीबी नुसख़े ।

(१) सफेद प्याज़का रस ८ माशे, अदरखका रस ६ माशे, शहद चार माशे और घी ३ माशे—इन चारोंको मिलाकर, २ महीने तक, सेवन करने से नामर्द भी मर्द हो जाता है। परीक्षित है।

(३) प्याज़ का रस ६ माशे, घी ४ माशे और शहद ३ माशे मिलाकर, सवेरे-शाम चाटने और रातको चीनी-मिला गरम दूध आध सेर पीनेसे, दो महीने में, खूब वीर्य बढ़ता और उरःक्षत रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) प्याज़का रस ६ माशे, घी ४ माशे और शहद ३ माशे—इनको मिलाकर, सवेरे-शाम पीओ और सोते समय "एक तोले शतावर और २ तोले मिश्री डालकर" औटाया हुआ दूध पीओ; अपूर्व्व चमत्कार दीखेगा। चार महीने में तो स्त्री-प्रसंगकी इच्छा खूबही बढ़ जायगी। परीक्षित है।

(५) मोचरसका चूर्ण ६ माशे और मिश्री ४ तोले—इन दोनोंको गायके गरम दूधमें मिलाकर, लगातार २।३ महीने पीने से स्वप्नदोष प्रभृति आराम होकर खूब बलवीर्य बढ़ता है। परीक्षित है।

(६) कौंचके छिले बीजोंका चूर्ण ६ माशे, तालमखानेके बीजोंका

चूर्ण ६ माशे और मिश्री १ तोले—तीनोंको मिला कर फाँकने और ऊपर से "धारोष्ण दूध" पीनेसे बलवीर्य बढ़ता और वीर्य कम नहीं होता। यह उत्तम बाजीकरण योग है। परीक्षित है।

(७) एक तोले विदारीकन्दको सिलपर पीसकर लुगदी बनालो। इसे मुँहमें रखकर, ऊपरसे १ तोले घी और दो तोले मिश्री-मिला दूध पीने से खूब बल-वीर्य बढ़ता है। साल दो साल लगातार सेवन करने से बूढ़ा भी जवान के समान हो सकता है। परीक्षित है।

(८) धोई उड़दकी दाल सिलपर जलके साथ पीस लो और फिर कड़ाहीमें घी डालकर भूँजलो; जब सुर्ख हो जाय, उतार लो। पीछे औटते दूधमें, इस भुँजी हुई दालको छोड़कर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब खीर सी हो जाय, उसमें "मिश्री" पीस कर मिलादो और चाँदी या काँसीकी थालीमें परोसकर, थोड़ीसी सवेरे ही खाओ। यह गरिष्ठ और भारी है; ज्यों ज्यों पचती जाय, खूराक बढ़ाते जाओ। इस खीरके ४० दिन खाने से बलवीर्य बढ़ता और शरीर पुष्ट होता है। आयुर्वेद में लिखा है :—

भुक्त्वा सदैव कुरुते तरुणी शत मैथुनं पुरुषः।

अर्थात् इस खीरको सदा खाने वाला १०० स्त्रियोंको मैथुनसे सन्तुष्ट कर सकता है। इसके गुणकारक होने में ज़रा भी शक नहीं। संभव है, सदा खाने वाला १०० स्त्रियोंकी तृप्ति कर सके। परीक्षित है।

नोट—छिलके-हीन उड़दोंको घी में भूँज कर दूधमें पकाने से भी खीर बन जाती है। उसमें भी वही गुण हैं, जो ऊपर लिखे हैं। कहा है :—

घृतभृष्टस्य माषस्य पायसं वृष्यमुत्तमम् "

(९) आध सेर दूधमें एक तोले "शतावर" पीसकर डाल दो। जब डेढ़ पाव दूध रह जाय, उसमें "मिश्री" मिला दो। इस दूधके पीने से मैथुनेच्छा बढ़ती और लिंगेन्द्रिय ढीली नहीं होती—कड़ी रहती है। कम-से-कम ४० दिन तो ऐसा दूध पीना चाहिये।

(१०) बड़े सेमल के पेड़की छालके दो तोले स्वरसमें, दो तोले मिश्री मिलाकर खाने से, सात दिनमें, वीर्यका समुद्र बन जाता है। इतनी बात तो नहीं देखी, पर है अव्वल नम्बरका नुसख़ा। परीक्षित है।

(११) विदारीकन्दके चूर्णको "घी, दूध और गूलरके रसके साथ" पीने से बूढ़ा भी जवान हो जाता है।

विदारीकन्द को पीस-कूटकर छान लो। उसमें से तोले दो तोले चूर्णको, गूलरके स्वरसमें मिलाओ और चाट जाओ। ऊपरसे दूधमें घी मिलाकर पीओ। इस नुसख़े से अद्भुत चमत्कार देखने में आता है। जिसे-स्त्री प्रसंगकी इच्छा ही नहीं होती, वह भी प्रसंगके लिये पागल हो जाता है। कहा है:—

विदारीकन्दचूर्णं च घृतेन पयसा पिबेत्।
उदुम्बररसेनैव वृद्धोपि तरुणायते॥

अर्थ वही है जो ऊपर लिखा है। नुसख़े के उत्तम होने में ज़रा भी शक नहीं। परीक्षित है।

(१२) आमले लाकर पीस-कूट कर छानलो। फिर आमलोंका स्वरस निकाल कर, उस रसमें इस चूर्णको डुबो दो और सूखने दो। दूसरे दिन, फिर आमलोंका रस निकाल कर, सूखे हुए आमलोंके चूर्णको डुबो दो और सूखने दो। इस तरह सात दिन तक ताज़ा आमलों का रस निकाल-निकाल कर, चूर्णको भिगोओ और सुखाओ। यही सात भावना हुईं। इस सूखे हुए चूर्ण में से, अपने बलाबल-अनुसार, दो तोले या अधिक चूर्णको १ तोले घी और ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटो और ऊपरसे चार तोले दूध पीओ। इसकी मात्रा ३ तोले तक है। जिसे स्त्री भोगनेकी इच्छा हो, वह गरम चरपरे खट्टे खारी नमकीन पदार्थ अधिक न खावे। इस नुसख़े से धातुके रोग नाश होकर, खूब बल-पुरुषार्थ बढ़ता है। परीक्षित है।

(१३) सूखा विदारीकन्द लाकर पीस-कूट कर छान लो। ताज़ा

विदारीकन्द लाकर, उसे सिल पर पीसकर, कपड़े में निचोड़कर, रस निकाल लो। रस इतना हो, जितनेमें सूखे विदारीकन्दका चूर्ण डूब जावे। उस रसमें विदारीकन्दके चूर्णको डुबो दो और पीछे सुखादो। दूसरे दिन फिर ताज़ा विदारीकन्दका रस निकाल कर, उसमें सूखे हुए विदारीकन्दके चूर्णको डुबा कर सुखादो। इस तरह सात दिन करो; फिर सुखालो। इस भावना दिये चूर्णमें से १ तोले चूर्ण लेकर, ६ माशे घी और ३ माशे शहदमें मिलाकर चाटो। इस चूर्णके लगातार १ वर्ष तक सेवन करने से, पुरुष दस स्त्रियोंको राज़ी कर सकता है। परीक्षित है।

(१४) गोखरू, तालमखाने, शतावर, कौंचके बीजोंकी गिरी, बड़ी खिरैंटी और गंगेरन,—इनको आध-आध पाव लाकर, कूट पीसकर छान लो। इसमें से ६ माशे से १ तोले तक चूर्ण फाँककर, ऊपरसे गरम दूध, रातके समय, पीनेसे बेइन्तहा बल-वीर्य बढ़ता है। आयुर्वेद में लिखा है—

चूर्णमिदं पयसा निशि पेयं यस्य गृहे प्रमदा शतमस्ति ।

जिसके घरमें सौ रमणियाँ हों, वह इसे रातके समय दूधसे पीवे। हमने इसकी परीक्षा की है। इतना फल नहीं देखा, क्योंकि हम बराबर बरस दो बरस न खा सके। लगातार सेवन करने वाला, संभव है, १०० स्त्रियोंको सन्तुष्ट कर सके। हमने देखा है, ६० दिनमें ही यह खूब चमत्कार दिखाता है। अमीर-ग़रीब इसे, भोजनकी तरह, रोज़ रातको खाकर दूध पीवें और आनन्द भोगें। यह योग "चक्रदत्त" आदि कितने ही ग्रन्थों में लिखा है। परीक्षित है।

(१५) जो घी में भुनी हुई मछलियाँ खाता है, वह स्त्रियोंके सामने कभी नहीं हारता।

(१६) तिल और गोखरूका चूर्ण, बराबर-बराबर लेकर, बकरीके दूधमें पकाओ और शीतल होने पर "शहद" मिलाकर खाओ, तो हथरस या लौंडेबाज़ी वगैरः से पैदा हुई नपुंसकता नाश हो जायगी। चक्रदत्त।

(१७) सूखा सिंघाड़ा पीस-कूट और छान कर रख लो। इसमें से अपने लायक़ लेकर, घी और चीनीके साथ हलवा बनाकर, सवेरे ही, खाओ। चालीस दिन इस हलवेके सेवन करनेसे निश्चय ही वीर्य पुष्ट होता है। परीक्षित है।

(१८) सूखे सिंघाड़े और मखानेकी ठुर्री—दोनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान कर रखलो। मात्रा ६ माशे की है। हर मात्रामें बराबरकी "मिश्री" मिलाकर फाँकने और ऊपरसे कच्चा पावभर दूध पीने से निश्चयही धातु बढ़ती और गाढ़ी होती है। जो ३ मास सेवन करेंगे, उन को इच्छा पूरी होगी। परीक्षित है।

(१६)भुने हुए चनोंकी दाल ६ माशे और बादाम ६ माशे, दोनोंको मिलाकर, सवेरे-शाम, चालीस दिन तक खाने से निश्चयही वीर्य पुष्ट होता है।

नोट—ज्यों ज्यों पचने लगे मात्रा बढ़ाते जायँ; पर अति न करें।

(२०) चिलगोज़ोंकी मींगी ६ माशे और मुनक्के ६ माशे—दोनोंको रातके समय जलमें भिगो दो और सवेरे ही चीनी मिलाकर खाओ। इस नुसख़े से कुछ दिनों में वीर्य पुष्ट हो जाता है।

(२१)ऊँटकटारेकी जड़की छाल २० माशे लेकर कुचल लो और एक कपड़े में बाँधकर पोटली बना लो। पीछे आध सेर दूधमें आधा सेर पानी मिला, कड़ाहीमें चढ़ा दो; नीचे मन्दी-मन्दी आग लगने दो। कड़ाही के कुन्दोंमें आड़ी लकड़ी लगाकर, उसमें इस पोटलीको, इस तरह लटका दो, कि पोटली दूधके भीतर रहे। और उस दूधमें ५ छुहारे भी डाल दो। जब पानी जलकर दूध-मात्र रह जाय, पोटलीको अलग कर दो और मिश्री मिलाकर दूधको पीलो। इस योगके ४० दिन सेवन करने से धातु खूबही पुष्ट होती और प्रसंगेच्छा अत्यन्त बढ़ जाती है।

(२२) छै तोले आठ माशे असगन्ध कूट-छानकर, एक सेर दूधमें डालकर औटाओ; जब औट जाय, २॥ तोले मिश्री मिला कर, दोनों

समय सेवन करो। इस नुसख़े से बदन लाल हो जायगा। वीर्यऔर बल वेहद् वढ़ेगा। यह मात्रा ख़ूब ताक़तवर को है।

(२३) तरबूज़के वीजोंकी मिंगी ६ माशे और मिश्री ६ माशे मिला कर खाने से, २।३ मासमें, शरीर ख़ूब पुष्ट होता है। ग़रीवोंके लिए बड़ी अच्छी दवा है। परीक्षित है।

(२४) खरवूज़ेकी मींगी १० तोले, सफेद मूसली १० तोले, पेठेकी मिठाई १० तोले, घीवार के पट्ठे नग दो और कवावचीनी ६ माशे—इन सबको महीन पीस-छान लो। ग्वारपाठेका गूदा निकालकर मथ लो। फिर आध सेर मिश्रीकी चाशनी बनाकर, उसमें इन सबको मिला दो और घी-चुपड़ी थाली में फैला दो पीछे कतली काटकर या लड्डू बनाकर रख दो। यह नुसख़ा बहुतही अच्छा है। गिरते हुए वीर्यको तत्काल रोक देता और उसे ख़ूब ही पुष्ट करता है।

(२५) लहसन आध सेर लाकर, चार सेर दूधमें डाल दो और आगपर मन्दाग्निसे औटाओ। जब सारा दूध सूख जाय, उस लहसन-मिले खोये को आध सेर घी में भूनो। फिर उतार कर 'शहद' में माजून बनालो। इसके सेवन करनेसे गरम मिज़ाज या पित्त-प्रकृति वालोंका वीर्य ख़ूब पुष्ट और बलवान होता है। फ़ालिज और लकवे वालोंको भी यह माजून ख़ूब गुण करती हैं।

(२६) एक सेर "पीपल" लाकर, दो सेर दूधमें औटाओ; जब दूध सूख जाय, पीपलोंको सुखालो। सूखने पर, पीस-छानकर रखदो। इसमेंसे वलाबल अनुसार मात्रा लेकर, उसमें छः गुनी मिश्री मिलाकर, खाओ और ऊपरसे दूध पीलो। इसके सेवन करनेसे शरीर ख़ूब बलवान होता है "इलाजुल ग़ुर्बा" में लिखा है, २० माशे चूर्णमें १० तोले मिश्री मिलाकर खाओ और दूध पीओ ; पर हमने पीपरोंके ३।४ माशे चूर्ण में छः गुनी मिश्री मिलाकर शुरू कराया और ६ माशे तक ले गये। कई रोगियों को २ महीने में ही ख़ासा फ़ायदा हुआ। वीर्य पुष्ट होने के सिवा, कई और भीतरी रोग भी नाश हो गये।

नोट—पीपलों के चूर्ण शुरू करो। १ गोली खाकर ·शाव दूध पीओ। और दूध पिलाने से भी, ·रने से पतली-से-पतली धातु गाढ़ी हो जाती है।

(२७) बबूलदालूद के फूल सुखाकर पीस लो और "शहद" में मि- सरीकी सूरजावर गोलियाँ बनालो। १ गोली रोज़ खाने से, ४० दिनमें इन सबको पीस-छ·जाता है।

मिला दो। इसमें से· अण्डे की ज़र्दी, बताशे तेन नम और घी ३ तोले, वीर्य हो, गाढ़ा हुए ·र, कोयलों ·की आग पर ·ल· ले और कलछी से दो मास तक खाकर ·· जाय, शीतल ·रके खालो। परीक्षित है।

(२८) बड़के पेड़क· पुष्ट और बलवान हो जाता है। स्त्री-इच्छा तो माशे और मिश्री ६ माशे· ·ख नहीं सकते। जो लोग अण्डे खाते बनालो और दो तीन बार ·कुंकुम ·ण्डों को, ·च्चे ही, सेवन करा- तोलेभर पीलो। ४० दिनमें ही अद्भुत चमत्कार दीख·

से पतला वीर्य खूब ·गों को होता है। परीक्षित है। · ·· ·या था।

(२९) दो तोले पिस्ते, दो तोले मिश्री और ६ माशे ·लौंग· ·ते थे ·ौर २·३ मिलाकर पीस लो। जब महीन हो जायँ, १ तोले शहद· ·

ऊपरसे १ रत्ती धुली भाँग महीन पीस कर छिड़क दो। इन ·आध हलवा दिन खाने से ही वीर्य गाढ़ा हो जाता है। ·अगड़ा होता है ·नहीं ·रीक्षित है। ३१ दिन तक सेवन करो। कई स्त्री को घी में मिलाकर, चीनी की चाशनी· उसका हलवा बनाते हैं।

(४१) सोनामक्खी की भस्म, पारे की भस्म, लोह-भस्म, शिलाजीत, बायबिडङ्ग, हरड़ और घी तथा शहद—इन सबको उचित मात्रासे चाटने वाला रोगी, यदि बूढ़ा हो तोभी, जवान की तरह मैथुन कर सकता है।

(४२) कैथके पत्ते लाकर सुखालो और पीस-छानकर रख दो। इसमें से ६ माशे चूर्ण फाँककर, ऊपर से मिश्री-मिला दूध पीओ। इस चूर्णसे शरीर के भीतर की गरमी निकल जायगी और धातु खूब पुष्ट होगी। परीक्षित है।

नोट—जिसके फोते बढ़ जाते हैं, वह स्त्री के कामका नहीं रहता। इसलिये एक

परीक्षित गरीबी नुसखा लिखे देते हैं—इन्द्रायण की जड़को पीसकर, अरगडी क तेल में हल करलो और बढ़े हुए फोते पर तीन-तीन तीन घण्टे पर लगाओ। साथ ही इन्द्रायण की जड़का पिसा-छना चूर्ण, दो माशे, सवेरे-शाम, गायके दूध में मिलाकर पीओ। तीन चार दिन में ही फायदा नजर आवेगा। जब तक पूरा आराम न हो सेवन करो।

इन्द्रायण छोटी और बड़ी दो होती हैं। इस काममें बड़ी लेनी चाहिये। इसकी बेल होती है, उसमें फल लगते हैं। फल पहले तो हरे होते हैं, पर पकने पर लाल हो जाते हैं और स्वाद में कड़वे होते हैं।

(४३) प्याज़के रस में "शहद" मिलाकर चाटने से, निश्चय ही, वीर्य बढ़ता है। परीक्षित है।

(४४) सफेद प्याज़ का रस १ तोले, अदरख का रस ६ माशे, घी ४ माशे और शहद ३ माशे—मिलाकर, सवेरे ही, चाटने से, ४१ दिनमें, नामर्द मर्द हो जाता है। इस तरह भी कई रोगियों पर परीक्षा की है। ४१ दिनमें ही मर्दुमी आजाती है, पर वह महीने दो महीनेमें फिर कम होने लगती है। ६१ दिन सेवन करने से पूरा पक्का लाभ होता है।

(४५) गोखरु १३॥ माशे और स्याह तिल १३॥ माशे,—दोनों को कूट-पीस कपड़-छन करके, एक सेर दूधमें डालकर औटाओ। जब खोआ सा हो जाय, खालो। इसी तरह रोज़ बनाओ खाओ। इस नुसखे के ४१ दिन खाने और कोई तिला लगाने से नामर्द भी मर्द हो जाता है।

(४६) सफेद चिरमिटी १ पाव, खिरनीके बीज १ पाव और लौंग १ पाव,—इन तीनोंको महीन कूट-पीस कर, सात कपरौटी की हुई आतिशी शीशीमें भर लो और "पाताल यन्त्र" से तेल निकाल कर शीशीमें भरलो। इसमें से एक सींक पानमें लगाकर रोज़ खानेसे, २१ दिनमें, नामर्द मर्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इसकी १ सींक खाने वाले को, ऊपर से, घण्टे आध घण्टे बाद, १ छटांक घी खाना जरूरी है। अगर दो सींक खाय, तो आध पाव घी पीना जरूरी है।

(४७) लोहसार १ तोले, सोंठ ६ माशे और सालम मिश्री ६ माशे, इन तीनोंको कूट-पीस कर रख लो। इसमेंसे तीन या चार अथवा छैरत्ती

चूर्ण खाने और "दूध-मिश्री" पीने से, धातु और बल-वीर्य खूब बढ़ते हैं और स्तम्भन की शक्ति भी होती है। परीक्षित है।

(४८) सोंठ, तालमखाना, ईसबगोल, स्याह मूसली, शतावर, पीपर, और मुरली—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस छानलो। फिर बराबर की मिश्री (सब दवाके वज़न बराबर) पीसकर मिलादो। इसमें से १ तोले चूर्ण, गायके अधौटे दूधमें मिलाकर पीनेसे प्रमेह, खाँसी और श्वास आदि नाश होकर बलवीर्य खूब बढ़ता है।

(४९) पुराने सेमलका सुखाया हुआ मूसला ६ माशे महीन पीसकर, उसमें ६ माशे चीनी या मिश्री मिलाकर रोज़ खाओ और दूध पीओ। ४० दिन में खूब वीर्य बढ़ेगा और अत्यन्त प्रसंगेच्छा होगी। मात्रा जवानको डेढ़ तोले तक है। परीक्षित है।

(५०) सिरसके बीज ३ माशे और ढाकके बीज ३ माशे,—इनको पीस-छानकर और ६ माशे मिश्री मिलाकर फ़ाँको। इसके सेवन से बल-वीर्य खूब बढ़ता है। परीक्षित है।

नोट—जिसको अपनी इन्द्रिय में कसर मालूम हो, वह चमेली का असली तेल रोज मले। लिङ्गेन्द्रिय के लिये यह तेल बहुत ही उत्तम है। अगर कोई इसे सदा लगावे, तो क्या कहना?

(५१) भाँग ८ माशे, अजवायन ५ माशे, कद्दू के बीज ५ माशे, इस्वन्द ६ माशे, भुने चने ७ माशे, अफीम ३ माशे, केशर ४ रत्ती, इलायचीके बीज १ माशे और पोस्तके डोडे नग २—इन सबको पीस-कूटकर छानलो और पोस्त के डोडों के भिगोये जलमें खरल करके, छोटे बेरके समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही १ गोली खाकर दूध पीओ। खूब ताक़त पैदा होगी। अगर सध जायँ, तो २ गोली भी खाई जा सकती हैं। परीक्षित है।

(५२) मुलहटी, बिदारीकन्द, तज, लौंग, गोखरू, गिलोय और सफेद मूसली,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो—इसमें से ३ माशे चूर्ण रोज़ खाकर दूध पीने से, पुरुष का बल-वीर्य कभी नहीं घटता। परीक्षित है।

(५३) गिलोय, त्रिफला, मुलहटी, विदारीकन्द, सफेद मूसली, स्याह मूसली, नागकेशर और शतावर—इन सबको छटाँक-छटाँक भर लाकर, पीस-कूटकर छान लो। इसमें से ६ माशे चूर्ण, ६ माशे घी और ४ माशे शहदमें मिलाकर रोज़ खाने और ऊपर से दूध पीनेसे बूढ़ा भी जवान हो जाता है। ३० दिनमें ख़ासा फ़ायदा नज़र आता है; और ६० दिनमें तो कई स्त्रियाँ भोगने की शक्ति हो जाती है। यह नुसख़ा कई बारका परीक्षित है।

(५४) बेलके ताज़ा पत्तोंका का स्वरस ५ तोले, कमलकेफूल की एक डण्डी की राख और गायका घी ५ तोले,—इन तीनों को मिलाकर, सवेरे ही, ४१ दिन, पीने से नामर्द निश्चय ही मर्द हो जाता है। परीक्षित है।

(५५) नागौरी असगन्ध और विधारा को एक-एक पाव लेकर पीस-छानलो। इसमें से १ तोले चूर्ण, "६ माशे घी और ३ माशे शहदके साथ" सेवन करने से प्रमेह नाश होता, बल-वीर्य बढ़ता और मैथुन में आनन्द आता है। परीक्षित है।

(५६) घीग्वार का गूदा आधसेर, बिनौले के बीजों की गिरी आध सेर, गेहूँका आटा आध सेर, मिश्री आध सेर और घी आध सेर,—इन को तैयार रखो। थोड़ा सा "घी" कड़ाही में चढ़ाकर, पहले घीग्वार के गूदे को भूनकर थालीमें रखलो। इसके बाद, फिर घी डालकर, बिनौलों के पिसे हुए चूर्ण को भून लो और अच्छी थाली में रखदो। इसके भी बाद गेहूँ के आटे को भून लो और अलग रखदो। शेषमें; मिश्री की चाशनी बनाओ। जब चाशनी होजाय, उसमें तीनों भुनी हुई चीज़ों को मिला दो और ऊपर से गोखरू का चूर्ण आधी छटाँक, नारियल की गिरी चार तोले, कतरे हुए पिस्ते ४ तोले और चिलगोज़े ४ तोले भी मिला दो और एक बासन में रख दो। इसमें से छटाँक-छटाँक भर रोज़ सवेरे ही खाकर, ऊपर से पाव आधसेर गायका दूध पीने से बल-वीर्य बढ़ता और प्रसंगेच्छा तेज़ होती है। अच्छा नुसख़ा है। साधारण लोग भी बना सकते

हैं। दवा बनाते समय, आग खूब मन्दी न रखने से पाक कड़ा हो जाता है। परीक्षित है।

(५७) उडदों का आटा एक तोले लेकर, ६ माशे घी और और ६ माशे शहद मिलाकर, ४ मास, सेवन करने और ऊपर से दूध पीने से घोड़ेके समान मैथुन करने की शक्ति हो जाती है। परीक्षित है।

(५७) कौंच के बीजोंकी गिरी का चूर्ण ६ माशे और ख़स-ख़स के बीजोंका चूर्ण ६ माशे (या चार चार माशे) इन दोनोंको मिलाकर फाँकने और उपर से "गायका धारोष्ण दूध" पीने से कदापि वीर्य क्षय नहीं होता। लगातार खाते रहने से, ४ मास में, अपूर्व आनन्द आता है। परीक्षित है।

(५६) पीपलके पेड़ की छाल, फल, अङ्कुर और जड़को ६।६ माशे लेकर, दूधमें औटाकर, वही दूध मिश्री मिलाकर पीने से, १२ महीने में, बूढा भी जवान हो जाता है। परीक्षित है।

(६०) एक बारकी ब्याई हुई गायको, जिसका बछड़ा बड़ा हो, उड़द के पत्ते खिलाओ और उसका दूध पीओ। इस दूधकी जितनी तारीफ़ कीजाय थोड़ी है। परले सिरे का बल-वीर्य-वर्द्धक है। परीक्षित है।

(६१) मिश्री १ तोले और घी १ तोलेमें, उड़दोंका दो तोले आटा मिलाकर सान लो और घीमें पूरियाँ तल कर खाओ। इन पूरियों के खानें वाला १०० स्त्रियों से भोगकर सकता है। इन पूरियों के परम बलप्रद होने में सन्देह नहीं ; खूब बल-वीर्य बढ़ाती हैं। १०० स्त्रियों की बात नहीं आज़माई। परीक्षित है।

(६२) बड़े बछड़े वाली गायके दूधमें "गेहूँ का सत्त" डालकर खीर बनाओ। फिर; उसमें शहत, घी और मिश्री मिलाकर पीओ।

(६३) बकरेके आँडों को दूध और घी में पकाकर; पीछे उनमें पीपलोंका चूर्ण और थोड़ासा सैंधा नोन लगाकर खाने से, १०० स्त्रियों से भोग करने की सामर्थ्य हो जाती है।

(६४) बकरेके आँड़ों को दूधमें खूब पकाओ। इसके बाद, दूध को

छान लो और उस दूधमें तिलों को भिगो दो। चार पहर भीगने बाद उन्हें सुखा लो। इन तिलों को मात्रा के साथ "मिश्री" मिलाकर खानेसे, पुरुष कुछ दिनोंमें सौ स्त्रियों की तृप्ति कर सकता है।

नोट—अगर चार पाँच दिन तक, नये-नये आँड ला-लाकर, दूधमें औटा-औटाकर, उन दूधोंमें तिल बारम्बार भिगो-भिगो कर सुखाये जायँ, तो और भी उत्तम हो।

(६५) कौंच के बीज और तालमखानों का चूर्ण मिश्री मिलाकर फाँकने और ऊपरसे दूध पीनेसे धातु पुष्ट होती है। परीक्षित है। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक।

नोट—कौंचके पेड की छाल और सफेद कत्था, पानीमें पीस कर, पानीमें घोल लो। इस पानीको बारम्बार पिलाने से संखिया का जहर उतर जाता है। केले के गाभे का पाव भर रस पिलाने से भी संखिया का जहर उतर जाता है। परीक्षित है।

(६६) एक पका केला, ६ माशे घीके साथ सवेरे-शाम खाने से, धातु-रोग और प्रदर रोग नाश हो जाते हैं। अगर सरदी करे, तो चार बूँद "शहद" मिला लेना चाहिये।

(६७) सन्ध्या-समय, औटाये हुए दूधमें १ तोला शतावर की जड़ का चूर्ण और मिश्री २ तोले मिलाकर, २—३ महीने पीने से धातु पुष्ट होती है। परीक्षित है।

(६८) केंकड़े या कछुए के आँडों को दूध में पकाकर, सेवन करने से भी पुरुष १०० स्त्रियों से भोग कर सकता है।

(६९) दूधके साथ उच्चटा—सफेद चिरमिटी—का चूर्ण खानेसे मनुष्यमें मैथुन करने की सामर्थ्य बहुत बढ़ जाती है।

(७०) शतावर और उच्चटाका चूर्ण खाकर, दूध पीने से, मैथुन शक्ति निश्चय ही बहुत बढ़ जाती है। परीक्षित है।

(७१) काकड़ासिंगी को सिलपर जलके साथ पीसकर और दूधमें मिलाकर पीने और ऊपरसे "घी, शहत और दूधका भोजन" करने से पुरुष स्त्रियोंमें साँड़के समान हो जाता है। वृन्द।

(७२) दूधमें क्षीरकाकोली पकाकर और उसमें बराबर का घी और शहत मिलाकर खाने और ऊपर से बाखरी गायका दूध पीने से पुरुष मैथुन से नहीं थकता। वृन्द।

(७३) जो असगन्धके चूर्णमें—मिश्री घी और शहद मिलाकर, चार तोले भर रोज़ खाता है, वह ४ महीने में जवान हो जाता है। बड़ा अच्छा नुसख़ा है। परीक्षित है।

(७४) जो मनुष्य विधायरेका चूर्ण, शहद और घी में मिलाकर खाता है और दूधमें चाँवल पकाकर उनका यूष पीता है, वह किन्नरों के साथ गा सकता और स्त्रियों की खूब तृप्ति कर सकता है। परीक्षित है।

(७५) जो मनुष्य सवेरे ही उठकर हस्तिकर्णरज (हस्तिकन्द) का चूर्ण घी में मिलाकर खाता है और इच्छानुसार दूध-भात-घी का भोजन करता है—वह बुद्धिमान, बलवान, कामी और सैकड़ों स्त्रियोंका भोगने वाला होकर हज़ार साल तक जीता है।

(७६) दिल्ली की सफेद मूसली चालीस तोले लाकर, कूट-पीसकर छान लो और शीशी में रख दो। इसकी मात्रा ६ माशे से १ तोले तक हैं। एक मात्रा सवेरे-शाम खाकर, ऊपर से पाव आध सेर गायका दूध पीने से, वीर्य खूब ताक़तवर और स्त्री प्रसंगमें आनन्द देने वाला हो जाता है। कम-से-कम ६ महीने खाना चाहिये। अगर कोई इसे सालभर तक खाले, तो वह दस स्त्रियोंको सन्तुष्ट कर सकेगा। इसके खाने वाले के जो पुत्र होगा, वह भीमके समान बली होगा; इसमें शक नहीं। परीक्षित है।

नोट—धातुपौष्टिक दवाएँ अक्सर कठिनाई से पचती हैं। जिनकी अग्नि मन्दी होती है, उन्हें और भी जियादा दिक़्क़त से पचती हैं। इनके सेवन से दस्त क़ब्ज हो जाता है। अगर ऐसा हो, तो मात्रा ३ माशेकी कर लेनी चाहिये। जब दवा का असर होगा, पाखाना आपही साफ होता रहेगा। कोई ४० दिन के बाद लाभ मालूम होगा; अतः नाउम्मेद होकर, दवा खाना बन्द न कर देना चाहिए। मूसली "रसायन" है। इसके सेवन से बुढ़ापा और रोग पास नहीं आते।

(७७) कौंचके बीज १ सेर लाकर, छील लो और उनकी गिरी

निकालकर कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ५ माशे से दो तोले तक है। इसके सेवन करने से घोड़े के समान मैथुन करनेकी सामर्थ्य हो जाती है; क्योंकि कौंचके वीज "वाजीकरण" हैं। इनके सेवन से घटी हुई स्त्री-प्रसंगकी इच्छा फिर पैदा हो जाती है और थोड़े दिनों का नामर्द फिर मर्द हो जाता है। कम-से-कम ३।४ मास इस चूर्ण को सेवन करना चाहिये। दवाकी मात्रा पहले कम लेनी चाहिये, ज्यों-ज्यों पचने लगे बढ़ा कर दो तोले तक पहुँचा देनी चाहिये। सवेरे-शाम दवा खाकर, दूधमें मिश्री मिलाकर, दूध पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—कौंच के बीज चौगुने दूध में पका लेनेसे नर्म होकर जल्दी छिल जाते हैं।

(७५) मुलेठी को लाकर, कूट-पीस कर कपड़-छन करलो और रख लो। इसमें से १ तोले चूर्णको—गायके ताज़ा घी १ तोले और शहद ६ माशे में मिला लो और चाट जाओ और ऊपरसे गायका दूध मिश्री मिलाकर पीजाओ। इस नुसख़ेके ३ महीने लगातार सेवन करने से स्त्री-प्रसंगकी इच्छा निश्चयही बढ़ जाती और आनन्द भी बहुत आता है। इसमें कुछ खटखट नहीं। खाना खाने की तरह, इसे रोज़ सेवन करने से जो लाभ होगा, लिख नहीं सकते। परीक्षित है। लालमिर्च, खटाई, गुड़, तेल, दही और स्त्री से परहेज़ रक्खा जाय, तो बेहद लाभ होगा।

(७६) बिना छिलकों के उड़द पीसकर आटा सा बनालो। इसमें से दो या तीन अथवा पाँच तोले आटा और उतना ही ताज़ा घी मिलाकर चाट जाओ और ऊपर से मिश्री-मिला दूध पीलो। इस उड़द के चूर्ण के सेवन करनेसे ख़ूब बल-वीर्य बढ़ता और धातु पुष्ट होती है। स्त्री-भोगमें पुरुष घोड़े के समाम हो जाता है। अव्वल दर्जेका नुसख़ा है। ख़र्च भी कुछ नहीं। जितना पचे उतना ही खाना चाहिये; क्योंकि गरिष्ठ है। २।३ महीने में ही अपूर्व चमत्कार दीखेगा। परीक्षित है।

(८०) पीपलके पेड़के फल, जड़की छाल, भीतरी छाल और फुनगी—इन सबको छाया में सुखाकर, पीस-कूट कर कपड़-छन करलो। इसकी

मात्रा ६ माशे से १॥ तोले तक है। इसे सवेरे ही खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीने से, पुरुष चिड़ेके समान मैथुन करने लगता है; पर तीन चार मास सेवन करना ज़रूरी है। परीक्षित है।

(८१) दो तोले ताज़ा विदारीकन्द को सिलपर पीसकर, लुगदी सी बनाकर खाने और ऊपर से "घी चीनी मिला-दूध" पीने से बूढ़ा भी जवान की तरह मैथुन कर सकता है। कम-से-कम ४ मास सेवन क-करना चाहिये। परीक्षित है।

(८२) दो तोले गेहूँ और दो तोले कौंचके बीजों की गिरी लेकर दूध में डालकर खीर बनाओ। जब खीर बन जाय, उसमें आधी छटाँक गायका घी और छटाँक भर मिश्री मिलाकर खाओ। इस खीर के २।३ महीने खाने से खूब बल-वीर्य और स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा बढ़ती है।

(८३) पुष्ट बछड़े वाली गायके दूधमें गेहूँका सत्त या आटा थोड़ा जल मिला कर औटाओ और कलछी से चलाते रहो। खोआ हो जाने पर, अन्दाज़की चीनी मिलाकर लड्डू बना लो। सवेरे ही बलाबल अनुसार लड्डू खाकर, ऊपरसे २ तोले घी, ६ माशे शहद और २ तोले मिश्री मिलाकर दूध पीओ। इन मोदकों को कुछ दिन खाने वाला दस स्त्रियों की तृप्ति कर सकता है।

(८४) कौंचके बीजोंकी गिरी, बड़ा गोखरू और उटंगनके बीज—इन तीनों को छे-छे माशे लेकर, पीस-कूट कर छान लो। यह एक मात्रा है। इस चूर्णको गायके तीन पाव दूधमें डालकर मन्दी-मन्दी आग पर पकाओ। जब आधा सेर दूध रह जाय, आग से उतार कर ठण्डा कर लो। इसके बाद, माठा बिलौनेकी धुली हुई साफ रई से मथो और चार तोले मिश्री मिलाकर सन्ध्या समय ३ महीने पीओ। इसके सेवन करने से नामर्द को भी स्त्री-प्रसंगकी इच्छा होने लगती है। दिलमें बहुत उमंग आती है। परीक्षित है।

(८५) शुद्ध अमलासार गन्धक १० तोले और सूखे आमले १० तोले—इन दोनोंको पीस कूट कर छान लो। फिर ताज़ा आमलों के स्वरस

या सूखे आमलोंके काढ़ेमें तीन भावनाएँ देकर छायामें सुखा लो और फिर सेमरके स्वरसमें सात भावना देकर छाया में सुखालो। इसमें से डेढ़ या २ माशे चूर्ण लेकर, उसमें उतनी ही मिश्री और ६ माशे शहद मिलाकर चाटो और गायका दूध पीओ। इस नुसख़े के २।३ मास सेवन करने से नामर्द भी मर्द हो जाता और चिड़े की तरह मैथुन करता है। यह चूर्ण बूढ़ेको जवान कर देता है, फिर जवान का तो कहना ही क्या? परीक्षित है।

(८६) गायके दूधमें छुहारे पका कर, छुहारे खा लो और उस दूधको पी जाओ अथवा बकरे या मुर्गेका मांस खाओ। इतना बल पुरुषार्थ बढ़ेगा, जिसकी हद नहीं। इनके सेवन करने वाले को स्त्री-प्रसंगकी अत्यधिक इच्छा होती है। परीक्षित है।

(८७) कौंचके बीजोंकी सवा सेर गिरी बड़के दूधमें मिलाकर सान लो। जब गुँदा आटासा हो जाय, तोले-तोले भरकी छोटी-छोटी टिकियाँ बनालो। फिर कड़ाहीमें "जंगली सूअरकी चरबी" डालकर, चरबी गरम हो जाने पर, उसमें सब टिकियों को पूरियों की तरह पका लो, पर आग मन्दी रखना, टिकियाँ जलने न पावें अन्यथा सब गुड़ गोबर हो जायगा। जब टिकियाँ सिक जायँ, निकाल कर काँच या चीने के बर्तनमें रखो और ऊपरसे इतना "शहद" भर दो, जिसमें टिकियाँ डूब जायँ। सवेरे-शाम एक-एक टिकिया खाकर, ऊपरसे पाव आध पाव दूध, थोड़ी सी मिश्री या बताशे मिलाकर पीलो। इस नुसख़े के सेवन करने से परले सिरेका नामर्द भी मर्द हो जाता है।

नोट—छिलकों समेत कौंच के बीजोंको चौगुने दूधमें उबालो। पीछे उन्हें छील कर बड़के दूध में पीस-सान लो।

रस-चिकित्सा ।

(८८) एक रत्ती "अम्बर" शहतमें, सात दिन, देनेसे कम्पवायु दूर होती है। इससे कोठे, आँतों और सन्धियों के सब रोग नाश होजाते हैं। परीक्षित है ।

(८६) स्थावर या जङ्गम विष वाले को रत्ती भर "अम्बर" जलमें घोल कर देना चाहिये। परीक्षित है।

(६०) सोने और चाँदी के वर्कमें मिलाकर, पानके साथ, रत्तीभर "अभ्रक भस्म" खाने से धातु खूब बढ़ती है। परीक्षित है।

(६१) भाँगके साथ रत्ती भर "अभ्रक भस्म" खानेसे वीर्य स्तम्भन होता है। परीक्षित है।

(६२) लौंग और शहत के साथ "अभ्रक भस्म" खाने से धातु बढ़ती है । परीक्षित है ।

(६३) दूध या जायफल के साथ, रत्ती दो रत्ती "वङ्ग भस्म" खाने से ताक़त आती है। परीक्षित है ।

(६४) पानके साथ अथवा भाँगके साथ अथवा कस्तूरी के साथ "वङ्ग भस्म" रत्ती दो रत्ती खानेसे वीर्य-स्तम्भन होता है। परीक्षित है।

(६५) तुलसीके रस में "वङ्गभस्म" रत्ती या २ रत्ती खाने से शरीर पुष्ट होता है। परीक्षित है।

(६६) "रत्ती भर अम्बर" को घी और चीनीके साथ सेवन करनेसे नाताक़ती या नामर्दी जाती और शरीर की कान्ति बढ़ कर दिमाग़ शान्त होता है। परीक्षित है ।

नोट—अम्बर की डली होती है। यह प्रायः समुद्र-किनारे मिलता है। अम्बर पीला काला और शुभ्र होता है। उस पर दाग़ से होते हैं। वह गोल और अरगजे की तरह फीके रङ्ग का होता है। असली अम्बर क़ीमती होता है ; इससे नक़ली भी आता है। यदि अम्बर की दो डली एक दूसरे पर रख कर घिसें, तो वह गरम होकर सूक्ष्म पदार्थ को खींचेगा। पीला अम्बर ऊँचा होता है और काला हल्का होता है। अम्बर दाँतोंके नीचे कट सकता है, पर घुलता नहीं; हाँ, जरा नर्म हो जाता है—लस पैदा हो जाती है। आग पर डालने से उसके धूँएँ में सुगन्ध आती है। अम्बर धातुवर्द्धक, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, कामोत्तेजक, इन्द्रियों की शक्ति बढ़ाने वाला और स्त्री प्रसङ्ग की इच्छा करने वाला होता है। उससे कोठे की सरदी-गरमी मिटती है। वह बूढ़े और जवान सबको लाभदायक है।

(६७) खोये में एक या दो रत्ती "वंगभस्म" मिलाकर खाने से शरीर में बे-हिसाब वीर्य बढ़ता और गाढ़ा होता तथा शरीर पुष्ट होता है ; इसमें सन्देह नहीं।

नोट -खोआ दूधका कम-से-कम छटाँक भर लेना चाहिए।

(६८) लौंग १ माशे, पीपर १ माशे और छोटी इलायची का चूर्ण २ माशे—इनके मिले हुए चूर्णके साथ, एक या दो रत्ती "वंग भस्म" खाने से बल-वीर्य बढ़ता और नामर्द मर्द हो जाता है।

(६६) जायफलके साथ "वंगभस्म" खाने से धातु पुष्ट होती और शरीरकी कान्ति बढ़ती है।

(१००) दूध और मिश्रीके साथ "वंगभस्म" खाने से धातु और बल-वीर्य बढ़ते हैं।

(१०१) भाँगके चूर्ण, दूध और शहदके साथ "वंगभस्म" खानेसे स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है।

(१०२) अपामार्गकी जड़के चूर्णके साथ "वंगभस्म" खानेसे नपुंसकता नाश हो जाती है।

(१०३) खोआ, मिश्री, जायफल और पीपलके साथ—रत्ती दो रत्ती "शीशा भस्म" खाने से शरीर पुष्ट और बलवान होता है। इसके खाने वालोंका बल कम नहीं होता।

(१०४) पीपलके चूर्ण और शहदके साथ "लोह भस्म" खाने से शरीर पुष्ट होता और कफके रोग नाश होते हैं।

(१०५) साँठकी जड़को गायके दूधमें पीस कर, उसमें "लोहा भस्म" मिलाकर पीने से, शरीर पुष्ट होता और बल बढ़ता है।

(१०६) पानके साथ "लोहाभस्म" खाने से शरीर पुष्ट होता, कान्ति बढ़ती और वीर्य की अधिकता होती है।

(१०७) छोटी हरड़ और मिश्रीके साथ "लोहा भस्म" खाने से शरीर फौलाद्-जैसा हो जाता और बल-पुरुषार्थ कभी कम नहीं होता।

(१०८) जायफल, जावित्री, इलायची, मिश्री और गायके दूधके साथ "जस्ताभस्म" खाने से नामर्द मर्द हो जाता, शरीर बली और पुष्ट होता, और खाने वाले का बल कभी नहीं घटता।

(१०९) गिलोयका सत्त १ माशे, "अभ्रक-भस्म" १ रत्ती, हरताल-भस्म १ रत्ती, इलायची ४ रत्ती, पीपल २ रत्ती और खाँड ६ माशे,—इन सबको १ तोले "शहत"में मिलाकर सेवन करने से, ३।४ मासमें, नपुंसक भी १०० स्त्रियोंसे मैथुन कर सकता है।

(११०) भाँगरे के रसके साथ "सोनेकी भस्म" एकसे दो रत्ती तक खाने से वीर्य ख़ूब बढ़ता है; गाय के दूध के साथ खाने से बल-वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ता है; घी के साथ खाने से बुढ़ापा नाश होता है; बड़ी इलायची, पीपर और शहदमें मिलाकर "सोना भस्म" खाने से नामर्दी जाती रहती है। बड़ी इलायची २ रत्ती, पीपर १ रत्ती और शहद ४ माशे तथा सोना-भस्म १॥ रत्ती—इन सब को मिलाकर खाने और ऊपर से गायका "धारोष्ण दूध" पीनेसे कैसा भी नामर्द हो मर्द हो जाता है।

(१११) पीपल १ रत्ती और इलायची के चूर्ण ३ रत्ती में, रत्ती भर "चाँदीकी भस्म" मिलाकर सेवन करने से शरीर में ख़ूब ताक़त आती है। बलवीर्य बढ़ने के अलावः, नया ख़ून पैदा होता और ज्वर हो तो वह भी आराम हो जाता है। दवा खाकर, ऊपर से "धनियेका अर्क़" तोले दो तोले पीना चाहिये।

(११२) पानके बीडेमें दो चार चाँवल भर "चाँदीकी भस्म" रख कर खाने से शरीर खूब पुष्ट होता है।

(११३) खोये और मिश्रीमें "चाँदीकी भस्म" रत्ती भर या आधी रत्ती खाने से बल-वीर्य की खूबही वृद्धि होती है।

नोट—मिश्री २ तोले और खोआ ५) तोले लेना चाहिए।

(११४) पाँच तोले खोआ, दो तोले मिश्री और २ माशे छोटी इलायची, इन में एक रत्ती "ताम्बा भस्म" मिला कर खाने और ऊपरसे गाय का दूध पीने से नामर्दी नाश होकर, बेइन्तहा बल-वीर्य बढ़ता है; पर २।३ मास खाना चाहिये।

११५ धातुपुष्टिकर चूर्ण।

शतावर	७ तोले
गोखरू	७ "
कौंचके बीज	७ "
तालमखाना	७ "
सेमरकी मूसली	७ "
बरियाराके बीज	७ "
गुलसकरी	७ "

इन सब दवाओंको बराबर-बराबर सात—सात तोले लेकर ; कूट-पीसकर छान लो और वज़न करो ; जितना चूर्ण हो उतनी ही मिश्री पीसकर मिला दो और चौड़े मुँहकी शीशी में भर कर रख दो। इस चूर्णके सेवन करने से पतले-से-पतला वीर्य गाढ़ा और बलवान हो जाता है। धातु पुष्टि करने में यह दवा अव्वल दरजे की है। अनेक बार परीक्षा की है। इसको यदि कोई पुरुष ५।६ महीने तक लगातार सेवन करता रहे, तो उसकी स्त्री-प्रसंगकी इच्छा एक-दमसे बढ़ जाय और स्त्रियाँ उसकी दासी हो जायँ ; पर दस बीस दिनमें यह फल नहीं हो सकता; कम-से-कम ६० दिन तो सेवन करना ही चाहिये।

सेवन विधि—एक तोले चूर्णको मुखमें रखकर, ऊपरसे गायका "धारोष्ण दूध" एक पाव पीना चाहिये । दवा दोनों समय, सवेरे-शाम, खानी चाहिये । स्त्री-प्रसङ्ग से परहेज़ रखना बहुत ज़रूरी है । परीक्षित है ।

नोट—गोखरू बड़ा लेना; शतावर पश्चिमी लेना; सेमरकी मूसली पुरानी न हो; कौंचके बीजोंकी गिरी निकाल कर सात तोले तोल लेना । सब दवाओंको अलग-अलग कूट कर छान लेना और फिर ७।७ तोले तोलकर मिला लेना ।

११६ मदनानन्द चूर्ण ।

सकाकुल मिश्री	४ तोले
सालिम मिश्री	४ „
स्याह मूसली	४ „
सफेद मूसली	४ „
शतावर	४ „
बहमन सुर्ख	२ „
बहमन सफेद	२ „
दोतरी छोटी	२ „
दोतरी बड़ी	२ „
सुरवारीके बीज	१ „
इन्द्रजौ	१ „
जावित्री	१ „
जायफल	१ „
सोंठ	१ „
कुलींजन	१ „

बनानेकी तरकीब—इन सब दवाओंको अलग-अलग कूट-पीसकर छान लो । फिर चार चार, दो-दो और एक-एक तोले तोलकर मिलालो ।

सेवन विधि—इसकी मात्रा ६ माशे की है । एक मात्रा १ तोले

"शहद"में मिलाकर चाट लो; ऊपर से मिश्री मिला दूध पी लो। अगर मौसम गरमी का हो, तो दूधमें दवा न खाकर, अर्क़ गावज़ुवाँ में "मिश्री" मिलाकर, उसीसे दवा खाना चाहिये।

रोग नाश—इस "मदनानन्द चूर्ण"के सेवन करनेसे स्त्री-प्रसङ्ग की इच्छा खूब ज़ियादा हो जाती है; धातु की क्षीणता और थोड़े दिनों की नामर्दी जाती रहती है तथा वीर्यमें स्तम्भन-शक्ति आती है; इसलिये स्त्री-भोग में बड़ा आनन्द आता है। इस चूर्णकी जितनी तारीफ करें थोड़ी है। कामको उत्तेजित करने में यह रामबाण है। जिनको स्त्री-प्रसङ्ग की इच्छा कम होती हो, वे इसे कम-से-कम ३ मास सेवन करें और देखें, क्या मज़ा आता है। अगर स्त्री-प्रसङ्ग से परहेज़ करके, ६ महीने, यह चूर्ण खा लिया जाय, तब तो कहना ही क्या? परीक्षित है।

११७ बानरी चूर्ण।

कौंचके बीजों की गिरी	...	...	३ तोले।
तालमखाने के बीज ...	...	...	३ "
सफेद मूसली	...	...	३ "
उटङ्गन के बीज ...	...	...	३ "
मोचरस ...	...	...	३ "
ऊँटकटारे की जड़की छाल	...	...	३ "
बीजबन्द ...	...	...	३ "
बहुफली ...	...	...	३ "
कमरकस ...	...	...	३ "
शतावर ...	...	...	३ "
समन्दरशोष ...	...	...	३ "
सूखे सिङ्घाड़े ...	...	...	३ "

सेवन-विधि—इन सबको महीन पीस-कूट कर छान लो। इस चूर्णके सेवन करने से थोड़े दिनों का प्रमेह या धातु-क्षीणता आदि नाश

होकर, धातु खूब पुष्ट होती है। यह चूर्ण कभी फेल नहीं होता। इसके खानेवाले को स्त्री-प्रसङ्ग में अत्यानन्द आता है।

सेवन-विधि— इसकी मात्रा १॥ माशे से ६ माशे तक है। हर मात्रा में, मात्रा से आधी, पिसी हुई "मिश्री" मिलाकर खाने और "गायका धारोष्ण दूध पीने से जो लाभ होता है, लिखा नहीं जा सकता। सवेरे-शाम, दोनों समय, सेवन करना चाहिये। परीक्षित है।

११८ किशमिशादि मोदक।

किशमिश	८ छटाँक
स्याह मूसली	२ तोले
सफेद मूसली	२ "
सालम मिश्री	२ "
समन्दर शोष	२ "
मोचरस	२ "
बादाम की मींगी	२ "
शतावर	४ "
कुलींजन	६ माशे
मिश्री	१ सेर

बनाने की तरकीब—किशमिश, बादाम और मिश्री को अलग रखो और बाक़ी सब दवाओं को अलग। किशमिशों को पानी में धोकर, काँटे वगैरः निकाल (?) साफ करलो और सुखा दो। बादामों को ज़रा उबाल कर, चाकूसे उतार लो। मूसली प्रभृति सातों दवाओं को पीस-कूट कर छानलो। मिश्रीको क़लईदार कड़ाही में रख, थोड़ा सा अन्दाज़ का पानी डाल, गाढ़ी-गाढ़ी चाशनी बनालो। जब लड्डुओंके लायक़ चाशनी हो जाय, उतारकर नीचे रखलो। जब कुछ ठण्डी होजाय, उसमें दवाओं का चूर्ण, जो तैयार रखा है, तथा किशमिश और बादाम

सबको डाल कर मिला लो और आधी-आधी छटाँक के लड्डू बनाकर चिकने भाँड में रख दो।

सेवन विधि—सवेरे-शाम एक एक लड्डू खाकर, ऊपर से मिश्री-मिला दूध पीने से वीर्य खूब गाढ़ा और पुष्ट होता तथा शरीर तैयार होता है। इसको हमने अनेक रोगियों को सेवन कराया। परमात्माने सभीको फायदा पहुँचाया। जाड़ेमें खाने योग्य चीज़ है। इसके सेवन करने से एक बूढ़े को खूब फ़ायदा हुआ। परीक्षित है।

११९ हरशशांक चूर्ण।

शुद्ध आमलासार गन्धक ५)) तोले और सेमर की जड़का चूर्ण ५)) तोले, दोनोंको पीस-छानकर एकत्र करलो। फिर इसमें सेमरकी छालके "स्वरस"की तीन भावनाएँ देकर, छाया में सुखालो और बोतल में काग लगा कर रखदो।

सेवन विधि—इसकी मात्रा १ माशेसे १॥ माशे तक हैं। इसकी १ मात्रा खाकर, ऊपर से दूध पीने से, ३।४ मास में पुरुष घोड़े के समान मैथुन करने की सामर्थ्य लाभ करता है। इसके सेवन करनेसे बूढ़ा भी जवानकी तरह हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ हो जाता है। इस चूर्णकी जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। इस को हमें एक मित्र ने बताया था, हमने इसकी अनेक बार परीक्षा की। उन्होंने इसकी जितनी तारीफ कीथी, उससे कहीं अधिक ही फल देता है। परीक्षित है।

१२० माषादि मोदक।

छिले हुए उड़दों का चूर्ण	ऽ।≈
गेहूँका सत्त	ऽ।≈
जौ का सत्त	ऽ।≈
साँठी चाँवलों का चूर्ण	ऽ≋
छोटी पीपर (शोधी हुई)	ऽ~॥

घी	ऽ१॥
चीनी	ऽ२।

बनाने की विधि—पहले ऊपर की पाँचों चीज़ोंको, घीमें, मन्दी-मन्दी आंग से भून लो; जब चूर्ण लाल हो जाय और सुगन्ध आने लगे, उतार लो। फिर चीनी की चाशनी गाढ़ी-गाढ़ी बनालो । जब लड्डू-योग्य चाशनी हो जाय, उसमें भुना हुआ चूर्ण डाल दो। ऊपर से बादाम, पिस्ते और किशमिश आदि मेवे एक-एक पाव कतर कर डाल दो और एक-एक छटाँक के लड्डू बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक लड्डू खा कर, दूध पीने से बेइन्तहा बल-वीर्य बढ़ता है। अव्वल दर्जे की चीज़ है। परीक्षित है।

१२१ मदनानन्द मोदक ।

सोंठ	२ तोले
मिर्च	२ ,,
पीपर	२ ,,
हरड़	२ ,,
बहेड़ा	२ ,,
आमले	२ ,,
धनिया	२ ,,
कचूर	२ ,,
कूट	२ ,,
काकड़ासिंगी	२ ,,
कायफल	२ ,,
सेंधा नोन	२ ,,
मेथी	२ ,,
नागकेशर	२ ,,
सफेद ज़ीरा	२ ,,

स्याह ज़ीरा	...	...	...	...	२ तोले
तालीसपत्र (१७)		...	...	...	२ "
बीजों समेत धुली हुई भाँग		...	...	...	३४ "
मिश्री	...	...	...	...	६८ "
घी	...	...	...	...	४० "
शहद	...	...	...	...	२० "

बनाने की विधि—सोंठ से तालीसपत्र तक की १७ दवाओं को कूट-पीस कर छानलो और ज़रा भून लो। उधर भाँगको, जो खूब धोकर सुखा ली हो, "घी" में भूँजलो; देखो जले नहीं। पीछे भाँग और ऊपर के चूर्ण को खूब मिलालो। इसके बाद इसमें घी, मिश्री और शहद डालकर खूब सानो। जब एक-दिल हो जायँ, आधी-आधी छटाँक के लड्डू बनालो और चीनी या काँचके साफ बर्तन में इलायची, तेजपात और कपूर को अन्दाज़ से पीसकर, थोड़ा सा नीचे जमा दो और उस पर लड्डुओं की एक तह रखकर, फिर इलायची आदि का चूर्ण छिड़क दो। इस तरह हर तह के नीचे-ऊपर इसे छिड़को और लड्डू रखो। ढक्कन देकर रखदो।

सेवन विधि—सवेरे-शाम या एक ही समय, एक-एक लड्डू खाकर, दूध पीने से बूढ़ा भी जवान हो जाता है। इतना बल पुरुषार्थ बढ़ता है, कि लिख नहीं सकते। एक रात में दस स्त्रियों के भोगने की सामर्थ्य हो जाती है। इन लड्डूओंसे बल, वीर्य और संभोग-शक्ति बढ़ने के अलावः संग्रहणी, आमवात, खाँसी और वात-कफ के विकार नष्ट होजाते हैं। इन लड्डुओं को खाकर ही श्री कृष्ण भगवान् १६१०८ स्त्रियों से भोग करते थे। परीक्षित है।

१२२ बानरी गुटिका।

कौंचके बीजों की गिरी सवासेर लेकर पीस-कूट कर छानलो। फिर इस चूर्ण को, गायके दूधमें, बेसनकी तरह, सानलो और पकौड़ी

बनाने लायक़ ढीला-गाढ़ा रखो। कड़ाही में घी डालकर, मन्दी-मन्दी आग लगाओ। जब घी आजाय, उसमें उसको पकौड़ी उतार लो। उधर मिश्री की गाढ़ी-गाढ़ी चाशनी बनाकर तैयार रखो। पकौड़ियों को, तैयार होते ही, चाशनी में डाल दो। जब पकौड़ी खूब चाशनी पीलें, एक "शहद" से भरे बर्तन में उनको भरदो और मुँह बाँध दो।

सेवन-विधि - मात्रा जवान को २ तोले की है। बलाबल-अनुसार मात्रा बढ़ा-घटा लो। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाने से, घोड़े के समान मैथुन-शक्ति प्राप्त होती और परले सिरे का नपुंसक भी पुरुषत्व लाभ करता है। प्रथम श्रेणी की वाजीकरण दवा है। परीक्षित है।

नोट—"भावप्रकाश" में लिखा है, कौंचके बीजोंको चौगुने दूध में पकाओ। जब दूध गाढ़ा हो जाय, उतारलो। बीजोंको छीलकर, उन्हें खूब महीन पीसलो और घी में पकौड़ी उतार लो इत्यादि। कौंच के बीजों के छिलके बड़ी कठिनाई से उतरते हैं; अतः उन्हें दूध में पका लेने से बड़ा सुभीता होता है। छिलके झट उतर जाते हैं। आप चाहे गिरी को सुखाकर आटा करलो और दूध में सान कर पकौड़ी बनालो, और चाहे दूध से निकालते ही छीलकर, गीली गिरी कोही पीसकर पकौड़ी बनालो।

१२३ कामिनी मदभञ्जन मोदक।

शतावर	५ तोले
कौंचके बीजों की गिरी	५ ,,
तालमखाने के बीज	५ ,,
मुलेठी छिली हुई	५ ,,
नागौरी असगन्ध	५ ,,
नागबलाकी जड़की छाल	५ ,,
अतिबला की जड़की छाल (७)	५ ,,
गायका दूध	५ सेर
चीनी	२॥ सेर
घी	आध सेर

बनाने की विधि—पहले दूध के ऊपर की सा[illegible] [illegible]

कूटकर छानलो। इसके बाद, दूधको मन्दाग्नि से औटाओ; जब चौथाई दूध जल जाय, उसमें दवाओंके चूर्णको डालकर, कलछीसे बराबर चलाते रहो; जब खोया हो जाय, नीचे उतार लो।

कड़ाही साफ करके, उसमें रखा हुआ घी डालकर पकाओ। जब घी आजाय, उसमें दवाओं के मिले मावे को डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे भूनो। जब सुगन्ध आने लगे, खोये पर सुर्खी आजाय—पर जले नहीं—उतार लो।

चीनी की चाशनी गाढ़ी-गाढ़ी तैयार करो। जब चाशनी हो जाय, उसमें खोआ, जो भुना रखा है, डालदो और खूब चलाकर उतार लो। आध-आध पाव बादाम, पिस्ता, चिलगोज़ा और किशमिश—जो पहले सेही कतरे हुए तैयार हों—मिलादो और ५-५ तोलेके लड्डू बनालो।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम एक-एक लड्डू खाकर, ऊपरसे गायका मिश्री-मिला दूध पीओ। जाड़ेके तीन चार महीने, इनके सेवन करने से इतना बल-पुरुषार्थ बढ़ता है, जिसकी हद नहीं। कितने ही दिनों का नामर्द मर्द हो जाता है। परीक्षित है।

१२४ सर्वरोगान्तक महौषधि।

	सेर	छ०	तोले
शुद्ध भिलावे	१	८	८
गिलोय	१	४	०
बाराहीकन्द	१	०	०
चीते की जड़की छाल	०	८	०
काले तिल	०	१२	४
शतावर	०	६	२
बिदारीकन्द	०	६	२
बड़ा गोखरू	०	६	२
सोंठ	०	२	१

		सेर	छ०	तो०
गोल मिर्च	...	०	२	१
पीपर	... ...	०	३	१
मिश्री	... ...	३	८	०
शहद	... ...	१	१२	०
घी	... ...	०	१४	०

बनानेकी विधि—पहले भिलावे शोध कर रखो। इसके बाद भिलावोंसे लेकर पीपर तक की सब दवाओंको कूट-पीस-छानकर तथा घी, शहद और पिसी हुई मिश्री सबको मिला कर, एक साफ चिकने बासनमें रखदो।

सेवन-विधि - इसकी मात्रा तोले भरसे आधी छटाँक तक की है। इसे चाटकर, ऊपरसे दूध पीने से, ३ मासमें, महा नामर्द भी मर्द हो जाता है। यह योग सचमुचही बूढ़ेको जवान और जवानको महा बलवान और वीर्यवान बनाने वाला है। इस महौषधिके सेवन से कोढ़, भगन्दर, सोज़ाक, सब तरहकी खाँसी, प्रमेह, छहों बवासीर, पीलिया, सन्निपात एवं वातके ८० रोग, पित्तके ४० रोग और कफके २० रोग आराम हो जाते हैं। इसको "नरसिंह चूर्ण" भी कहते हैं। लिखा है, इसके सेवन से संसारके सभी रोग जाते हैं। यह नुसख़ा भी हमने कई रोगियोंको दिया। इसकेसेवन करनेसे कितने ही संसारके सुखसे निराश हुए सुखी हो गये। जिसे दिया उसे ही चमत्कार दीखा। बादीके दो चार रोगियों को भी कुछ लाभ दिखाया। इनके सिवा और रोगों पर जाँचनेका मौक़ा ही कभी न आया। अन्य सज्जन और रोगों पर परीक्षा कर देखें—लिखने वाले ने इसे ठीकही सर्व रोगान्तक लिखा है या मुबालग़ा है।

नोट—पेड़ से पक कर गिरे हुए भिलावोंको एक सेर लेकर, ईंटोंके कूकुए में खूब रगड़ो और नीचे की ढिपुनी काट-काट कर फेंक दो। इसके बाद, पानीमें मलकर धो डालो और सुखा लो। बस, भिलावे शुद्ध हो जायँगे।

और शोधन-विधि

भिलावोंको पानीमें डालकर, चार पहर तक पकाओ; फिर निकाल कर टुकड़े-टुकड़े कर लो और उन टुकड़ोंको दिन-भर दूधमें पकाओ। इसके बाद, उन्हें निकालकर एक तोले सोंठ और चार तोले अजवायनके साथ खरल करो। ये भिलावे सब कामोंके योग्य हैं। इनके सेवनसे कोढ़, खाज, खुजली और श्वास आदि रोग नष्ट होते हैं।

भिलावे पकाने में बड़ी होशियारीकी ज़रूरत है। इनका धूँआ शरीरमें लगना भला नहीं। भिलावे पकाने वालेको अपने शरीर में "काले तिलोंका तेल" पोतकर भिलावे पकाने चाहिएँ।

१२५ कामेश्वर मोदक।

कूट, बिलाईकन्द, सफेद मूसली, शतावर, सूखा कसेरू, अजवायन, ताड़के पेड़का अंकुर, काले तिल, सेंधानोन, भारंगी, काकड़ासिंगी, पीपर, मिर्च, सफेद ज़ीरा, तज, तेजपात, नागकेशर, गदापूर्ना की जड़, मुनक्के, गजपीपर, कपूरकचरी और त्रिफला,—इन सबको अलग-अलग कूट-पीस कर छानलो और सबका एक-एक तोले चूर्ण तोलकर एकत्र कर लो।

गिलोयका सत्त, मोचरस, मुलेठी, गुलसकरी, छोटी इलायची, सेमरकी मूसली और कौंचके बीज,—इन सबको भी अलग-अलग कूट-पीस-छान कर दो-दो तोले ले लो।

मेथी १॥ तोला, धनिया १॥ तोला, सोंठ ६ माशे, कालाज़ीरा ८ माशे, चीतेकी छाल ८ माशे, कायफल १० माशे, शुद्ध गंधक २ तोले, धुली भाँग ६ तोले, अभ्रक-भस्म निश्चन्द्र शतपुटी ४ तोले, और मिश्री आध सेर—इन सब को भी अलग-अलग कूट कर तोल लो।

इन सब दवाओंको तथा पावभर शहद और आधपाव घी को एकमें मिलाकर, किसी चिकने या काँचके बासनमें रख दो।

सेवन विधि—इसकी मात्रा १ तोले की है। १ मात्रा खाकर,

मिश्री-मिला दूध पीने से बलवीर्य बढ़ता, प्रसङ्ग-शक्ति बहुत तेज़ होती, धातु गाढ़ी होती, शरीर पुष्ट होता, रुकावट होती, क्षत और क्षय नाश होते और स्त्री फौरन स्खलित होती है। इसकी जितनी तारीफ की जाय, थोड़ी है। परीक्षित है।

१२९ नपुंसकत्वारि तैल।

सफेद चिरमिटी, खिरनी के बीज और लौंग—इन तीनों को आध-आध पाव लेकर, खूब कूट-पीस लो और सात कपरौटी की हुई एक पक्की विलायती शीशीमें भर दो। बोतलके मुँहमें बहुत सी सींकें या पतले तारके दुक हमारे परीक्षित हैं [illegible] दो, कि उनमें होकर तेल टपक सके, पर उनमें होकर फल मिलता है। एक ब र बनाओ और खाओ। [illegible]ा न गिरे। इसके बाद एक नाँदमें ऐसा छेद र, बङ्ग भस्म और फौला[illegible]लकी नाली चली जाय। इस बोतलके मुँहको [illegible] नीचे खड़ी रखकर, उससे मिला दो और दोनोंकी सन्ध, कपड़-मिट्टी या रुई और मुल्तानी-मिट्टीको पानीमें सानकर उसीसे बन्द करदो। बोतल नाँदमें औंधी रहेगी और नाँद ईंटों पर रखी रहेगी; तभी तो नीचेकी सीधी रक्खी हुई बोतल से नाँदकी औंधी बोतलका मुँह मिलेगा। नाँदमें रखी बोतलके चारों ओर, और कुछ ऊपर, कड़ाहीमें खूब गरम करके बालू भर दो, ताकि बोतल बालू में डूबी रहे। बोतल पर चार चार अंगुल बालू रहे। ऊपरसे कण्डे रख कर आग जला दो। इस तरह ऊपरकी औंधी शीशीसे तेल टपक-टपक कर नीचे की शीशी में गिरेगा। जब तेल टपकना बन्द हो जाय, नीचेकी बोतलकी सन्ध खोल कर अलग हटालो। इस तेलको छान कर एक शीशीमें रख लो।

इसमें से १ सींक तेल भरकर पान पर लगा खाओ और ऊपरसे आधा पाव घी खाओ। कुछ दिन इस योगके सेवन करने से नामर्द मर्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इसेएक सींकसे जियादा न खाना चाहिये। "घी" इसकी शान्ति करेगा। यही नुसखा हम पीछे भी, संक्षिप्त रूप में, लिख आये हैं।

१२७ वृहत बानरी मोदक।

कौंचके बीजोंकी गिरी	...	...	३ तोले	१॥ माशे
जटामांसी	...	...	३ ,,	१॥ ,,
तेजपात	...	...	३ ,,	१॥ ,,
नागकेशर	...	...	३ ,,	१॥ ,,
जायफल	...	...	३ ,,	१॥ ,,
जावित्री	...	...	३ ,,	१॥ ,,
दालचीनी	...	...	३ ,,	१॥ ,,
केशर	...			१॥ ,,
चव्य	...		,,	१॥ ,,
सोंठ			,,	१॥ ,,
कमलगट्टे की गिरी			,,	१॥ ,,
चिरौंजी	...	...	३ ,,	१॥ ,,
पिस्ते	...	...	० ,,	६ ,,
बादाम	...	...	० ,,	६ ,,
छुहारे	...	...	१ ,,	३ ,,
मिश्री	...	...	...	अढ़ाई सेर
घी	...	...	...	एक पाव
दूध	...	...	...	पाँच सेर

बनानेकी विधि—पहले ऊपरकी कमलगट्टे तककी—केसरको छोड़ कर, १० दवाओंको महीन कूट-पीसकर छान लो। पीछे केशरको पीस कर रख लो। इसी तरह बादाम, पिस्ते और चिरौंजीको पीस लो। दूधका खोआ बना लो। खोयेको घी में भूँजलो, जब सुर्ख़ हो जाय, उतार लो। कड़ाहीमें मिश्री और पानी डालकर गाढ़ी चाशनी बना लो। चाशनीमें खोआ मिलाकर एक-दिल करलो, फिर उसे उतार कर, उसमें सब दवाओंका पिसा हुआ चूर्ण मिला दो और खूब एक-दिल करलो। अन्तमें छटाँक-छटाँक भरके लड्डू बनालो।

अगर बहुत ही ताक़तवर बनना हो, तो चाशनीमें, चूर्ण के साथही, चार माशे शिश्चन्द्र अभ्रक-भस्म, ४ माशे वंग-भस्म और ४ माशे फौलाद-भस्म भी मिला दो। इस दशामें एक-एक तोले के लड्डू बनालो।

सेवन विधि—इन लड्डुओं के खाने से बेहद बल-वीर्य बढ़ता और शरीर पुष्ट होता है। नामर्द भी दस स्त्रियों के भोगने-योग्य हो जाता है। एक-एक या दो-दो लड्डू, सवेरे-शाम, खाकर, उपरसे गायका मिश्री-मिला दूध पीना चाहिये।

नोट—ये मोदक हमारे परीक्षित हैं। इतना पाक चार बार बनाने और खानेसे ठीक ऊपर लिखा फल मिलता है। एक बार का पाक चुके, फिर इसी तरह बनालो। इस तरह चार बार बनाओ और खाओ। मगर इतना गुण तभी मिलेगा, जब कि इसमें अभ्रक भस्म, वङ्ग भस्म और फौलाद-भस्म भी डाली जायेंगी। अभ्रक भस्म १०० आँचकी हो, जिसमें जरा भी चमक न हो और फौलाद-भस्म ऐसी हो, जो पानी पर तैरने लगे। जिनको स्त्री-भोगका सुख देखना हो, वे इन मोदकों को बनाकर खावें। ये मोदक अनेक ग्रन्थोंमें लिखे हैं, पर हमने जिस तरह आजमाये और प्रत्यक्ष फल पाया, उसी तरह नुसखा लिखा है।

१२८ आँवलों का अवलेह।

बढ़िया सूखे आमले एक सेर लाकर, पीस-कूट कर छान लो। फिर ताज़ा हरे आमले एक सेर लाकर, (गुठली निकाल कर) सिल पर पीसो और कपड़े में रखकर रस निचोड़ लो। उस रसमें आमलों के पिसे-छने चूर्णको डुबो दो और सूखने दो। जब सूख जाय, उसे एक चिकने साफ बर्तन में भरदो। ऊपर से "आध सेर घी, पाव भर शहद और आध सेर मिश्री" पीस कर मिला दो।

सेवन-विधि—इस अवलेह की मात्रा दो तोले से तीन या चार तोले तक है। इस में से एक ख़ूराक़, रोज़ सवेरे, खाने से खूब बल-वीर्य बढ़ता है; धातु-विकार नाश होकर शरीर पुष्ट होता है। इस अवलेह की जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। परीक्षित है।

नोट—इस अवलेह को भी इतना-ही-इतना बना-बना कर, तीन-चार बार खाना चाहिये एक बार खाने से ही जब रोगी को चमत्कार दीख जायगा, तब वह आप ही खायगा। अगर आमलों का मौसम न हो, तो आमलोंका काढ़ा बनाकर, उसी काढ़े में आमलों का चूर्ण भिगो और मलकर सुखा लेना चाहिये।

१२६ नपुंसक रञ्जन अवलेह।

असगन्ध	...	...	...	५ तोले।
सफेद मूसली	...	...	...	५ "
स्याह मूसली	...	...	...	५ "
कौंच के बीज	...	...	...	५ "
शतावर	...	...	...	५ "
तालमखाना	...	...	...	५ "
बीजबन्द	...	...	..	५ "
जायफल	...	...	...	५ "
जावित्री	...	...	...	५ "
ईसबगोल	...	...	...	५ "
नागकेशर	...	...	...	५ "
सोंठ	...	...	...	५ "
मिर्च	...	...	...	५ "
पीपर	...	...	...	५ "
लौंग	...	...	...	५ "
कमलगट्टेकी गिरी	...	...	...	५ "
छुहारे	...	...	...	५ "
बादाम	...	...	...	५ "
मुनक्के	...	...	...	५ "
चिरौंजी	...	...	...	५ "
मिश्री	...	...	...	२॥ सेर
घी	...	...	...	आध सेर

बनाने की विधि—मिश्री और घी को छोड़, सब दवाओं को कूट-पीस कर कपड़-छन करलो और घी में भून लो। पीछे मिश्री की ढीली चाशनी बनाकर, जो न जमें, उतार लो और सब दवा मिला दो। पीछे थोड़े से चाँदी-सोने के वरक मिलाकर रख दो।

सेवन विधि—इसमेंसे एक या दो तोले लेह चाटकर, ऊपर से मिश्री-मिला दूध पाने से नपुंसकता जाती, वीर्य गाढ़ा और पुष्ट होता तथा अनेक स्त्रियों से भोग करने की सामर्थ्य होती—इनके सिवा पेशाब की जलन, पथरी और वायुरोग आदि अनेक रोग भी नाश होते हैं। परीक्षित है।

१३० योगराज।

त्रिफला, मुलहटी, महुए के फूल, कमलगट्टे का गोंद, जायफल और दालचीनी—इन सबको एक-एक छटाँक लेकर, पीस-कूट कर छानलो और तीन छटाँक "मिश्री" पीसकर मिलादो और रखदो। इसमें से अपने बलाबल-अनुसार, तोले भर चूर्ण, १ तोले घी और ६ माशे शहद मिला-कर रोज़ खाओ। इससे रोग तो प्रायः सभी नाश होते हैं; पर बल बढ़ाने और शरीर पुष्ट करनेमें तो इसके समान और कोई नुसख़ा ही नहीं है। अनेक रोगियों पर आज़माया है, जिसे दिया वही खुश होगया।

१३१ पञ्चामृत चूर्ण।

कौंच के बीज, असगन्ध, गोरखमुण्डी, विदारीकन्द और कमलके बीज—इन को आध-आध पाव लेकर पीस-छान लो।

फिर; इस चूर्णमें ३ भावना "विदारीकन्द के स्वरस" की दो; इसके बाद ३ भावना "भाँग के रस" की, ३ भावना "जायफल के रस" की, ३ भावना "केसरके रस" की और ३ भावना "मुलहटी के रस" की दो। सूख जाने पर, ५० तोले "मिश्री" पीस कर मिला दो।

सेवन विधि—इसमें से तोले भर चूर्ण, एक तोले "शहत" में मिला-कर, सवेरेही चाटो और गायका धारोष्ण दूध पीओ। शाम को एक मात्रा

खाकर, ऊपर से गरम दूध ज़रासी मिश्री मिला कर पीओ। इसके सेवन से महादुर्बल भी महाबली और वीर्यवान हो जाता है। पुष्टि करने वाले चूर्णोंमें यह राजा है। हमने इससे अनेक रोगी आराम किये हैं। परीक्षित है।

१३२ बलवीर्यवर्द्धक योगराज।

असगन्ध	१ तोले
विदारीकन्द	१ ,,
गोखरू	१ ,,
इलायची	१ ,,
जेठी मधु [मुलहटी]	१ ,,
पीपल	१ ,,
सोंठ	१ ,,
बङ्ग-भस्म	१ ,,
चाँदी की भस्म	१ ,,
अभ्रक-भस्म	१ ,,
सोना-भस्म	१ ,,
लोहा-भस्म	१ ,,
ताम्बा-भस्म	१ ,,

बनाने की विधि—असगन्ध से सोंठ तक की दवाओं को कूट-पीस कर छान लो। इसके बाद इसमें बङ्गभस्म प्रभृति छहों भस्में मिलादो।

इसके बाद, विदारीकन्दके स्वरस, मेंहदी के स्वरस, धतूरे के स्वरस, भाँग के स्वरस, केशर के रस और अदरखके स्वरसमें इस चूर्णको डुबो-डुबो कर सुखा दो; यानी एक दिन विदारीकन्द के स्वरस में डुबो कर सुखादो, दूसरे दिन महँदी के स्वरसमें डुबो कर सुखादो। इस तरह छै दिन तक छहों तरह के रसों मे भिगो-भिगो और मल-मल कर

सुखादो। जब सूख जाय, तब चूर्ण के वज़न के बराबर "मिश्री" पीस कर मिला दो और रखदो।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा २ रत्ती से ३ रत्ती तक है। एक मात्रा ६ माशे "शहद"में मिलाकर चाटने औरऊपर से मिश्री-मिला दूध पीने से खूब बल-वीर्य बढ़ता है। इसके सेवन करने वाला एक रात में दस स्त्रियों को प्रसन्न कर सकता हैं। इसके सेवन करने से प्रमेह, पाण्डु, श्वास और खाँसी आदि आराम होकर, शरीर भीमके समान हो जाता है। परीक्षित है।

१३३ पाकराज।

गोखरू (क)	४ तोले
खिरेंटी	४ ,,
कौंचके बीज	४ ,,
गङ्गेरन	४ ,,
शतावर	४ ,,
तालमखाना	४ ,,
विदारीकन्द	४ ,,
हरड़	१ ,,
बहेड़ा	१ ,,
आमला	१ ,,
सोंठ	१ ,,
मिर्च	१ ,,
पीपर	१ ,,
दालचीनी	१ ,,
इलायची	१ ,,
तेजपात	१ ,,
जमालगोटे की जड़	१ ,,

छेंधानीन	...	...	...	१	,,
धनियाँ	...	...	...	१	,,
कचूर	...	...	...	१	,,
ख़स	...	...	...	१	,,
कङ्कोल	...	...	..	१	,,
नागरमोथा	...	...	...	१	,,
वंसलोचन	...	...	...	१	,,
मुनक्का	...	...	...	१	,,
जायफल	...	...	...	१	,,
जटामाँसी	...	...	...	१	,,
नागकेशर	...	...	...	१	,,
इन्द्रजौ	...	...	...	१	,,
पीपरामूल	...	...	...	१	,,
साल	...	...	...	१	,,
जावित्री	...	...	...	१	,,
अजवायन	...	...	...	१	,,
कायफल	...	...	...	१	,,
मेथी	...	...	...	१	,,
मुलहटी	...	...	...	१	,,
देवदारु	...	...	...	१	,,
सौंफ	...	...	...	१	,,
छुहारे	...	...	...	१	,,
चन्दन	...	...	...	१	,,
तगर	...	...	...	१	,,
जवाखार	...	...	...	१	,,
केसर (ख)	...	...	...	१	,,
कस्तूरी	...	...	...	१	,,

शुद्ध पारा		१ तोले
शुद्ध गंधक		१ ,,
शुद्ध गूगल		१ ,,
शुद्ध शिलाजीत		१ ,,
धुलीभाँग	(ग)	५६ ,,
अभ्रक भस्म	(घ)	२ ,,
बंगभस्म		२ ,,
ताम्बा-भस्म		२ ,,
लोहभस्म		२ ,,
शीशा-भस्म		२ ,,
मोती-भस्म		२ ,,
मूँगा-भस्म		२ ,,
शतावरका रस	(ङ)	५६ तोले
भुइँ आमलेका रस		५६ तोले
खोआ }	(च)	दो सेर
घी }		आध सेर
घी	(छ)	एक सेर
मिश्री		तीन सेर

बनानेकी विधि—पहले गोखरू से लेकर जवांखार तककी, (क) नम्बरमें लिखी,दवाओंको कूट-पीस कर कपड़-छन करलो। फिर (ख)में लिखी केशरसे शिलाजीत तककी दवाओंको और (ग) में लिखी भाँगको भी इसी चूर्णमें पीसकर मिलादो। इसके बाद (ङ)में लिखे शतावर और भुँई आमले के रसमें, इस सब चूर्णको भिगो दो और धूपमें सुखालो।

(च) में लिखे खोये को आध सेर घी में भूँजलो ; जब सुरख़ी आ जाय और सुगन्ध आने लगे, उतार कर रख दो।

दवाओंके सब चूर्णको (छ) में लिखे एक सेर घी में भूँजलो। मन्दी आग से भूँजना; जलने न पावे।

(छ) में लिखी मिश्री में पानी मिलाकर, आग पर चढ़ा दो और गाढ़ी चाशनी बना लो। उसमें खोआ और घी में भुँजी हुई सारी दवायें तथा (घ) में लिखी अभ्रक भस्मादि सब भस्मों को डालकर मिला दो और उतार लो। शीतल होने पर, एक-एक तोले के लड्डू बनालो।

सेवन विधि—सवेरे-शाम एक-एक लडडू खाकर, मिश्री-मिला दूध पीने से बल-वीर्यकी खूब वृद्धि होती है। इसके समान नामर्दको मर्द और बूढ़ेको जवान करने वाला नुसख़ा और नहीं है। यह पाक सब पाकोंमें श्रेष्ठ है।

रोग नाश—इस पाकके सेवन करने से ८० प्रकारकी वातव्याधि, २० प्रकारके प्रमेह, विषमज्वर, कमरका दर्द, मन्दाग्नि, खूनविकार, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और बाँझपन आदि अनेक रोग नाश होते हैं। इसके सेवन करने से वीर्यमें खूब रुकावट पैदा हो जाती है; अतः इसके सेवन करने वालेकी स्त्रियाँ दासी हो जाती हैं। अगर बाँझ स्त्री इसे खाती है, तो सुन्दर पुत्र जनती है। अगर स्त्री-पुरुष दोनों इसे कुछ दिन खाकर प्रसंग करते हैं, तो सिंहके समान बलवान पुत्र होता है।

यह पाक अमीरोंके लायक़ है। इसलिए इसे सेवन करते समय तेल, लालमिर्च, गुड़, खटाई, दही, रंज-फिक्र एवं अन्य अपथ्य पदार्थों से परहेज़ रखना चाहिये। इसके सेवन करते समय, यदि ग़रीबोंको ख़ैरात बाँटी जाय, तो उत्तम हो। हमने यह पाक जयपुरके ४।५ जौहरियोंको खिलाया। चार मास सेवन करने से अपूर्व आनन्द आया। परीक्षित है।

१३४ वीर्य स्तम्भन कारक बटी।

अकरकरा, जायफल, सोंठ, केसर, लौंग, पीपल, उत्तम कस्तूरी, कपूर और अभ्रक भस्म—इन सबको दो-दो माशे लेकर, पीस कूटकर छान लो। पीछे इनमें शोधी हुई अफ़ीम १८ माशे मिला दो और

आधी-आधी रत्ती की गोलियाँ बनालो। इसमें से एक या दो गोली खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीने से अवश्य घण्टे-आधे घण्टे तक रुकावट होती है। परीक्षित है

१३५ महाकन्दर्प चूर्ण।

वंग-भस्म	...	...	१ माशे ४ रत्ती
लोह-भस्म	...	...	१ „ ४ „
अभ्रक-भस्म	...	...	१ „ ४ „
रससिन्दूर	...	...	१ „ ४ „
ताम्रेश्वर	...	...	१ „ ४ „
कस्तूरी	...	...	१ „ ४ „
तज	...	...	१ „ ४ „
तेजपात	...	...	१ „ ४ „
छोटी इलायची	...	...	१ „ ४ „
नागकेशर	...	...	१ „ ४ „
कपूर	...	...	२ „ ६ „
जावित्री	...	...	२ „ ६ „
जायफल	...	...	२ „ ६ „
लौंग	...	...	२ „ ६ „
सफेद चन्दन	...	...	२ „ ६ „

बनाने की तरकीब—भस्मोंको छोड़कर, शेष दवाओंको अलग-अलग कूट-छानकर, ऊपर के लिखे माफ़िक़ तोल लो और बंग-भस्मादि भस्में भी मिला दो। इस चूर्ण की मात्रा ३ से ४ माशे तक है। इसको खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गायका दूध पीने से नपुंसकता जाती, रुकावट बढ़ती, शरीर बलवान होता और स्त्री-प्रसंगकी इच्छा बढ़ जाती है। इसके खाने वाले की भूख भी बढ़ती है और वह अनेक स्त्रियोंको प्रसन्न कर सकता है। कम-से-कम ४० दिन इस चूर्ण को खाना चाहिये।

१३६ मदनमञ्जरी बटी ।

अभ्रक-भस्म	...	...	२ तोले
बंग-भस्म	...	...	१ ,,
पारेकी भस्म	...	...	६ माशे
धुली सूखी भाँग	...	...	३॥ तोले
दालचीनी	...	...	२ ,,
तेजपात	...	...	२ ,,
छोटी इलायची	...	...	२ ,,
नागकेशर	...	...	२ ,,
जायफल	...	...	२ ,,
जावित्री	...	...	२ ,,
कालीमिर्च	...	...	२ ,,
पीपल	...	...	२ ,,
सोंठ	...	...	२ ,,
लौंग	...	...	२ ,,

बनानेकी विधि—भाँगसे लौंग तक की ग्यारह दवाओंको कूट-पीस कर छान लो। फिर इस चूर्णमें, तीनों भस्म भी मिला कर रख दो। इसके बाद, इसमें ५४ तोले मिश्री, सत्ताईस तोले घी और साढ़े तेरह तोले शहद डालकर मिलाओ और छै-छै माशे या आठ-आठ माशे के गोली बनाकर साफ वर्तनमें रख दो।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, एक-एक या कम-ज़ियादा गोली अपने बलाबल-अनुसार खाकर, मिश्री-मिला दूध पीओ। इन गोलियोंके सेवन करनेसे कामदेवके समान आनन्द तत्काल प्राप्त होता है। यह वाजीकरण योग सब रोगोंको नाश करने वाला और ज़बर्दस्त-से ज़बर्दस्त स्त्रियों के गर्वको खर्व करने वाला है। यह नुसखा भैरवानन्द योगी का ईजाद किया हुआ है। इसके उत्तम होनेमें ज़रा भी सन्देह नहीं; पर

३।४। महीने सेवन करना चाहिये। बलवान पुरुष भी इतने मसालेको अढ़ाई-तीन महीने में खा सकेगा। परीक्षित है।

१३७ नारसिंह चूर्ण।

शतावर	६४ तोले
गोखरू	६४ तोले
वाराहीकन्द	८० तोले
गिलोय	१०० तोले
भिलावे (शुद्ध)	१२८ तोले
चीता	४० तोले
शोधे हुए तिल	६४ तोले
त्रिकुटा	३२ तोले
विदारीकन्द	६४ तोले
खाँड	२८० तोले
शहद	१४० तोले
घी	७० तोले

बनाने की विधि—पहले भिलावों को शोधकर सुखा लो। फिर शतावर से विदारीकन्द तक की दवाओं को कूट-पीसकर कपड़-छन कर लो। इसके बाद, इस चूर्ण में घी, चीनी और शहद मिलाकर रख दो। बस, यही चूर्ण "नारसिंह चूर्ण" है। यह चूर्ण कई ग्रन्थों में लिखा है। हमने "चक्रदत्त" से लिया है।

सेवन-विधि—इस में से दो तोले-भर चूर्ण खाकर, मनवांछित भोजन करने से, १ महीने में ही, बूढ़ा जवान हो जाता है। हमने इसको कई रोगियोंको दिया, बेशक लाजवाब चूर्ण है। पर महीने भर में जवान कोई नहीं हुआ। हाँ, बल-पुरुषार्थ बेशक बढ़ा। जिन्होंने ३ महीने सेवन किया, खूब फल पाया। कामी पुरुषों को इसे अवश्य सेवन करना चाहिये। "चक्रदत्त" में लिखा है—

स कान्चनाभो मृगराजविक्रमस्तुरङ्गमं चाप्यनुयाति वेगतः।
स्त्रीणां शतं गच्छति सोऽतिरेकं प्रकृष्टदृष्टिश्च यथा विहङ्गः॥

इस "नरसिंह चूर्ण" को सेवन करने वाला पुरुष सुवर्ण के समान कान्तिवाला, सिंहके समान पराक्रमी, घोड़ेके समान वेगवान, सौ स्त्रियों को भोग सकनेवाला और गरुड़ के जैसी तेज़ नज़र वाला होता है।

और भी लिखा है, जो विदारीकन्दको सेवन करता है, उसका लिंग खूब सख्त रहता है। उसे हर समय स्त्री भोगकी इच्छा बनी रहती है इत्यादि

१३८ रतिवल्लभ महारस।

इन्द्रजौका चूर्ण ३२ तोले, घी ६४ तोले, मिश्री ६४ तोले, गाय का दूध ६४ तोले और बकरी का दूध १२८ तोले—इन सब को क़लईदार कड़ाही में डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब खोआ सा हो जाय, उतार लो।

ऊपर के खोये को उतारते ही उसमें आमले, स्याह ज़ीरा, सफेद ज़ीरा, नागरमोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपात, केशर, कौंचके बीजों की गिरी, गँगेरन, ताड़वृक्ष की कोंपलें, सूखे कसेरू, सिंघाड़े, सोंठ, मिर्च, पीपर, धनिया, हरड़, दाख, काकोली, क्षीरकाकोली, खजूरकेफल, तालमखाना, छिली मुलहठी, कूट, लौंग, सेंधानोन, अजवायन, अजमोद, जीवन्ती और गजपीपल—इन सबके एक-एक तोले चूर्णों को मिला दो। साथ ही १ तोले बंग-भस्म और १ तोले अभ्रक-भस्म भी मिला दो। २ माशे कस्तूरी और १ माशे कपूर भी मिला दो और खूब चलाओ। जब सब एक-दिल हो जायँ, आठ तोले शहद भी मिला दो और दो-दो तोले के लड्डू बनालो। यही "रतिवल्लभ महारस" है। एक लड्डू खाकर, मिश्री-मिला दूध पीना चाहिये।

रोग नाश—इस चूर्ण के सेवन करने से बल-पराक्रम बहुत ही बढ़ता है; लिङ्ग ढीला नहीं होता और बूढ़ा भी जवान हो जाता है।

इसके सेवन करने से वायु-रोग, रक्त-पित्त, विष, गुल्म, ज्वर और मन्दाग्नि प्रभृति भी नाश हो जाते हैं।

नोट—दवा बनाने की तैयारी करने से पहले, सब दवाओंको कूटपीस और छान कर रख लेना चाहिये। साथ ही दूध घी वगैरः चीजों को भी पास रख लेना चाहिए, तब पाक बनाने की तैयारी करनी चाहिये।

१३९ श्री रतिवल्लभ पूगी पाक ।

दक्खनी चिकनी सुपारी आध सेर लाकर, कतर-कतर कर ज़ीरा बनालो। फिर इस सुपारी की कतरन को पानी में रात-भर भीगने दो। जब कतरन नरम हो जाय, सुखालो और पीस-कूटकर कपड़े में छान लो।

फिर बढ़िया गायके चार सेर दूध में, १६ तोले-भर घी डाल कर, सुपारीके चूर्ण को भी उस में डाल दो। जब खोआ सा होने पर आवे, उस में अढ़ाई सेर बढ़िया सफेद चीनी मिला दो और पकाओ। जब अच्छी तरह से पक जाय, नीचे उतार लो। और

नीचे लिखी हुई दवाओं के चूर्ण को भी इस में मिला दो—इलायची, गंगेरन, खिरेंटी, पीपल, जायफल, लौंग, जावित्री, तेजपात, तालीसपत्र, दालचीनी, सौंठ, ख़स, सुगन्धवाला, नागरमोथा, हरड़, बहेड़ा, आमला, वंशलोचन, शतावर, कौंचके बीजोंकी गिरी, दाख, तालमखाना, गोखरूके बीज, बड़ी खजूर, तवाखीर, धनिया, कसेरू, सूखे सिंघाड़े, मुलेठी, ज़ीरा, कलौंजी, अजवायन, कमलगट्टे की गिरी, बालछड़, सौंफ, मेथी, विदारीकन्द, काली मूसली, असगन्ध की जड़, कचूर, नागकेशर, गोलमिर्च, नयी चिरौंजी, सेमल के बीज, गजपीपर, कमलगट्टा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन और लौंग—इन ४९ दवाओं को अलग-अलग कूट-छान कर, इनका चार-चार तोले चूर्ण एक थाली में तोल-तोल कर मिला लो और उस आग से उतारे हुए खोये में मिला दो और एक-दिल कर दो।

साथ ही पारे की भस्म १ तोले, वंग-भस्म १ तोले, शीशा-भस्म १ तोले, लोह-भस्म १ तोले, अभ्रक-भस्म शतपुटी १ तोले, बढ़िया

कस्तूरी ४ माशे और भीमसेनी कपूर ३ माशे—इनको भी मिला दो और खूब एक-दिल करके, दो दो तोले के लड्डू बनालो ।

सेवन-विधि—पहले पाँच-सात दिन आधा-आधा लड्डू खाना चाहिये, अगर सह जाय तो पूरा खाना चाहिए । मीठे और स्वाद के लालच से या एक-दम भीमसेन होने के लिए बहुत ज़ियादा न खाना चाहिये । इस पाकको खाकर, मिश्री-मिला दूध पाव डेढ़ पाव पीना चाहिये । यह योग "भाव प्रकाश" का है । हमने जिस तरह परीक्षा की है, उसी तरह लिख दिया है । रोगी को देख कर, भस्में कम भी ली जा सकती हैं । इनके सेवन करने में अपनी अग्नि का विचार कर लेना ज़रूरी है; जितना पचे उतना ही खाया जाय । पहले का किया हुआ भोजन पच जाने पर, सवेरेही या शाम को, भोजनसे पहले, लड्डू खाना चाहिये । इन लड्डुओं के खानेवाले को खटाई से क़तई परहेज़ रखना ज़रूरी है ।

इस पाकको जाड़ेके चार महीने सेवन करने से वीर्यकी खूब वृद्धि होती और प्रसंगेच्छा बलवती हो जाती है । सदा खाने वाला घोड़ेके समान मैथुन कर सकता है । उसकी जठराग्नि तेज़ रहती और शरीर में झुर्रियाँ नहीं पड़तीं । बूढ़ा भी यदि इसे ४।६ महीने सेवन करे और आहार-विहार में पथ्य रखे, तो जवान हो सकता है ।

१४० कामेश्वर मोदक ।

इसी "पूगी पाक" में अगर खुरासानी अजवायन, शुद्ध धतूरे के बीज, बालछड़, समन्दर शोष, माजूफल और पोस्त के डोड़े,—ये सब एक-एक तोले पीस कर, मिला दिये जायँ और धुली हुई भाँग छे-सात तोले मिला दी जाय, तो "कामेश्वर मोदक" तैयार हो जाते हैं । ये लड्डू पूगी पाक से भी कुछ अधिक गुणकारी हैं । ख़ासकर, स्त्री-द्रावण की अधिक शक्ति पैदा करते हैं ।

नोट—हम अपने आजमाये हुए "कामेश्वर मोदक" उधर लिख आये हैं । वे सब किसी को पच जाते और फायदा भी करते हैं । ऊपर लिखा "स्त्रीरतिवल्लभ पूगी पाक" भी बड़ी ही नामी और प्रत्यक्ष फल दिखानेवाली चीज है ।

१४१ शतावरी घृत।

शतावर की जड़का गूदा	...	...		४ सेर
गायका घी	...	...	...	४ सेर
गायका दूध	...	...	...	१ मन

बनाने की विधि—शतावर की जड़ के गूदे को सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। कड़ाही में लुगदी, घी और कुछ दूध रखकर चूल्हे पर चढ़ा दो। मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब सारा मन-भर दूध जल जाय, घी-मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और साफ बर्तन में रख दो।

सेवन-विधि—इसमें से १ तोले घी, ६ माशे मिश्री, ४ माशे शहद और ३ रत्ती पीपर का चूर्ण मिलाकर चाटने से वीर्य बढ़ता, धातु पुष्ट होती और अम्ल-पित्त नाश होता है। इनके सिवा, अन्यान्य पित्त-विकार भी नाश होते हैं। परीक्षित है।

नोट—यदि पच जाय तो "घी" की मात्रा बढ़ा लेना; यदि न पचे तो घटा देना। शहद, मिश्री और पीपल का चूर्ण, रोग और रोगी के बल का विचार करके, अधिक भी दिये जाते हैं।

१४२ फल घृत।

मेदा	...	...	...	२ तोले
मंजीठ	...	...	...	२ "
मुलहटी	...	...	...	२ "
कूट	...	...	...	२ "
त्रिफला	...	...	...	२ "
खिरेंटी	...	...	...	२ "
सफेद बिलाईकन्द	...	...	...	२ "
काकोली	...	...	...	२ "
क्षीर काकोली	...	...	...	२ "
असगन्ध	...	...	...	२ "

अजवायन	२ तोले
हल्दी	२ „
हींग	२ „
कुटकी	२ „
नील कमल	२ „
दाख	२ „
सफेद चन्दन का बुरादा	२ „
लाल चन्दन का बुरादा	२ „
शतावर का रस	१६ सेर
बछड़ेवाली गायका दूध	१६ सेर
बछड़ेवाली गायका घी	४ सेर

बनाने की विधि—मेदा से लाल चन्दन तक की दवाओं को पीस-कूटकर छानलो और फिर इनको सिल पर, जलके साथ, पीसकर लुगदी बनालो।

कड़ाही में लुगदी रखकर, घी ४ सेर डालदो और ऊपर से शतावर का रस ४।५ सेर डालदो। मन्दी-मन्दी आग लगाओ। ज्यों-ज्यों शतावर का रस कम होता जाय और रस डालते जाओ। जब शतावर का रस ख़तम होजाय, दूध थोड़ा-थोड़ा डालते जाओ और पकाते रहो। जब दूध भी ख़तम होजाय, घीके साथ सेर आध सेर रस रह जाय, उतार लो और छानकर बोतलों में भर दो।

सेवन-विधि—इस घीके बलाबल-अनुसार खाने से बलवीर्य और ख़ून बढ़ता है; क्योंकि यह घी अत्यन्त वृष्य है। यह घी स्त्रियोंके योनि-रोगों और हिस्टीरिया या उन्माद पर भी रामवाण है। इसके सेवन करने से बांझ के पुत्र होता है। मात्रा ४ माशे से २ तोले तक है। परीक्षित है।

१४३ नपुंसक वल्लभ मांस।

शुद्ध पारा १० माशे और चाँदीके वर्क़ नग ११ लाकर, खरल

में डालकर, ऊपर से भाँगरे का रस दे-दे कर, ६ घण्टों तक खरल करो; फिर १ तीतर लाकर, एक दिन-भर उसे खानेको कुछ मत दो। दूसरे दिन, खरल की दवा में १ तोले गेहूँ का मैदा मिलाकर तीतर को खिला दो, इसके बाद तीतर को मार डालो। उसका मांस लेकर, उसमें सिरका और मसाला डालकर, घीमें मन्दी-मन्दी आग से पकालो। जब लाल हो जाय, एक बासन में रखदो। इसमें से, रोज़, थोड़ा मांस गेहूँ की रोटी के साथ खाओ। इस मांस के तीन दिन खाने से ही नामर्द मर्द हो जाता है। कोई शिकायत नहीं रहती।

नोट—जो लोग मांस खाते हैं और जीव मारने में बुराई नहीं समझते, वे ही इस नुसखे से काम लें।

१४४ नपुंसकत्व नाशक पाक।

बिनौलों की गिरी १ तोले, ख़रबूज़ेकी गिरी १ तोले, कद्दूकी गिरी १ तोले, चिरौंजी १ तोले, तिल १ तोले, ख़सख़स १ तोले, सेमल का मूसला १ तोले, सफेद मूसली १ तोले, शतावर १ तोले, असगन्ध १ तोले, सूखे सिंघाड़े १ तोले, केवड़े के बीज १ तोले और इमली के बीज १ तोले—इनको कूट-पीस कर छानलो।

प्याज़ के बीज ६ माशे, शलग़म के बीज ६ माशे, बहुफली ६ माशे और समन्दर-शोष ६ माशे, इन सबको पीस-छान कर रखलो।

खोलञ्जन ६ माशे, चुनिया गोंद ६ माशे, नागरमोथा ६ माशे, जत ६ माशे, कौंच के बीज ६ माशे, गोखरू ६ माशे, इन्द्रजौ ६ माशे, बबूल की फली ६ माशे, कमलगट्टेकी गिरी ६ माशे, बीजबन्द ६ माशे और भंगरस ६ माशे,—इन सबको भी कूट-पीसकर छानलो।

उटंगन के बीज ३ माशे, अकरकरा ३ माशे, सोंठ ३ माशे, पीपल ३ माशे और खुरासानी अजवायन ३ माशे लेकर पीस-कूट लो।

इस्बन्द गुजराती ३ माशे और तालमखाना ६ माशे,—इन दोनोंको भून कर रखलो।

बनाने की विधि—एक सेर मिश्री की चाशनी बनाओ। जब चाशनी पाक या कतलियों के लायक़ हो जाय, उसमें ऊपर की सब दवाओं के चूर्ण मिला दो और खूब चलादो। साथ ही घुली भाँग २ तोले, बादाम की गिरी १ तोले, पिस्ते कतरे हुए २ तोले, अखरोट कतरे हुए २ तोले, चिलगोज़े २ तोले और गोला कतरा हुआ २ तोले,—सबको डालकर, थालीमें घी चुपड़ कर, उसी पर कड़ाही का माल उड़ेल कर फैला दो। ऊपर से चाँदी के वर्क लगा दो। शीतल होने पर, कतली उतार कर एक साफ बर्तन में रखदो।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, एक-एक तोले खाकर, ऊपर से ५ छुहारों के साथ पका हुआ दूध मिश्री मिलाकर पीओ। इस पाक से दिल-दिमाग़, गुरदे और जिगर इत्यादि ठीक होकर, इतना बल-पुरुषार्थ बढ़ता है, कि लिख नहीं सकते। परीक्षित है।

१४५ श्री-मदभञ्जन अमृत रस।

पारा एक पाव लेकर खरल में डालकर १ दिन भर "काकमाची" के रसमें घोटो। एक दिनभर "सत्यानाशी" के रसमें घोटो। एक दिन-भर "शिवलिंगी" के रसमें घोटो। एक दिन "जलकी काई" के रसमें घोटो। एक दिन "कमल" के रसमें घोटो। एक दिन "तीनपतिया" के रसमें घोटो। एक दिन "सन" के रस में घोटो। एक दिन "फिटकरी" के साथ घोटो और एक दिन "सेंधे नोन" के साथ खरल करो। इसके बाद, गरम पानी से पारेको धोकर साफ करलो।

धोये हुए पारे का जल सुखा-पोंछकर, उसे खरल में डालो और शुद्ध आमलासार गन्धक पाँच तोले भी खरल में डालदो और ८।१० घंटे तक घोटो। जब कजली बन जाय, नीचेका काम करो:—

उसी कजली में "नीबूका रस" डाल-डाल कर पाँच दिन तक खरल करो। इसके बाद, "मदार का रस" डाल-डाल कर पाँच दिन खरल

करो। फिर "घीग्वार का रस" डाल-डाल कर पाँच दिन खरल करो। फिर "हल्दी के रस" में पाँच दिन खरल करो। शेपमें "मँहदी के रस" में पाँच दिन खरल करो—इस तरह २५ दिन खरल होने पर, उसे आतिशी शीशी में भर दो और सात कपड़-मिट्टी करके सुखालो।

इस शीशी को एक बड़ी हाँड़ीके बीचमें रखो और उसके चारों तरफ़, कड़ाही में गरम करके, बालू भरदो। बालू शीशी के मुँह के बराबर आवे, पर शीशी के भीतर न जावे। शीशी का मुँह खुला रहे। इसके बाद शिवजी का नाम लेकर, उस हाँड़ी को चूल्हे पर रखदो और नीचे आग जला दो। तीन दिन-रात यानी ७२ घण्टे अखण्ड आग लगाते रहो। आग तेज़ रहे; कभी मन्दी और कभी तेज़ न हो। बीच-बीच में, एक लोहे की पतली सींक, आगमें लाल कर-करके, शीशीके मुँहमें दे दिया करो; ताकि शीशी के गलेमें जो मसाला उड़कर आवेगा, उसके मैल से राह न रुके। जब देखो, कि नीली-नीली आग की लपट निकलना बन्द हो गया, जलती हुई लोहे की सींक देने से भी आगकी लौ नहीं उठती और ७२ घंटे आग लग गई; तब हाँडी को उतार लो। शीशी के शीतल होने पर, शीशीको फोड़ कर, उसमें लगे मालको खुरच लो। पर देखो, काँचके टुकड़े न मिल जायँ; क्योंकि काँच आँतों को काट देगा।

शीशी से निकले हुए मसाले को खरल में डालकर, "घीग्वार के रस" में ३ दिन खरल करो। फिर तीन दिन "मदार के दूध" में खरल करो। पीछे एक गोला सा बनाकर, एक मिट्टी की सराई में उसे रख कर, ऊपर से दूसरी सराई रखकर, कपड़-मिट्टी से दोनों सराईयों की सन्ध बन्द करदो; ज़रा भी साँस न रहे। इसके बाद, एक सराई नीचे रखकर, उसमें इन बन्द सराइयों को रक्खो और ऊपर से एक सराई रख कर "वज्रमुद्रा" लगादो। सूख जाने पर, एक गज़ गहरा और उतना ही लम्बा-चौड़ा खड्डा खोद कर, नीचे कण्डे जमाकर उनपर सराई रखदो और फिर ऊपर-नीचे अगल-बग़ल में कण्डे भर कर आग लगादो। जब आग शीतल हो जाय, सराई निकाल कर, उनके जोड़ खोल लो और भीतर का माल—

जो अमृत के समान है—निकाल कर, एक शुद्ध साफ शीशी में भरलो ।

सेवन-विधि—इस रस को एक रत्ती लेकर, पीपर के चूर्ण ६ रत्ती और शहद ३ माशे में मिलाकर, लगातार, २।३ महीने खानेसे इतना वल-वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ता है कि, पुरूष १०० स्त्रियोंका गर्व खर्व कर सकता है। इस रसके खाने वाले का वल नही घटता । भिन्न-भिन्न अनुपानों के साथ वदल-वदल कर देने से, प्राय: समस्त रोग इससे नाश हो जाते हैं ।

नोट—तीनपतिया पानीमें छाई रहती है । वज्र-मुद्रा—सराइयों की सन्ध वन्द करने के लिये आप मिट्टी, लोहचूर, रुई और राख—इन चारों को खूब कूटलें और इन्हीं को कपड़ों पर ल्हेस-ल्हेसकर, लिहसे कपड़ों से सन्ध वन्द करदें ।

१४६ शतावरी पाक ।

शतावरकी जड़	(क)...	१० तोले
चकवड़की जड़	... ...	१० तोले
खिरेंटी की जड़	... ...	१० तोले
खोआ	... ...	४५ तोले
घी	... ...	२० तोले
मिश्री	... ...	१०० तोले
लौंग	(ख)...	१ तोले
इलायची	... ...	१ तोले
जायफल	... ...	१ तोले
जावित्री	... ...	१ तोले
गोखरू	... ...	२ तोले
किशमिश	(ग)...	२० तोले
बादामकी मींगी	... ...	२० तोले

बनाने की विधि—(क) में लिखी शतावर, चकवड और खिरेंटी

की जड़ोंको पीस-कूटकर छान लो और पाव भर "घी" कड़ाहीमें चढ़ा, इस चूर्णको उसमें तल लो। दूधका खोआ भूनकर, इसीमें मिलादो। मिश्री की चाशनी बनाकर, चाशनीमें खोयेमें मिली दवाओं को मिला दो और ऊपर से लौंग आदिका चूर्ण भी इसमें मिलादो। शेषमें, साफ की हुई किशमिश और कतरे हुए बादाम मिलाकर, एक थाली में पाक को ढाल दो; पर पाक ढालने से पहले थालीमें घी चुपड़ दो, नहीं तो पाक चिपक जायगा। ऊपरसे चाँदीके वर्क लगा दो। शीतल होने पर, चाक़ूसे कतलियाँ काटलो और साफ बर्तनमें रख दो।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, इसमें से दो-दो तोले पाक खाकर, ऊपर से गायका धारोष्ण कच्चा दूध पीओ।

रोगनाश—इसके सेवन करने से शरीर खूब पुष्ट और बलवान होता तथा खून साफ होता है। जिनके शरीरमें खून और धातु दोनों दूषित हों, वे इस "शतावरी पाक" को ज़रूर सेवन करें। परीक्षित है।

१४७ पुरुष-वल्लभ चूर्ण।

सफेद मूसली, स्याह मूसली, गिलोयका सत्त, सोंठ, पीपर, मुलहटी, ईसबगोल, तालमखाना, मुरुली, बबूलका गोंद, रूमी मस्तगी, बीजबन्द, लौंग और जायफल—सब चार चार तोले लेकर, कूट-पीसकर छान लो। फिर केसर ४ तोले और धुली भाँग १० तोले भी पीसछानकर मिला दो। शेषमें, ७० तोले मिश्री पीस कर मिलादो और रखदो।

सेवन-विधि—इसमें से १ तोले चूर्ण, गायके अधौटे दूधमें मिलाकर, रातको, सोते समय, पी जाने से शरीर खूब पुष्ट और बलिष्ट हो जाता है। इस नुसखे से बदनके सारे हिस्सोंमें ताक़त आती और शरीर फौलाद-जैसा मज़बूत हो जाता है। बल-वीर्य बढ़ाने में यह नुसख़ा एक नम्बर है। परीक्षित है।

अपथ्य—लालमिर्च, खटाई, गुड़, तेल, दही और स्त्री से परहेज़ रखना ज़रूरी है।

१४८ कूष्माण्ड पाक।

(पेठा पाक)

पेठेका गूदा निकालो। फिर उसमें से अढ़ाई सेर गूदा पाँचसेर पानीमें डालकर, मिट्टीके बर्तनमें पकाओ; जब अढ़ाई सेर जल रह जाय, उतारकर निचोड़ लो और ज़रा-ज़रा धूपमें सुखा लो। फिर उसे सिल पर पीसकर पिट्ठी सी बना लो। बाद में, उसे आध सेर घी में भूनो। जलने न पावे, इसलिये चलाते रहो। जब सुर्ख़ी आजाय, उतार लो।

पीछे सोंठ दो तोले, पीपर दो तोले, सफेद ज़ीरा दो तोले, धनिया, ६ माशे, छोटी इलायची ६ माशे, गोलमिर्च ६ माशे, तेजपात ६ माशे और दालचीनी ६ माशे— इन सबको पीस-छानकर उसी पिट्ठीमें मिलादो।

फिर अढ़ाई सेर मिश्री लाकर चाशनी बनाओ। चाशनी चाटने योग्य गाढ़ी हो जाय, तब उसमें पेठेकी पिट्ठी मय मसाले के जो उसमें मिलाया है डाल कर चलाओ और दस मिनटमें उतार लो। जब पाक शीतल हो जाय, एक पाव बढ़िया शहद और २ माशे चाँदीके वर्क उसमें डाल कर मिलादो और एक बासनमें रख दो।

सेवन-विधि—इस पाकमें से चार तोले पाक, सवेरे ही, खाने से वीर्य के दोष दूर होकर नामर्दी चली जाती है। वीर्य-दोष नाश करने में यह पाक प्रथम श्रेणी का है। इस पाकसे धातु-क्षीणता, नामर्दी, रक्त-प्रदर आदि नाश होने में ज़रा भी शक नहीं। २० सालसे परीक्षा कर रहे हैं। परीक्षित है।

१४९ विजया पाक

तज, तेजपात, नागकेशर, असगन्ध, मूर्वा, स्याह मिर्च, कौंचके बीजों की गिरी, गदापूर्नाकी जड़, बरियाराकी जड़, ककईकी जड़ और कौआ-

टोंटीकी जड़—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पीस-कूट कर कपड़ेमें छानलो।

छोटी इलायची चार तोले, सौंफ चार तोले, वंसलोचन चार तोले, सोंठ १ तोले, पीपर १ तोले, लौंग १ तोले, जायफल १ तोले और जावित्री १ तोले—इन सबको पीस-कूटकर छान लो। फिर ऊपर का तज तेजपात आदिका चूर्ण भी इसी चूर्णमें मिला दो।

गायका दूध दस सेर लेकर औटाओ। जब आधा दूध रह जाय, उसमें धुली हुई सूखी भाँग का आधसेर चूर्ण डालदो और चलाते रहो; जब खोआ हो जाय, उतार लो। फिर आध सेर "घी" कड़ाहीमें चढ़ाकर, उसी में ऊपरके भाँगके खोयेको भून लो।

फिर पाँच सेर मिश्रीकी चाशनी बनाओ। जब चाशनी कुछ ढीलीसी रहे, उसमें भाँगका खोआ डालकर खूब मिलाओ। जब पाक जमने लायक़ चाशनी हो जाय, ऊपरका पिसा-छना चूर्ण भी मिला दो और पाँच मिनट चलाकर उतार लो। काँसीकी थालीमें घी चुपड़ कर, चाशनी फैला दो। ऊपरसे सोने-चाँदीके तवक लगा दो। जम जानेपर, बरफी की सी कतली उतारकर, चिकने पर साफ बासनमें या काँचके भाँड़में रख दो। अगर कतली न बना सको, लड्डू बना लो।

सेवन-विधि—पहले दिन १ तोले पाक खाकर, ऊपर से ५ छुहारोंके साथ औटाया और मिश्री-मिला गरम दूध पीलो। इस पाकको हमेशा सन्ध्या-समय खाओ। अगर आपको १ तोले पाक से ज़रा भी ज़ियादा नशा न हो और आप सह सकें, तो फिर दो तोले पाक खाओ। इच्छा हो, सवेरे भी खाओ; पर शामको खाना अच्छा है। जिन लोगोंको भाँग बादी या जोड़ोंमें दर्द करती है—अक्सर जाड़ेके दिनों में सर्द-मिज़ाज वालोंको भाँगसे पैरोंमें फूटनी हो जाती है—वे इस पाकको बनाकर भर-जाड़ेमें खावें। हमने स्वयं क्वेटा—बलूचिस्तानमें, बर्फके मौसममें, इसे सेवन करके बड़ा लाभ उठाया।

इसके सेवनसे वीर्यके दोष नाश हो जाते हैं, प्रमेह आराम हो

जाते हैं और आँखोंमें तेज आ जाता है । खाने के बाद खूब भूख लगती है । जो खाया जाता है, हज़म हो जाता है। खूब बल बढ़ता है।

नोट—केवल कफ-प्रकृति वालोंको और भाँगके अभ्यासियोंको यह पाक फायदा करता है ; गरम मिजाज वालोंको लाभदायक नहीं है।

१५० गोखरू पाक ।

गोखरू लाकर, पीस-कूट कर छान लो और रख दो । फिर अढ़ाई सेर गायके दूधमें उसे डालकर मन्दाग्निसे पकाओ । जब खोआ हो जाय, उतार लो ।

धुली भाँग अढ़ाई तोले, केशर ३ माशे, भीमसेनी कपूर १॥ माशे; कौंचके बीज़ोंकी गिरी ६ माशे, छोटी इलायची ६ माशे, अजवायन ६ माशे, नागकेशर ६ माशे, नागरमोथा ६ माशे, सूखे आमले ६ माशे, सेमल का गोंद ६ माशे, छोटी पीपर ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, तेजपात ६ माशे, जायफल ६ माशे, जावित्री ६ माशे, लौंग ६ माशे, गोल मिर्च ६ माशे और लोध्र ६ माशे—इन सब को पीस-कूट कर कपड़े में छान लो ।

फिर कड़ाहीमें एक सेर गायका घी डालकर, ऊपरसे गोखरूके साथ पका हुआ खोआ डालकर भूनो । जब कुछ सुर्ख़ी पर आवे, ऊपरका चूर्ण भी डाल दो और सबको भूनो । भुन जाने पर नीचे उतार लो ।

फिर पाँच सेर मिश्रीकी चाशनी बनाओ, उसी में ऊपरका दवा-मिला खोआ डालकर खूब चलाओ और उतार कर घी-लगी काँसीकी थालीमें जमा दो । ऊपरसे चाँदीके वर्क भी लगा दो और बरफी काटकर रख दो ।

सेवन-विधि—इसमें से तीन या चार तोले पाक खाकर, ऊपर से मिश्री-मिला गायका दूध पीओ । इसके ३ मास खाने से "प्रमेह" तो आराम हो ही जाता है ; साथही धातुके दोष, क्षय, क्षीणता और बवासीर आदि भी आराम हो जाते हैं। यह प्रसिद्ध पाक है। परीक्षित है ।

१५१ मूसली पाक।

पहले सफ़ेद मूसली तीन पाव लाकर पीस-कूट कर छान लो। बबूलका गोंद डेढ़पाव दरदराकर रख लो।

लौंग १॥ तोला, छोटी इलायची १॥ तोला, नागकेसर १॥ तोला, सोंठ १॥ तोला, पीपर १॥ तोला, मिर्च १॥ तोला, तेजपात १॥ तोला, जावित्री १॥ तोला और जायफल १॥ तोला,—इन सबको पीस-कूट कर कपड़-छन कर लो।

उत्तम वंगभस्म १॥ तोले, चाँदीके वर्क ६ माशे और सोने के वर्क ३ माशे—इनको भी रखलो।

मिश्री चार सेर और घी आध सेर भी तैयार रखो। इतनी सब तैयारी कर लेने पर, क़लईदार कड़ाहीमें डेढ़ पाव "घी" डालकर, मूसलीके पिसे छने चूर्णको भूनो। आग मन्दी रखो। चूर्ण जलने न पावे। जब वह सुर्ख़ हो जाय, उतार लो। फिर "घी" चढ़ाकर, गोंदको भून लो। जब गोंद फूलकर लाल हो जाय, उतार लो।

अब मिश्रीको कड़ाहीमें डालकर पानीके साथ पकाओ। जब चाशनी होने पर आवे, उसमें खोआ और गोंद डाल दो और चलाओ। जब चाशनीके पाकके लायक़ होनेमें १० मिनटकी देर रहे, दवाओंका मसाला और वंग भस्म तथा वर्क मिला दो और उतारकर, घी-लगी काँसीकी थाली में फैला दो। शीतल होनेपर, चाक़ू से बरफी काटकर, अमृतवान या घी की चिकनी हाँडीमें भर कर, मुँह बाँध कर रख दो।

सेवन-विधि—इस पाककी मात्रा २ तोलेकी है। बलवान इसे तीन तोले तक खा सकता है। पाक खाकर, मिश्री-मिला दूध पीओ। इसके सेवन करनेसे वीर्यकी कमीके कारण से हुई नामर्दी निश्चयही चली जायगी और ख़ूब वीर्य बढ़ेगा। इस से प्रमेह, धातुक्षीणता और नाताक़ती नाश होकर मैथुन-शक्ति ख़ूब बढ़ेगी। कामियोंको यह पाक हर जाड़ेमें खाना चाहिए। अगर कोई सवेरे "गोखरू-पाक" और शाम

को "मूसली-पाक" खावे, तो क्या कहना ? चार महीने खाने से ६०साल का बूढ़ा भी जवान की तरह मैथुन कर सकेगा । परीक्षित है ।

१५२ मृगनाभ्यादि बटी ।

बढ़िया कस्तूरी ३ माशे, अबीध मोती ६ माशे, सोने के वर्क १॥ माशे, चाँदीके वर्क ४॥ माशे, केशर ६ माशे, वंसलोचन १०॥ माशे, छोटी इलायचीके दाने ७॥ माशे, जायफल ६ माशे और जावित्री एक तोले,—इन सब में से मोतियोंको गुलाब-जलमें १२ घण्टे खरल करो। खरल होने पर, सोने-चाँदीके वर्क भी डाल दो और ३ घन्टे घोटो। फिर वंसलोचन आदि बाक़ी दवाओं को पीस-कूट कर, कपड़े में छान कर, उसी खरलमें डाल दो और "नागरपानका स्वरस" डाल-डालकर ३६ घण्टे तक घोटो। हर शामको ढक दो और फिर सवेरे घोटो। पानोंका रस देते रहो। जब ३६ घण्टे हो जाँय, रस मत दो ; गोला सा बनालो और मटर-समान गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो और शीशी में रख दो।

सेवन-विधि—रोगी की धातु कैसी ही कम हो गई हो या सूख गई हो, धातुकी क़मी से स्त्री-इच्छा न होती हो और वीर्य की कमी से जो नामर्द हो गया हो, इन गोलियोंसे अच्छा हो जायगा, इसमें सन्देह नहीं। अगर धातु सूख गई हो, तो "मलाई" के साथ एक या दो गोली रोज़ खाओ। अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

१५३ मुक्तादि बटिका।

अबीध मोती ६ माशे लेकर गुलाब-जलमें १२ घण्टे तक घोटो। शोधे हुए कुचले के १ दाने को कतर-कतर कर चाँवल से बना लो और साथ ही घोट लो। इसीमें १ माशे सोने के वर्क और ३ माशे चाँदी के वर्क भी घोट लो।

फिर केशर १ तोले, जावित्री ६ माशे, जायफल १ तोले, अकरकरा २ तोले, छोटी इलायचीके बीज २ तोले, भीमसेनी कपूर ३ माशे और कंकोल १ तोले—इन सबको पीस-छान लो। पीछे इसे भी मोती और कुचले के चूर्ण में मिलाकर घोटो, ऊपर से १ तोले शहद मिला दो। फिर गुलाब का बढ़िया अर्क डाल-डाल कर ३ दिन घोटो। शेषमें, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बनाकर छायामें सुखालो।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा आधी गोलीसे दो गोली तक है। सवेरे-शाम एक या दो गोली खाकर, दूध-मिश्री पीने से नामर्द भी मर्द हो जाता है। इसके सेवन से धातु कैसी ही कम हो गई हो, ताज़ा हो जाती है तथा खाने वाला खूब पुरुषार्थी हो जाता है। स्तम्भन-शक्ति बढ़ जाती है। कास, श्वास, लकवा प्रभृति रोग आराम हो जाते हैं। नपुंसकके लिए ये गोलियाँ अमृत हैं। हमने कलकत्ते में कोई ४०।५० अमीरोंको बना कर सेवन कराई। जिनकी इच्छा हो वे खा देखें, पर शीतकालमें खावें और कम-से-कम ३।४ महीने खावें।

१५४ च्यवनप्राश अवलेह।

अरणी, खँभारी, पाढ़ला, बेल, अरलू, गोखरू, छोटी पीपर, काकड़ासिंगी, दाख, गिलोय, हरड़ और खिरेंटी,—दो दो माशे लेकर जौकुट कर लो।

बाराहीकन्द, विदारीकन्द, मोथा, पोहकरमूल, वनउड़द, वनमूँग, असगन्ध, कमलफल, मुलहटी, इलायची, अगर और सफेद चन्दनका बुरादा,—इन सबको भी चार-चार तोले लेकर जौकुट कर लो।

पके हुए आमले पाँच सौ लाओ। ऊपरके चूर्ण और आमलोंको, बीस सेर जल डालकर, एक मिट्टीके बर्तनमें पकाओ। जब अढ़ाई सेर जल बाकी रहे, काढ़ेको मल कर छान लो और आमलों को अलग चुन लो।

आमलोंकी गुठली निकाल कर, सिल पर पीसकर लुगदी बनालो। फिर तीन पाव गायके घी में आमलोंकी लुगदी को भून लो।

उस छने हुए काढ़े में अढ़ाई सेर मिश्री डालकर चाशनी बनाओ। फिर उसमें, घी में भुनी आमलोंकी पिट्टी मिला दो और नीचे उतार लो। चाशनी ढीली रखना, जिससे जम न जाय। फिर शीतल होने पर, डेढ़ पाव "मधु" डालकर ऊपर से तेज़पात, छोटी इलायची और वन्सलोचन चार-चार माशे पीसकर मिला दो। बस, यही "च्यवनप्राश अवलेह" है। यह नुसखा प्रायः सभी ग्रन्थों में लिखा है। इसके सेवन से च्यवन ऋषि बूढ़े से जवान हुए थे। इसको सेवन करके बूढ़े से जवान होते तो आज-कल किसी को नहीं देखा, पर हाँ यह वीर्य-दोष मिटाने में बहुत ही उत्तम चीज़ है। क्षय, राजयक्ष्मा और रक्तपित्त में भी खूब लाभप्रद है।

१५५ खण्ड कूष्माण्ड अवलेह।

पीपर आठ तोले, सोंठ आठ तोले, सफेद ज़ीरा आठ तोले, धनियाँ दो तोले, तेजपात दो तोले, छोटी इलायची के बीज दो तोले, काली मिर्च दो तोले और दालचीनी दो तोले,—इन सबको कुट-पीसकर कपड़े में छान कर रखलो।

मिश्री पाँच सेर, घी १३ छटाँक और शहद साढ़े छै छटाँक,—इन को भी तैयार रखो।

बढिया, पुराना, मोटा पेठा लाकर छील लो। फिर उसमें से पेठेके बीज और बीजों की जगह को निकाल कर फैंक दो। फिर उसमें से ५ सेर गूदा अलग करलो। इस गूदे को मिट्टी की बड़ी हाँडी या क़लईदार कढ़ाही में रख, ऊपर से १० सेर जल डाल, पकाओ। जब आधा जल रह जाय, उतार कर ठण्डा करो। उसमें से पेठे के टुकड़े निकाल लो और उन्हें एक गज़ी के मोटे कपड़ेमें रख कर खूब निचोड़ो, ताकि पानी न रहे। हाँड़ीमें जो पका हुआ पानी रहे, उसे फैंक मत दो; [illegible]

पेठे के निचोड़े हुए टुकड़ों को धूपमें सुखाकर, १३ छटाँक घी में भूनो। जब भुनते-भुनते शहद-जैसे हो जाँय, तब उस पेठे के निचोड़े हुए पानीको आग पर चढ़ादो। उबाल आने पर, उसमें यह घी में भुना हुआ पेठा डालदो और ऊपर से मिश्री पाँच सेर पीसकर डाल दो और पकाओ। पर चाशनी अवलेह की सी रखना; जमने लायक़ न हो जाय। जब चाटने लायक़ चाशनी हो जाय, उसमें पीपर आदिका चूर्ण भी मिला दो और उतार लो। शीतल हो जाने पर, "शहद" मिला दो और अच्छे बर्तन में रख कर मुख बाँधदो।

सेवन-विधि—इसमें से दो या चार तोले अवलेह चाटने से खूब बलवृद्धि होती और शरीर पुष्ट होता है। यह वाजीकरण योग खूब मैथुन-शक्ति बढ़ाता है। इसके सेवन करने से रक्तपित्त, दाह, प्यास, प्रदर, कमज़ोरी, दुबलापन, खाँसी, श्वास, वमन, हृदय-रोग, स्वर-भेद और क्षत-क्षय नाश होकर आनन्द की वृद्धि होती है। क़ाबिल-तारीफ़ चीज़ है।

१५६ वृहत् कूष्माण्ड अवलेह।

बढ़िया, मोटा, पुराना पेठा लेकर छील लो और बीज तथा बीजोंके घर फेंक कर, छोटे-छोटे टुकड़े करके रखलो। इसमें से पाँच सेर टुकड़े तोल कर लेलो। फिर पाँच सेर गायका दूध क़लईदार कड़ाही में चढ़ाकर, उस में पेठेके टुकड़े डालदो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; पकते-पकते इसमें साढ़े चार सेर मिश्री मिला दो; घी तेरह छटाँक डाल दो, नारियलकी कतरी हुई गिरी १६ तोले, चिरौंजी ८ तोले और तबाखीर चार तोले भी डालदो। फिर धीरे-धीरे ऐसा पकाओ, कि चाटने-लायक़ हो जाय। जब पक जाय, आग से उतार लो। गरम रहते-रहते, नीचे लिखी चीज़ें कूट-पीस-छान कर इसमें और मिला दो:—

सौंफ १ तोले, बंसलोचन २ तोले, अजवायन २ तोले, पोस्त २

तोले, हरड़ २ तोले, कौंच के बीजों की गिरी २ तोले, दालचीनी २ तोले, धनिया ४ तोले, पीपर ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, असगन्ध ४ तोले; शतावर ४ तोले; काली मूसली ४ तोले, गङ्गेरन ४ तोले, सुगन्धवाला ४ तोले; तेजपात ४ तोले, कचूर ४ तोले, जायफल ४ तोले, लौंग ४ तोले; छोटी इलायची ४ तोले, सूखे सिंघाड़े ४ तोले, पित्तपापड़ा ४ तोले, चन्दन का बुरादा ५ तोले, सोंठ ५ तोले, आमले ५ तोले, कसेरू ५ तोले; खसके बीज ४ तोले, तालमखाने ८ तोले और काली मिर्च ८ तोले—इन सबको अलग-अलग पीस कर कपड़े में छानलो और जितना-जितना लिखा है उतना-उतना तैयारी चूर्ण सबका एक जगह करलो। जब ऊपर की चाशनी नीचे उतार लो, उसमें गरम रहते-रहते यह चूर्ण मिला दो। शीतल होने पर, साढ़े छै छटाँक "शहद" मिलाकर, एक साफ बर्तन में मुँह बाँध कर रख दो। यही "वृहत् कूष्माण्ड अवलेह" है।

रोग नाश—इस अवलेह की जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। इसके सेवन करनेसे रक्तपित्त, शीत पित्त, अम्ल-पित्त, अरुचि, मन्दाग्नि, दाह, प्यास, प्रदररोग, खूनी बवासीर, वमन, पाण्डु रोग, कामला, उपदंश, विसर्प, जीर्ण ज्वर और विषम ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

यह अवलेह मैथुन-शक्ति बढ़ाने में अव्वल दर्जे की चीज़ है। इससे धातु की पुष्टि होकर खूब बल-पुरुषार्थ बढ़ता है।

नोट—इसको काँच या मिट्टी के नवीन बर्तन में रखना चाहिये। हमने कोई १०-२० रोगियों को सेवन कराया, कभी शिकायत नहीं सुनी। परीक्षित है। "कूष्माण्डावलेह" से यह बलवान है।

सेवन-विधि—अपने बलानुसार, दो से चार तोलेतक, चाटना चाहिये।

१५७ आम्रपाक।

इस पाक को, आमोंके मौसम में, अवश्य बनाना चाहिये। इसके सेवन से मनुष्य में घोड़े के समान मैथुन करने की शक्ति हो जाती है। जो

इसे हर तरह खाते हैं, वे सदा बलवान, पुष्ट और रोग-रहित रहते हैं। वीर्य की कमी से जो नपुंसक हो गये हैं; उनके लिये "आम्रपाक" दूसरा अमृत है।

नोट—इसके बनाने की विधि हमारी लिखी "स्वास्थ्य-रक्षा" में देखिये।

१५८ लवंगादि चूर्ण।

लौंग, शुद्ध कपूर, छोटी इलायची, दालचीनी, नागकेशर, जायफल, ख़स, सोंठ, कालाज़ीरा, काली अगर, वंसलोचन, जटामासी, नील कमल के फल की गिरी, छोटी पीपर, सफेद चन्दन का बुरादा, सुगन्धवाला और कंकोल,—इन सबको छै-छै माशे बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीसकर कपड़-छन करलो; फिर सब चूर्ण से आधी—साढ़े आठ तोले "मिश्री" भी पीस-छानकर इसमें मिलादो। यही "लवङ्गादि चूर्ण" है। यह राजाओं के योग्य है।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है। शहदमें मिलाकर चाटो और ऊपर से दूध १ पाव पीओ।

रोग नाश—यह चूर्ण राजरोग या राजयक्ष्मा पर तो प्रधान है ही; पर इसके सेवन करने से तमक श्वास, क्षय, छातीका दर्द, दिलकी घब-राहट, गलेकेरोग, खाँसी, हिचकी, ज़ुकाम, कफक्षयी, अतिसार, उरःक्षत यानी कफके साथ खून या मवाद आना, प्रमेह और अरुचि आदि रोग आराम होते हैं। इन रोगों के नाश करने के सिवा, यह चूर्ण भूख बढ़ाता, शरीर को पुष्ट करता, त्रिदोष नाश करता और बलको बढ़ाता है। यह चूर्ण दीपन, पाचन और वृष्य है। सभी गृहस्थों और वैद्योंको बनाकर रखना चाहिये। आजमूदा है। तासीर में तर-गरम है।

नोट—इसको "प्रतमक श्वास" वाले को न देना चाहिये; क्योंकि प्रतमक श्वास गरमी से होता है। इस श्वास में कण्ठ की नली चौड़ी हो जाती है, अतः श्वासकी धौंकनी सी लग जाती है। पर "तमक श्वास" में, जो सरदी से होता है, श्वास की नली छकड़ जाती है, अतः श्वास रुक-रुक कर आता है। गरमी-सरदीके श्वासों की

यह पहचान अच्छी है। गरमी के श्वास की दवा 'सर्द-तर' और सरदी के श्वास की 'गरम-तर' है। बहुधा श्वास सरदी से होता है और बूढ़ों को तो विशेषकर सर्दी से ही होता है। जो बूढ़ा और कमजोर हो, जिसे प्रमेह हो, जिसे सरदी का श्वास हो, कफ-क्षय और खाँसी हो,—उसे यही चूर्ण अच्छा है।

१५६ शतावरी पाक।

शतावर का चूर्ण आध सेर लेकर, दो सेर दूध में डाल, खोआ बनाओ और अलग रख दो।

फिर जावित्री ६ माशे, लौंग ६ माशे, गोलमिर्च ६ माशे, नागरमोथा ६ माशे, सेमल का गोंद ६ माशे, आमले ६ माशे, छोटी पीपर ६ माशे, केशर ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, तेजपात ६ माशे, इलायची ६ माशे, नागकेशर ६ माशे, अजवायन ६ माशे और भीमसेनी कपूर १॥ माशे, इन सबको पीसकर कपड़े में छान लो।

गाय के सेर भर "घी" में ऊपर का शतावर का खोआ और इस चूर्ण को डालकर भूनो। जब लाल हो जाय, उतार कर रख दो।

अढ़ाई सेर मिश्री की चाशनी बनाकर, उसमें ऊपर के भुने हुए खोये और चूर्ण को डालकर मिला लो और लड्डू बनालो। ऊपर से चाँदी के वर्क लपेट दो।

इसमें से तीन चार तोले पाक नित्य खाने से वीर्य की कमी से हुई नामर्दी और "पित्तज प्रमेह" निश्चय ही नाश हो जाते हैं। परीक्षित हैं।

१६० असगन्ध पाक।

नागौरी असगन्ध एक सेर, सोंठ बेतरा आध सेर, पीपर पाव भर और गोलमिर्च आधपाव—इन सबको पीसकर कपड़े में छानलो।

फिर १६ सेर दूधको औटाओ; आधा रहने पर, ऊपरके चूर्णको डालकर चलाओ। जब खोआ हो जाय, कढ़ाईमें दो सेर घी डालकर गरम करो। घी आने पर, उस में खोआ डालकर भूनो और लाल होने पर उतार लो।

तज, तेजपात, नागकेशर, इलायची, लौंग, पीपलामूल, जायफल, तगर, नेत्रवाला, बुरादा सफेद चन्दन, नागरमोथा, आमले, वन्सलोचन, खैरसार, चीते की छाल और शतावर—सबको एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर छान लो।

अब चार सेर सफेद बूरे या मिश्री की चाशनी बनाओ। उसमें भुने हुए खोये को डाल कर मिलाओ। जब चाशनी लड्डू बँधने-योग्य हो जाय, उसमें तज तेजपात वगैरः का पिसा-छना चूर्ण मिला दो और चाशनी उतार लो। शीतल होने पर, आधी-आधी छटाँक के लड्डू बनालो।

सेवनविधि—एक लड्डू रोज़ सवेरे ही, जाड़े के मौसम में, खाकर, दूध-मिश्री मिला कर पीओ। अगर दूध न मिले, तो लड्डू ही खाओ।

रोग नाश—यह पाक गरम है। अतः इसे जाड़े में खाओ और वह भी सवेरे के समय। चूंकि यह गरम है, अतः आपकी प्रकृति सर्दी या बादी की हो तो खाओ। अगर आपका मिज़ाज गरम है, गरम चीज़ें आप को हानि करती हैं, तो मत खाओ। अगर बुढ़ापा है, कफ-वायु का ज़ोर है, कमर और जोड़ों में दर्द तथा श्वास और खाँसी रहता है, तो आप खायँ। अगर आपकी प्रकृति गरम नहीं है—तो आपके सब रोग नाश करके, यह पाक आपको जवान पट्ठा बना देगा, बशर्ते कि आप हर जाड़े में खायँ और चार महीने खाँय।

नोट—खूब ध्यान रखो। यह पाक गरम है। अगर आपका मिजाज गरम हो—आपको गरम चीजें हानि और सर्द चीजें फायदा करती हों, तो आप इसे न खायँ। इसमें शक नहीं कि बूढ़ों को यह अमृत है। परीक्षित है।

१६१ आमला पाक।

आध सेर सूखे आमले लाकर पीस-कूट कर छान लो। फिर इस चूर्ण को पाँव सेर दूध में भिगो दो और कलईदार कड़ाही में चढ़ाकर

खोआ बनालो । इसके बाद चार सेर मिश्री की चाशनी बनाकर, उसमें इस खोये को डाल दो । फिर इसमें सोंठ, पीपर और सफ़ेद ज़ीरा चार-चार तोले और धनिया दो तोले, इलायची दो तोले, तेजपात दो तोले, गोल मिर्च दो तोले और दालचीनी दो तोले—इनको भी पीस-कूट कपड़-छन कर मिला दो और नीचे उतार लो । पीछे; इस में २५ चाँदी के वर्क़ भी मिलादो । ध्यान रखकर, इसकी चाशनी ढीली रखना ।

सेवन-विधि—इसमें से आधी छटाँक पाक गरमी में खाओ ; क्योंकि यह शीतल है

रोगनाश—यह पाक पित्त प्रमेह, रक्तपित्त और दिल की गरमी को नाश करके धातु को बढ़ाता, भूख लगाता और भोजन पचाता है। पित्त-प्रकृतिवालों को यदि पित्त-प्रमेह हो; तो फागुन-चैत और जेठ-वैशाख में इसके खाने से लाभ होता है । बहुत से आदमी पाक के नाम से ही इसे गरमी में खाना हानिकर समझते हैं, यह उनकी भूल है; क्योंकि यह शीतल है । इसकी तासीर गरम नहीं, जो गरमी में हानि करे ।

१६२ एलादि बटो ।

छोटी इलायची दो तोले, तेजपात दो तोले, दालचीनी दो तोले, मुनक्का दो तोले, छोटी पीपर दो तोले, मिश्री चार तोले, मुलहटी चार तोले, खजूर चार तोले, जायफल चार तोले और किशमिश चार तोले—इन सब को पीस-कूट और छानकर तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना लो । यही "एलादि बटो" है ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, अपने-बलानुसार, एक या दो गोली खाकर, ऊपर से गाय या बकरी का धारोष्ण दूध पीने से कामोद्दीपन होता है । जिनकी मैथुनेच्छा घट गई हो, उनको यह परमोत्तम है । इसके सिवा, इन गोलियों से क्षत (उरः क्षत—छाती में घाव होने से कफके साथ खून या मवाद आना), क्षय, ज्वर, खाँसी, श्वास, हिचकी, भ्रम,

मूर्च्छा, मद, तृषा-प्यास, शोष, पसली का दर्द, अरुचि, तिल्ली, आमवात रक्तपित्त और ज्वर,—ये रोग भी नाश हो जाते हैं। उरःक्षत और नामर्दी पर परीक्षित हैं।

१६३ बालाई का हलवा।

आधा पाव ताज़ा मलाई लाकर, कड़ाही में, आग पर चढ़ा दो। ऊपर से पाव भर पिसी मिश्री मिला दो और कौंचेसे खूब चलाओ। दूसरी ओर, आध पाव "घी" कटोरी में चूल्हे के अङ्गारों में पहले से रख दो। जब मिश्री-मलाई एक-दिल हो जायँ, यह घी डाल दो और चलाओ। ज्योंही पकने पर आवे, पहले से कतरे हुए बादाम, पिस्ते, चिलगोज़े और चार चाँदी के वर्क़ भी मिला दो और उतार कर खाओ।

सेवन-विधि—अपने बलानुसार छटाँक या आधपाव हलवा खाओ।

रोग नाश—यह हलवा खूब वीर्य बढ़ाता है। जिन का वीर्य सूख गया है या कम पड़ गया है, वे इसे खावें। बड़ाही लाभप्रद है। हमने बहुत खाया और खिलाया है। परीक्षित है।

१६४ बादाम का हलवा।

बादाम फोड़ कर भिगो दो; नर्म पड़ने पर, छिलके उतार कर सिल पर महीन पीस लो। आधपाव बादाम की पिट्ठी को १ पाव मिश्री की चाशनी में डालकर पकाओ। जब मिश्री और पिट्ठी मिल जायँ, एक छटाँक गरम घी डालकर चलाओ। पीछे रत्ती दो रत्ती इलायची पीस कर मिला दो और उतार लो। अगर चाँदी के वर्क़ भी दो चार डाल दो, तो उत्तम हो।

सेवन-विधि—जाड़े में, अपने बलानुसार खाना चाहिये। इस के सेवन से खूब बलवीर्य बढ़ता है। जिन का वीर्य कम हो गया है, वे इसे अवश्य खावें। हमने अनेक बार खाकर परीक्षा की है। परीक्षित है।

१६५ धातुवर्द्धक सुधा ।

असगन्ध आधपाव, शतावर पाव भर, सफेद मूसली डेढ़ पाव, तालमखाना आध सेर, मखाने अढ़ाई पाव, सेमर का मूसला तीन पाव और चीनी एक सेर— सब दवाओं को कूट-पीस-छान कर, चीनी मिला दो और हाँडी में मुँह बाँध कर रख दो। सवेरे-शाम, गेहूँ के आध सेर आटे की रोटी बनाकर उसे चूरलो। उस चूरमे में आधपाव चीनी और हाँडी में की तीन तोले दवा भी मिला दो। इस चूरमे को, गायको, ऐसे ही या जौकी भूसी और अलसी की खलकी सानी में मिलाकर ४० दिन खिलाओ। दस दिन बाद, उस गायका धारोष्ण दूध मिश्री मिलाकर सवेरे-शाम पीओ। अगर ऐसा दूध ४० दिन पीलिया, तो फिर वह बल-पुरुषार्थ बढ़ेगा, जिसकी हद नहीं। मज़ा यह, कि फिर जल्दी-जल्दी धातुवर्द्धक दवा न खानी होंगी। हमने हाल में ही, एक धनी मारवाड़ी को कलकत्ते में सेवन कराया; हड्डियों का कंकाल हृष्टपुष्ट हो गया; महा कुरूप चेहरा गुलाबका फूल बन गया। कलकत्ते में तो ऐसा दूध पीना धनियों का ही काम है; पर अन्य शहरों में, मध्यस्थितिके लोग भी, जिनके घरों में गायें हों, इसे आज़मा सकते हैं।

इस के सेवन से क्षय, क्षीणता, प्रमेह, दिल-दिमाग की कमज़ोरी और सिरके रोग आराम होते हैं। जिनको वीर्य की कमी से नामर्दी या क्षयी रोग होता है, उनको तो अमृत ही है। परीक्षित है।

१६६ अमृतभल्लातक पाक ।

शुद्ध भिलावे दो सेर लेकर, आठ सेर जल में पकाओ; जब दो सेर जल रह जाय, उतार कर मल-छान लो और पानी निकाल कर फेंक दो।

ऊपर के दो सेर भिलावों के काढ़ेमें, चार सेर गायका दूध मिलाकर कड़ाही में खोआ बनालो। खोआ होने पर उतार लो। फिर आध सेर घी कड़ाही में डाल कर, इस खोये को भून लो।

फिर चार सेर मिश्री की चाशनी बनाकर, उसमें ऊपर का भुना हुआ खोआ और नीचे की दवाओं का चूर्ण मिला कर उतार लो और छे-छे माशे की गोलियाँ बनालो:—

पाक में डालने की दवाएँ—

सौंठ २ तोले, मिर्च २ तोले, पीपर ४ तोले, त्रिफला ४ तोले, तज ३ तोले, तेजपात २ तोले, छोटी इलायची ६ तोले, रूसे के पत्ते चार तोले, खैर ८ तोले, गिलोयका सत्त १० तोले, सफेदचन्दन ३ तोले, लौंग ३ तोले, सफेद मूसली ४ तोले, स्याह मूसली ४ तोले, कंकोल ४ तोले, मूर्वा २ तोले, अजवायन १ तोले, अजमोद १ तोले, ख़स ३ तोले, कसेरू ४ तोले, गजपीपर २ तोले, बिलाईकन्द ६ तोले, जायफल ३ तोले, जावित्री २॥ तोले, अगर ३ तोले, समन्दर शोष ४ तोले, मुलेठी ४ तोले और केसर २ तोले,—इन सब को पीस-छान कर, ऊपर की चाशनी में डाल दो। अगर असली "पारा भस्म" भी १ तोले मिला दो, तो क्या कहना? इसका मुँह बन्द करके, सात रात ओसमें और सात दिन ठण्ढी जगह में रख दो; बाद सात दिन के खाओ।

सेवन-विधि—बनाने के ७ दिन बाद, इस में से पहले एक-एक, फिर दो या अधिक गोली रोज़ सवेरे-शाम खाओ।

रोग नाश—इसके सेवन करनेसे कोढ़ आदि सारे रोग नाश होते हैं। आँखों की ज्योति और बल बढ़ता है, तथा हिलते हुए दाँत जम जाते हैं। कान और अँगुलियाँ—खराब हो गये हों, तो ठीक हो जाते हैं। यह पाक निहायत उत्तम है। हमने अभी कोई ६ मास हुए, इसे दो तीनों को दिया था। दो का हाल मालूम नहीं; पर एक के हिलते हुए दाँत जम गये, शरीर खूब तैयार हुआ, रंग खिल उठा; पर अब उसकी वैसी ही हालत होगई है। उसने ४२ दिन सेवन किया था। शायद अधिक दिन सेवन करने से और भी ज़ियादा-दिन-स्थायी लाभ करता। बूढ़ों के लिये यह पाक "असगन्ध पाक" की तरह उत्तम है; क्योंकि दाँतों को जमाता, बल बढ़ाता और नेत्र-ज्योति को ठीक करता है; और बूढ़ों को इन तीनों ही

की ज़रूरत होती है। हमने जिसे दिया वह कोई ४० सालका है। शास्त्रमें यह "कोढ़ पर प्रधान" लिखा है।

सावधानी—भिलावों के पकाने में धूएँ से वचना चाहिये। धूआँ लगनेसे शरीर सूज जाता है। अतः इसके वनाने वाला भरसक भिलावों की धूआँ से दूर रह कर काम करे। सारे शरीर में तिली का तेल मलकर भिलावे पकावे तो हानि न हो।

१६७ अफीम पाक।

छोटी इलायची के बीज एक तोले, अकरकरा एक तोले, वंसलोचन दो तोले, छोटी पीपर दो माशे, वहमन सुर्ख़ छै माशे, भीमसेनी कपूर २ माशे, जावित्री दो माशे, जायफल ३ माशे, कस्तूरी एक माशे, अबीध मोती ३ माशे, सोने के वर्क़ नग ७ और चाँदीके वर्क़ नग ३१ लाकर रखो।

मोती, कस्तूरी, कपूर और वर्क़ों को अलग रखो। इनको छोड़कर, इलायची आदि को महीन पीसकर, कपड़े में छान लो। उधर मोतियों को अर्क़ गुलाब में १२ घण्टे खरल करो। पीछे इसी में कस्तूरी, कपूर और वर्क़ डालकर २ घण्टे घोटो। शेष में, इसी में इलायची आदि के पिसे-छने चूर्ण को भी मिला दो।

अब शुद्ध अफ़ीम को एक क़लईदार कटोरी में रखकर, ऊपर से अन्दाज़ का पानी डालकर, खूब मन्दी आग पर पकाओ। जब उसकी लेई सी गाढ़ी और पतली चाशनी हो जाय, नीचे उतार लो और गरम रहते-रहते, ऊपर का मोती आदि दवाओं का चूर्ण इसमें मिला दो और खूब एक-दिल करलो। फिर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो।

सेवन-विधि—जिसको जितनी अफ़ीम का अभ्यास हो, उसी हिसाब से एक, दो या अधिक गोली खाकर, ऊपर से मिश्री-मिला दूध

पीवे। जिसको अफीम का अभ्यास न हो, पर जुकाम या खाँसी पीछा न छोड़ते हों, तो सन्ध्या-समय १ गोली खाकर गरम दूध पीवे। फौरन ही खाँसी जुकाम में फायदा होगा। रातको स्त्री-प्रसंग में आनन्द आवेगा। प्रमेह में लाभ होगा। इसके सेवन से शरीर का दर्द, लकवा, कानों की सनसनाहट, दिल की कमज़ोरी, मसूड़ों की सूजन प्रभृति रोग आराम होते हैं। परीक्षित है। पर यह पाक वात या कफ-प्रकृति वालों को ही लाभदायक है। एक बार हमें नजले की खाँसी हो गई, अनेक उपाय किये, तङ्ग आ गये, पर लाभ नहीं हुआ। हरदम जुकाम बना रहता, किसी तरह मिटता ही नहीं। इस पाक को बना कर खाने से हमें खूब लाभ हुआ। रोग नाश होकर, शरीर पुष्ट हो गया। पर इसका बढ़ना ख़राब है और यह बढ़ती है खूब जल्दी; अतः तोलकर गोलियाँ बनानी चाहियें। एक बाजरे के दाने-बराबर कम रहने से नशा नहीं आता, हाथ पैर टूटते हैं, उबासियों-पर-उबासियाँ आती हैं। इसलिये इसे कम-ज़ियादा करके न खाना चाहिये; सदा एक समान मात्रा लेनी चाहिये। यह दस्त कब्ज़ करती है; पर ऊपर से दूध पीलेने से कब्ज़ कम करती है। इसकी कम मात्रा लाभदायक है और अधिक सर्व्वनाश करने वाली है। भूल कर भी इसे बढ़ाना भला नहीं। ऊपर का नुसख़ा बहुत ही उत्तम है।

नोट—जो मोती और कस्तूरी न मिला सकें, शेष चीजें मिलाकर ही खायँ। जिनकी पित्त की प्रकृति हो, मिज़ाज गरम हो और साथही मौसम भी गरम हो, वे "कस्तूरी" न डालें; बदले में खूब छना हुआ काजल सा "सफेद चन्दनका बुरादा" २ तोले मिला दें। अगर इतनेपर भी गरमी मालूम हो; तो पीपर, जायफल, जावित्री आदि भी नुसखे से निकाल दें। केवल बंसलोचन, इलायची, सफेद चन्दन, कपूर और चाँदी के वर्क मिलावें। ऊपर का नुसखा अमीरों के लायक है। नशे के साथही ताकत देता है। जो इतना भी खर्च न कर सकें, वे केवल बंसलोचन, इलायची और कपूर मिलाकर ही गोली बना लें।

अफीम शोधने की तरकीब—अफीम को पानी में घोलकर, कपड़े की दो तहों या ब्लाटिंग पेपरों में छान लेने से पानी निकल जाता है और मिट्टी ऊपर रह जाती

है। पानी में ही अफीम चली जाती है। आग पर औटाने से, पानी फिर अफीम के रूप में बदल जाता है। आज-कल बिना शोधे अफीम न खानी चाहिये। १ तोले अफीम में ६ माशे मिट्टी रहती है, जो कलेजे पर जमकर नाड़ियों को रोकती और अनेक रोग करती है।

१६८ एरण्ड पाक।

छिले हुए अरण्डी के बीज आध सेर, दूध चार सेर, मिश्री दो सेर और घी पाव भर तैयार रक्खो। इनके सिवाय सोंठ, पीपर, लौंग, इलायची, दालचीनी, सोंठ, हरड़, जावित्री, जायफल, तेजपात, नागकेशर, असगन्ध, रास्ना, खड़गन्धा और पित्तपापड़ा—इन सब को एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर छान लो। साथही लोह-भस्म ६ माशे और अदरख का स्वरस ६ माशे,—इन दोनों को भी तैय्यार रक्खो।

बनाने की तरकीब—पहले दूध को कड़ाही में डालकर औटाओ। जब आधा दूध जल जाय, उसमें अरण्डी की मींगियों को जल के साथ सिलपर पीस लो और उस पकते दूध में डाल दो। जब खोआ हो जाय, उतार लो। फिर कड़ाही में "घी" डालकर पकाओ। घी आने पर, उसमें ऊपर के तैयार खोये को भूँज लो। फिर कड़ाही चढ़ाकर, मिश्री और पानी डालकर, चाशनी बनाओ। जब चाशनी होने पर आवे, उसमें खोआ मिला दो और उतार लो। गरम-गरम में ही ऊपर का चूर्ण, लोह-भस्म और अदरख का रस मिला दो और ऊपर से बादाम की कतरी हुई गिरी आध पाव, मुनक्का आध पाव और किशमिश आध पाव मिला दो और आधी-आधी छटाँक के लड्डू बना लो।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, एक-एक लड्डू खाकर, ऊपर से बकरी का एक पाव गरम दूध चीनी मिलाकर पीने से, समस्त वायु-रोग, पित्तरोग, उदर-रोग, प्रमेह-रोग, पाण्डु रोग, क्षय रोग, श्वास रोग, और नेत्र-रोग आदि आराम होते हैं। सबसे बड़ी खूबी यह है कि, दस्त साफ

होता है। हमने इसकी गठिया, लकवा, शरीर के दर्द, कब्ज़ और अन्त्र-वृद्धि में कई बार परीक्षा की है। परीक्षित है।

१६६ लक्ष्मी विलास रस।

शुद्ध पारा एक तोले और शुद्ध गंधक २ तोले—दोनों को बारह घण्टे घोटकर कजली बना लो। फिर इसी में काले अभ्रक की निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म चार तोले और भीमसेनी कपूर एक तोले भी मिला दो और ३ घण्टे घोटो।

जायफल, जावित्री, विधायरे के बीज, धतूरे के बीज भाँग के बीज, विदारीकन्द, शतावर, गुलसकरी, गंगेरन, गोखरू और समन्दर फल, —इन सबको बराबर-बराबर दो-दो तोले लेकर, महीन पीस-कूटकर, कपड़े में छान लो।

अब पारे आदि के और जायफल आदि के चूर्ण को खरल में डालकर, ऊपर से पानों का रस दे-देकर बारह घण्टे तक खरल करो। जब मसाला गाढ़ा हो जाय, तीन-तीन रत्ती की गोलियाँ बना लो और छायामें सुखा लो।

सेवन-विधि—अपने बलाबल-अनुसार एक या आधी गोली खाकर दूध-मिश्री पीओ।

रोगनाश—इन गोलियों से सन्निपात के घोर रोग, वायुरोग, १८ कोढ़, २० प्रकारके प्रमेह, नासूर, गुदा के घोर रोग, भगन्दर, कफ और बादीके रोग, हाथी-पाँव, गले की सूजन, आँतों का बढ़ना, अतिसार, खाँसी, पीनस, क्षयी, बवासीर, मुटापा, देह में बदबू आना, आमवात, जिह्वास्तम्भ, गलग्रह, अर्दित रोग, गलगण्ड, उदर-रोग, वातरक्त; कान, नाक और नेत्रों के रोग; मुखकी विरसता, शरीरका दर्द, सिरका दर्द और स्त्रियों के रोग,—नाश होते हैं। इनके सेवन से वृद्धा भी तरुण और कामदेव के समान हो जाता है, उसका वीर्य कभी क्षय नहीं होता

और बाल सफ़ेद नहीं होते। वह मस्त हाथी की तरह, १०० स्त्रियों से भोग कर सकता है। एक खूबी यह है, कि इसमें आहार-विहारकी क़ैद नहीं। अगर कोई इसे नियमानुसार खाय और मांस, मिष्टान्न, दूध, दही, जल, माठे से बने पदार्थ और मद्य सेवन करे; तोभी ऊपरके फल मिल सकते हैं। शास्त्र में लिखा है:—

प्रोक्तः प्रयोगराजोऽयं नारदेन महात्मना।
नाम्ना लक्ष्मीविलासस्तु जगन्नाथे जगद्गुरौ।
अस्य संसेवनात्कृष्णो लक्ष नारीषु वल्लभः॥

यह प्रयोगराज महात्मा नारद ने श्री कृष्ण भगवान् से कहा था। इसी के प्रभाव से श्री कृष्ण लाख स्त्रियों के प्यारे हुए थे।

१७० नोश दारू।

एक सेर सूखे आमले लेकर, चार सेर गाय के दूध में डालकर भिगो दो। २४ घण्टे बाद, उस दूध को निकाल दो। फिर चार सेर दूध ऊपर से डाल दो। दूसरे दिन उस दूध को भी निकाल दो। तीसरी बार फिर चार सेर दूध डाल दो और अगले दिन उस दूध को भी निकाल दो। ख़ाली आँवले निकालकर सिलपर पीस लो और चार सेर दूध डाल कर आमलों की लुगदी को दूध में घोल लो। इसके बाद रेज़ी के कपड़े में होकर रस छान लो।

फिर मिट्टी की कोरी हाँड़ी में उस रसको डालकर पकाओ। जब गाढ़ा हो जाय, रससे चौगुनी मिश्री पीसकर मिला दो; और साथही नीचे लिखी दवाओं का पिसा-छना चूर्ण भी डाल दो और झट आगसे उतार कर दो-दो तोले के लड्डू बनाकर रखलो। यही "नोशदारू" है।

चाशनी में मिलाने की दवायें :—

दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, लौंग, जायफल, जावित्री, जटामासी, धनिया, तज, तगर, सफेदज़ीरा, स्याह ज़ीरा, कमलगट्टे

की गिरी, मुलहटी, शीतलचीनी, केशर और नागरमोथा,—ये सब दो-दो तोले लेकर पीस-छान लो। फिर इसमें वंग-भस्म एक तोले, अभ्रक-भस्म एक तोले, कस्तूरी एक माशे और अम्बर २ माशे भी मिला दो—सब चूर्ण को ऊपर को चाशनी में मिला, फौरन नीचे उतार लो।

रोगनाश—यह नोशदारू बल-वीर्य बढ़ाने वाली, काम को जगाने वाली, चालीस प्रकार के पित्त-रोग और आठ प्रकार के उदर-रोग नाश करने वाली है।

सेवन-विधि—एक या आधा लड्डू खाकर, ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध पीओ। बलाबल का विचार करके, मात्रा बढ़ा भी सकते हो, पर खूब शक्ति देखकर।

१७० पीपल-पाक।

एक सेर छोटी पीपर पीसकर चार सेर दूध में पकाओ। जब खोआ हो जाय, उसे दो सेर गायके "घी" में भून लो। फिर चार सेर मिश्री की चाशनी बनाओ। चाशनी पतली हो, तब उसमें ऊपर वाले पीपलों के खोये को डाल दो और चलाओ। चूल्हे से उतारते समय, नीचे लिखी दवायें उसमें मिलाकर उतार लो। शीतल होनेपर, १६ तोले "शहद" और मिला दो और रख दो।

चाशनी में डालने की दवायें :—

इलायची, तज, तेजपात, लौंग, खस, सोंठ, पीपल, नागरमोथा, लाल चन्दन, गोलमिर्च, तगर, भीमसेनी कपूर, जायफल, केशर, मुलहठी, तिल, वंग-भस्म और लोह-भस्म, ये सब दो-दो तोले लेकर, पीस-कूटकर छान लो और चाशनी में मिलाकर, फौरन उतार लो।

नोट—कपूर ६ माशे लोगे तो अच्छा होगा, क्योंकि जियादा कपूर से पाक कड़वा हो जाता है। बंग-भस्म और लोह-भस्म को कूटने वाली दवाओं से अलग रखो। जब सब दवाओं को कूट-छान लो, तब इन्हें मिला दो। यह

आप ही काजल सी होती हैं। दवाओंके साथ कूटने-छानने से छीजेंगी। इस पाक को ढीला या कड़ा रखना, मरज़ी पर मुनहसिर है।

सेवन-विधि—इसे १ तोले खाकर ऊपरसे दूध-मिश्री पीओ। पीछे ज्यों-ज्यों पचता जाय, तीन-तीन माशे बढ़ाकर, दो-दो तोले रोज़ तक खाओ ; पर अधिक नहीं।

रोगनाश—यह बल-पुष्टिकारक, रुचिकारक, नेत्रों को हितकारी, उम्र बढ़ाने वाला, वीर्य बढ़ाने वाला और वमन, मूर्च्छा, भ्रम आदि नाशक है। इसके सम्बन्ध में लिखा है :—

यह पिप्पली पाक इन्द्रियों का बोधक, बीस प्रमेह नाशक, वात का अन्त करनेवाला, हृदय को हितकारक और आठों ज्वरों को नाश करने वाला है। इनके सिवा, यह अठारह प्रकार के कोढ़ नाश करके बाँझ को पुत्रदेने वाला है। यह पिप्पली-पाक बालकों को भी हितकर है।

१७१ कौंवाछ पाक।

कौंच के बीजों की गिरी चार सेर लेकर, बीस सेर गाय के दूध में पकाओ। पकाने का बासन मिट्टी का या क़लईदार हो। जब खोआ हो जाय, चूल्हे से उतार लो।

फिर एक क़लईदार कड़ाही में, आध सेर गाय का घी डालकर, उसमें खोये को भून लो। जब खोआ लाल हो जाय, नीचे उतार लो।

फिर आठ सेर मिश्री या सफेद बूरे की चाशनी करो और उसमें खोआ डालकर मिला लो। पीछे उसे उतार कर, गरमागर्म रहते, नीचे की दवाओं का चूर्ण भी उसमें मिला दो:—

चाशनी में मिलाने की दवाएँ:—

जायफल, जावित्री, कंकोल, नागकेशर, लौंग, अजवायन, अकरकरा, समन्दरशोष, सोंठ, मिर्च, पीपर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, सफ़ेद ज़ीरा, प्रियंगू और गजपीपल—इन सबको एक-एक तोले ले-

कर, कूट-पीसकर, छान लो। फिर ऊपरकी चाशनी में मिला दो। बस, कौंच का पाक बन जायगा।

सेवन-विधि—इसमेंसे २ तोले या ज़ियादा खाकर, ऊपर से धारोष्ण दूध या दूध-मिश्री पीने से प्रमेह, क्षीणता, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, गोला, शूल और वायु-रोग नाश हो जाते हैं। इसके सेवन करने से स्त्री को गर्भ रह जाता और नपुंसकों का वीर्य बढ़ता है। प्रसूता स्त्रियोंको भी यह हितकारक है। यह खून-विकार को नष्ट करता और नेत्रों को हितकारक है। यह पाक अत्यन्त काम-वर्द्धक और स्त्रियों का घमण्ड नाश करने वाला है। शास्त्र में लिखा है।

> नास्त्य नेन समो योगोदस्राभ्यां निर्मितः शुभः।
> कपिकच्छू बीजपाको दीपनः पाचनः परः॥

इसके समान और योग—नुसख़ा—नहीं है। यह पाक परम दीपन और पाचन है। इसको अश्विनी कुमारों ने निकाला था।

१७२ मेथी मोदक।

मेथी डेढ़ पाव और सोंठ डेढ़ पाव लाकर, पीस-कूटकर छान लो। फिर तीन सेर दूध, डेढ़ पाव घी और अढ़ाई सेर चीनी तैयार रखो।

सोंठ, गोल मिर्च, पीपर, चीते की छाल, धनिया, पीपरामूल, अजवायन, सफ़ेद ज़ीरा, कलौंजी, सौंफ, कचूर, तेजपात, दालचीनी, जायफल और नागरमोथा—इनको भी पीस-छानकर रख लो।

दूध को औटाओ; जब आधा दूध रह जाय, उस में मेथी और सोंठ का चूर्ण डालकर खोआ बना लो। पीछे कड़ाही में "घी" डाल, उसे आगपर रक्खो और खोये को उसी में भूँज लो। इसके बाद चीनी की चाशनी बनाओ। चाशनी तैयार होने पर, उसमें खोआ डालकर मिलाओ और फिर सोंठ, मिर्च आदि के चूर्ण को, जो पहले से पिसा-

छत्ता तैयार रखा हो, चाशनी में डाल फ़ौरन उतार लो और तीन-तीन तोले के लड्डू बना लो ।

सेवन-विधि एक या दो लड्डू अपने बलाबल का विचार करके नित्य खाओ । इनके सेवन करने से समस्त वादी के रोग, शरीर का दर्द, जोड़ों का दर्द, सिर-दर्द, विषमज्वर, प्रदर रोग, नेत्र-रोग, नाक के रोग और मृगी आदि रोग नाश होते हैं तथा बल-वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ता है । जाड़े में यह लड्डू खाने-योग्य हैं । पुराने ज़माने के लोग, जाड़े में, मेथी के लड्डू बना-बनाकर बहुत खाते थे और खूब पुष्ट रहते थे । दिहात वाले तो अब भी खाते हैं । बड़ी अच्छी चीज़ है । परीक्षित है ।

१७३ उच्चटा पाक ।

सफेद चिरमिटी, कौंच के बीजों की गिरी और गोखरू,—इन तीनों को पाव-पाव भर लेकर और कूट-पीसकर, मेथी-मोदक की तरह दूध में औटाकर खोआ करलो और उसे घी में भून लो । फिर मिश्री की चाशनी में खोआ मिला कर, दो-दो तोले के लड्डू बनालो । सवेरे-शाम, एक-एक लड्डू खाकर, ऊपरसे मिश्री मिलाकर दूध पीने से बूढ़ा भी जवान स्त्रियों के अभिमान को खण्डन कर सकता है ।

नोट—मिश्री और घी "मेथी मोदक" के मुताबिक ले लो । अगर यह न हो सके, तो चिरमिटी आदि तीनों चीजों को पीस-छान कर, बराबर की मिश्री मिला लो । इसमें से ६ माशे चूर्ण खाकर, दूध पीओ । परीक्षित है ।

१७४ चन्द्रोदय रस क्रिया ।

सोने के वर्क चार तोले, शुद्ध पारा ३२ तोले और शुद्ध गन्धक ६४ तोले,—इन तीनों को खरल में डालकर, कजली करो । फिर इस कजली में "कपास के नरम फूलोंका रस" डाल-डालकर घोटो । फिर "घीग्वार का रस" दे-देकर घोटो । शेषमें, कजली को सुखा लो ।

एक बड़ी आतिशी पक्की शीशी पर सात कपरौटी करके सुखालो। उस शीशी में इस सूखी कजली को भर दो। एक हाँडी के पैंदेमें छेद करके, उस छेदपर शीशी को बीच में जमा दो। शीशी और हाँडी की सन्धोंपर, चारों ओर, चिकनी मिट्टीमें राख, लोहचूर और रुई सानकर लगा दो। इस हाँडी में, शीशी के चारों ओर, शीशी के गले तक, गरम करके, बालू भर दो। (हाँडी पर भी सात कपरौटी कर लेना।) बालू शीशी में न जाय, इसलिये काग से शीशीको बन्द कर दो। फिर हाँडी को चूल्हे पर चढ़ा दो। इस समय शीशी का काग निकाल कर, मुँह खोल दो। पहले मन्दी आग दो, फिर मध्यम आग दो और शेषमें आग को तेज़ कर दो। जब शीशी से धूआँ निकल जाय, एक ईंटका टुकड़ा शीशी के मुँह पर रख दो। इस तरह रात-दिन ७२ घण्टे आग दो; आग बन्द न हो। बीच-बीच में, लोहे की सींक आग में तपा-तपाकर शीशी में पैंदे तक पहुँचाते रहो। सींक के डालने से आग की लपट उठेगी और शीशी के मुँह में जो मैला आ जायगा, वह हट जायगा। जब देखो, कि शीशी की नाली काली-स्याह हो गई है; शीशी के भीतर लाल रङ्ग चमक रहा है; लोहे की सींक डालने से आग की लौ नहीं उठती; तब समझ लो, कि "चन्द्रोदय" तैयार हो गया। फिर आग मत दो। शीतल होने पर, शीशी फोड़कर, गले में लगाहुआ "चन्द्रोदय रस" निकाल लो। गले पर पत्र से जमे हुए मिलेंगे। ज़रा सा पत्तर पीसने पर "चन्द्रोदय" लाल सुर्ख़ दीखेगा।

नोट(१)—अगर चन्द्रोदय के चमकदार पत्तर न जमें, पत्तर काले या मैले हों; तो आप पारे से आधी शुद्ध गंधक और उस शीशी के भीतर के मसाले को फिर खरल करो और फिर उसी तरह कपरौटी की हुई शीशी में रखो, शीशी को पहले कही विधि से हाँडी में रख, बालू भर, आग पर चढ़ा दो और फिर ७२ घण्टे आग दो। इस बार ठीक साफ चमकदार "चन्द्रोदय" मिलेगा। शीशी से निकालते समय ध्यान रखो, कि चन्द्रोदय में काँच के टुकड़े न मिलें; नहीं तो जो खायगा वही मरेगा; मरेगा नहीं, तो आँतें तो कटही जायँगी।

नोट (२)—पत्थर के कोयले के चूल्हे पर हाँडी रखकर पकाने से प्रायः २०

घण्टों में चन्द्रोदय तैयार हो जाता है। सवेरे ६ बजे चढ़ाने से रात के तीन या चार बजे उतर जाता है। १२ घण्टे बाद, शीशी को घण्टे में चार-चार या छै-छै बार देखते रहो; ज्योंही धूआँ बन्द हो, सींक डालने से आग की लपट शीशी में से न निकले—भीतर शीशी के पेंदे में लाल-लाल रंग नजर आवे, आग बन्द कर दो। यहाँ के बंगाली कविराज शीशी का धूआँ निकल जाने पर भी, शीशी का मुँह ईंटके टुकड़े आदि से बन्द नहीं करते। हमने भी कई बार ऐसा ही किया। कुछ कम माल निकला और कोई हानि नहीं हुई; रस ठीक बन गया।

चन्द्रोदय रस की सेवन-विधि ।

जब चन्द्रोदय रस तैयार हो जाय, उसमें से चार तोले चन्द्रोदय, १६ तोले भीमसेनी कपूर, ६४ माशे जायफल, ६४ माशे काली मिर्चे, ६४ माशे लौंग और चार माशे कस्तूरी—इन सबको खरल में डालकर घोटो; फिर शीशी में रख दो।

सेवन-विधि—इस में से १ माशे रस पान में रखकर, कुछ दिन खाने से, पुरुष सैकड़ों मदमाती स्त्रियों का घमण्ड नाश कर सकता है। जो एक वर्ष तक इस रस को सेवन करता है, उसे स्थावर और जंगम विष तथा जल के विषसे कभी कोई तकलीफ नहीं होती। इसके लगातार दस पाँच वर्ष सेवन करने से बुढ़ापा और मृत्यु दूर भागते हैं।

१७५ नपुंसक वल्लभ रस ।

पहले चार तोले पारे को मुर्गी के अण्डे के भीतर भर दो; फिर अण्डेको बन्द करके, उस पर कपड़-मिट्टी कर दो।

फिर एक कोरी हाँडी में पाँच सेर "अर्क आकाश बेल" का भर दो और उसी में उस कपरौटी किये हुए अण्डे को रखदो। फिर उस हाँड़ी को चूल्हे पर चढ़ा दो और नीचे आग लगाओ। जब चौथाई अर्क बाक़ी रहे, उसी हाँड़ी में पाँच सेर "छाछ" भी डाल दो। जब चौथाई

छाछ रह जाय, हाँडी को चूल्हे से उतार लो और शीतल होने पर, पारे को निकाल कर साफ़ कर लो।

उस साफ किये हुए पारे को खरल में डालकर, उसमें चार तोले सेंधानोन पीसकर मिला दो और १२ घण्टे तक लगातार खरल करो। इसके बाद पारे को निकाल कर साफ करलो।

अब ऊपर के पारेमें से दो तोले पारा लेकर और उसमें दो तोले शुद्ध गंधक मिलाकर खरल में घोटो और कजली करो। जब चिकनी काली कजली हो जाय, उसमें २ तोले शुद्ध संखिया और चार तोले शुद्ध मैंनसिल और मिला दो और खूब खरल करो।

खरल होने पर, इस मसाले को कपरौटी की हुई आतिशी शीशी में भर दो और शीशी का मुख बन्द कर दो। फिर एक हाँड़ी के बीच में शीशी को रखकर, उस शीशी के चारों ओर बालू गरम करके भर दो। बालू शीशी के गले तक आनी चाहिये। इस हाँडी को चूल्हे पर चढ़ा दो और नीचे "बेर की लकड़ी" जलाओ। २४ घण्टे आग बराबर लगाओ। इसके बाद लकड़ी निकाल लो, पर कोयले जलते हुए चूल्हेमें भरे रहने दो। जब आग शीतल हो जाय, शीशी को निकाल लो।

शीशी को ऐसी युक्ति से तोड़ लो, कि रसमें काँचके टुकड़े न मिलें अथवा युक्ति के साथ एक छुरी से—जो शीशी में घूम सके—शीशी के गले में लगे हुए फूल से पदार्थ को निकाल लो। इसके बाद शीशी को तोड़ लो। उसके गलेमें जो और फूल मिलें उन्हें अलग रखो; पहले फूलोंमें न मिलाओ। इनमें खूब नज़र करके काँच के टुकड़े देख लो। दोनों को अलग-अलग रखलो। अगर काँच का ज़रा भी शक न हो, तो दोनों फूल से पदार्थों को एक में मिला सकते हो। पैंदे में कीट मिलेगा, उसे अलग धर दो। फूल ही मतलब के हैं।

सेवन-विधि—इस रस में से १ रत्ती रस लेकर, उसमें एक-एक माशे सफेद इलायची और वंसलोचन तथा ६ माशे शहत मिलाकर चाटो। यह रस निस्सन्देह नामर्द को मर्द करता है। परीक्षित है।

नोट—हाँडी में बालू भरते समय शीशी पर काग लगा देना और जब बालू शीशी के गले तक आ जाय, काग निकाल लेना। ऊपर के "चन्द्रोदय" रस की तरह और सब बातों का खयाल रखना।

१७४ बलवीर्य वर्द्धक फुटकर नुसखे।

(१) मैथुन के बाद, ६ तोले आठ माशे गुड़ खा लेने से कभी कमज़ोरी नहीं आती। परीक्षित है।

(२) सिंघाड़ा हर रोज़ गायके दूध के साथ खाने से वीर्य्य खूब बलवान होता है। सूखे सिंघाड़ों का आटा रख लो। उस में से १ तोले से २ तोले तक नित्य खाओ।

(३) दूध-भात या दूध-चाँवल की खीर रोज़ खाने से नया वीर्य बहुत बनता है। परीक्षित है।

(४) एक बताशे में बड़का दूध भरकर, रोज़ सवेरे ही खाने से धातु बढ़ती और पुष्ट होती है। परीक्षित है।

(५) दो तोले बिनौले गाय के आध सेर दूध में पका कर खाने से खूब बल-वीर्य बढ़ते हैं।

(६) खिरनी के बीजोंकी गिरी सुखा कर पीस-छान लो। इस में के ४॥ माशे चूर्णमें १॥ माशे मिस्री मिला कर, सवेरे-शाम, खाने और गायका दूध पीने से खूब बल-वीर्य बढ़ता है।

(७) सवेरे ही दूध में दो तीन खुरमे और ६ माशे सोंठ मिला कर दूध औटाओ। पहले बढ़िया पके हुए मीठे आम खाकर, इस दूध को पीलो। खूब बल-वीर्य बढ़ेगा। परीक्षित है।

नोट—आमों के मौसम में या तो "आम-पाक" जो हमारी लिखी "स्वास्थ्य-रक्षा" में लिखा है बनाना चाहिये अथवा आम खाकर यह दूध पीना चाहिये।

(८) पके हुए ताज़ा शरीफे या सीताफल रोज़ खाने से वीर्य खूब बढ़ता है। परीक्षित है।

स्तम्भन-योग।

या

इमसाक के नुसखे

(१) छिपकली की पूँछका अगला भाग काट कर, सफेद धागे में लपेटो और अँगूठी में मढ़ाकर, उस अँगूठी को छोटी अंगुली में पहन लो। जब तक अँगूठी न उतारोगे, वीर्य स्खलित न होगा।

(२) दुमुँहे साँप की हड्डी और काले साँप की हड्डी—इन दोनों को कमर में बाँधने से वीर्य रुका रहेगा। जब हड्डियाँ खोली जायँगी, तभी वीर्य स्खलित होगा।

(३) गाय के ऊँचे सींग की त्वचा छील कर, उसे आग पर छिड़को और कपड़े में उसकी धूनी दो। धूनी दिये हुए कपड़े को पहन कर मैथुन करने से वीर्य स्खलित नहीं होता।

(४) ऊँटकी हड्डीमें छेद करके, पलँग पर सिरहाने की तरफ़ रखलो। जब तक हड्डी हटाई न जायगी, वीर्य नहीं गिरेगा।

(५) जब कुत्ते कुत्ती, कातिकमें, मैथुन करते समय जुड़ जायँ, नर कुत्तेकी दुम काट लो और ४० दिनतक ज़मीनमें गाड़े रहो। पीछे देखो, जब दुम गल जाय और हड्डी-मात्र रह जाय, उसे डोरे में पोकर अपने सिरके बालोंमें बाँध लो और भोग करो। वीर्य जल्दी स्खलित नहीं होगा।

(६) सूखी ज़मीन में रहने वाले मैंडक को लाकर मार डालो

और छायामें सुखालो। उसके सिर और पैर काटकर लेलो और उन्हें महीन पीसो। फिर एक जायफल और दो माशे केशर मिलाकर घोटो और गोलियाँ बनालो। मैथुन के समय, एक गोली को थूक में घोल कर, लिङ्ग पर लेप करो, पर सुपारी छोड़ देना। बड़ा आनन्द आयेगा और बड़ी देर लगेगी।

(७) एक बड़ा सा कूए का मेंडक लाकर, उसकी गुदा को सूई डोरेसे सींदो और उसके मुँहमें नौ माशे "पारा" भर कर, उसे अलग रखदो। इस तरह रक्खो, कि पारा नीचे न गिरे। जब मेंडक सूख जाय, उसका पेट फाड़ कर पारेकी गोली निकाल लो। जो पारा मेंडकके मुँहमें रखा जायगा, वह गोली के रूपमें बदल जायगा। उस गोली को रख लो। जब मैथुन करना हो, उस गोली को मुँहमें रख लो। जब तक मुँह में गोली रहेगी, वीर्य स्खलित न होगा।

(८) ऊँट के बालों की रस्सी बनवाकर, भोगके समय, जाँघ पर बाँधलो। जब तक रस्सी अलग न करोगे, वीर्य न छुटेगा।

(९) कमर मे "फ़िटकरी" बाँध कर भोग करने से वीर्य जल्दी स्खलित नहीं होता।

(१०) रविवार के दिन, घोड़े और खच्चर की पूँछों का एक-एक बाल लाकर, पीली कौड़ी में छेद करके पोदो और दाहिनी भुजा में बाँधकर भोग करो; वीर्य न गिरेगा।

(११) छछूँदर का खुसिया चमड़े की थैलीमें रखकर, यन्त्रकी तरह सिलवालो। इस यन्त्र को कमर में बाँधकर मैथुन करो। जब तक यन्त्रको सरका कर सामने न लाओगे, वीर्य स्खलित न होगा।

(१२) काले बिलाव के बाँयें पैर की हड्डी, स्त्री-भोगके समय, दाहिने हाथ में बाँधने से वीर्य स्खलित नहीं होता।

(१३) चिड़िया के अण्डे नौनी घी में पीस कर, दोनों पैरों के तलवों में उसका लेप करके स्त्री प्रसंग करने से वीर्य तबतक नहीं टता, जब तक ज़मीन पर पाँव नहीं रक्खे जाते।

(१४) स्त्री-पुरुष दोनों बायें स्वरमें प्रसंग करें, तो आनन्द आता है। अगर पुरुषका स्वर दाहिना होगा, तो स्त्री जीतेगी। अगर स्त्रीका स्वर बाँया हो, तो पुरुष अपनी नाकको स्त्रीकी नाकसे मिलाकर, उसके बायें स्वर को तीन या सात बार खींचे। इस तरह दोनोंमें प्रीति बढ़ेगी।

(१५) ख़रगोशके आँडों में छेद करके, कमर में बाँध लेने से खूब स्तम्भन होता है।

(१६) काला तीतर लाकर, उसे ७ दिन तक केवल दूध पिलाओ और आठवें दिन उसे एक तोले पारा खिलाओ। इसके खाने से वह बँधी हुई बीट करेगा। उस बीट को गरम जल से धोकर रख लो। इस बीट को मैथुन के समय मुँह में रखने से पुरुष को थकान नहीं आती; लिंगेन्द्रिय बलवान रहती है। अगर कोई इसे राह चलते समय मुँह में रखकर चले, तो कभी थकान न आवे।

(१७) ज़मीकन्द और तुलसी की जड़,—दोनों को पान में रख कर खाने से वीर्य स्खलित नहीं होता।

(१८) नील कमल और सफेद कमल की केशर एवं शहद और खाँड को पीस कर, सूँडी पर लेप करके मैथुन करने से लिंगेन्द्रिय कड़ी हो जाती और मैथुन में देर लगती है। चक्रदत्त।

(१९) सिद्ध किये हुए कसूमके तेल में भूमिलता या शंखपुष्पी का चूर्ण मिला कर, पैरों पर लेप करने और मैथुन करने से वीर्य स्खलित नहीं होता और लिङ्ग कड़ा बना रहता है। चक्रदत्त।

(२०) बकरे के पेशाब में इन्द्रायण की जड़ पीस कर, लिङ्ग पर सात दिन तक खूब मालिश करने से लिङ्ग कड़ा बना रहता है। चक्रदत्त।

(२१) असगन्ध, अकरकरा, जायफल, जावित्री, चीनियाँ कपूर, खुरासानी बच, धुली भाँग और रस-सिन्दूर—इन सब को सात-सात माशे लेकर, कूट-पीस कर छानलो और ५६ माशे मिश्री मिला कर, ज़रा से जल के साथ चार-चार माशे की गोलियाँ बनालो और छाया

में सुखा कर, ऊपर से चाँदी के वर्क़ लपेट दो। इस में से चार या साढ़े चार माशे चूर्ण या गोली, सन्ध्या-समय, खाने और ऊपर से "मूली" खानेसे इतनी रुकावट होती है, कि लिख नहीं सकते। बिना "नीबू" खाये वीर्य स्खलित नहीं होता।

(२२) जायफल, लौंग, उटंगन के बीज, केशर, कपूर, जावित्री और मस्तगी, इनको ६।६ माशे लेकर, कूट-पीसकर कपड़े में छान लो। अफीम शोधकर ६ माशे ले लो। हिंगलू से निकाला या शोधा हुआ पारा ६ माशे और शोधी हुई गंधक भी ६ माशे लेलो। पहले पारे और गंधक को इतना घोटो कि, काजलसा हो जाय और चमक न रहे। इस कजली में दवाओं का चूर्ण और अफीम भी मिला दो। फिर सब को घोटो, जब एक-दिल हो जायँ रख लो। इसकी मात्रा आधे माशे से २ माशे तक है। अपना बलाबल देख कर मात्रा लेना। पहले कम मात्रा लेना; अगर सह जाय तो बढ़ा लेना। इस की एक मात्रा, मैथुन से दो घण्टे पहले, "शहद" में मिला कर खाने से खूब स्तम्भन होता है।

नोट—आधे माशे में तीन चाँवल भर अफीम या पारे का अंश होगा। अगर मसाला सूखा रहे और गोली बनानी हों, तो घोटते समय ज़रा ज़रा सा पानी डालकर घोट लो। जब मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, गोली बना लो। चूर्ण से गोली जियादा दिन ठहरती हैं।

(२३) जायफल १ तोले, अकरकरा १ तोले, लौंग १ तोले, सोंठ १ तोले, केशर १ तोले, पीपर १ तोले, कस्तूरी १ तोले, भीमसेनी कपूर १ तोले, अभ्रक-भस्म १ तोले और शोधी हुई अफीम ८ तोले— इन सबको पीस-कूट कर छान लो। शेष में, अफीमको ज़रासे जल में घोल कर मिला दो और खूब घोटो। घुट जाने पर, मूँग-बराबर गोलियाँ बना लो। एक या दो गोली साँझको खाकर, ऊपर से दूध-मिश्री पीकर, दो घण्टे बाद मैथुन करने से वीर्य बहुत देर तक रुकता और बल नहीं घटता। परीक्षित है।

(२४) शुद्ध पारा ६ माशे और शुद्ध आमलासार गंधक ६ माशे,—दोनों को चार घण्टे तक खरल करके कजली बना लो। पीछे उस कजली में जायफल, लौंग, उटंगन के बीज, केशर, कपूर, मस्तगी और जावित्री—छै-छै माशे पीस-छान कर मिला दो। शेष में, शुद्ध अफीम ६ माशे ज़रा से जल में घोल कर डाल दो और ३ घण्टे घोटो। घुट जानेपर, मटर-समान गोलियाँ बना लो। एक गोली साँझ को "शहद" के साथ खाकर दूध-मिश्री पीलो। मैथुन में खूब आनन्द आयेगा।

(२५) हीरा हींग "शहद" में पीस कर लिङ्ग पर लेप करने से खूब रुकावट होती है।

(२६) करंजकी पत्तियोंका रस निकालकर, हाथकी हथेलियों और पैरोंके तलवोंमें मलकर, डेढ़ दो घण्टे बाद मैथुन करने से वीर्य स्खलित नहीं होता।

(२७) सफेद चमेलीकी पत्तियोंका स्वरस चार तोले और तिलीका तेल १ तोले—दोनोंको कटोरीमें रखकर आग पर पकाओ। जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार लो। मैथुन करने के समय से एक घण्टे पहले, इस तेल को लिंगपर मलकर पान बाँध दो; पीछे खोलकर मैथुन करो; वीर्य जल्दी स्खलित न होगा और तेज़ी बनी रहेगी।

(२८) अकरकरा १ तोले, सोंठ १ तोले, केशर १ तोले, पीपर १ तोले, लौंग १ तोले, सफेद चन्दन का बुरादा १ तोले और शुद्ध अफीम १ माशे—सबको पीस-छान कर रख लो। इसमें से दो माशे चूर्ण ६ माशे शहद में मिलाकर साँझको खाओ और मिश्री-मिला दूध पीओ। इसके सेवन करने से पुरुषत्व बढ़ता और स्तम्भन होता है। इसे रोज़ खा सकते हो और मन-चाहे तब स्त्री-प्रसंग कर सकते हो।

नोट—चूर्ण बनाने के बाद, अगर चूर्ण के बराबर खाँड़ भी मिला ली जाय

और रोज ६ माशे चूर्ण दूधके साथ खाया जाय, तो कामी पुरुषको बड़ा लाभ हो। स्तम्भन-शक्ति बढ जाय। परीक्षित है।

(२६) पारा ५ तोले, गायके बारह पित्ते और भाँगरे का रस आध सेर,—इन सबको लोहे की कड़ाही में रक्खो। लोहे की मूसली में एक पैसा जड़वाकर, उसी से बराबर छै दिन तक घोटो। जब मसाला खूब गाढ़ा हो जाय, जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो। इसमें से एक गोली लेकर, थूकमें घिस कर, सुपारी छोड़ शेष लिङ्ग पर लगाओ। कुछ देर बाद मैथुन करो; बड़ा आनन्द आवेगा।

(३०) असगन्ध, गजपीपल और कड़वा कूट चार-चार तोले लाकर, पीस-कूटकर कपड़-छन करलो और गायके मक्खन में मिला लो। सवेरे-शाम, सुपारी छोड़कर बाक़ी लिङ्ग पर पन्द्रह दिन तक मलो। हर दिन, लेप लगाने से पहले, गरम पानी से लिङ्ग को धो लो—शीतल से नहीं। इस लेप से लिङ्ग तेज़ और कठोर हो जाता है।

नोट—गजपीपल की जगह कोई कोई "दालचीनी" भी डालते हैं।

(३१) जङ्गली कबूतर की चरबी, जंगली कबूरकी बीट, नमक और शहद—इनको बराबर-बराबर लेकर मिला लो और भोग करनेके समय, सुपारी छोड़कर बाक़ी लिङ्ग पर मलो। ऐसा आनन्द आयेगा, कि लिख नहीं सकते।

(३२) मारू बैंगन मिट्टीमें लपेट कर भूभल में दबादो। फिर मिट्टी हटाकर उसका रस निचोड़ लो। उस रसमें ८।१० पीपल तीन दिन भीगने दो। चौथे दिन, पीपर निकालकर सुखालो। मैथुन से पहले, कुछ पीपर महीन पीसकर "शहद" में मिलालो और सुपारी छोड़ कर शेष लिङ्ग पर लेप करलो। वह आनन्द आयेगा, जिसको हम लिख नहीं सकते।

(३३) कौंच की जड़, उँगली के सिर-पोरवेके बराबर लेकर, मुँहमें रखलो और मैथुन करो। जबतक जड़ मुँहमें रहेगी, वीर्य न छुटेगा।

(३४) ६ माशे कुचला दुआतिशी शराबमें पीसकर, उसका गाढ़ा-गाढ़ा लेप नाखूनों पर करो। जब सूख जाय, मैथुन करो। खूब स्तम्भन होगा।

(३५) अजवायन ५ माशे, कद्दू के बीजों की गिरी ६ माशे, इसबन्द ८ माशे, भाँगके बीज ८ माशे, भुने चने ७ माशे, अफीम ३ माशे, केशर ४ रत्ती, इलायचीके दाने १ माशे और खसके डोडे जग दो—इन सबको कूट-पीसकर कपड़े में छानलो। पोस्तके डोडे कूट कर एक प्याले में भिगो दो। पीछे उनको मलकर पानी निकाल लो। उस पानी के साथ ऊपर के पिसे-छने चूर्ण को खूब घोटो। जब गाढ़ा मसाला हो जाय, जङ्गली छोटे बेरके समान गोलियाँ बनाकर, चाँदी के वर्क़ लपेट दो और छायामें सुखालो। स्त्री-प्रसङ्ग के समय से एक या १॥ घण्टे पहले, एक गोली खाकर एक पाव दूध पीलो। अगर आपका वीर्य गाढ़ा है, तब तो इतना आनन्द आयेगा, कि लिख नहीं सकते। अगर वीर्य पतला है, तोभी मामूल से बहुत अधिक समय लगेगा। परीक्षित है।

नोट—अगर गरमी मालूम हो, तो शर्बत सफेद चन्दन या कद्दूके बीज, खुरफेके बीज और तरबूज के बीजों का रस पीओ।

(३६) अकरकरा २०माशे, रिहाँ के बीज २४माशे और मिश्री २७ माशे—इनको पीस-कूट और छान कर रखलो। इसमें से २ माशे चूर्ण खाकर, दो घण्टे बाद मैथुन करनेसे वीर्य तब तक न छुटेगा जब तक आप नीबूका रस न पीयेंगे। परीक्षित है।

(३७) भुनी हुई इसबन्द, कपूर, सुरमकी और अजवायन,—इन चारों को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस कर छानलो। फिर "अदरख के स्वरसमें" मसाले को घोटकर चने-समान गोलियाँ बनालो। मैथुन से पहले १ गोली खाकर दूध पीलो। मामूलसे अधिक देर लगेगी।

(३८) जलाने का इसबन्द दो तोले, पोस्तका आधा टुकड़ा कच्चा और आधा पक्का, काले तिल ६ माशे और गुड़ ५ तोले—इन सबको

पीस-कूट और छानकर सात भाग करलो। एक भाग यानी कोई १४ माशे दवा मैथुन से पहले खाकर, घण्टे भर बाद स्त्री-प्रसङ्ग करने से वीर्य का खूब स्तम्भन होता है। यह नुसखा "इलाजुलगुर्बा" में लिखा है। आजमूदा है।

(३९) अकरकरा ४॥ माशे, केशर ८ माशे, जायफल १२॥ माशे, लौंग १३॥ माशे, शुद्ध सिंगरफ २१ माशे और शुद्ध अफीम ८ माशे लेलो। इन सबको कूट-पीस और छानकर खरलमें डालो। ऊपर से "शहद" दे-देकर पूरे ६ घण्टे घोटो। घुट जाने पर, चने-समान गोलियाँ बनालो। सन्ध्या-समय १ गोली खाकर, ऊपर से गायका अधौटा दूध पीलो। २ घण्टे बाद मैथुन करने से वीर्य में खूब रुकावट होगी। परीक्षित है।

(४०) बूढ़ी स्त्री के कुछ सफेद बाल जला लो। उस राखमें "सुहागा" पीस कर मिला दो। पीछे इन दोनों के चूर्णमें "शहत" मिला लो और इन्द्रिय पर लेप करके प्रसंग करो। स्त्री शीघ्र ही द्रवित हो जायगी।

नोट—पान में जरा सा सुहागा रख कर खिला देने से स्त्री द्रवित हो जाती है।

(४१) कौंचकी जड़ एक अंगुल-बराबर मैथुन के समय मुँह में रखने और रस चूसते रहने से खूब स्तम्भन होता है। जब तक रस पेट में जाता है; वीर्य स्खलित नहीं होता।

(४२) पका हुआ बैंगन लाकर उसके बीज निकाल लो। फिर उस में पीपर ६ माशे भर दो और ऊपर से मिट्टी लगाकर, उसे भूभल में पकाओ। जब पक जांय, पीपल निकाल कर छाया में सुखा लो। फिर ज़रूरत के समय, पीपरों के बराबर दालचीनी मिला लो और पीसकर दो माशे "शहद" में गोली बना लो। इस गोली को थूक में घिसकर, मैथुन से पहले, इन्द्रिय पर लेप करने से खूब स्तम्भन होता है।

(४३) मुर्दासंग और चूहे की लैंडी मिला कर, पानी में पीस कर, लिङ्ग पर लेप करने से स्तम्भन होता है।

नोट—मैथुन के बाद शहद, पुराना गुड़ या दूध पीलेने से बल बढ़ता है—घटता नहीं ।

(४४) लौंग ८ माशे, जायफल १२ माशे, अफीम १६ माशे और कस्तूरी २ रत्ती—इनको पीस-कूट कर, "शहद" में मिला कर, दो दो माशे की गोलियाँ बनालो । विषय-भोग से पहले, एक या दो गोली बँगला पान में रख कर खाने से इतनी रुकावट होती है कि, बिना खटाई खाये निजात नहीं मिलती ।

(४५) दालचीनी और काले तिल बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । पीछे "शहद" में मिलाकर सात-सात माशे की गोलियाँ बना लो। मैथुन के समय, एक गोली खा लेने से मैथुन के भी चार घन्टे बाद तक शहवत बनी रहती है ।
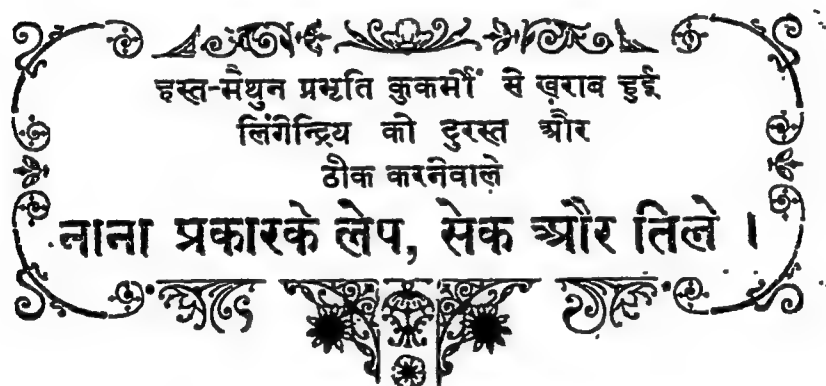
(१) चार तोले लहसन को सिलपर पीस कर लुगदी बना लो । फिर एक देगची या और किसी बासन में तीन छटाँक अलसी का तेल और तीन पाव पानी डालकर, उसीमें लहसन की लुगदी रखदो और उस बर्तन को चूल्हे पर चढ़ादो । जब पानी जल जाय, तेल को उतार कर छान लो । फिर राई, अकरकरा, नीबूके बीज और मालकाँगनी एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर छानलो और उसी लहसनके पके तेलमें डालकर बहुत ही मन्दी आगसे पकाओ ।

जब आधा तेल रह जाय, उतार कर छानलो। इस तेलको सुपारी और सींवन छोड़ कर, बाक़ी लिङ्ग पर मलने से सुस्ती दूर होकर तेज़ी आती है। कम-से-कम २१ दिन मलना चाहिये। परीक्षित है।

(२) दो तोले ३ माशे मीठा तेल खूब मन्दी आग पर गरम करके उतार लो। पीछे उसमें सवा दो माशे "लाल हरताल" महीन पीसकर मिलादो। इसके बाद साढ़े चार माशे "सुहागा" और साढ़े चार माशे "कड़वा कूट" भी पीसकर मिलादो। फिर "चमेली की पत्तियों का दो तोले स्वरस" भी उसीमें मिला दो और फिर आगपर रखदो। जब पत्तियों का रस जल कर तेल-मात्र रह जाय, उतार कर छानलो। इस तेल को सींवन-सुपारी छोड़कर, शेष लिङ्ग पर २१ दिन मलने से लिङ्गकी सुस्ती जाकर खूबही तेज़ी आती है।

(३) ग्यारह बर्रोंको आध पाव मीठे तेलमें डालकर जलाओ और फिर तेल को छान कर शीशीमें रखलो। इस तेलको लिङ्ग पर मलने से लिङ्ग बहुत ज़ोर करता है।

नोट—बर्र एक जन्तु है, जो गुड़ या मिठाई पर बैठता है। हलवाइयों की दुकानों पर बहुत होता है। कोई पीला और कोई लाल-पीला होता है। उसके काटने से भयानक पीड़ा होती है। उसे कहीं बर्र, कहीं भिरड़ और कहीं ततैया भी कहते हैं। अङ्गरेजी में **Wasp** कहते हैं।

(४) पतला महीन कपड़ा लेकर, 'थूहरके दूधमें' तीन दफा भिगो कर सुखालो। फिर उस कपड़े को तीन बार प्याज़ के रसमें भिगो कर सुखालो। इसके बाद, उस कपड़े को अलसी के तेलमें २४ घण्टे तक भीगने दो। फिर सुपारी छोड़कर, बाक़ी लिङ्ग पर "मक्खन" मलो और ऊपर से "यही कपड़ा" कोई डेढ़ घण्टे तक, लिङ्ग पर, सुपारी बचाकर, लपेट रक्खो। ऊपरसे कच्चा डोरा लपेट दो। कुछ देर बाद उसे खोल डालो। अगर खूब तेज़ी न आजाय, तो दूसरे दिन भी उसी कपड़ेको लपेट दो; पर पहली बार खोलने के बाद ही उसे अलसीके तेलमें डुबा देना। लपेटनेके समय निकाल कर लपेट लेना।

इस उपायसे एक, दो या तीन दिनमें खूब तेज़ी आजाती है। दूसरे दिन जब कपड़ा लपेटो, पहले इन्द्रिय पर मक्खन लगा लेना।

(५) आमाहल्दी पानीमें घोल कर, एक कपड़ेको उसमें रँगलो और सुखालो। इसके बाद उसी कपड़ेको धतूरे के रसमें तीन बार भिगो-भिगो कर सुखालो। फिर इसी तरह मदार या आकके दूधमें तीन-बार भिगो-भिगो कर सुखा लो। भिगोये हुए कपड़े को हरबार छाया में सुखाओ। जब एक बार आमाहल्दी में, तीन बार धतूरे के रसमें और तीन बार आकके दूधमें कपड़ेको भिगोकर सुखालो; तब एक बासन में भैंसका घी डालकर आग पर रक्खो और कपड़े को उसीमें डालदो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। फिर कपड़ेको निकाल कर, उस पर "शहद" लीपदो और ऊपरसे "हीरा हींग" एक रत्ती महीन पीसकर बुरक दो। इस कपड़े को सुपारी छोड़कर, लिङ्ग के शेष भागमें तीन दिन तक बाँधो। लिंगकी सारी सुस्ती नाश हो कर, बेहिसाब तेज़ी आयेगी।

(६) जिस मुर्ग़े ने मुर्ग़ी का सङ्ग न किया हो, उसे काट डालो और उसका थोड़ासा खून एक प्यालेमें लेलो। उतना ही खून जवान गधे का उस खूनमें मिलादो। इन दोनों खूनोंको मिलाकर, सुपारी छोड़कर बाक़ी लिङ्ग पर मलो और पंखे से हवा करो। पहले दिन जलन होगी। दूसरे दिन फिर लगानेसे पहले दिनसे कम जलन होगी और तीसरे दिन लगाने से जलन ज़रा भी न होगी। पर स्त्री-सङ्ग की इच्छा बहुत ही होगी। लेकिन उस दिन मैथुन न करना चाहिये। चौथे पाँचवें दिन मैथुन करने से दिल खुश हो जायगा।

(७) मूलीके बीज ३ माशे, बिनौले ३ माशे, अकरकरा १॥ माशे और कड़वा कूट १॥ माशे—इनको खूब महीन पीस-छान कर लिङ्ग पर लगानेसे खूब तेज़ी होती है। ११ दिन लगाना चाहिये।

(८) अकरकरा २ माशे और जङ्गली प्याज़का रस १० माशे, इन दोनों को पीस कर लिङ्ग पर लगाने से लिङ्ग सख़्त हो जाता है। ११ या २१ दिन तक, यह नुसखा काममें लाना चाहिये।

(९) लौंग १, समन्दर फल की गिरी १,—दोनों को "शहद" में मिलाकर २१ दिन लगाने से लिङ्ग कड़ा हो जाता है।

(१०) तिलीका तेल आध सेर और रेंडीकी गिरी १ पाव,—दोनोंको आग पर रख कर औटाओ। जब पाव भर तेल रह जाय, उतार कर एक शीशी में भरदो। इसमें से थोड़ा-थोड़ा तेल रोज़ रातको लिङ्ग पर, सुपारी छोड़कर, ४० दिन तक आध घण्टे रोज़ मलो। अगर हथरस से लिङ्ग सुस्त या टेढ़ा होगया होगा, तो आराम हो जायगा।

(११) जङ्गली कबूतर की बीटकी सफेदी २ माशे लाकर, असली चमेली के तेल में खूब पीस कर लिङ्ग पर मलो। ३१ दिनमें हथरस के दोष जड़से दूर हो जायँगे।

(१२) चमेली के तेल में इस्बन्द पीसकर,रोज़ लिङ्ग पर लगाने से लिङ्गमें तेज़ी और सख्ती आजाती है। २१दिन तक यह काम करना चाहिये।

(१३) चमगीदड़का खून लिंग पर मलने से लिंगमें खूब तेज़ी आ जाती है। कम-से-कम २५ दिन तक मलना चाहिये।

(१४) काले साँपकी चरबी, मछली की चरबी और जङ्गली सूअर की चरबी, इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, खरलमें डालकर, ऊपर से बकरी का पेशाब डाल-डाल कर, तीन दिन तक घोटो। इस लेपसे लिङ्ग में निश्चय ही खूब तेज़ी और सख्ती आजाती है।

(१४) चूहे की मैंगनी शहद में पीसकर, २१ दिन तक, लिङ्ग पर लगाने से तेज़ी बढ़ जाती है।

(१६) मूली के बीज चार तोले पीस कर, १६ तोले मीठे तेलमें मिलाकर औटाओ और रख लो। इसमें से कुछ तेल लेकर, रोज़ २१ या ३१ दिन तक, लिङ्ग पर मलने से लिङ्गमें बड़े ज़ोरकी तेज़ी आती है।

(१७) औरतके सिरके बाल १ छटाँक में आग लगादो और राख को उठा लो। उस राख में अन्दाज से थोड़ी सी कबूतर की बीट

की सफेदी मिलाकर, उसे चमेली के तेलमें हल कर लो। मैथुनके समय, इस लेप को लिङ्ग पर, सुपारी छोड़ कर, लगा लो और मैथुन करो ; इतना आनन्द आयेगा, कि लिख नहीं सकते।

(१८) थूहर का दूध १ तोले और गायका दूध १ तोले,—दोनों को दिन-भर धूप में रखो। रातको उसमें थोडासा तेल मिलाकर लिङ्ग पर मलो। जब लेप सूख जाय, १ घण्टेबाद मैथुन करो ; ख़ूब आनन्द आवेगा और वीर्य देर तक न गिरेगा।

(१९) काले धतूरे की पत्तियों का रस टखनों पर लगाओ। जब रस सूख जाय, मैथुन करो। वीर्य जल्दी स्खलित न होगा और ख़ूब आनन्द आयेगा।

(२०) हाथीदाँत का चूरा चार तोले, मछली के दाँतों का चूरा चार तोले, लोंग ८ माशे, जायफल नग २ और जंगली प्याज़ की १ गांठ—इन सब को कूट-पीस कर छान लो और आधी-आधी दवा दो कपड़े की पोटलियों में रख कर, पोटली बाँध लो।

एक छोटीसी हाँडी और उस पर ठीक बैठता ढक्कन लाओ। ढक्कन के बीच में, छोटी उँगली समावे जितना छेद करलो। पारी या ढकने को हाँडी पर रख कर, हाँडी और ढक्कन की सन्धियों में कपड़मिट्टी करदो, ताकि साँस न रहे। इसके बाद, हाँडी में भेड़ का आध पाव दूध भर दो और हाँडी के नीचे आग लगादो। आग मन्दी रहे। तपत पहुँचने से ढकने के छेद में होकर भाफ निकलेगी। उस भाफ पर एक पोटली रखदो। जब पोटली भाफ से गरम हो जाय, उसे उतार लो और उस से जाँघ, पेड़ू और इन्द्रिय सब जगह सेक करो। पहली पोटली को छेद से हटाते ही, दूसरी को छेदपर रख दो। जब हाथ वाली ठण्डी होजाय, उसे छेद पर रख दो और छेदवाली को उठा कर, उस से फिर सेक करो। इस तरह कोई घण्टे डेढ़ घण्टे तक, रोज़, चार दिन सेक करो। इसके बाद बँगला पान आग पर सेक कर, इन्द्रिय पर बाँध दो। दूसरे दिन पान खोल कर, फिर सेक

करो और नया पान सेक कर बाँध दो। जब तक सेक करो, बिल्कुल स्नान मत करो।

जब चार दिन तक सेक करलो; तब सफेद कनेर की जड़, जायफल, अफीम, इलायची और सेमर की छाल—इन सबको महीन कूट-पीस और छान कर, १ तोले तिली के तेल में मिला कर गरम करो। सुपारी छोड़ कर, शेष इन्द्रिय पर इस तेल को लेप कर दो। तीन दिन तक इस लेप को करते रहो। पहला लेप सुहाते-सुहाते गरम जलसे धो लेना; शीतल जल कभी मत लगाना; हवा भी मत लगने देना। स्त्री-प्रसंग का तो नाम भी मत लेना। इस उपाय से इन्द्रिय खूब तेज़ हो जाती है। कई रोगी आराम हुए हैं। परीक्षित है। इस के साथ-साथ कोई ताक़तवर दवा भी खाते रहना चाहिये।

(२१) तेलिया विष, आमाहल्दी और मैदा लकड़ी,—इन तीनों को दस-दस माशे लेकर, अलग-अलग कूटकर छानलो और मिला दो। इसके तीन भाग करलो। एक भागको ताज़ा पानी में मिला कर लेपसा करलो और सींवन सुपारी छोड़कर, लिंग के बाक़ी हिस्से में लगाओ और पान बाँध कर कच्चा डोरा लपेट दो। इसे सारे दिन-रात बँधा रहने दो। दूसरे दिन रातको, फिर तीसरा भाग पानी में मिला कर लेप करो और पान बाँध दो। तीसरे दिन फिर ऐसा ही करो। चौथे दिन गायका घी १०१ बार धोकर, लिंग पर उसका लेप करदो। इस लेप से तीन दिन में ही लिंग के सारे दोष निकल जायँगे। बड़ा अच्छा नुसखा है। परीक्षित है।

(२२) गायका घी एक पाव लोहेकी छोटी कड़ाही में डालकर आग पर रखो। जब घी गरम होजाय, उस में तालाब की एक बड़ी जौंक जीती हुई डाल दो। जब जौंक का पेट फट जाय और उस की आवाज़ आप सुन लो; कड़ाही को उतार लो और सेमलका गोंद, काजल-जैसा महीन पिसा हुआ, उसमें मिला दो और नीम के

सोटे से १२ घण्टे तक लगातार रगड़ो। इस घी के लिंग पर लगाने से लिंग के सब दोष नाश होकर ख़ूब तेज़ी होती है।

नोट—अगर बड़ी जोंक न मिले, तो ७ छोटी जोंक घी में डाल दो।

(२३) एक तोले केंचुए गायके दो तोले घी में मिला कर, खरल में डालकर, ६ घण्टे तक खरल करो। इस में से थोड़ा-थोड़ा घी लेकर लिंग पर (सुपारी सींवन छोड़ कर) मलने और ऊपर कनेर के या अरण्ड के पत्ते बाँधने से लिङ्ग के सब दोष नष्ट हो जाते और ख़ूब तेज़ी होती है।

(२४) इस्वन्द ५ तोले, रेंडी के बीजों की गिरी ५ तोले और पीली सरसों ५ तोले—इनको कूट-पीस-छान कर काजलसा करलो। पीछे इस चूर्ण को खरल में डालकर, ऊपर से चमेली का असली तेल ५ तोले छोड़कर, ख़ूब खरल करो। इस लेप को सवेरे धूप में और रात को बिना हवा के स्थान में, सुपारी छोड़ कर, शेष लिंग पर धीरे-धीरे मलो। अगर जाड़ेका मौसम हो, तो जलते हुए कोयलों की अँगीठी पास रख लो। लेप लगा कर, अँगीठी पर हाथ गरम कर-करके, नाभिसे लेकर रानों तक पूरे दो घण्टे सेक करो। एक हकीम साहब इसे लिङ्ग के रोगों पर अपना आज़मूदा बताते हैं।

(२५) ताज़ा बीरबहूटी तीन तोले और बर्रोका छत्ता तीन तोले खरल में डालकर, ऊपर से तिलों का तेल छै तोले मिलाकर ख़ूब खरल करो। जब लगाने योग्य काजलो हो जाय, इस में से थोड़ी सी लेकर, सुपारी छोड़, लिंग के शेषभाग पर उसका लेप करो। इस तरह कई दिन करने से लिंग बड़ा आनन्द देता है।

(२६) सफ़ेद कनेर की जड़की छाल महीन पीस कर, भटकटैया के रस में खरल करके, २१ दिन तक, लिंग पर सुपारी छोड़ कर लेप करो; बेतहाशा तेज़ी बढ़ जायगी।

(२७) पहले तिली का तेल लिंग पर मलो। फिर "हालों" दो तोले पानी में पीस कर, आग पर गरम करलो। इसको सुहाता-

सुहाता गरम लिंग पर लगा दो और ऊपर से पान या अरण्ड का पत्ता बाँध दो। लिंग के दोनों तरफ़, लकड़ी की पतली खपच्चियाँ लगाकर, यथोचित रूप से, पट्टी से कसकर बाँध दो। ३ घण्टे बाद खोल कर, निवाये पानी से लिंग को धो लो। इस तरह ७ या ११ दिन करने से हथरस की वजह से हुआ लिंगका टेढ़ापन जाता रहेगा।

(२८) असगन्ध की जड़ जौकुट करके, काले धतूरे के रस में भिगो दो और छाया में सुखा लो। फिर ताज़ा रस धतूरे का निकाल कर, उस सूखे हुए चूर्ण को फिर भिगो दो और सुखा लो। इस तरह २० बार ताज़ा धतूरे के रसमें भिगो-भिगो कर सुखालो। जब मैथुन करना हो; इस में से थोड़ा सा लेकर खूब महीन पीसलो और अपने थूक में मिलाकर लिंगपर, सुपारी बचाकर, मलो और ३ घण्टे बाद मैथुन करो। लिंग लकड़ी सा सख्त हो जायगा और वीर्य देर बाद स्खलित होगा। मैथुन के बाद, लिंग पर गाय का घी मलना बहुत ज़रूरी है।

(२९) चमेली के तेल में राई पीसकर लिंग पर मलने से लिंग सख्त हो जाता है।

(३०) बीरबहूटी, सूखा केंचुआ, नागोरी असगन्ध, ज़रबचोप, आमाहल्दी और भुने चने—इन सबको पीस कर कपड़े में छान लो और खरल में डाल कर, ऊपर से "रोग़न गुल" दे दे कर घोटो। फिर दो पोटलियों में यह मसाला बाँध लो। अँगीठी में कोयले जला कर, उस पर तवा रख लो। तवे पर पोटली तपा-तपा कर, नाभि और पेड़ू से जाँघों तक (इन्द्रियको लेकर) एक घण्टे रोज़ सेक करो। जब एक पोटली गरम होजाय, उस से सेक करो और दूसरी को तवे पर रख दो। आग बिल्कुल मन्दी रहे, नहीं तो पोटली जल जायगी। पोटली इन्द्रिय पर सुहाती गरम लगाओ, बहुत गरम न हो। इस सेक के बाद बँगला पान गरम करके इन्द्रिय पर लपेट दो, और कच्चा डोरा बाँध दो। सेक के चार दिनों तक नहानेका नाम

भी मत लो और हवा भी इन्द्रिय को न लगने दो। इस सेकके चार दिन बाद नीचे लिखा लेप करो :—

अकरकरा दक्खनी २ माशे, बीरबहूटी २ माशे और २० लौंग तथा बकरेका मांस आध पाव,—इन चारोंको खूब महीन पीस लो और एक लकड़ी ऐसी बनाओ, जो ठीक तुम्हारी इन्द्रियके जितनी ही लम्बी और मोटी हो। लम्बाईमें सुपारीको छोड़ दो। उस लकड़ी पर इस मसालेको लपेट दो और आग पर सेको। जब मसाला कड़ा हो जाय, उसे बिना टूटे उतार लो। अगर न उतरे, तो बीच से एक फाँक करके उतार लो और अपनी इन्द्रियको सुपारी छोड़कर पहना दो। पीछे पतला सा कपड़ा लपेटकर, कच्चा डोरा बाँध दो। पानी भूलकर भी इन्द्रियके न लगने दो। यह सेक और लेप लिङ्ग की सुस्ती, ढिलाई और दुबलेपन को नाश करते हैं। परीक्षित हैं।

(३१) एक मारू बैंगन ऐसा लाओ, जो अपने पेड़में ही-पीला पड़ गया हो। उसमें सात पीपर खोंसकर उसे लटका दो। जब बैंगन सूख जाय, उसे आध सेर मीठे तेलमें डाल कर औटाओ। जब तेल खूब गरम हो जाय, उसमें सात तोले केंचुए पीस कर मिलादो। इसके बाद, उसमें अढ़ाई तोले लहसन भी छीलकर मिला दो और आगसे उतार लो। बादमें, उस तेल और मसालेको खरलमें डालकर खरल करो और शीशीमें भरकर रख दो। इसमें से १ माशे भर, सुपारी सींवन छोड़ कर, बाकी लिंग पर १५ दिन तक मलो और ऊपरसे बड़के या लिहसौड़े के पत्ते लपेट कर, कच्चे डोरे से बाँध दो। परमात्माकी दया से इस नुसखे से हथलस या लौंडेबाजीके कारण से खराब हुआ लिंग फिर निर्दोष हो जायगा और ठेढ़ापन भी दूर हो जायगा। इसको "शाहलेप कहते हैं। यह लिङ्गके लेपोंका बादशाह है। परीक्षित है।

(३२) सफेद चिरमिटी, अकरकरा, बीरबहूटी सवा तीन-तीन माशे और संखिया एक माशे—इन चारोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे दुआतिशी शराब डाल-डालकर, तीन दिनतक खरल करो और शीशी

में भर दो। इसको रातके समय, सुपारी बचाकर; लिङ्ग पर लगाओ और पान लपेट कर, कच्चा डोरा बाँधकर सो रहो। सवेरे खोल डालो, पर लिङ्गको हवा न लगे। इस तरह सात दिन करने से लिङ्गकी कमज़ोरी निश्चयही नाश हो जायगी। लिङ्ग एक-दम कड़ा और तेज़ हो जायगा।

(३३) आदमीके कानका मैल १ तोले लेकर, तोले भर सूअरकी चरबीमें मिलाकर, तीन दिनतक खरल करो। इसके बाद इसे, सुपारी छोड़, लिङ्गके बाक़ी हिस्से में लगाओ। ७ दिनमें इच्छा पूरी होगी। खूब तेज़ी होगी।

(३४) सफेद कनेरकी जड़की छाल १ तोले, गधेका पेशाब १ तोले और शिंगरफ ३ माशे—सबको पीसकर एक-दिल कर लो। इस लेपको ७ दिन तक लिङ्ग पर मल कर, अरण्डके पत्ते लपेटो। इससे लिङ्गकी कमज़ोरी निश्चयही जाती रहती है।

(३५) हरताल, पारा और नागौरी असगन्ध,—ये तीनों अठारह-अठारह माशे, सुहागा नौ माशे, सोमलखार ८ माशे और मैन-सिल ३ तोले—इन सबको महीन पीस-कूट कर छान लो और इस चूर्णके वज़नके बराबर गायका घी मिलाकर खूब खरल करो। इस घी को सुपारी छोड़कर, बाक़ी लिङ्ग पर धीरे-धीरे रोज़ मलो। इस लेप से निश्चयही नामर्दी नाश हो जाती है।

(३७) बच, असगन्ध पीपरामूल,कूट और धतूरेके बीज—इनको बराबर-बराबर ले लो। पीछे कूटकर कपड़-छन कर लो। इसमें से १ माशे दवा १ तोले गायके घी में मिलाकर, इन्द्रियके अगले भाग या सुपारी को छोड़कर, बाक़ी भागमें रोज़ मालिश करो। लगातार २१ या ४१ दिन लगाने से नामर्द भी मर्द हो जाता है।

(३८) सूअरकी की चरबी, बढ़िया ब्राण्डी और शहद—इन तीनोंको, रोज़ सवेरे-शाम, लिङ्गके अगले भागको छोड़ शेष भाग पर मलने और ऊपरसे बालूकी पोटरी आग पर तपा-तपा कर सुहाता

सुहाता से न करने से नामर्द मर्द हो जाता है । इसके लगाते समय शीतल हवा, शीतल जल और नहानेसे बचो तथा स्त्री-प्रसंग मत करो। इस के साथ-साथ कोई ताक़तवर दवा भी खाओ। परीक्षित है।

(३८) भटकटैय्याकी पत्तियाँ ६ तोले आठ माशे, सरसोंका तेल ६ तोले ८ माशे और काला बिच्छू एक लाकर रक्खो। भटकटय्याकी पत्तियोंको पीसकर टिकिया बना लो। तेलको आगपर गरम करो। जब तेल उकलने लगे, उसमें वह टिकिया और बिच्छू डाल दो और जलाओ। जब खूब जल जाय, छानकर शीशी में रखलो। इसमें से एक रत्ती-भर तेल पान पर चुपड़कर, पानको लिङ्ग पर लपेट दो और ऊपर से डोरा बाँध दो। सुपारी से पान दूर रहे। इस उपायसे लिङ्ग बहुत तेज़ हो जाता है।

(३९) चिनौलोंकी मींगी बकरीकी चरबीमें मिलाकर पीस लो और इन्द्रिय पर मलो। इस लेपके लगाने से लिङ्गका बाँकपन मिटता और मुटाई बढ़ती है।

(४०) सुहागा, कुट और मैनसिल—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इसमें चमेलीके पत्तोंका स्वरस २० माशे मिला दो। शेषमें, कड़ाहीमें तिलोंका तेल और ऊपरका मसाला रखकर, मन्दी-मन्दी आग पर पकाओ। जब चमेली का रस जल जाय और तेल मात्र रहजाय, उतारकर छान लो। इस तेलके इन्द्रिय पर मलने से बाँक-पन मिटकर इन्द्रिय सख्त और मोटी होती है।

(४१) समन्दरफल, दारुहल्दी, मुलहटी और शहत—बराबर-बराबर लेकर, गधेके मूत्रमें घिसो और इन्द्रिय पर मलो। इससे लिङ्ग बढ़ता और स्थूल होता है।

नोट—छोटी माई, माजूफल, बड़ी हरड़, कपूर, समन्दर-शोष और फिटकरी—इन सबको दो-दो माशे लेकर, पानीमें पीसकर, योनिमें लेप करने से वह संकुचित होजाती है।

कुछ लौंगोंको घोड़ीके दूधमें भिगोकर पीस लो और योनिमें रखो। वह संकुचित हो जायगी।

अनारके छिलके, माजूफल और लौंग बराबर-बराबर लेकर, शराबमें पीसकर, योनिमें लगाने से वह संकुचित हो जाती है।

जायफल, माजूफल, अफीम, छोटी माई और बड़ी हरड़ का छिलका—ये सब चार-चार माशे तथा लौंग और जावित्री दो दो माशे—इनको बराण्डी में पीसकर, दो-दो माशे की गोली बना लो। मैथुन से पहले १ गोली योनि में रखने से पानी आना बन्द हो जाता है।

(४२) एक माशे हींग शहदमें पीसकर, जौरे-जितनी पतली-मोटी-लम्बी बत्तियाँ बना लो। एक बत्ती लिङ्गके छेदमें रखकर, एक घण्टे बाद मैथुन करो। वीर्य रुकेगा और आनन्द आयेगा।

(४३) एक कपड़ेको आकके दूधमें २४ घण्टे तक भिगो रखो। फिर निकालकर उसको सुखालो। सूख जाने पर, उस पर "घी" लेपेटो और उसकी दो बत्तियाँ बना लो। पीछे उन बत्तियोंको एक लोहे की डण्डी पर रखकर, दियासलाई से जलाओ और नीचे काँसीकी थाली रखो। जो चिकनाई टपके, थालीमें टपके। जब बत्तियाँ जल जायँ, टपके हुए तेलको प्याली या शीशीमें रख दो। इस तेलको सुपारी छोड़ कर, लिङ्ग पर २० मिनट तक मलो और पान या अरण्डका पत्ता बाँधकर, कच्चा धागा लपेट दो। इससे हथलसके दोष दूर हो जायेंगे। परीक्षित है।

(४४) ऊँटकटारेका वृक्ष, सय जड़ टहनी और पत्तोंके, लाकर बकरीके दूधमें भिगो दो और "पाताल यन्त्रसे" तेल खींचलो। पीछे उसे शीशीमें रख दो। इस तेलके लिङ्गपर मलने से लिङ्गकी सुस्ती जाती रहती है।

(४५) चमेली की पत्तियों का रस २ तोले ४ माशे, धतूरेकी पत्तियोंका रस २ तोले ४ माशे, मीठा तेलिया २० माशे, कड़वा कूट २० माशे, मैनसिल १० माशे, सुहागा २० माशे और तिलोंका तेल ११ तोले ८ माशे—तेलको अलग रखकर, बाकी सब दवाओंको पीस कर टिकिया बनालो। फिर कड़ाहीमें तेल डालकर, टिकिया को

बीचमें रखदो और आध सेर पानी डाल दो। मन्दी-मन्दी-आग से तेल पकाओ। जब पानी जल जाय, तेलको उतार लो; उसमें टिकियाको खूब खरलकर लो और रख दो। इस मसालेको लिङ्ग पर, सुपारी बचाकर, एक दिन बीचमें देकर एक दिन मलो। कुछ दिनोंमें खूब तेज़ी बढ़ जायगी।

(४६) भाँग, आकको जड़ और अकरकरा—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, धतूरेके रसमें पीस कर, इन्द्रिय पर लगानेसे लिङ्ग खूब सख्त हो जाता है।

(४७) महीन कपड़ा एक बालिश्त लेकर, धतूरे के आध सेर रस में, २१ दिनों तक भिगो रक्खो। जब सब रस कपड़ेमें सूख जाय, एक कटोरीमें २ तोले तिलीका तेल डाल कर, उसमें उस कपड़ेको छोड़ दो। फिर कपड़ेको कटोरीसे निकालकर, एक लम्बी लोहेकी सींकमें लटकालो और नीचे काँसीकी थाली रख लो। कपड़ेमें आगकी ओर दियासलाई दिखाओ। कपड़े में से थालीमें तेल टपकेगा। उस तेलको शीशीमें रख दो। उसमें से २ बूँद तेल सुपारी छोड़ कर, बाकी लिङ्ग पर मलो। ईश्वर चाहेगा, तो चार या आठ दिनोंमें लिङ्गमें बेतहाशा तेज़ी आजायगी।

(४८) मालकाँगनी ६ तोले आठ माशे, कुचलेका चूरा ६ तोले ८ माशे, ढाकके बीज ६ तोले ८ माशे, जंगली कबूतरकी बीट ६ तोले ४ माशे, सफेद कौड़ी ९ माशे और अकरकरा ९ माशे—इन सबको रातको बकरीके दूधमें भिगो दो और सवेरे ही "पातालयन्त्र" से तेल निकालकर रख लो। इस तेलके लिंग पर लगाने से नामर्द मर्द हो जाता है।

(४९) नागौरी असगन्ध, केंचुआ, बीरबहुटी, आमाहल्दी और भुने-छिले चने—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पीस कूटकर छानलो और गुलाबके तेलमें खूब घोटो। फिर दो पोटली बनाकर, चूल्हे पर तवा चढ़ाकर, पोटलीको तवे पर रख कर उठालो और नाभिसे लेकर

वालों तक सब इन्द्रियके सर्वत्र सेक करो। जब एक पोटलीसे सेक करो, दूसरीको तवे पर गरम होने दो। आग मन्दी रक्खो, ताकि पोटली जल न जाय। इस तरह चार दिन सेक करो। आपकी इन्द्रियमें खूब तेज़ी आ जायगी। अगर तेज़ी आजाय, पर पूरी तेज़ी न आवे ; तो फिर ताज़ा दवाएँ लाकर, गुलाबके तेलमें घोटकर, पोटली बनाकर, ऊपरकी तरकीबसे फिर चार दिन सेक करो। परीक्षित है।

(५०) कौड़िया लोबान चार तोले लाकर, करौंदोंके रसमें खूब खरल करो। फिर उसमें चार तोले गायका घी मिलाकर गोला बना लो। उस गोलेको एक सात कपरौटी की हुई आतिशी शीशीमें भरकर, शीशीका मुँह तारोंके टुकड़ों या सींकोंसे बन्द कर दो। तेल टपक सके, इतने छेद तारोंके बीचमें रखो। फिर "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ ५६५ में लिखी विधिसे "पातालयन्त्र" द्वारा तेल निकाल लो।

सेवन-विधि—पहले लिङ्ग पर "हलदी"का बारीक चूर्ण मलो। इसके बाद, ऊपरका निकाला हुआ तिला २० मिनट तक मलो और गरम करके बँगला पान बाँध दो। हवा और शीतल जल इन्द्रियके मत लगने दो। इस तेल से ३।२ सालका नामर्द २१ दिनमें मर्द हो जाता है। कई बार परीक्षा की है।

(५१)एक ऐसा बैंगन लाओ, जो खेत में अपने पेड़ में ही पीला हो गया हो। उस मेंसे बीज निकाल कर ५ तोले तोल लो। फिर कंटकारी के बीज ५ तोले, पीपर ५ तोले, सूखा केंचुआ ५ तोले, सफेद चिरमिटी ५ तोले और बीरबहुटी ५ तोले, इन सब को पीस-कूट कर एक पाव तिलीके तेल में खरल करो। जब खरल हो जाय, आतिशी या पक्की विलायती शीशी में कपरौटी करके, इस मसालेको भर दो। फिर शीशीके मुँह में तारोंका गुच्छा देकर, "पाताल यंत्रकी विधि से" तेल निकाल लो।

सेवन विधि—सींवन सुपारी छोड़ कर, बाकी जगह में इस तिले

को आध घण्टे तक मलो। इसको २ मास तक मलने और साथही कोई ताक़तवर दवा खाने से जन्मके नामर्द और नस कटे हुए नामर्द को छोड़कर, हथरस इत्यादि से हुए नामर्द अवश्य आराम हो जाते हैं। ढीलापन और सुस्ती दूर हो जाती है। परीक्षित है।

(५२) मूलीके बीज २ तोले, पीपल २ तोले, अकरकरा २ तोले, लौंग २ तोले, जावित्री २ तोले, जायफल २ तोले और शुद्ध जमालगोटा १ तोले—इन सबको पीस कर तिली के तेल में डाल, मन्दाग्नि से पकाओ। जब सब दवाएँ जल जायँ, तेलको छान कर शीशी में भर लो।

इसको लिङ्ग के पिछले भाग पर मल कर, बँगला पान सेक कर बाँधने और कोई पुष्टिकर दवा खाने से, ३१ दिन में, नामर्द मर्द हो जाता है और शिथिलता या ढीलापन नाश होकर, इन्द्रिय सख़्त हो जाती है। परीक्षित है।

(५३) बीरबहुट्टी १ माशे, लौंग ४ माशे, जायफल ७ नग, पान १५ नग, शराब १ पाव, कानका मैल १० माशे और कबूतर की बीट ४ माशे तैयार करो। सब को शराब में घोट कर रखलो। इसमें से इन्द्रिय पर लेप करो, इससे लिंग की सुस्ती चली जाती है।

(५४) बीरबहुट्टी, हाथी-दाँत, लौंग, जायफल, मीठा तेलिया, मछली का पित्ता, लाल चिरमिटी, सफेद चिरमटी और सूअर की चरबी, प्रत्येक बत्तीस-बत्तीस माशे और जसर-सांडे नग १० लाकर रख लो।

बनाने की विधि—सब दवाओंको पीसकर; उसमें "जसर-साँडे" डालदो और चिकनी हाँडी में भर दो। हाँडीके तले में छेद करके, उसमें सींकें भरदो। छेद के नीचे कोई बर्तन रखदो। हाँड़ी के ऊपर से आरने कण्डों की आग दोगे, तो तेल टपकेगा। इस तेलको लगा कर, पान बाँधने से नामर्द मर्द होजाता है।

(५५) सफेद कनेर की छाल १॥ तोले, सफेद गुंजा ३॥ तोले, संखिया २ माशे और गायका दूध ४ सेर सब को तैयार रक्खो।

बनाने की विधि—दूध औटाकर, उस में तीनों दवायें पीस कर मिला दो और जामन देकर जमा दो। पीछे मथ कर "घी" निकाल लो। इस घीका लेप करके, सात दिन-रात बँगला पान बाँधो। इससे ढीलापन मिट जायगा और लिङ्गेन्द्रिय कड़ी हो जायगी, और हर समय खड़ी रहेगी।

५६ तिला नामर्दी।

१ पारा	४ तोले
२ गन्धक आमलासार	४ तोले
३ मालकाँगनी	४ तोले
४ अकरकरा	४ तोले
५ बीरबहूटी	४ तोले
६ सोंठ	४ तोले
७ जावित्री	४ तोले
८ कुचला	४ तोले
९ दालचीनी	४ तोले
१० कौड़िया लोबान	४ तोले
११ लौंग	४ तोले
१२ बच्छनाग विष	४ तोले
१३ तबकी हरताल	४ तोले
१४ जायफल	४ तोले
१५ जमालगोटा	४ तोले
१६ बुरादा हाँथी-दाँत	४ तोले
१७ भटकटैया	४ तोले
१८ सफेद चिरमिटी	४ तोले
१९ केंचुए सूखे	४ तोले
२० सफेद कनेरकी जड़	४ तोले

२१ खुरासानी अजवायन	...	...		४ तोले
१२ प्याज़के बीज	...	...	...	४ तोले
२२ सफेद संखिया	...	...	...	४ तोले
२३ इसबन्द	...	...	...	४ तोले
२४ अरण्डीके बीज	...	...	...	४ तोले
२५ काला ज़ीरा	...	...	...	४ तोले
२६ सिंहकी चरबी	...	...	...	४ तोले
२७ मुर्ग़ीके पाँच अण्डोंकी सफेदी				

बनाने की विधि—पहले पारे और गन्धककी खूब खरल करके, बिना चमकका काजलसा बना लो। इसके बाद नं० ३ माल काँगनीसे नं० २५ काला ज़ीरा तककी दवाओंको पीस-कूट कर कपड़े में छान लो। इसके बाद पारे-गंधक की कजली, दवाओंके छने हुए चूर्ण और चरबी तथा अण्डोंकी सफेदी को मिलाकर, १२ घण्टों तक, घोटो। घुट जाने पर, सारे लुगदे को एक आतिशी शीशीमें भर दो। शीशी पर सात कपड़-मिट्टी करके सुखालो। शीशीके मुँहमें तारोंके टुकड़े इस तरह भर दो, कि शीशी औंधी करने से मसाला न गिरे, पर तारोंके छेदोंमें होकर तेल टपक सके। अगर छेद न होंगे, तो तेल न टपकेगा और छेद चौड़े होंगे, तो मसाला गिर पड़ेगा। इतना काम हो जाने पर, एक नाँदमें, शीशीका चार अंगुल गला निकल जाय इतना, छेद कर दो और उसीमें शीशीकी नली को औंधी रखकर, शीशी के चारों ओर बालू गरम करके भर दो। शीशीके पेंदेपर भी बालू चार-चार अंगुल ऊँची रहे। बालूके ऊपरसे कण्डे जमाकर आग लगा दो। शीशीके मुँहको नीचे एक काँचके गिलासमें थोड़ा घुसादो और शीशी तथा गिलासकी सन्धियोंके बीचमें कपड़ा भिगो-भिगो कर ठूँस दो, ताकि साँस न रहे। आगकी तपत लगने से तेल नीचेके प्यालेमें टपकेगा। इसे एक शीशी में भर कर और काग लगाकर रख दो।

सेवन विधि—इस तेलको, सुपारी सीवन छोड़कर, बाकी लिङ्ग पर, ४० दिन तक, प्रायः आध घण्टे रोज़ मलो। ऊपरसे बंगला पान सेककर लपेट दो और कच्चा डोरा बाँधदो। ८ घण्टे बाद खोल डालो, पर खोलने के समय हवा मत लगने दो। शीतल जल से स्नान मत करो। इस तिले से २० सालका नामर्द भी मर्द हो जाता है। इसके सिवा, लिंगेन्द्रिय का दुबलापन, ढीलापन, बाँकापन, नीली-गीली नसोंका दीखना प्रभृति सभी विकार मिट जाते हैं। सौ में ९० रोगी इस तिलेसे चंगे होते हैं। परीक्षित है।

(१) सफेद सरसों, कड़वा कूट, बड़ी कटेरीका फल और असगन्धकी जड़—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पीस-कूटकर कपड़छन कर लो। इस में से चौथाई चूर्ण लेकर, पानी में मिला कर, लेप सा बनालो और सुपारी छोड़ बाकी लिङ्ग पर धीरे-धीरे मलो। जब लेप सूखने लगे, लेप को छुड़ाकर फेंक दो। दूसरे दिन फिर इसी तरह करो। चार दिन इस तरह करने से लिङ्ग पहले से बढ़ जायगा।

नोट—सफेद सरसों न मिले तो पीली ही ले लो।

(२) इक्कीस रोज़ तक रातको ताज़ा दूध लिङ्ग पर मलो। दूध मलने के बाद हर रोज़ सूखे केंचुओं का चूर्ण उस पर १ घण्टे तक मलो। पहले से लिङ्ग की मुटाई बढ़ जायगी।

(३) कायफल भैंसके दूध में पीस कर, लिङ्ग पर लेप कर दो और सारी रात ऊपर से पान बाँध रखो। सवेरेही गरम जल से धो लो। इस उपाय से २१ दिन में लिङ्ग मोटा हो जायगा।

(४) रीठे की छाल और अकरकरा समान-समान लेकर, तेज़ शराबमें खरल करो। पीछे सुपारी छोड़कर, शेष लिङ्गपर मलो। ऊपर से पान लपेट कर कच्चा डोरा बाँध दो। २१ दिन में लिङ्ग मोटा हो जायगा।

(५) नौ माशे इन्द्रजौ, भैंसके ताज़ा दूधमें भिगो कर, १२ घण्टे तक खरल करो और आग पर गरम करके, गुनगुना-गुनगुना लेप, सुपारी बचाकर, लिङ्ग पर करो। ऊपर से लिङ्ग पर कपड़ा लपेट दो और सो रहो। सवेरे ही गरम पानी से लिङ्गको धो डालो। रातको फिर उसी में से लेप लेकर गरम करो और गुनगुना-गुनगुना लगाकर कपड़ा बाँधकर सो रहो। सवेरे ही गरम पानी से धोलो। २१ या ३१ दिन इस तरह करने से लिङ्ग पहले से बड़ा, कड़ा और आनन्ददायी हो जाता है।

(६) उटंगन के बीज कूटकर कपड़े में छान लो। इसमें से कोई ६ माशे चूर्ण लेकर, जलमें पीसकर, गरम करलो और सुहाता-सुहाता लेप, सुपारी बचा कर, लिङ्ग पर करो। लेप सवेरे-शाम करो। नया लेप लगाने से पहले लिङ्गको गरम जलसे धोलो। २१ दिन में लिङ्ग लकड़ी-जैसा हो जायगा।

(७) समन्दरफेन, देवदारु, हल्दी, मुलहटी और शहद,—इन सब को दो दो माशे लेकर पीस लो और ऊपर से गधे का पेशाब डाल-डाल कर घोटो। घुट जाने पर, सुपारी बचा कर, लिङ्गपर इसका लेप करदो। इस लेप के २१, ३१ या ४१ दिन करने से इन्द्रिय निश्चयही बड़ी हो जाती है।

(८) "चक्रदत्त" में लिखा है—भिलावे, कूट, बड़ी कटेहली का फल, कमलिनी के पत्ते, सेंधानोन, नेत्रवाला, शूक और असगन्ध को

जड़—इन सबको पीस-कूट और छानकर "नौनी घी" में मिला कर, सात दिन तक लिङ्ग पर मलने और लगाने से लिङ्ग गधे का जैसा हो जाता है। लेकिन इस लेप के करने से पहले "भैंसके गोबर" का लेप लिंगपर करना चाहिये।

(९) चक्रदत्तमें ही लिखा है—असगन्ध, शतावर, कूट, बालछड़ और बड़ी कटेलीका फल—इन सबको सिलपर, पानीके साथ, पीसकर लुगदी बनालो। पीछे इस लुगदी को चौगुने दूध के साथ तिलोंका तेल डाल कर पकाओ। इस तेल के लिंगपर चुपड़ने या मलने से लिङ्ग, स्तन और कानकी पाली—ये बढ़ जाते हैं।

(१०) योगचिन्तामणिमें लिखा है—गोल मिर्च, सेंधानोन, पीपल, कटेरीका फल, ओंगा, तिल, कूट, जौ, उड़द, सरसों और असगन्ध—इन सब को पीस-कूट-कपड़छन करके और "शहद" में मिला कर लिङ्ग पर लेप करने से लिंग बढ़ कर घोड़ेके समान हो जाता है।

नोट—कूट, धायके फूल, बड़ी हरड़, फुलाई हुई फिटकरी, माजूफल, हाऊबेर, लोध और अनार की छाल—इन सब को कूट-पीस-छानकर, शराब में मिला कर, स्त्री की योनि में लेप करने से योनि छकड़ जाती है। योगचिन्तामणि।

(११) लौंग, समन्दरफल और नागर पानके रस में "वंगभस्म" घिसकर लिङ्ग पर लेप करने से लिङ्ग बढ़ जाता है। परीक्षित है।

धातुओंका शोधन मारण

अभ्रक-भस्म की विधि।

अभ्रक के भेद।

अभ्रक चार तरहकी होती हैं :—(१) सफ़ेद, (२) काली, (३) लाल, और (४) पीली। इन में से सफ़ेद और काली अभ्रक भस्म बनाने और खाने के काम में आती है। सफ़ेद और काली में भी, "काली अभ्रक" गुणों में सबसे उत्तम होती है, क्योंकि काली अभ्रक में पारा होता है और सफ़ेद में नहीं होता।

काली अभ्रक भी चार तरह की होती है—(१) पिनाक, (२) दर्दुर, (३) नाग, और (४) वज्र।

आग में डालने से जिस अभ्रक के पत्ते खिल जाते हैं, उसे "पिनाक" अभ्रक कहते हैं। जो अभ्रक आग में डालने से मेंडक के समान आवाज़ देती है, वही "दर्दुर" है। जो अभ्रक आग में डालने से फुङ्कार मारती है, वह "नाग" है। जिस अभ्रक का आग में डालने से रूपान्तर नहीं होता और आवाज़ भी नहीं होती, किन्तु जो ज़रा फूल जाती हैं, उसे "वज्र" कहते हैं। पिनाक, दर्दुर और नाग अभ्रक खाने से मृत्यु होती है।

दवा के लिए "काली वज्र अभ्रक" लेनी चाहिये, क्योंकि यह मृत्यु और बुढ़ापे का नाश करने वाली है।

अभ्रक को शोधना ज़रूरी है।

बिना शोधी अभ्रक कोढ़, क्षय, पीलिया, हृदय-पीड़ा, पसली का दर्द, देह का जकड़ना और मन्दाग्नि रोग पैदा करती है; अतः अभ्रक को बिना शोधे काम में न लाना चाहिये।

अभ्रक शोधने की तरकीब।

अभ्रक के टुकड़े को, कोयलों की तेज़ आगमें रखकर, खूब लाल करो। जब वह आगकी तरह लाल हो जाय, उसे "गायके दूध"में बुझा दो। इसके बाद, एक पत्थर की कूँडी में चौलाईका रस ३ भाग और नीबू का रस १ भाग मिलाकर रखदो। पीछे उसमें उस अभ्रक को दूध में से निकालकर डालदो और २४ घण्टे पड़ा रहने दो। दूसरे दिन, उसे साफ़ पानी में धोओ और हाथों से खूब मलो और, फिर धोओ। इसके बाद, उसके पत्ते अलग-अलग करलो; अब यह "धान्याभ्रक" करने के लायक़ होगा।

अभ्रक शोधने की और तरकीब।

पहले पत्थर की चार बड़ी-बड़ी कूँडियों में दूध, त्रिफलेका काढ़ा, काँज़ी और गोमूत्र—भर कर रख दो। कोयलों की आग पर अभ्रक को रखकर, अङ्गार के समान लाल करो। जब लाल हो जाय, उसे "दूध" में बुझा दो। फिर आग पर रख कर तपाओ, जब लाल हो जाय, दूध में बुझा दो। इस तरह सात बार आगमें लाल कर-करके, अभ्रक को दूध में बुझाओ। तब दूधका काम शेष हो जायगा। इसके बाद, फिर अभ्रक को तपाओ। जब लाल हो जाय, "त्रिफले के काढ़े" में बुझा दो। जब त्रिफले के काढ़े में भी सात बार बुझालो; तब फिर गरम कर-करके सात बार "काँजी"में और फिर गरम कर-करके सात बार "गोमूत्र"में बुझाओ। इस तरह २८ बार आग में गरम

करके, "दूध, त्रिफलाके काढ़े, कांजी और गोमूत्र"में बुझाने से अभ्रक शुद्ध हो जायगी। अब यह "धान्याभ्रक के योग्य" होगी।

धान्याभ्रक की विधि।

ऊपर की दोनों तरकीबों में से किसी तरह से शुद्ध की हुई अभ्रक को धूपमें फैलाकर सुखालो। सूखने पर, उसे खरलमें डालकर खूब घोटो, ताकि महीन हो जाय। घुटी हुई अभ्रक को तोल लो। जितनी अभ्रक हो, उसका चौथाई भाग "समूचे धान" लेलो। अभ्रक और धान दोनों को, एक कम्बल के टुकड़े में बांध कर, तीन दिन-रात अर्थात् ७२ घण्टों तक एक पानी के टब या बाल्टी या अन्य बर्तन में भीगने दो। चौथे दिन, उस पोटली को पानी में ही खूब मलो, जिस से सारी अभ्रक कम्बल के छेदों में से छन-छन कर पानी में गिर जाय। इस तरह मसलने से अभ्रक के कांकड़-पत्थर वगैरः खराब पदार्थ धानों के साथ कम्बल में रह जायँगे और अभ्रक पानी में चली जायगी। उस पानीको होशियारी से नितार कर बहादो, पर अभ्रक न जाने पावे ; जो अभ्रक मिले उसे धूप में सुखालो। यही "धान्याभ्रक" है। अब यह अभ्रक मारने या फूँकने के काम की हुई।

(१) नोट—शोधी हुई अभ्रकको आगपर तपाकर, बेरके काढ़े में बुझाओ और हाथ से मसलो। फिर सारा पानी निकालदो और अभ्रक को धूप में सुखालो। इस तरह तैयार की हुई अभ्रक धान्याभ्रक से भी अच्छी होती है। पर प्रायः सभी वैद्य अभ्रक का "धान्याभ्रक" करते हैं। याद रखो, छिलकों सहित चाँवलों को "धान" कहते हैं।

(२) नोट—अभ्रक मारने के लिये आप नीचे लिखी चीजें तैयार कर लें; तब काम शुरू करें :—

(१) आक का दूध।
(२) आक के पत्ते।
(३) बड़ की जटाओं का काढ़ा।
(४) सराइयों का जोड़ा।
(५) खरल।
(६) गज भर लम्बा-गहरा-चौड़ा खड्डा (७) आरने-जङ्गली कण्डे।

अभ्रक को मारने की तरकीब।

(१) धान्याभ्रक की हुई अभ्रक को साफ खरल में डाल कर, ऊपर से "आक का दूध" डाल-डाल कर खूब घोटो। घुटाई ३ घण्टे से कम न हो। तीन घण्टे बाद, उसकी गोल टिकिया सी बनाकर सुखालो। इसके बाद, उस टिकिया को आकके पत्तों में लपेट दो; यानी टिकिया पर आकके पत्ते लपेट कर डोरा बाँध दो। फिर उस टिकिया को एक मज़बूत सराई में रख कर, ऊपर से दूसरी सराई रख कर, दोनों की सन्धें मिला दो। सराइयों के ऊपर पाँच छः कपरौटी करदो; यानी मुल्तानी मिट्टी पानी में पीस कर, उसमें कपड़ा लूहेसकर, सराइयों की सन्धों पर चढ़ा दो। जब सन्ध ढक जायँ, सराइयों पर चारों ओर, वैसाही कपड़ा तीन-चार तह लपेट दो और सराइयों को सुखालो। इसके बाद गज़-भर गहरा, गज़-भर लम्बा और गज़-भर चौड़ा गड्ढा खोद कर, उसमें थोड़े जंगली आरने कण्डे नीचे भर दो। उन पर सराइयों को रखकर और कण्डे भर दो; पीछे आग लगादो। जब आग ठण्डी हो जाय, सराई निकाल लो और खोल कर, मसाले को खरल में डाल कर, "आकका दूध" दे-देकर फिर ३ घण्टे घोटो। घुटने पर गोल टिकिया बनाकर, उस पर "आकके पत्ते" लपेट दो और उसे सराई में रख कर, दूसरी सराई ऊपर रखकर, कपड़-मिट्टी करके सुखालो और उसी खड्डे में कण्डे डालकर, सराई रखकर, फिर ऊपर से कण्डे भरके फिर आग लगा दो। आग शीतल होने पर, सराई निकाल लो। सराइयोंसे मसाला निकाल कर खरल में डालो और आकके दूध से घोट कर टिकिया बनालो। उसे फिर आकके पत्तों से लपेट, सराई में रख, कपड़-मिट्टी कर सुखालो और पहले की तरह खड्डे में रखकर फूँक दो। मतलब यह है, कि इसी तरह आक के दूधमें घोट-घोटकर, उसे सात बार फूँको; तब एक काम हुआ समझो।

जब ऊपर की तरकीब से अभ्रक सात बार फुँक चुके ; तब

उसे निकाल कर, खरल में डाल कर, उसमें "बड़की जटाओंका काढ़ा" डाल-डाल कर ३ घंटे घोटो और टिकिया बनाकर सुखा लो। सूखने पर टिकिया को सराई में रख, ऊपर से दूसरी सराई रख, कपड़मिट्टी कर सुखालो और उसी खड्डे में फूँक दो। यह आठ आँच होगई। शीतल होने पर, फिर "बड़ की जटाके काढ़े" में घोट, टिकिया बना सुखालो और सराई में रख, कपड़-मिट्टी कर, उसी तरह फूँक दो। यह नौ आँच हुई। शीतल होने पर, मसाले को निकाल, फिर बड़की जटाओंके काढ़े में घोट, टिकिया बना, सुखा, सराई में रख, कपड़मिट्टी कर, उसी तरह उसी खड्डे में दसवीं बार फूँक दो। इस तरह, सात पुट आकके दूध के साथ और तीन पुट बड़की जटा के साथ देकर फूँकने से अभ्रक की "निश्चन्द्र भस्म" हो जायगी। इसे दश आँचकी अभ्रक कहते हैं।

अभ्रक से रोग-नाश ।

इस तरह यानी ऊपर की विधि से तैयार की हुई अभ्रक-भस्म उत्तम होती है। इस अभ्रकके अलग-अलग अनुपानों के साथ सेवन करने से समस्त रोग नाश होते और अकाल-मृत्यु दूर होती तथा बाल काले हो जाते हैं। यह अभ्रक जैसे अनुपानोंके साथ दी जाती है; वैसे ही रोग नाश करती है। शास्त्र में लिखा है:—

> अभ्रं कषायं मधुरं सुशीतमायुष्करं धातु विवर्द्धनं च।
> हन्यात्त्रिदोषं व्रणमेहकुष्ठं प्लीहोदरं ग्रन्थिविषं कृमींश्च ॥
> रोगान्हन्यात् दृढ़यति अपुर्वीर्यवृद्धिं विधत्ते।
> तारुण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव ॥
> दीर्घायुष्कान् जनयति सुतान् सिंहतुल्यप्रभावान्।
> मृत्योर्भीतिं हरति सुतरां सेव्यमानं मृताभ्रम् ॥

"अभ्रक-भस्म कषैली, मीठी, सुशीतल, उम्र बढ़ाने वाली, धातु बढ़ाने वाली; त्रिदोष, फोड़े, प्रमेह, तिल्ली, माँसकी गाँठ, विष और

कोढ़—इन को नाश करनेवाली, शरीर को पुष्ट करनेवाली और इतना वीर्य बढ़ानेवाली है, कि १०० स्त्रियों को नित्य भोगने की सामर्थ्य हो जाती है। इसके सेवन से सिंह के समान प्रभावान और दीर्घायु पुत्र होते हैं एवं मृत्युका भय नहीं रहता।" इस अमृत रूपी अभ्रक के, लगातार कितने ही बरसों तक, सेवन करने से ये फल हो सकते होंगे। हाँ, अभ्रक-भस्म अनेक रोग नाश करती है, इस में ज़रा भी शक नहीं।

अभ्रक-भस्म का अमृतीकरण।

मरी हुई अभ्रक-भस्मका अमृतीकरण कर लेना चाहिये। इस से गरमी निकल जाती है।

अभ्रक-भस्म जितनी हो उतनाही गायका घी लेकर, दोनों को साफ लोहे की छोटी कड़ाही में डाल कर, आग पर चढ़ा कर पकाओ। आग इतनी तेज़ लगाओ कि, घी जल उठे। जब घी सब सूख जाय, भस्म को निकाल लो। यह भस्म सब रोगों पर देने योग्य है।

उत्तम अभ्रक भस्मकी पहचान।

जो अभ्रकभस्म काजल-जैसी चिकनी और महीन तथा निश्चन्द्र हो ; यानी उसमें चमक न हो, वह अमृतके समान है। अगर सचन्द्र हो; यानी उसमें चमक हो, तो वह विषकी तरह प्राण-नाशक और रोग पैदा करने वाली है।

नोट—१००० आँचकी अभ्रक-भस्म से जो लाभ होते हैं, सौ आँचवाली से नहीं होते; फिर भी १०० आँचवाली या १० आँचवाली से उपरोक्त रोग और अनेक रोग नाश हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं। वह सन्निपात रोगी जो खतम होगया है, जिस का गला रुक गया है, जो बोल नहीं सकता, उसे यदि १००० आँच की अभ्रक की मात्रा दी जाय, तो एक बार बोलेगा और जरूरी बातें बता देगा। हमने अभ्रक-भस्म बनाने की विधि बहुतही अच्छी तरह समझा-समझाकर लिख दी है। अफसोस है, कि हजार आंच वाली की विधि हम इस भाग में न लिख सके; किसी अगले भाग में लिखेंगे।

सावधानी—इसकी मात्रा एक रत्ती से चार रत्ती तक है। रोगी की उम्र, बला-बल, ऋतु, देश प्रभृति का विचार करके मात्रा और अनुपान देना चाहिये। ४ रत्ती से जियादा मात्रा किसी को भी न देनी चाहिये। अनुपान हमने लिख दिये हैं; अब रही तोलकी बात, सो देने या लेनेवाले बलाबल, काल और देश आदि का विचार करके अनुपान की तोल मुकर्रर कर सकते हैं।

अभ्रक-भस्म की दूसरी विधि।

काली अभ्रक को शोधलो, फिर धान्याभ्रक करलो। इसके बाद उसके दो तोले चूरे को घोट कर, एक-दम महीन मैदासा कर लो। फिर काले "कुकरौंधेके स्वरस" में ३ घण्टे या जब तक चमक न मिट जाय घोटो। फिर २ तोले की टिकिया बना कर सुखा लो। फिर भंग को, सिल पर, जल के साथ, काजल-जैसी महीन पीस कर, उस टिकिया पर उसका काग़ज़-जैसा पतला लेप कर दो और फिर सुखा लो।

फिर एक सराई में नीचे "आकका पत्ता" रखकर, उसपर टिकिया रख दो और ऊपर से फिर एक आकका पत्ता रख दो। पत्ता रख कर दूसरी सराई से ढक दो, पर शराव-सम्पुट की तरह जोड-बन्द मत करो। एक गज़ गहरे-लम्बे-चौड़े खड्डे में कण्डे भर कर, बीचमें ढक्कन-समेत सराई रख कर आग लगा दो। आग शीतल होने पर, सराई निकाल लो। अगर आप खड्डे पर एक लोहे की ऐसी चादर ढकदें, जिसके बीचमें हाथ चला जाय जितना छेद हो, तो और भी अच्छा हो; आग बँधकर लगेगी, छेद से धूआँ निकलेगी और हवा भीतर जायगी, जिससे आग न बुझेगी। यह भस्म १००० आँचकी अभ्रकके समान ही गुणकारी होगी।

नोट—काले कुकरौंधेके काली डंडी होती है।

१०० आँच की या शतपुटी अभ्रक भस्म।

याद रखो; निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म १० आँचकी अच्छी और सर्व-रोग नाशक होती है; पर १०० आँचकी या शतपुटी अभ्रक-भस्म

१० आँचवाली से बहुत बढ़िया होती है और १००० आँचकी या सहस्रपुटी अभ्रक-भस्म १०० आँचवाली से अच्छी होती है ।

अगर १०० आँचकी शतपुटी अभ्रक-भस्म बनानी हो, तो अभ्रकको पहले "आकके दूध"में ७ बार खरल करके, सात बार गजपूट में फूँक दो; फिर तीन बार "बड़ की जटाके काढ़े" में खरल कर-करके, तीन बार गजपुटमें फूँक दो । इस तरह जब दस आँच लग जायँ ; ११ वीं बार, "घीग्वारके रस" में खरल करके, टिकिया बनाकर सुखा लो । फिर सराई में रखकर, ऊपर से दूसरी सराई धर कर, कपड़-मिट्टी करके, उसी खड्डे या गजपुट में फूँक दो । फिर निकाल कर, घीग्वारके रस में खरल करके, टिकिया बना कर सुखा लो और सराव-सम्पुट यानी सराई में रख, ऊपर से दूसरी सराई रख, कपड़-मिट्टी कर, गजपुट या उसी खड्डे में फूँक दो । इस तरह सात बार आकके दूध में, तीनबार बड़ की जटाके काढ़े में और नब्बे बार घीग्वार के रस में खरल कर-करके; यानी कुल १०० बार खरल कर-करके, प्रत्येक बार गजपुट में फूँको; तब १०० आँच की अभ्रक-भस्म तैयार हो जायगी ।

अभ्रक का सत्व ।

अभ्रकके चूर्ण को एक दिन काँजी में रखो और एक दिन ज़मीकन्द या सूरन के रस में रखो । इसके बाद, केलेकी जड़के रस में भावना दो । पीछे टाकन खार—सुहागा और चुद्रमत्स्य चौथाई भाग मिलाकर, भैंसके गोबरमें मुठिया बना कर, खपरे पर रख कर, खपरे को चूल्हे पर चढ़ा कर खूब आग लगाओ । इस तरह "सत्व" निकल आवेगा ।

उस सत्वको एकत्र करके, उसमें "मित्र पञ्चक" यानी घी, शहद, सुहागा, गूगल और चिरमिटी पीस कर मिला दो और सबको मूस या घरिया में रखकर, आग पर रख दो । इस तरह जंजीर सी बन

जायगी । यह सत्व पारा जारण करने के काम में आता है और बड़ा गुणकारी होता है।

यह अभ्रक-सत्व रसायन, त्रिदोष-नाशक, नामर्दी-नाशक और उम्र बढ़ानेवाला है। इसके समान संसार में और दवा नहीं है।

अभ्रक द्रावण ।

धान्याभ्रक को पहले "अगस्तके रस" में खरल करो। फिर "सूरन" के बीच में रख कर, ऊपर से मिट्टी लहसकर, ऐसी ज़मीन में जहाँ पशु रहते हों; एक हाथ गहरा-लम्बा-चौड़ा खड्डा खोदकर, उसे रख दो और ऊपर से मिट्टी जमा दो। एक महीने तक मत देखो। अगर भाग्य अच्छा होगा, तो महीने-भर बाद पारे-जैसा पदार्थ मिलेगा।

अभ्रक मारने की और तरकीबें ।

दूसरी विधि ।

धान्याभ्रक करके, जिसकी विधि ऊपर लिख आये हैं, अभ्रक के चूरे को (१) नागवला, (२) भद्रमोथा, (३) बड़के दूध या जटाओंके काढ़े, (४) हल्दी के पानी, और (५) मंजीठ के काढ़े में भावना देकर, सराव-सम्पुट में बन्द करके, गजपुट में फूँक दो; यानी अभ्रक में पहले नागवला की भावना देकर टिकिया बनालो और सुखा लो, फिर सराई में रख कर, ऊपर से दूसरी सराई रख कर, कपड़-मिट्टी करके, गड्ढे में सराई रख कर आग लगा दो। शीतल होने पर, अभ्रक को निकाल कर भद्रमोथे की भावना दो या घोटो और टिकिया बना, सराई में बन्द कर फूँक दो। इसके बाद बड़के दूधकी भावना देकर, और वही सब काम करके फूँक दो। इस के भी बाद, हल्दीके पानीकी भावना देकर और वही सब काम करके फूँक दो। इसके बाद, मजीठके काढ़े की भावना देकर फूँक दो। ऐसा न करना, कि पाँचों को पहले भावना दे लो और फिर फूँको; बल्कि प्रत्येक चीज़की क्रम-क्रमसे भावना दे-देकर फूँको। इस तरह

भावनायें दे-दे कर, अच्छी तरह गजपुट में फूँकने से "लाल रंग की" उत्तम अभ्रक-भस्म तैयार होती है ।

नोट—दो सराइयों (सरावा भी कहते हैं) या शकोरों के बीच में, अच्छी तरह पकाने के लिये, दवा को रखते हैं और फिर उन दोनों की सन्धों को मुद्रा से यानी मुल्तानी मिट्टी में लहेसे कपड़ों से बन्द कर देते हैं । इसीको "सराव सम्पुट" कहते हैं ।

डेढ़ हाथ या गजभर लम्बे, उतने ही गहरे और उतने ही चौड़े गढ्ढे को "गजपुट" कहते हैं ।

तीसरी विधि ।

धान्याभ्रक एक हिस्सा और सुहागा दो हिस्सा लेकर मिलालो और खरल में घोट कर, अन्धमूष में रख कर, खूब तेज़ आग लगा कर पकाओ । इसके बाद निकाल कर, फिर खरल में डालो और दूध देदे कर खरल करो और टिकिया बना कर सुखा लो । टिकिया को, ऊपर कही तरकीबसे, दो सराइयों में बन्द करके, उन पर कपड़-मिट्टी करके, सराइयों को गजपुट या पहले लिखे-जैसे खड्डे में रख कर, कण्डे डाल कर आग लगा दो और शीतल होने पर निकाल लो । इस तरकीब से निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म तैयार हो जायगी । यह भस्म तासीरमें शीतल होती है, अतः प्रत्येक रोग में दी जा सकती है ।

अभ्रक सेवन के लिये अनुपान और मात्रा ।

मात्रा—अभ्रक-भस्मकी मात्रा जवानके लिए साधारणतया दो रत्ती की है । बलवानको चार रत्ती की मात्रा है । कमज़ोर को एक रत्ती की मात्रा है ।

अनुपान—

(१) धातु-वृद्धिके लिए लौंग और शहदके साथ "अभ्रक" खाओ ।

(२) धातु-स्तम्भनको भाँगके साथ "अभ्रक" खाओ ।

(३) धातु-पुष्टिके लिए शहद और घी या त्रिफला के चूर्णके साथ खाओ ।

(४) धातु बढ़ानेको सोने और चाँदीके वर्कमें, पानके साथ, अथवा केवल चाँदीके वर्कमें ।

(५) वीर्य बढ़ानेको बायबिडंग, सोंठ, मिर्च, और पीपरके चूर्णमें ।

(६) प्रमेह नाशार्थ—गिलोय और मिश्रीके साथ ।

(७) सर्वप्रमेह नाशार्थ—शहद, पीपर और शिलाजीतमें ।

(८) प्रमेह में इलायची, गोखरू, भुइँ-आमले, मिश्री और गायके दूध में ।

(९) प्रमेहमें बायबिडंग, सोंठ मिर्च और पीपरके चूर्णके साथ ।

(१०) क्षय रोगमें सोनेके वर्क में ।

(११) रक्तपित्तमें इलायची और मिश्रीके साथ या छोटी हरड़ और गुड़ में ।

(१२) मूत्रकृच्छ्रमें इलायची, गोखरू, भुइँ आमले, मिश्री और गायके दूधमें

(१३) नेत्ररोगमें त्रिफलेके चूर्ण या घी और शहदमें ।

(१४) बवासीरमें शुद्ध भिलावोंके साथ ।

(१५) पाण्डुरोगमें बायबिडंग, सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णमें ।

(१६) पाण्डु रोग में, त्रिफला, त्रिकुटा, चतुर्जात, मिश्री और शहद में ।

(१७) बवासीरमें त्रिकुटा, त्रिफला, चतुर्जात, मिश्री और शहद में ।

(१८) क्षयमें त्रिकुटा, त्रिफला, चतुर्जात, मिश्री और शहदमें ।

(१९) क्षयमें बायबिडंग, सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णमें ।

(२०) जीर्णज्वरमें शहद और पीपरके साथ ।

(२१) वायुरोगमें सोंठ, पोहकरमूल, भारंगीकी जड़, असगन्ध और मधु में ।

(२२) कफकेरोगोंमें, कायफल, पीपर और मधुमें ।

(२३) पित्तके रोगोंमें गायके दूध और मिश्रीमें ।

(२४) जठराग्नि तेज करनेको सब चारोंके साथ।

(२५) मूत्रकृच्छ्र या मूत्राघातमें सब चारोंके साथ।

(२६) संग्रहणीमें बायविडंग, सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णमें।

(२७) शूलमें " " " "

(२८) आममें " " " "

(२९) कोढ़में " " " "

(३०) श्वासमें " " " "

(३१) खाँसीमें " " " "

(३२) अरुचिमें " " " "

(३३) मन्दाग्निमें " " " "

(३४) समस्त उदर रोगोंमें " " "

(३५) बुद्धि बढ़ानेको " " " "

(३६) प्रमेहमें शहद और पीपलके चूर्णके साथ खाओ।

(३७) श्वासमें " " "

(३८) विषरोग में " " "

(३९) कोढ़ में " " "

(४०) वायु-रोगों में " " "

(४१) पित्तके रोगों में " " "

(४२) कफके रोगों में " " "

(४३) कफक्षय में " " "

(४४) संग्रहणी में " " "

(४५) पाण्डुरोग में " " "

(४६) भ्रम में " " "

(४७) वीर्य और उम्र बढ़ाने को—लौंगों के चूर्ण और मधु के साथ।

(४८) रक्त-विकारमें घी के साथ।

(४९) पाँचों प्रकारके श्वासों में घीके साथ।

(५०) क्षयमें घी के साथ।

(५१) १३ सन्निपातों में अदरख के रस और पीपलके चूर्णके साथ।

(५२) साङ्गिज्वर ज्वरमें पीपल और शहद में।

(५३) विषम ज्वर, हड्डीके पुराने ज्वर और दाहज्वर में पीपल, बड़ी इलायची और शहद में।

(५४) वात ज्वर में मिश्री और पीपलके साथ।

(५५) वातरोग, कफरोग, मुखशोष, जड़ता और अरुचिमें मातलिंगीके बीज, केशर, सेंधानोन और गोलमिर्च में।

(५६) पित्तज्वरमें धनिया, छोटी इलायची और मिश्री में।

(५७) कफ ज्वरमें अदरख, गोल मिर्च और शहद में।

(५८) सब तरह के ज्वरों में तुलसी के पत्तों के रस और पीपलके चूर्ण में।

(५९) चौथैया ज्वर में गायके दूध और त्रिफलाके चूर्णके साथ।

(६०) सर्वज्वरों में पीपर, सोंठ और गदहपूर्ना की जड़के साथ।

(६१) आठों उदर रोगोंमें सोंठ और गदापूर्णा की जड़के साथ।

(६२) अतिसारों में गाल और मिश्री के साथ।

(६३) अतिसारों में बड़के अंकुरों के साथ।

(६४) रक्तातिसार में बकरी के औटाये हुए दूध में, शीतल होने पर, शहद मिलाकर

(६५) सर्वातिसारमें अनारदाने और शहदके साथ।

(६६) आमातिसार में सोंठ और घी के साथ।

(६७) सोज़ाक, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातमें गन्दे बिरोज़ेका सत्त, छोटी इलायची और मिश्री प्रत्येक तीन-तीन तोले एवं शुद्ध कपूर ६ माशे—इन सबके चूर्ण में से ६ माशे चूर्ण लेकर उसमें २ रत्ती "अभ्रक भस्म" मिला लो और खाओ। इस तरह सोज़ाक, मूत्रकृच्छ्र, कड़क-जलन और पेशाब में खून गिरना,—ये सब नाश हो जाते हैं।

(६८) खूनी बवासीर में बड़ी गोदनदूधी, बड़ी इलायची और गोलमिर्च को पानी में पीस-छान कर दो रत्ती अभ्रकभस्म मिला कर पीओ ।

(६९) दस्तों में „ „ „

(७०) कलेजेकी गरमीमें „ „ „

(७१) कलेजे की जलन, प्यास और पेशाब की जलन में पीपल के पेड़की छाल और गोल मिर्च को पीस कर जलमें छान लो और "अभ्रक भस्म" दो रत्ती मिलाकर पीओ ।

(७२) बिच्छू प्रभृति के विष में भाँगके चूर्ण और घी में मिला कर खाओ ।

(७३) उन्मादमें बचके चूर्णमें "अभ्रकभस्म" मिलाकर ऊपर से गायका दूध पीओ ।

(७४) अपस्मार या मिरगीमें „ „ „

(७५) वात-वेदना में „ „ „

(७६) सिर-दर्द में पुराने घी में "अभ्रक भस्म" मिलाकर खाओ ।

(७७) उदर-पीड़ा में „ „ „

(७८) नेत्र-पीड़ा में „ „ „

(७९) श्वास-खाँसी में अदरखके रस, पीपलके चूर्ण और शहद में मिलाकर अभ्रक-भस्म खाओ ।

(८०) उपदंश में कंटकारी की जड़ और गोलमिर्चों के साथ अभ्रक खाओ । अपथ्य—नोन । पथ्य पालन बहुत ज़रूरी है ।

(८१) मासिक खून का ज़ोर से बहना रोकने को चौलाई की जड़ और पीपल वृक्ष की छालको चाँवलों के धोवन में पीस कर छान लो और शहद में मिला कर अभ्रक चाट जाओ । ऊपर से यही पानी पीओ । मासिक खून का नदी की तरह बहना बन्द हो जायगा ।

(८२) समस्त प्रदर रोगों में „ „ „

(८३) सोम रोग में „ „ „

वंगभस्म की विधि

भस्मके लिए राँगा कैसा लेना ?

वंग राँगे का दूसरा नाम है। राँगा दो तरह का होता है:—(१) हिरन खुरी या खुरक, और (२) मिश्रक।

दूकानदारों के यहां दोनों तरह के राँगे होते हैं। हिरनखुरी पशु के से खुरके रूप में होता है। यह नरम, चिकना और रंग में सफेद होता है। इसको मोड़ने से आवाज़ नहीं होती और गल भी जल्दी जाता है, यही इसकी पहचान है। मिश्रक राँगके लक्षण ऐसे नहीं होते। फूँकने और दवा बनाने के लिए हिरनखुरी राँगा ही अच्छा होता है। राँगे में बहुत से दूषित पदार्थ मिले रहते हैं। उनसे राँगेको अलग करने के लिये उसे शोधते हैं। शोधने से राँगा निर्दोष हो जाता है। अशुद्ध राँगा रोग करता है, अतः जब "वंगभस्म" बनानी हो, पहले हिरन-खुरी राँगे को शोध लो।

राँगा शोधने की तरकीब।

एक हाथ लम्बे और इतने ही चौड़े भारी पत्थर में, एक पैसा जाय उतना चौड़ा छेद करालो। छेद के चारों तरफ, ज़रा-ज़रा पत्थर छिलवा कर ऐसी ढाल करा लो, जो पानी भी डाला जाय तो बह कर छेद में ही चला जाय। एक कलछा लोहेका लाओ, जिस में १ सेर पानी तक भर जाय। उस कलछे की डंडी तीन हाथ लम्बी हो। उस डंडी के बीच में लकड़ी का या बाँसका बेंटा लगवा लो; क्योंकि राँगा गलाते समय कलछा तपने लगेगा। कलछे को हाथ में

लेने से हाथ जलेंगे। अगर समय पर कलछे में लकड़ीका बेंटा न हो, तो कपड़े लपेट लो। चूल्हा या अँगीठी ऐसी रखो, जिसमें तेज़ आग रहे। पत्थरके कोयलों का चूल्हा या अँगीठी इस काम को ठीक होती है। ऐसा चूल्हा सब काम देता है। हिरनखुरी राँगा, कलछा, छेदवाला पत्थर, चीनीका गहरा टीनपाट और चूल्हा—इन की राँगा शोधने के समय ज़रूरत होती है। इनके सिवा, जिन चीज़ों में राँगा शोधा जाता है, उनकी दरकार होती है। उनके नाम ये हैं—(१) सरसों का तेल, (२) माठा, (३) काँजी, (४) गोमूत्र, (५) कुल्थी का काढ़ा, (६) हल्दीका काढ़ा, और (७) आक या मदार का दूध। अब रही यह बात, कि ये कितने-कितने रखने चाहियें, यह बात बताना कठिन है। यह राँगेके वज़न पर मुनहसिर है, जितनेमें गला हुआ राँगा डूब जाय, उतने ही तेल माठे आदि लेने चाहिएँ। एक पाव राँगेको ये सब आध-आध सेर काफी होंगे।

शोधन आरंभ।

राँगेको कलछे में रखकर, जलते चूल्हे पर रख दो। उसकी डंडी को जहाँ बेंटा या कपड़ा है वहाँ से पकड़ लो या उसे किसी ऐसी चीज़ पर रख दो जो चूल्हे के समान ऊँची हो, जिस पर रखने से राँगा कलछे से गिर न जाय। थोड़ी देरमें राँगा गल जायगा। उसपर मलाई सी आवेगी। उसे कौंचेसे हटाकर किनारे कर दो और अलग रख दो। जब राँगा पानी सा हो जाय, चीनीके टीनपाट पर वही पत्थर इस तरह रख दो, कि छेद टीन-पाटके बीचमें रहे। टीन-पाटमें तेल भर दो। कलछेको पकड़ कर, धीरे से राँगेको उस छेदमें डाल दो। इसके बाद, पत्थरको हटाकर, राँगे को निकालकर, फिर कलछे में रखो और पहलेकी तरह आगपर रखकर गलाओ। जब गल जाय, फिर कलछा पकड़कर, राँगेको उसी तेलके टीनपाटमें डाल दो। हर बार राँगा निकालकर, टीनपाट पर पत्थर पहले ही रख दो। फिर

उसमें से राँगेको निकालकर, कलछेमें रखकर गलाओ। जब पानी हो जाय, उसी तरह तेल से भरे टीन-पाटमें—पत्थरके छेदमें होकर—राँगेको तेलमें छोड़ दो। जब इस तरह ३ बार "कड़वे तेल" में राँगे को बुझा चुको, तब इसी तरह राँगेको गला-गलाकर तीन-तीन बार माठे, काँजी, गोमूत्र, कुलथी-क्वाथ, हल्दीके काढ़े और आक के दूधमें बुझाओ। २१ बार गलाकर, इनमें तीन-तीन बार बुझाने से राँगा शुद्ध हो जायगा। यही शुद्ध राँगा-भस्म बनाने लायक़ होगा।

नोट (१)—राँगा तेल, माठा इत्यादिमें पिघलाकर डालने से ऊपर उछलता है; इसीसे छेददार भारी पत्थर वर्तनपर रखते हैं। पत्थरके छेदमें होकर डालनेसे, शोधने वालेके शरीरको तकलीफ नहीं हो सकती। अगर पत्थर न रखा जाय, तो शोधकके आँख नाकको राँगा नष्ट कर सकता है। तेलके सिवा, सबमें पत्थरकी दरकार है। क्योंकि राँगा सबमें उछलता है। जिसमें भी गोमूत्रमें तो बहुतही उछलता है। भटा-भट का शब्द हरवार करता है। इस तरह पत्थर रखकर बुझाने से ज़रा भी भय नहीं है।

नोट (२)—कोई राँगेको गला-गलाकर त्रिफले के काढ़े, तेल, काँजी, माठा, गोमूत्र और आकके दूधमें सात-सात वार बुझाते हैं। अगर कहीं कुलथी प्रभृति कोई चीज न मिले, तो इस तरह भी राँगा शोधा जा सकता है। कोई भेद नहीं है। हम ने ऊपरकी विधिसे बहुत बार शोधा है; इसीसे वह विधि पहले लिखी है।

बिना शोधे राँगेके दोष।

बिना शोधा हुआ राँगा फूँक कर खाया जाय, तो आक्षेपकवात, कम्पवात, गुल्म, किलासकोढ़, शूल-दर्द, वातसम्बन्धी सूजन, पाण्डु, प्रमेह, भगन्दर, विषके जैसे भयंकर खून-विकारके रोग, क्षय, मूत्र-कृच्छ्र, कफज्वर, पथरी, विद्रधि और फोतोंके रोग पैदा करता है। बिना शोधा हुआ "शीशा" भी यही सब रोग करता है।

"रसायन सार" कर्त्ता स्वर्गवासी पं० श्यामसुन्दर आचार्य वैश्य महोदय लिखते हैं—

शुद्धहीनं मृतेहीनं बङ्गं यः सेवते नरः।
पाण्डुमेहाऽपचीगुल्माऽनिलरक्तादिमान्भवेत्॥

जिस बंगका शोधन और मारण अच्छी तरह नहीं किया जाता, वह बंगभस्म खाने से पाण्डुरोग, प्रमेह, अपची रोग, गोला और वातरक्त आदि अनेक रोग करती है ।

अशुद्ध बंग-भस्म के विकारों की शान्ति का उपाय ।

अगर कोई ग़लती से अशुद्ध या कच्ची बंग खाले और ऊपरकेरोग हो जायँ, तो उसे तीन दिनतक मिश्रीके साथ मेढ़ासिंगी खानी चाहिये । इस नुसख़े से ख़राब बंगके दोष नष्ट हो जायँगे ।

बंग-भस्म के गुण ।

बङ्गं लघु सरं रुक्षं कुष्ठम मेह कफ कृमीन् ।
निहन्ति पाण्डु सश्वासं नेत्रमीषत्तु पित्तलम ॥
सिंहो गजौघं तु यथा निहन्ति तथैव बङ्गो अखिल मेहवर्गम् ।
देहस्य सौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वं नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ॥

बंगभस्म—हल्की, दस्तावर, रूखी, आँखों को हितकारी, किसी क़दर पित्तकारक एवं कोढ़, प्रमेह, कफ, कीड़े, पीलिया और श्वासको नाश करने वाली है। सिंह जिस तरह हाथियों के झुण्ड को मार भगाता है; बंग उसी तरह समस्त प्रमेहों को मार भगाती है। बंग देह में सुख करती, इन्द्रियों को बलवान करती और निश्चय ही पुष्टि करती है ।

राँगा मारने की तरकीब ।

पहली विधि ।

(१) शोधा हुआ राँगा आध पाव लेकर, एक मिट्टीके ठीकरे या खपरे पर रखकर तेज़ आग के चूल्हे पर गलाओ। जब गल जाय, दो तोला "कलमीशोरा" पिसा हुआ, उस गले हुए राँगे पर डाल कर, छुरी या कलछी से चलाओ । जब राँगा और शोरा दोनों मिलकर कीच-जैसे हो जायँ, तब दो तोला कलमी शोरा फिर डाल दो और छुरी से चलाते रहो । छुरी या कलछी से रगड़ना बन्द मत करो ।

जब फिर शोरा और राँगा मिलकर कीच से हो जायँ, फिर २ तोला शोरा डाल दो और रगड़ो। इस तरह ६ दफा, दो-दो तोले कलमी-शोरा डालो और रगड़ो। जब छठी बार शोरा डालने पर राँगा और शोरा फिर कीच से हो जायँ और शोरा मत डालो। उस समय चूल्हे में खूब लकड़ी लगा कर, आग को तेज़ कर दो। जब ठीकरे पर आग जल उठे, जिस तरह कभी-कभी कड़ाही या तवे पर घी जल उठता है, तब ज़रा देखते रहो। ज्योंही ठीकरे के ऊपर की आग जल कर बुझ जाय, आप ठीकरे को आग से नीचे उतार लो।

ठीकरे को नीचे उतारने पर आप देखेंगे, कि राँगा ठीकरे में चिपट गया है। उसे आप छुरी या चाकू से खुरच-खुरच कर एक प्याले में रखते जाओ। जब सब राँगा खुरच लो, उसे सिल पर डाल कर महीन पीसो। पीछे एक बड़े प्याले में पानी भर कर, उसीमें पीसे हुए राख-जैसे राँगे को घोल दो और १ घण्टे-भर मत छेड़ो। सारा राँगा नीचे बैठ जायगा। तब आप ऊपर के पानी और मलाई सी को नितार कर फेंक दो, पर राँगा न जाने पावे। इसलिये अच्छा हो, आप प्याले का पानी एक थाली में नितारो। अगर राँगा चलाभी जायगा, तो आप फिर उठा ले सकेंगे। जब एक बार प्याले का पानी फेंक दो, तब फिर प्याले में पानी भर कर घोल दो। कुछ देर होने पर जब राँगा नीचे बैठ जाय, फिर पानी निकाल दो। तीसरी बार फिर प्याले में पानी भर कर घोल दो और कुछ देर बाद पानी निकाल दो। इस बार प्याले में आपको राँगे की सफेद भस्म मिलेगी, उसे आप एक थाली में फैलाकर धूप में सुखा लो। अब यह राँगा फूँकने लायक होगा।

नोट—कलछी से चलाने पर राँगा कलछी से चिपट जाता है; यह ठीक नहीं; इस लिये छुरी से चलाना और रगड़ना ठीक होगा। अगर हिमामदस्ते की मूसली के पेंदे-जैसी कोई हलकी, पर नीचे से रुपये से जरा अधिक चौड़ी चीज बन वाली जाय और उसीसे शोरा डालकर राँगा रगड़ा जाय, तो सुभीता होगा। छुरी

बार शोरा डालने के बाद, आग तेज करने से आग लगती है और उसका ठीकरे पर लगना जरूरी है। अगर आग न लगे, तो आप जलती लकड़ी जरा शोरेको दिखा दें, फौरन आग लग उठेगी और राँगे की सफेद खीलसी ठीकरे पर जम जायेंगी।

मरे हुए राँगे को फूकने की तरकीब।

यह मरा हुआ राँगा जितना तोल में हो, उतनी ही शुद्ध तपकी हरताल लो। फिर दोनों को खरल में डाल कर, कागज़ी नीबूओं का रस दे-देकर तीन घण्टों तक लगातार खरल करो। जब कुछ खुश्क हो जाय, तब एक गोला बनाकर, उसे एक बड़ी सी मिट्टीकी सराई में रखो। ऊपर से दूसरी सराई रखकर सन्ध मिला दो। इस के बाद, उन सराइयों पर चार पाँच बार कपड़-मिट्टी करो और सराइयों को सुखा दो।

गज़भर गहरा, गज़भर लम्बा और उतनाही चौड़ा गढ़ा ज़मीन में खोदो। उस में थोड़े आरने कण्डे भर कर, उन पर ऊपर की सूखी हुई सराइयाँ अथवा सराव-सम्पुट रख दो। फिर कण्डे ऊपर तक भर दो और आग लगा दो। जब स्वाँग शीतल हो जाय; यानी आग ठण्डी पड़ जाय, तब सराइयों को निकाल लो और जोड़ तथा कपरौटी खोलकर, भस्म को निकाल लो।

इस एक बार फूँकी हुई राँगा भस्म को खरल में डालकर, ऊपर से इसका दसवाँ भाग शुद्ध तपकी हरताल डाल-कर, पहलेकी तरह, नीबूओं का रस डाल-डाल कर घोटो। घुट जाने पर, गोला बना लो और सराइयों में रख, कपड़-मिट्टी कर सुखा लो। सूखने पर पहले की तरह गढ़े में कण्डे भर कर, बीचमें सराई रखकर आग लगा दो। आग ठण्डी पड़ने पर, सराई निकाल कर खोल लो और राँगा भस्म निकाल लो।

अब तीसरी बार भी ऊपर की तरह राँगेका दशवाँ भाग शुद्ध तपकी हरताल लेकर, दोनोंको खरल में नीबूओं के रसके साथ

खरल करो। फिर गोला सा बना, सराई में रख, कपरौटी कर सुखा लो और उसी गड्ढे में आरने कण्डे भर, बीचमें सराई रख आग लगा दो।

चौथी बार बंग भस्मको निकाल कर, फिर दशवाँ भाग हरताल डालकर नीबूके रस से घोटो और सराई में रख, बन्द कर, उसी तरह कण्डे भरकर फूँक दो। यह चार आग हो गईं। आप इसी तरह छ बार और करें। हरबार दसवाँ भाग हरताल मिलावें। केवल पहली बार राँगके वज़नके बराबर हरताल डाली जाती है। दूसरी बारसे राँगे के वज़नका दसवाँ भाग हरताल डाली जाती है। इस तरह दस बार हरताल के साथ मरे हुए राँगे को नीबू के रस में घोट-घोट कर, सराई में रख-रखकर, उसी तरहके गड्ढे में दस बार फूँकने से निरुत्थ भस्म हो जायगी; यानी वह "मित्र पञ्चक" से भी न जीयेगी। निरुत्थ भस्म ही खाने योग्य होती है। कच्ची भस्म भयानक रोग करती है।

वंग भस्म की परीक्षा।

धातु के कच्चे-पक्के पनको परीक्षा "मित्र पञ्चक" से होती है। घी, शहद, सुहागा, चिरमिटी और गूगल—इन पाँचोंको "मित्र पञ्चक" कहते हैं। जिस तैयार की हुई धातु-भस्म की परीक्षा करनी हो, उसमें से कुछ लेकर, उसके बराबर ही तोल में घी, शहद, सुहागा प्रभृति पाँचों लेलो। सब को एक में मिलाकर, एक मूष या कलछी में रख लो और कोयलों की तेज़ आग पर रख कर आग लगाओ। अगर आपकी बनाई भस्म कच्ची होगी, निरुत्थ न होगी, तो इस तरह करने से जी उठेगी; यानी फिर उसी रूप में परिणत हो जायगी। जैसे—राँगा भस्म को मित्र पञ्चक के साथ मिलाकर, मूष या कलछी में रखकर, नीचे से आग दो। यदि राँगा भस्म कच्ची होगी, तो उस राँगा-भस्म का फिर राँगा हो जायगा।

कच्ची भस्म को फिर भस्म करने की विधि ।

अगर आपकी बनाई हुई भस्म निरुत्थ न हो—कच्ची हो, तो निराश मत हो। आप सारी भस्म के बराबर शोधी हुई आमलासार-गंधक उसमें मिलाकर खरल में डालो और "घीग्वारका रस" ऊपर से डाल-डालकर १२ घण्टे तक खरल करो। जब गोला बनाने योग्य हो जाय, उसका गोला बनाकर, उसे ऊपर की तरकीब से सराई में रख, दूसरी सराई उस पर औंधी मार, चार कपरौटी करके सुखालो। फिर उसे उसी गज़-भर गहरे-लम्बे-चौड़े गड्ढे में, आरने कण्डों के बीच में रख आग लगा दो। आग शीतल होने पर निकाल लो। इसबार निरुत्थ भस्म मिलेगी।

अगर फिर परीक्षा करनी हो, तो भस्म के बराबर "मित्र पञ्चक" फिर मिलाकर, कलछी में रखकर, आग पर गलाओ। मित्र पञ्चक जल जायेंगी—नाम भी न रहेगा ; जितनी भस्म ली थी, वही भस्मके रूपमें रह जायगी। उसमें डलियाँ न होंगी। ऐसी भस्म बेखटके खाने लायक़ है।

इस बंग भस्म के सेवन करने की विधि ।

इस बङ्ग भस्म का रङ्ग भूरा होता है। इसकी मात्रा ४ चाँवल से ३ रत्ती तक़ है। बंसलोचन, छोटी इलायची, अबीध मोती और चाँदी के वर्क़ों के साथ शहद में एकमात्रा बंगभस्म मिलाकर खानेसे प्रमेह नाश होकर खूब धातु पुष्टि होती है।

नोट—बङ्ग भस्म और मोतियों को बढ़िया गुलाब-जलमें पहले तीन दिन तक खरल करना चाहिये। तब बंसलोचन आदिको हर मात्रामें मिलाकर, शहद के साथ चाटकर, ऊपर से मिश्री-मिला गायका दूध पीना चाहिये। अगर इतना न हो सके, तो बङ्ग की एक मात्रा शहदमें मिलाकर चाट जानी चाहिये और गायका दूध मिश्री मिलाकर ऊपरसे पीना चाहिये। १ मात्रा में हरेक चीज १।१ या २।२ रत्ती लो।

बंग भस्म की और तरकीबें ।

(दूसरी तरकीब)

(२) पहले पत्थरके कोयलों या लकड़ीका चूल्हा जलाओ। उस-पर

लोहे की औंड़ी-गहरी कड़ाही रखो। उसमें शोधा हुआ राँग डालदो। जब राँग गल कर पानीसा पतला हो जाय, उसपर राँग का चौथाई अपामार्ग या चिरचिरे का बारीक चूर्ण डालो और आमकी लकड़ी के मोटे डण्डे से घोटो। घुटाई राँगे पर होनी चाहिये। चिरचिरे का चूर्ण एक साथ मत डालना, थोड़ा-थोड़ा मुट्ठी भर-भरके डालना और घुटाई करते रहना। जबतक राँगकी भस्म न हो जाय, चिरचिरा डालना और राँग को उसी डण्डे से घोटना बन्द मत करना। जब भस्म हो जाय, उसे बीच में इकट्ठी करके, उसपर मिट्टीका सरावा औंधा मारदो, ताकि वङ्ग ढक जाय। इस समय आग को और भी तेज़ करदो। जब वङ्ग-भस्म पर ढका हुआ सरावा आगकी तरह लाल हो जाय, छोड़दो। जब सरावा ठण्डा हो जाय, कड़ाही को उतार कर भस्म को निकाल लो। यह उत्तम वङ्गभस्म है।

इस भस्म को तैयार करने के लिए, नीचे लिखी चीज़ें, तैयार रखनी चाहियें :—

(१) चिरचिरे का चूर्ण।
(२) आमकी लकड़ी का डण्डा।
(३) लोहे की साफ कड़ाही।
(४) अच्छी भट्टी या बड़ा चूल्हा।

तीसरी विधि।

(३) शुद्ध राँगे को खपरे या मज़बूत ठीकरे पर रखकर चूल्हे पर रखो और गल जाने पर, शमी वृक्ष (छोंकरे) के डण्डे से उसे घोटो ; वंगभस्म बन जायगी।

चौथी विधि।

(४) शोधे हुए राँगे को गलाकर थालीमें फैला दो; इस तरह पतले-पतले पत्तर हो जायँगे। एक सरावे में दो-दो अङ्गुल पिसी हल्दी फैलाकर बिछादो। उसपर राँगेके पत्तर बिछादो और फिर ऊपर से

पिसी हल्दी की मोटी तह जमादो। इस सराईको तेज़ आग पर रखदो; भस्म हो जायगी।

इस भस्म को तोलो। जितनी भस्म हो उसका चौथाई भाग शोरा पीसकर इसमें मिला दो। फिर एक सराई में इस चूर्ण को रखकर, ऊपर से दूसरी सराई रख, कपड़-मिट्टी करके सुखालो और ८।१० सेर कण्डों की मन्दी आग में रख कर फूँक दो। शीतल होने पर निकाल लो। यह भस्म शङ्ख या कुन्द फूलके समान निकलेगी। यह सब रोगों पर देने लायक़ है।

पाँचवीं विधि।

(५) पहले तिल और इमलीकी छाल बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लो। राँगके पतले-पतले पत्तर करलो। एक टाट पर तिल और इमली की छाल का चूर्ण आध-आध अंगुल ऊँचा बिछादो। उसपर राँगके पत्तर बिछादो। पत्तरों पर फिर तिल और इमली की छाल का चूर्ण आध-आध अंगुल ऊँचा बिछादो। ऊपर एक टाटका टुकड़ा रख कर, इसे रस्सी से बाँध दो। फिर इस टाट पर गीली मिट्टीका गाढ़ा लेप करदो और गज़ भर गहरे-लम्बे-चौड़े गड्ढे में कण्डे भरकर; बीचमें इस टाटकी पोटली को रख कर आग लगादो। जब आग ठण्डी हो जाय, चतुराई से उस पोटली को उठालो। बहुत हिलाने से सब माल नष्ट हो जायगा। पोटली में आपको धानकी सी खीलें मिलेंगी, जो मलने से महीन हो जायँगी। यह बड़ी बढ़िया चीज़ है। सब काम में आती है।

छठी विधि।

(६) शोधा हुआ राँगा जितना हो, उसका दसवाँ भाग शुद्ध पारा लेकर दोनों को खरल में डालो और आकका दूध डाल-डाल कर २ घण्टे तक खरल करो। फिर इसे ठोक… में रख कर आग पर चढ़ादो

और आग को खूब तेज़ कर दो। साथ ही अनार की लकड़ी के डण्डेसे घोटते रहो। कुछ देर में भस्म हो जायगी।

सातवीं विधि।

(७) एक मिट्टीके बर्तन में शोधा हुआ राँगा रखकर, आग पर चढ़ाकर गलाओ। जितना राँगा हो, उसका चौथा भाग इमली की छालका चूर्ण तथा पीपल-वृक्ष की छाल का चूर्ण डाल-डालकर ६ घण्टे तक कलछी से घोटो। बस, भस्म हो जायगी।

इसके बाद इस भस्म को खरलमें डालकर, भस्म के बराबर शुद्ध हरताल मिलाकर, नीबूका रस डाल-डाल कर ३ घण्टे खरल करो। पीछे टिकिया बनाकर, शराव-सम्पुट में रख कर, गजपुट की एक आँच में पकाओ।

सराई में से भस्मको निकाल कर, इस बार भस्म का दसवाँ भाग हरताल डालो और नीबू के रसके साथ ३ घण्टे खरल करके, शराव-सम्पुट में रखकर, गजपुटमें फूँक दो। यह दो आंच या दो पुट हुईं। इसी तरह दसवाँ भाग शुद्ध हरताल मिला-मिलाकर, पहर-पहर भर खरल कर-करके, शराव-सम्पुट में रख-रख कर, आठ बार गजपुट की आगमें औरभी पकाओ। दस आग खाने से उत्तम भस्म हो जायगी।

नोट—ध्यान रखो, पहली आँच देनेके समय भस्मके बराबर हरताल ली जाती है, पर शेष नौ आग के समय भस्म का दसवां भाग हरताल मिलाई जाती है। पर घुटाई में हर बार नीबूका रस ही पड़ता है और घुटाई हरबार तीन-तीन घण्टे होती है।

वंगभस्म के अनुपान।

मात्रा—इसकी मात्रा २ चाँवलसे ३ रत्ती तक है।

अनुपान—

(१) मुख की बदबू नाश करने को शुद्ध कपूर के साथ वङ्ग-भस्म खाओ।

(२) बलवृद्धि के लिये दूध के साथ वङ्ग भस्म खाओ।

(३) बल बढ़ाने को जायफल के साथ बङ्ग भस्म खाओ।

(४) धातु-रोग नाश करने को जायफल, जावित्री और लौंग के साथ बङ्ग खाओ।

(५) धातु-वृद्धि और शरीर-पुष्टि के लिए दूधके खोये के साथ।

(६) शरीर की कान्ति बढ़ाने को जायफल के साथ।

(७) नामर्दी नाश करने को लौंग, पीपर और इलायची के चूर्ण के साथ।

(८) वीर्य स्तम्भन के लिये पानमें, भाँग में या कस्तूरी में।

(९) वीर्य और बल बढ़ाने को दूध और मिश्री के साथ।

(१०) वीर्य स्तम्भन के लिए भाँगके चूर्ण, दूध और शहदके साथ।

(११) नपुंसकता नाश करनेको चिरचिरे की जड़के चूर्णके साथ।

(१२) प्रमेह नाशार्थ तुलसी के पत्तों के साथ।

(१३) प्रमेह और धातु गिरना बन्द करने को गोखरू के चूर्ण और मिश्री के साथ।

(१४) समस्त प्रमेह नाशार्थ जड़-सहित गोरखमुण्डी के रस और गोखरू के रसमें चीनी मिलाकर, उसीमें बंग मिलाकर पीओ।

(१५) प्रमेह नाशार्थ शहद और मिश्री के साथ बङ्ग खाओ।

(१६) पाण्डु रोगमें घीके साथ बङ्ग खाओ।

(१७) रक्त-पित्त में हल्दी के साथ अथवा हल्दी और शहत के साथ।

(१८) उर्ध्व श्वास में हल्दी के साथ।

(१९) बलवृद्धि को शहद के साथ।

(२०) पित्त शान्त करने को चीनीके साथ।

(२१) वायु शान्त करने को लहसुन के साथ। (लहसन को घी में भूँजकर, उसमें बङ्ग मिलादो।)

(२२) वायु-नाशार्थ अजवायन या असगन्ध में।

(२३) अग्निमांद्य रोग में—पीपर के चूर्णमें मिलाकर।

(२४) दाद-नाशार्थ नीबूके रस में।

(२५) पलकों के रोगमें खैर की छालके काढ़े में।

(२६) अजीर्ण में आमले या सुपारी के साथ।

(२७) हड्डी के पुराने ज्वर में मक्खन के साथ।

(२८) कोढ़ नाशार्थ समन्दर-फल या निर्गुण्डी के रसमें।

(२९) लिंग बढ़ाने और कड़ा करने को लौंग, समन्दर-फल, पानों के रस और शहद में वंग मिलाकर लिङ्ग पर लगाओ।

(३०) गुल्म रोग में सुहागे के साथ वङ्ग खाओ।

(३१) वशीकरण के लिये लौंग और गोरोचनके साथ वङ्ग पीस कर तिलक करो।

(३२) शिरदर्द में वंग को रेंडी की जड़के साथ पीस कर सिर पर लगाओ।

(३३) तिल्ली-रोग में सुहागे के साथ वङ्ग खाओ।

(३४) जलोदर में बकरी के दूध में वङ्ग खाओ।

(३५) सिरके रोग में चिरचिरे के साथ वङ्ग खाओ।

(३६) कमर के रोगमें जायफल और असगन्ध के साथ।

(३७) नासूर में नागवल्ली के साथ।

(३८) पेट के दर्द में छोटी हरड़ के साथ।

(३९) वायुगोलामें माठे के साथ।

(४०) मिरगी में लहसनके तेलमें वङ्ग-भस्म मिलाकर नस्य दो।

(४१) श्वासमें जायफल, लौंग और शहद के साथ।

(४२) शरीर-पुष्टि को तुलसी के रस में।

(४३) जीर्ण ज्वर में पीपर के चूर्ण और शहद के साथ।

(४४) पित्तज्वर और पित्त-रोग में मिश्री के साथ।

(४५) उर्ध्व श्वास में आधी कच्ची और आधी भूंजी हुई हल्दी के चूर्ण और शहद में।

(४६) शरीर की दुर्गन्धि नाशार्थं चमेली के रसके साथ बङ्ग-भस्म खाओ ।

(४७) चर्म-रोग में खैर के चूर्ण के साथ बंगभस्म खाओ ।

(४८) शरीर की गरमी शान्त करने को नौनी घी के साथ ।

(४९) सिरका दर्द, पेशाब की जलन और पेटकी हवा नाश करने को काकमाची के रसके साथ ।

(५०) सोमरोग में नागकेशर, मिश्री और गायके दूध के साथ ।

(५१) चर्म-रोग या दाद नाश करने को मुर्दासङ्ग और गौरी-बीज या गंधक में बङ्ग-भस्म मिलाकर लगाओ ।

(५२) सब तरह के सिर-दर्द में पुराने घी और पुराने गुड़के साथ खाओ ।

(५३) अतिसार में—बराबर-बराबर अफीम और केशर में बङ्ग-भस्म मिलाकर, गोलमिर्च-समान गोली बनाकर खाओ और ऊपरसे माठा पीओ । इस उपाय से आमातिसार और रक्तातिसार नाश हो जायँगे ।

(५४) राँगाभस्मको अबीध मोतियोंके साथ अर्क गुलाबमें खरल करके रखलो । पीछे १ खूराक बंग, बन्सलोचन, छोटी इलायची और चाँदी के वर्कोंके साथ शहद में मिलाकर खाने से बेइन्तहा फायदा करती है । प्रमेह में तो रामबाण ही का काम करती है । खासकर शोरेके साथ मारी हुई बंग-भस्म, जिसकी विधि हमने ऊपर लिखी है ।

नोट—बंग एक या दो रत्ती, बंसलोचन और इलायची का चूर्ण दो या तीन रत्ती और चाँदी के वर्क एक या दो—इन सबको छै माशे शहद में मिला कर चाटो और ऊपर से मिश्री मिला दूध पीओ ।

शीशाभस्म की विधि।

शीशा कैसा लेना चाहिए ?

जो शीशा बाहर से काला हो, भारी हो तथा काटने से काले रङ्ग का चमकदार निकले और जिसमें बदबू आती हो, वही भस्म करने को लेना चाहिए। जिसमें ये सब गुण न हों, वह शीशा दवाके कामका नहीं होता।

शीशा शोधने की तरकीब।

शीशा शोधनेकी इच्छा हो, तो पहले एक गहरे और चौड़े बासनमें अंकोलका रस, दूसरेमें त्रिफलेका काढ़ा, तीसरेमें गोमूत्र, चौथे में काँजी, पाँचवें में आकका दूध और छठे में घीग्वारका रस तैयार करके भर दो। इन सबको तैयार किये बिना, शीशा शोधने को बैठ जाना भूलकी बात है। हमने जैसा कलछा बंग शोधने के लिए बताया है, वैसे ही कलछे में शीशा रखो और गलाओ। जब शीशा गल जाय, उसे पहले "अंकोलके रस"में बुझा दो। फिर निकालकर उसी कलछेमें रखो और गलाओ; गल जाने पर फिर उसी अंकोलके रसमें बुझाओ। इस तरह गला-गला कर सात बार अङ्कोल के रस में बुझाओ। जब सात बार हो चुके, अंकोलके रसको हटा दो। उसकी जगह त्रिफलेके काढ़ेका बासन रख लो। इसमें भी शीशेको गला-गलाकर सात बार बुझाओ। बस, ठीक इसी तरह गोमूत्र, काँजी, आकके दूध और घी-ग्वारके रसमें सात-सात बार बुझाओ। इस तरह ६ चीज़ोंमें सात-सात

वार शीशा बुझाने यानी ४२ वार शीशा गला-गलाकर उपरोक्त चीज़ोंमें सात-सात बार बुझाने से निर्दोष, शुद्ध और गरमी रहित हो जायगा।

नोट—शीशा भी राँगेकी तरह उछलता है। राँगे और शीशेके उछलने के कारण शोधने वाले के आँख नाकको भय रहता है। अतः बासन पर छेद किया हुआ भारी पत्थर रखकर, उसीमें छोकर शीशा पिघला-पिघला कर बुझाना चाहिये।

शीशा शोधनेकी ग्रन्थोंमें बहुतसी विधियाँ लिखी हैं। उनको देखने से मनुष्य चक्करमें पड़ जाता है। शीशे और राँगेमें एक समान दोष होते हैं, अतः शीशा राँगेकी तरह शोधा जा सकता है। कहा है—

तस्य साहजिका दोषा रङ्गस्येव निदर्शिताः
शोधनञ्चापि तस्येव भिषग्भिर्गदितं पुराः॥

राँगे में जो दोष हैं, वही शीशेमें भी स्वाभाविक हैं। शीशेका शोधन भी राँगेकी तरह ही करना चाहिये,—ऐसा प्राचीन वैद्योंने कहा है।

नोट—(१) तेल, माठा, गोमूत्र, काँजी और कुलथी-क्वाथ,—इन पाँचोंमें सात-सात बार बुझाने से, और धातुओंकी तरह शीशेकी सामान्य शुद्धि होती है। इसकी विशेष शुद्धि भी करनी चाहिये; यानी सामान्य शुद्धि करके त्रिफले के काढ़े, घीग्वारके रस और हाथीके पेशाबमें सात-सात बार बुझाने से शीशा खूब शुद्ध हो जाता है। यह विधि निश्चयही उत्तम है। सामान्य और विशेष दोनों शुद्धि की जाँय तो क्या कहना?

नोट—(२) शीशेको शोधते समय भट्टीमें खैरकी लकड़ी जलाना अच्छा। अगर यह न मिले तो बबूर, नीम, पीपल या ढाककी लकड़ी भी अच्छी। इनके कोयलोंसे भी काम निकल सकता है।

शीशा मारने की विधि।

पहली विधि।

(१) पहले आप केवड़े और तुलसीका चूर्ण पीस-कूट कर तैयार करलो और पास रख लो। इसके बाद बबूलके कोयलोंकी आग जलाकर,

उस पर ताम्बेका बर्त्तन रख दो। जब ताम्बेका वासन आगकी तरह लाल हो जाय, उसमें शोधा हुआ शीशा डाल दो। जब वह गलजाय, उस पर मुट्ठीसे थोड़ा-थोड़ा केवड़े और तुलसीका चूर्ण, जो पास रखा है, डालते जाओ और कलछी से पिघले हुए शीशेको रगड़ते जाओ। बार-बार चूर्ण डालो और कलछीसे रगड़ो। इस तरह, कोई आध घन्टेमें, हल्दी के से रंगकी भस्म तैयार हो जायगी। यह भस्म अभी खाने-योग्य नहीं होगी। नीचेकी क्रिया करने यानी गजपुटकी आग देने से खाने-लायक़ होगी। उस समय उसका रंग "सिन्दूर जैसा लाल" हो जायगा।

ऊपरकी भस्म का शोधन।

ऊपरकी भस्मको खरलमें डाल, ऊपरसे नीबूका रस दे-देकर खरल करो; फिर टिकिया सी बनाकर, शराव-सम्पुटमें रखकर, दो गजपुटकी आग दो।

जब नीबूके रसमें खरल कर-करके, दो गजपुटकी आग दे चुको, तब वन-तुलसी के रसमें भस्मको खरल करो। फिर टिकिया सी बनाकर, सुखालो और शराव-सम्पुट में रख, कपड़मिट्टी कर, गजपुटकी दो आँच दो।

जब वनतुलसीके रसमें खरल करके दो गजपुटकी आग दे लो, तब जसवन्तीके रसमें खरल करके, टिकिया सी बनाकर सुखालो। फिर शराव-सम्पुटमें बन्द करके कपरौटी करो और गजपुटकी दो आग दो।

जब जसवन्तीके रसमें खरल कर-करके दो गज़पुटकी आँच दे चुको; तब उस भस्मको भाँगरे के रसमें खरल करो और टिकिया बना-सुखा-कर, शराव-सम्पुटमें रख, गजपुटकी दो आँच दो।

जब भाँगरे के रसमें खरल कर-करके दो आँच दे चुको, तब गोदनदुद्धीके रसमें खरल करके, टिकिया बनालो और शराब-सम्पुट में रख कर, गजपुट की दो आग दो।

जब भाँगरेके रसमें खरल कर-करके दो आग दे लो, तब घीग्वारके

रसमें खरल करके, टिकिया बना लो । फिर शराव-सम्पुटमें रख, गज-पुटकी दो आग दो ।

इस तरह हरेक, चीज़में दो-दो बार खरल करके; यानी नीबूके रस, वनतुलसीके रस, जसवन्तीके रस, भाँगरे के रस, गोदनदुद्धीके रस और घीग्वारके रसमें दो-दो बार खरल करके और हर बार गज़-भर गहरे-लम्बे-चौड़े गड्ढेमें भस्म-वाली सराइयोंको रख, आरने कण्डोंकी आग देकर फूँकने से—बारह आँचमें, शीशेकी सिन्दूरके रंग की भस्म तैयार हो जाती है ।

शीशा भस्मकी दूसरी विधि ।

(२) शोधा हुआ शीशा एकसेर, एक मिट्टीके ठीकरेमें रखकर, आग पर रखो । जब शीशा गल जाय, उस पर केवड़ेका डण्डा रखकर चलाओ । जब तक भस्म हो न जाय, डण्डे से घोटना बन्द न करो । जब भस्म हो जाय, उसपर कल्मी शोरा (जो एक सेर पीस कर पास रखा हो) मुट्ठी से थोड़ा-थोड़ा डालते जाओ और लोहे की कलछी से चलाते जाओ । जब सारा शोरा ख़तम हो जाय; ज़रा दूर हट कर घोटो, क्योंकि अब शोरा एक-दमसे जल उठेगा । जब शोरा जल उठे, ठीकरेको उतार लो और चाकूसे छील-छील कर भस्म को एक बासन में रखलो और पानी भर दो । फिर धोकर ठीकरे अलग करलो और भस्म अलग करलो ।

इसके बाद, उस भस्मको खरल में डालकर, ऊपर से "बड़की जटाका अर्क़ और केवड़े की जड़का अर्क़" दे-देकर घोटो और टिकिया बना लो । पीछे, उसे धूप में सुखालो । इसमें से पाव भर दवाकी टिकिया को शराव-सम्पुटमें रख, चार सेर कण्डों की आगमें फूँक दो । फिर देखो, किसी क़दर पीली भस्म होगई हो तो ठीक है । अगर कसर हो, तो फिर उसी तरह बड़की जटा और केवड़े के अर्क़ में घोट कर और टिकिया बना कर फिर फूक दो ।

यह विधि शास्त्रमें नहीं है। किसी खूबचन्द हकीमकी ईजाद की हुई है। इस भस्मकी मात्रा ४ चाँवल भर की है।

सेवन-विधि।

एक मात्रा शीशा-भस्म, मीठे अनार के आध पाव अर्क़में, देने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

एक खूराक शीशा-भस्म, दो तोले अर्क़ गिलोय और १ तोले शहत के साथ, देने से सोज़ाक आराम हो जाता है।

एक मात्रा शीशा-भस्म, बिहीदाने के लुआब के साथ, खाने से सोज़ाक नाश हो जाता है।

शीशा भस्म के गुण।

शीशेमें राँगेके समान ही गुण हैं। यह विशेष करके प्रमेह को नष्ट करता है। जो शीशे को सदा सेवन करता है, वह सौ हाथियों के समान बलवान होता है। इससे रोग नाश होते, जीवन बढ़ता, अग्नि प्रदीप्त होती, काम-शक्ति बढ़ती और मृत्यु दूर होती है।

"रसायन-सार" में लिखा है:—

> वातश्लेष्मविकार गुल्मगुदजाञ्छूलप्रमेहक्षयान्।
> कासश्वासकृमिभ्रमान् ग्रहणिकांमन्दाग्नि पाण्डवामयान्॥
> विधिना निर्मित नागभस्म सततं संसेवनाद् निर्जयेत्।
> नोचेत्तत्प्रतियोगिकारि कुरुते कुष्ठादिकांश्चामयान्॥

अच्छी विधि से बनाई हुई नागभस्म—शीशाभस्म के सेवन करने से वातरोग, कफरोग, गुल्म रोग, बवासीर, शूल, प्रमेह, क्षय, खाँसी, श्वास, कृमि-रोग, भ्रम, संग्रहणी, मन्दाग्नि और पाण्डु रोग नाश हो जाते हैं। अगर शीशा-भस्म अच्छी नहीं होती, तो उसके सेवन करने से ये सब रोग और कोढ़ तथा भगन्दर आदि रोग हो जाते हैं।

दूषित शीशा-भस्म के दोष-शान्ति का उपाय।

> स्वर्णभस्मसितायुक्तां सेवेत त्रिदिनं शिवाम्।
> नागदोषानपाकृत्य जायते सुखितो नरः॥

एक रत्ती सोनाभस्म, एक तोला मिश्री और एक तोला बड़ी हरड़ इन तीनोंको मिलाकर, सवेरे-शाम खाने से, तीन दिन में, शीशे की दूषित या ख़राब भस्म के दोष शान्त हो जाते हैं ।

दूषित शीशा-भस्म को शुद्ध करने की विधि ।

दूषित नाग-भस्म में, हाथी के पेशाब और मन्दार के दूधकी सात-भावना देकर, वराह पुटमें फूँक देनेसे उत्तम भस्म हो जाती है; उसके सेवन से कोई विकार नहीं होता; पर कुछ कम गुणवाली होती है ।

शीशा भस्म के अनुपान ।

मात्रा—चार चांवल से २ रत्ती तक ।

अनुपान—

(१) सब तरह के अजीर्णों में शीशा-भस्म सोंठ और सौंफकी चूर्ण के साथ खाओ ।

(२) आमातिसारमें शीशा-भस्म सोंठ और सौंफ के चूर्ण के साथ खाओ ।

(३) गुल्म रोगमें सोंठ और संचर नोन के चूर्ण के साथ शीशा-भस्म खाकर, ऊपर से अर्क़ मकोय पीओ ।

(४) आमवातमें सोंठ और संचर नोन के चूर्ण में शीशा-भस्म मिला कर खाओ और ऊपर से अर्क मकोय पीओ ।

(५) नवीन ज्वरमें गोलमिर्च और बताशों के साथ शीशा-भस्म खाओ ।

(६) पुराने ज्वरमें ” ”

(७) विषम ज्वरमें ” ”

(८) त्रिदोष ज्वर में ” ”

(९) शरीर पुष्टिको मिश्री, जायफल, पीपल और खोयेमें शीशा-भस्म खाओ ।

(१०) कमज़ोरी से दम फूलनेमें ” ” ”

(११) सिरदर्दमें सोंठ के चूर्ण और पुराने गुड़ में शीशा-भस्म खाओ।

(१२) कमरके दर्द में ” ” ”

(१३) क्षय होने या छर्दि रोग में ” ”

(१४) तिल्ली और यकृतमें शहद और पीपल के चूर्ण में शीशा-भस्म खाओ।

(१५) वात ज्वरमें पीपल के चूर्ण और काकमाची के रसमें शीशा-भस्म खाओ।

(१६) प्रसूत ज्वर में ” ” ”

(१७) घोर प्रदर रोग में ” ” ”

(१८) विषम ज्वरमें ” ” ”

जस्ता भस्म की विधि।

जस्ता कैसा लेना?

जो जस्ता भारी हो, सफेद रङ्ग का हो, चमचमाहट करनेवाला हो और जिसमें दाँतों के जैसे मोटे-मोटे रवे हों, वही खाने और आँखोंमें आँजने-लायक़ है।

जस्ता-भस्म शोधन-विधि।

सामान्य शुद्धि।

पहले शीशे को गला-गलाकर, सात-सात बार तेल, माठा, गोमूत्र, काँजी और कुलथी के काढ़े में बुझाओ, तब जस्ते की सामान्य शुद्धि हो जायगी। इसके बाद विशेष शुद्धि कर लो।

विशेष शुद्धि।

जस्ते को गला-गलाकर २१ बार गायके दूध में बुझाने से विशेष शुद्धि हो जाती है।

और शोधन-विधि ।

जस्ते को आग पर गला-गलाकर २१ बार "गायके दूध" में बुझाओ । फिर गला-गलाकर २१ बार "त्रिफले के काढ़े" में बुझाओ । इस तरह ४२ बार गला-गलाकर बुझालेने पर, फिर गला-गलाकर तीन बार "आक के दूध" में बुझाओ । इस तरह तीनों चीज़ों में ४५ बार बुझाने से जस्ता शुद्ध हो जायगा ।

नोट—सामान्य और विशेष शुद्धि में ३५+२१=५६ बार गला-गलाकर बुझाना होता है और इसमें ४५ बार । केवल ११ बार की मिहनत का फर्क है । तरकीब दोनों ही ठीक हैं । इच्छा हो, जैसे शुद्धि करो । फिर भी सामान्य और विशेष शुद्धि अच्छी हैं ।

जस्ता मारने की तरकीबें ।

पहली विधि ।

(१) एक लोहे के तवे या कड़ाही में जस्ता (शोधा हुआ) रख कर आग लगाओ । जब जस्ता गल जाय, उसपर "बथुए का रस" डालते जाओ और "नीमके सोटे" से घोटते जाओ । बारम्बार रस डालो और घोटना बन्द मत करो ; आगको खूब तेज़ रक्खो । ३० मिनट में सफेद भस्म हो जायगी । यह भस्म खाने-योग्य नहीं । इसको अभी शुद्ध करना होगा; यानी फूँकना होगा ।

ऊपरवाली जस्ता भस्मके शोधने की विधि ।

पहले त्रिफले के रस की इस भस्म में ३२ भावना दो । इसके बाद टिकिया बनाकर, सराइयों में रख, कपरौटी कर, गजपुट में फूँक दो ।

फिर सराई मेंसे भस्म निकाल कर, भाँगरे के रस की ३२ भावना दो; फिर टिकिया बना, शराव-सम्पुटमें रख, गजपुटमें फूँक दो ।

फिर सराई में से भस्म निकालकर, घीग्वार के रसकी ३२ भावना दो । फिर टिकिया बना, शराव-सम्पुट में रख, गजपुट में फूँक दो ।

चौथी बार भस्म को निकाल कर, "पञ्चामृत" की एक भावना दो और गजपुटमें फूँक दो। इस बार यह उत्तम-भस्म हो जायगी। यह खाने लायक होगी।

नोट—इस भस्म में आग तेज देना अच्छा होगा। (१) गिलोय, (२) मुशली, (३) सोंठ, (४) गोखरू, और (५) शतावर—इन पाँचों को "औषधी-पञ्चामृत" कहते हैं।

दूसरी विधि।

(२) एक सेर शोधे हुए जस्ते को कड़ाही में रखकर, कड़ाही को तेज़ आगकी भट्टी पर रखदो और आग को खूब तेज़ रक्खो। लोहेके कलछेसे इसे चलाते रहो। जब इसमें आगकी लपटें उठने लगें, तब इसमें "नीमके पत्तों का स्वरस" जो पहले से एक बर्तन में भरा रखा हो, डालते जाओ और चलाते जाओ। जब एक सेर नीमका स्वरस खप जाय और नीमका स्वरस मत डालो; पर आग कम मत करो, लगाते रहो। जब देखो, कि भस्म हो गई, आग मत दो। आग शीतल होने पर, भस्मको निकाल लो और कपड़े में छान लो। यह भस्म उत्तम है।

और भी उत्तम।

इस भस्म को काममें ला सकते हो, पूरा गुण करेगी; पर यदि आप इस तैयार भस्म को "घीग्वार के रसमें" खरल करके टिकिया बनालो और शराव-सम्पुटमें रख कर, गजपुट की एक आग देदो, तो और भी उत्तम भस्म हो जायगी।

तीसरी विधि।

(३) शोधे हुए जस्ते में चौथा भाग "शोधी हुई गन्धक" मिलाकर एक कड़ाहीमें रखो और कड़ाही को भट्टीपर रखकर आग जला दो। उसी समय "अरण्डी का तेल" इतना भरदो, जितने में जस्तेका चूर्ण और गन्धक का चूर्ण डूब जाय। फिर लोहे की कलछे से जस्तेके चूर्ण को घोटते रहो और आग तेज़ देते रहो। कुछ देरमें, तेल और गन्धक

जल जायेंगी । इसके बाद, जस्ते की भस्म हो जायगी । आग शीतल होने पर, भस्म को निकाल कर कपड़े में छानलो ।

इस भस्मको घीग्वार के रसमें खरल करके, टिकिया बनालो और उसे धूप में सुखाकर, एक हाँडी में रख दो । ऊपर से ढक्कन देकर, ढक्कन की सन्ध कपड़-मिट्टी से बन्द कर दो । फिर इस हाँडी को गजपुटमें रख कर फूँकदो । जब स्वाँग शीतल हो जाय, टिकिया को निकाल लो। अब यह भस्म उत्तम हुई । इसकी मात्रा २ रत्ती की है ।

जस्ता-भस्म के गुण ।

जस्ता भस्म खट्टी, कड़वी, शीतल और कफपित्त नाशक है । "भाव-प्रकाश" में लिखा है, जस्ता दस्तावर, कड़वा शीतल, कफपित्त नाशक, आँखों को हितकारी, प्रमेह तथा पाण्डु और श्वास नाशक है । अन्यत्र लिखा है, इससे शरीर की पुष्टि होती और यह ज्वर प्रभृति रोगों को भी नाश करती है ।

खराब जस्ता-भस्म के दोष ।

जस्तेको ठीक तरहसे शोधे बिना भस्म करके सेवन करनेसे प्रमेह, अजीर्ण, वमन, भ्रम और वायु-रोग हो जाते हैं; अतः बिना ठीक तरहसे शोधे भस्म न करनी चाहिये ।

दूषित जस्ता-भस्म के विकारों की शान्ति का उपाय ।

अगर अशुद्ध जस्ता-भस्म से उपरोक्त विकार हो भी जाँय; तो तीन दिन तक बराबर, "दो तोले हरड़ के चूर्ण में दो तोले मिश्री का चूर्ण" मिलाकर खाओ; समस्त विकार शान्त हो जायँगे ।

जस्ता-भस्म सेवन के अनुपान ।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक ।

अनुपान—

(१) नेत्र-रोगमें—गायके पुराने—दस साल के—घी में जस्ता-भस्म खाओ ।

(२) प्रमेह में —पानके रसके साथ जस्ता-भस्म खाओ।

(३) मन्दाग्निमें—अरणी के साथ जस्ता-भस्म खाओ।

(४) मन्दाग्निमें—पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठके चूर्ण के साथ जस्ता-भस्म खाओ।

(५) सन्निपात में—दालचीनी, इलायची और तेजपात के चूर्णके साथ जस्ता-भस्म खाओ।

(६) विषम ज्वर में- शहद और पीपलों के चूर्ण के साथ खाओ।

(७) पित्त ज्वर में—छुहारे और चाँवलों के धोवन के साथ खाओ।

(८) नपुंसकता में—जायफल, जावित्री, इलायची, मिश्री और गायके दूध के साथ खाओ।

(९) रक्तातिसार में—छुहारे और चाँवलोंके धोवनके साथ खाओ।

(१०) शीत ज्वर में—लौंग और अजवायन के चूर्णके साथ खाओ।

(११) वमन में—ज़ीरे और मिश्री के साथ खाओ।

(१२) अतिसार में—सफेद ज़ीरे और मिश्रीके साथ खाओ।
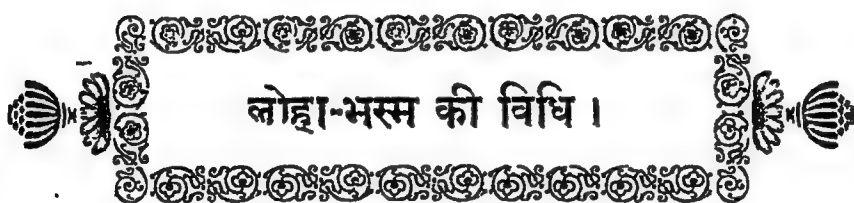
लोहा-भस्म की विधि।

लोहा कैसा लेना ?

लोह-भस्म करनेके लिये पहले फौलाद-लोहा या कान्तिसार-लोहा लाना चाहिये। फौलाद की तलवारें, सोने-चाँदी के तार खींचने की जन्ती, लोहा रेतने की रेती अक्सर फौलाद की बनती हैं। कलकत्ते में तो ऐसी चीज़ें पुरानी बहुत मिलती हैं, अन्य शहरोंमें भी मिल सकती हैं। अगर जन्ती वगैरः पुरानी न मिलें, तो नयी ही ले लेनी चाहिये। जितना फौलाद अच्छा होगा, फौलाद-भस्म भी उतनी ही अच्छी बनेगी। कान्तीसार लोहेके हिमामदस्ते वगैरः बहुत मिलते हैं। फौलादी-लोहा

बाज़ारोंमें भी मिल सकता है । न मिले तो तलवार या जन्ती वग़ैर: से काम निकालना चाहिये ।

फौलादी या कान्तिसार—जैसे लोहे की भस्म बनानी हो उसे लाकर, लोहा रेतने की रेती से रितवालो। रेतनेसे जो लोहे का चूरा गिरता जाय, उसे इकट्ठा करलो । अगर बिना चूरा किये लोहा शुद्ध किया जायगा, तो उसके भीतरी अंशों की शुद्धि न होगी । बस, इसीसे रेती से रितवा लेना ज़रूरी है । हमने अनेक बार इसी तरकीब से काम लिया है । पर स्वर्गवासी श्यामसुन्दर आचार्य लिखते हैं—कान्तीसार लोहे को आगमें खूब तपा-तपाकर, "त्रिफले के काढ़े" में बार-बार बुझाने से चूरा गिरता है, उसे उठा-उठा कर रखते जाना चाहिये । हमने इस तरकीब से काम नहीं लिया । हमारी राय में रितवा लेना अच्छा है, क्योंकि इसमें कष्ट बहुत है ; पर उसमें एक रेतने का कष्ट है । उसे मज़दूर बैठा-बैठा रेता करता है ।

लोहा शोधने की तरकीब ।

अशुद्ध लोहा लूलापन, कोढ़, मृत्यु, हृदय-रोग, शूल, पथरी और उबाकी आना प्रभृति अनेक रोग पैदा करता है; इसलिये उसे नीचे की विधि से पहले शोध लेना चाहिये :—

रेते हुए लोहे के चूरे को एक कलछे में भर कर, उसे खूब तेज़ आग की भट्टी पर तपाओ । जब लाल हो जाय, नीचे लिखी चीज़ोंमें चार-चार बार बुझाओ:—

(१) त्रिफले के काढ़े में चार बार
(२) नीबूके रसमें चार बार
(३) गोमूत्र में चार बार
(४) बथुए के रसमें चार बार
(५) इमली के रसमें चार बार
(६) मांठामें चार बार
(७) आकके दूध में चार बार

मतलब यह है, कि लोहे के चूरे को चार वार आग पर लाल करके, पहले "त्रिफले के काढ़े" में चार वार बुझाओ। इसके वाद, लाल कर-करके "नीबूके रस" में चार वार बुझाओ। फिर "गोमूत्र आदि" में चार-चार वार बुझाओ। इस तरह सातोंमें, २८ वार बुझाने से लोहा शुद्ध और निर्दोष हो जायगा।

लोहा मारने की विधियाँ।

(पहली विधि)

(१) दो सेर त्रिफले के काढ़ेको इतना पकाओ—कि चौथाई रह जाय या ऐसा गाढ़ा हो जाय, कि कलछी के लगने लगे। फिर शोधे हुए लोहेके चूरे को कपड़े में छान कर, खरलमें रखो और इस त्रिफलेके गाढ़े काढ़े को भी उसीमें डालकर खरल करो। फिर टिकिया बनाकर, धूप में सुखालो। पीछे टिकिया को शराव-सम्पुट में रखकर, गजपुट की एक आगदो; यानी गजपुट में एक वार फूँको। वस, भस्म हो जायगी। यह भस्म नुसख़ों में मिलाने के लिये बहुत अच्छी होती है।

दूसरी विधि।

(२) शोधे हुए लोहेका चूर्ण जितना हो, उसका दसवाँ भाग "शुद्ध सिंगरफ" उसमें मिलादो और खरल में डालकर, ऊपरसे "घीग्वार का रस" दे-देकर ६ घण्टे तक खरल करो। फिर शराव-सम्पुट में रखकर, गजपुट में फूँक दो। इसी तरह सात वार निकाल-निकाल कर और दसवाँ भाग "सिङ्गरफ" मिला-मिला कर, ऊपर से "घीग्वार का रस" दे देकर, छै छै घण्टे खरल करके, फिर शराव सम्पुट में रख-रख कर, गजपुटमें फूँको। मतलब यह है, कि इस तरह सात वार आग में फूँकने से उत्तम लोह-भस्म तैयार हो जायगी।

तीसरी विधि।

(३) फौलाद के रेते हुए आठ तोले चूरे को खरल में डालो। ऊपर से आठ माशे शुद्ध पारा डालो और खरल करो। फिर ऊपर स

शराव दे-देकर, ६ घण्टे तक खरल करो; ज़रा भी मूसली वन्द न हो। जब गाढ़ा हो जाय, टिकिया वनाकर सराइयों में रख, कपरौटी कर, पाव भर कण्डों में फूँक दो। ठण्डा होने पर सराई से निकाल लो।

सराई से लोहे को निकाल कर खरलमें डालो और फिर आठ माशे शुद्ध पारा डाल कर, ऊपर की तरह शराव के साथ घोटो और टिकिया बना, सराइयोंमें वन्द कर, कपरौटी करके सुखालो और कण्डोंमें फूँकदो; कण्डे पाव भर लो। इस तरह अस्सी वार निकाल-निकाल कर, आठ-आठ माशे पारा डाल-डाल कर, शराव के साथ घोट-घोटकर, पाव-पाव भर कण्डोंमें अस्सी वार फूँको। हर दस दफा फूँक लेने पर, सराइयाँ नयी वदल दो।

जव अस्सी वार फुँक जाय, तब निकाल कर फिर खरलमें डालो और चार माशे शुद्ध संखिया मिलाकर, शराव दे-देकर घोटो। फिर टिकिया वना; सराइयोंमें वन्द कर, पाव-भर कण्डों मेँ फूँक दो। इस तरह इक्कीस वार संखिया और शराव के साथ घोट-घोट कर इक्कीस वार फूँको।

इस तरह ८०+२१=१०१ आँच लग जाने पर, लोह भस्मको निकालकर, आतिशी शीशी में भरकर, मुँह वन्द करदो और शीशी को गेहूँ के भरे कोठे में गेहूँ के ढेरमें २१ दिन दवा रखो। २१ दिन वाद निकालो। इस समय भस्म का रङ्ग "नारङ्गी का सा" होगा।

फिर इस फौलाद भस्मको, जिस चूल्हेमें रोज़ आग जलती हो, उसके नीचे २ साल तक गढ़ा रहने दो। बस, फिर यह अमृत हो जायगा।

मात्रा—चाँवल भर की है। इसे माघ-पौष में खाना चाहिये। सात रोज़ खाने से खूब बल बढ़ेगा।

नोट—यह फौलाद-भस्म जितनी ही पुरानी होगी, उतनी ही अच्छी होगी।

चौथी विधि।

(४) शोधे हुए लोहे का चूर्ण १२ तोले लो। उसमें शुद्ध सिंगरफ १

तोले मिलाकर खरल में डालो और घीग्वार के रसमें ६ घण्टे तक खरल करो। फिर चार टिकिया बनालो और सुखा लो। पीछे उन्हें सराव-सम्पुट में बन्द कर, चार सेर कण्डों की आग में फूँक दो।

आग ठण्डी होने पर उन्हें फिर निकाल लो और खरल में डाल दो। ऊपर से १ तोले-भर शुद्ध सिंगरफ फिर डालकर, घीग्वार के रसके साथ ६ घन्टे तक घोटो। घुटने पर, चार टिकिया बनाकर, शराव-सम्पुटमें रख, चार सेर कण्डोंमें फूँक दो।

इस तरह पाँच बार और निकाल-निकाल कर, एक-एक तोले भर "सिंगरफ" डाल-डालकर, "घीग्वारके रस" में घोटो और टिकिया बनाकर; शराव-सम्पुट में रख फूँक दो। मतलब यह, कि कुल सात बार फूँको। हर बार सिंगरफ तोले भर मिलालो और ग्वारपाठे में घोटकर, सरइयोंमें बन्द कर, चार-चार सेर कण्डों में फूँको। लोहा-भस्म-तैयार हो जायगी। यह सार दवाओंमें मिलाया जा सकता है; क्योंकि खाने-योग्य है।

पाँचवीं विधि।

(५) लोहा बारह पैसे भरमें शुद्ध मैन्सिल १ पैसे भर मिलाकर, घीग्वार के रस में ६ घण्टे खरल करके, सात टिकिया बनालो। फिर शराव-सम्पुट में रख कर, दो सेर कण्डोंमें फूँक दो। इस तरह बारह बार एक एक पैसे-भर मैन्सिल के साथ, घीग्वारके रसमें घोट-घोटकर, बारह बार दो-दो सेर कण्डोंमें फूँकने से उत्तम भस्म बन जायगी।

नोट—मैंन्सिल १ पैसे भर हर बार मिलाना मत भूलो। १ पैसा=१ तोले के।

लोह-भस्म के गुण।

लोह-भस्म सेवन करने से बल-वीर्य और आयु बढ़ती है। वात, पित्त और कफके अनेक रोग नष्ट होते हैं। बहुत दिन सेवन करनेसे काम-देव खूब ज़ोर करता है। इसके सेवन करने वालेके पास रोग नहीं आते। बड़ी-ताक़तवर चीज़ है। जो रोग हो, उसी रोगके नाश करने वाले अनुपान के साथ देने से, यह सभी रोगों को नाश करती है।

अशुद्ध लोह-भस्म के विकारों की शान्ति के उपाय ।

अगर कोई अशुद्ध लोह भस्म खाकर रोगी हो जाय, तो उसे विडङ्ग के चूर्ण में अगस्तिया के रसकी भावना देनी चाहिये । फिर उस चूर्णको, अगस्तिया के रस के साथ, गले से उतार कर धूपमें बैठना चाहिए। पसीनों के द्वारा सारे विकार निकल जायेंगे।

लोहा-भस्म सेवन करने के अनुपान ।

मात्रा—लोहा-भस्म की मात्रा २ चाँवल से दो रत्ती तक है।

अनुपान—

(१) शरीर पुष्टिको—पीपल के चूर्ण और शहद के साथ लोह-भस्म खाओ ।

(२) कफ-रोग नाशार्थ— " " "

(३) रक्तपित्त में—मिश्रीके साथ लोहा-भस्म सेवन करो ।

(४) बल-वृद्धि के लिये—साँठी की जड़ गायके दूध में पीसकर, उसमें लोह-भस्म मिलाकर खाओ ।

(५) पाण्डु रोगमें—साँठीके रसके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

(६) प्रमेह में—हरी पीपलों के चूर्ण और शहद के साथ खाओ ।

(७) मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातमें—शिलाजीत के साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

(८) वात ज्वर में—अदरख के रस, घी और शहदके साथ लोह-भस्म खाओ ।

(९) सन्निपात ज्वर में—अदरख के रस और गोल मिर्च के साथ लोह-भस्म खाओ ।

(१०) पित्त ज्वर में—अदरख के रस, लौंगके चूर्ण और शहदके साथ लोहभस्म खाओ ।

(११) तेरह सन्निपातों में—अदरखके रसमें पीपर पीसकर, उसमें लोहभस्म मिलाकर खाओ ।

(१२) ८० वायु-रोगोंमें—निर्गुण्डीके रस और सोंठके चूर्णके साथ लोह-भस्म खाओ ।

(१३) ४० पित्त के रोगों में—मिश्री के साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

(१४) २० कफके रोगोंमें—पीपलके चूर्णके साथ लोह-भस्म खाओ ।

(१४) सन्धि-रोगोंमें—दालचीनी, इलायची और तेजपात के चूर्ण के साथ लोहभस्म सेवन करो ।

(१६) प्रमेहमें—त्रिफला के चूर्ण के साथ लोहभस्म खाओ ।

(१७) वातरोगों में—तुलसीकी पत्ती, मिर्चके चूर्ण और घी के साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

(१८) पाँचों खाँसियों में—अडूसे के रस के सङ्ग लोह-भस्म सेवन करो।

(१९) मन्दाग्निमें—दाख, पीपलके चूर्ण और शहदके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

(२०) वीर्य और कान्ति की वृद्धिको— नागर पानके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

(२१) शरीर निरोग करने को—त्रिफला और शहतके साथ लोहा-भस्म सेवन करो ।

(२२) शरीर-पुष्टि को—छोटी हरड़ और मिश्रीके साथ लोह-भस्म सेवन करो।

(२३) ८० शूल वात नाशार्थ—घी और हींग के साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

(२४) जीर्णज्वरमें—पीपल और शहतके साथ लोह-भस्म खाओ ।

(२५) श्वासमें—लहसन और घी के साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

(२६) शरीर के शीत रोग नाशार्थ—सोंठ, मिर्च और पीपल के चूर्ण के साथ लोह-भस्म खाओ ।

(२७) प्रमेह रोगमें—पान और मिर्चके साथ लोहभस्म सेवन करो।

(२८) सन्निपातज शिरो रोगमें—त्रिफलेके चूर्ण और मिश्रीके-साथ लोहा भस्म खाओ।

(२९) कफकी खाँसीमें—लोहाभस्म पीपल या पान या शहदमें लो।

(३०) जाड़े के ज्वर में—मुनक्का भूनकर, उसमें लोहाभस्म रखकर, ज्वर चढ़नेसे एक घण्टा पहले खाओ।

नोट—अगर खुश्की हो, तो कासनी के पत्ते फाड़कर, उसमें शिकन्जबीन दारमी डालकर, उसके साथ लोहा भस्म लो।

(३१) साँस में लोहा भस्म पीपल के साथ खाओ।

(३२) बुखार और खुश्की में—लोहाभस्म शर्वत नीलोफरके साथ सेवन करो।

सुवर्ण-भस्म की विधि

सोना कैसा लेना ?

पन्नेका, वटर का या वर्क का सोना अच्छा होता है। फिर भी जिस सोने की भस्म बनानी हो, उसे आगमें तपा कर देख लो। यदि तपानेसे काला पड़ जाय, तो उसमें दोष समझो। उसको भस्मके लिए मत लो। ऐसा सोना लो, जो आगमें तपाने से काला न हो।

सुवर्ण शोधने की विधि।

(पहली विधि।)

सोना शोधने के लिये चौड़े मुँहके आठ बासनों में अलग-अलग नीचे की चीज़ें भर कर रखो:—

(१) जम्बीरी नीबूका रस।

(२) काँजी।

(३) सेंधानोन जलमें घोला हुआ।

(४) तिली का तेल।

(५) गोमूत्र।

(६) माठा

(७) गायका दूध।

(८) त्रिफले का काढ़ा।

ऊपर की आठों चीज़ें तैयार करके, भट्टी में आग जलाओ। फिर सोने के पतले-पतले पत्रोंको एक कलछे में रख कर, कलछे को आग पर रखदो। जब पत्तर लाल हो जायँ, खूब तप जायँ, उनको "नीबूके रस में बुझाओ। पत्रोंको बासन से निकाल कर, फिर कलछे में रखो और तपाओ; जब लाल हो जायँ, फिर नीबू के रसमें बुझा दो। इस तरह सोनेके पत्रों को आग पर लाल कर-करके, सात बार नीबू के रसमें बुझाओ।

बस, ठीक इसी तरह सोने को तपा-तपा कर, काँजी आदि बाक़ी की सातों चीज़ोंमें सात-सात बार बुझाओ। आपको सोना ७×८=५६ बार तपा-तपा कर, ऊपर की आठों चीज़ों में—प्रत्येक में सात बार—बुझाना होगा। इस तरह सोना शुद्ध और मारने लायक़ हो जायगा।

सोना शोधने की दूसरी विधि।

सामान्य शुद्धि।

सोने के पत्रों को ऊपर की विधि से आग में तपा-तपा कर नीचे की पाँच चीज़ोंमें सात-सात बार बुझाओ।

(१) तिली का तेल, (२) गायका माठा, (३) गोमूत्र, (४) काँजी, और (५) कुलथी का काढ़ा।

इस तरह तेल आदि में सात-सात बार बुझाने से मामूली सफाई हो जाती है। इसके बाद विशेष शुद्धि या ख़ास तौरसे सोनेकी सफाई करनी चाहिये; तब वह शुद्ध और मारने योग्य होगा। सोने में ताम्बे प्रभृति की तरह दोष नहीं होते; इसलिए एक विशेष शुद्धिसे भी

काम चल सकता है ; पर दोनों तरह की शुद्धि करने से भस्म में अधिक गुण आयेंगे ।

विशेष शुद्धि ।

सोने के पत्रों को नीचे की चीज़ों में और भी सात-सात बार बुझाने से विशेष शुद्धि हो जाती है:—

—(१) काँजी, (२) नीबू का रस, (३) माठा, और (४) गायका दूध । इस का मतलब यही है कि, सोने के पत्रों को तपा-तपा कर सात बार काँजी में, सात बार नीबू के रस में, सात बार माठामें और सात बार गायके दूध में बुझाओ ।

सोना मारने की विधि ।

पहिली विधि ।

(१) मैनसिल और सिन्दूर दोनों बराबर-बराबर लेकर पीस लो, पीछे आकके दूधकी भावना देकर या उसे डूबा कर सुखालो । सूखने पर, फिर ताज़ा आक के दूधकी उस चूर्णमें भावना दो और सुखालो । इस तरह सात बार आकके दूधकी भावना दो और सुखालो । आकका दूध हर दिन ताज़ा लो और एक दिन में एक भावना दो । यह काम सात दिन में करो ।

अब आप शोधे हुए सोने को गलाओ । जब गल जाय, उसमें सोनेके बराबर ही भावना दिये हुए मैन्सिल और सिन्दूरके चूर्ण का कल्क डाल दो और आग को धमाओ ; जिससे कल्क जल जाय । इसके बाद, फिर सोनेके बराबर ही मैनसिल और सिन्दूरका कल्क डालकर धमाओ। जब फिर कल्क जल जाय, तीसरी बार फिर यही कल्क डालो और धमाओ—इस बार सोना मर जायगा ।

सोना मारने की दूसरी विधि ।

(२) दो तोले सोना कपिस मिट्टी में लपेट कर, आगमें लाल करके, केले की जड़के अर्क़ में (या अगस्त के फूल के अर्क़ में) बुझाओ । इस तरह लाल कर-करके सात बार बुझाओ ।

इसके बाद जितना सोना हो, उतना ही शुद्ध पारा मिलाकर खरल करो। जब दोनों एक हो जायँ, चार तोले गन्धक का तेल भी उसमें मिलादो और थोड़ी देर घोट कर, शराव-सम्पुट में बन्द करके, कपरौटी कर दो। फिर एक फुट गहरा-चौड़ा-लम्बा गड्ढा खोदकर, उसमें तीस आरने कण्डे भर कर और शराव-सम्पुट बीच में रखकर फूँक दो।

दूसरी बार फिर सोने को सम्पुट मेंसे निकाल कर, खरलमें डालकर, ऊपर से शुद्ध पारा २ तोले डालकर खरल करो और गन्धक का तेल चार तोले डाल कर, ज़रा घोटकर, ऊपर की तरह शराव-सम्पुट में रख, कपरौटी कर, सुखा, ३० आरने कण्डे गड्ढे में भर, शराव-सम्पुटमें रख, फूँक दो।

बस, ठीक इसी तरह, हर बार सोना निकाल कर, उसमें २ तोले पारा और चार तोले गन्धक का तेल दे-देकर घोटो और ऊपर की तरह फूँको। इस तरह १४ बार घोटने और १४ आँच देने से सोने की भस्म हो जायगी।

सोना मारने की तीसरी विधि।

(३) सोनेका चूर्ण करके, कुकरौंधे के अर्क में १२ घण्टे तक लगातार घोटो, जिससे सोना अर्कमें मिल जाय। फिर इसी में सोने के समान शुद्ध पारा भी मिलादो और खूब खरल करो। अब उसकी एक टिकिया बना लो और कुकरौंधे को पीस कर लुगदी बनालो। उस टिकिया को कुकरौंधे की लुगदी में रखदो और उसे बन्द करदो। फिर उस लुगदी को शराव-सम्पुट में रख, एक कपरौटी कर, गजपुट में फूँक दो, बस सोना मर जायगी।

सोना भस्म की चौथी विधि।

(४) दो तोले सोनेके पत्रों को कैंची से काट-काट कर खूब छोटे-छोटे कर लो। फिर सोनेके बराबर दो तोले शुद्ध पारा लेकर, दोनों को खरल

में डालकर, ५।६ घण्टे घोटो। जब सोना पारे में मिल जाय; दो तोले शुद्ध गन्धक भी खरलमें डाल दो और ३ घण्टे तक घोटो; इसके बाद कपड़-छन किया शुद्ध मैनसिल भी २ तोले मिला दो और दो घण्टे घोटो। जब कजली बन जाय, उसे कपरौटी की हुई विलायती पक्की शीशी में भर दो।

फिर एक पक्की हाँडी ऐसी लो, जो शीशी के गले तक ऊँची हो। उस हाँडीके पैंदेमें एक छेद कर दो। उस छेदपर अवरख का टुकड़ा रख कर, उस पर शीशी रख दो। शीशी के चारों ओर बालू खूब गरम करके भर दो। बालू शीशीके ठीक गले तक आजाय, शीशी ज़रा भी बाहर न रहे, पर इतनी ऊँची न आवे कि, शीशी के भीतर बालू भर जाय। बालू भरते समय, शीशीका मुख कागसे बन्द कर दो। जब बालू भर जाय, मुँह खोल दो। फिर हाँडी के नीचे, पत्थर के कोयलों की आँच, तेज़ीके साथ, कोई ६ घण्टे तक देते रहो। पहले मन्दी आग दो, फिर मध्यम आग दो और शेष में तेज़ करदो।

६ घन्टे बाद आग मत लगाओ। आग शीतल होने पर, शीशीको हाँडी से निकाल कर ऐसी कारीगरी से तोड़ो, कि काँच के टुकड़े दवा में न मिलें। आपको शीशी के गले में "शिला सिन्दूर" और पैंदेमें "सोनेकी भस्म" मिलेगी।

नोट—अगर आप मैनसिल कजलीमें न मिलाकर, हरताल मिलावेंगे; तो शीशी के गलें में "ताल सिन्दूर" और पैंदे में "सोना भस्म" मिलेगी।

अगर आप मैनसिल या हरताल न मिलाकर, संखिया मिलावेंगे, तो शीशी के गलेमें "मल्ल सिन्दूर" और पैंदे में "सोना भस्म" मिलेगी।

भाव मिश्रने भी लिखा है—"मैनसिल और गन्धकको आकके दूधमें महीन पीसकर, उस लेप से धातु के पत्र को बारम्बार लीप दो और फिर अग्नि की १२ पुट दो। इस तरह सोना आदि सभी धातुओं की भस्म हो जायगी। मालूम नहीं, कि यह विधि कहाँ तक ठीक है। भाव मिश्र जी कहते हैं—सत्यं गुरुवचो यथा। अर्थात गुरु के वचन पर

विश्वास रखकर कहता हूँ।" जिन वैद्यों ने हमारी तरह इस विधि की परीक्षा नहीं की है, कर देखें।

अशुद्ध सुवर्ण के दोष।

अशुद्ध यानी विना शोधे हुए सोनेकी भस्म बलवीर्य नाशक, अनेक रोग-वर्द्धक, दुःख देने वाली और मृत्यु करने वाली होती है। अतः सोनेको खूब शोध कर मारना या भस्म करना चाहिए। साथ ही सोने को तपाकर पहले ही देख भी लेना चाहिये। तपाने से काला पड़जाय, वह सोना भस्म के लिये न लेना चाहिये।

अशुद्ध सुवर्ण-भस्म की शान्ति का उपाय।

आमलोंका चूर्ण दो तोले लेकर, शहद में मिलाकर, तीन दिन तक चाटो। सोने की ख़राब भस्म से हुए विकार नष्ट हो जायँगे।

नोट— खराब सुवर्ण भस्म आमलों के चूर्ण और शहद की भावना देदेकर सात बार वराहपुट में—जो गजपुट से कुछ छोटा होता है—फूँकनेसे ठीक होजायगी; फिर वह विकार नहीं करेगी। पर ठीक तरहसे शोधी हुई के बराबर उत्तम न होगी और बिल्कुल बेकाम भी न होगी।

सुवर्ण-भस्म के गुण।

'भाव प्रकाश" में लिखा है—मारा हुआ सोना शीतल, कामीके लिये कल्पवृक्ष, बलदायक, भारी, वद्धता तथा रोग नाशक, मधुर, कड़वा, कषैला, पाकमें मधुर, गिलगिला, पवित्र, पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी, बुद्धि को उत्तम करनेवाला, स्मरण-शक्ति बढ़ाने वाला, बल-वृद्धि करने वाला, हृदय को प्रिय, आयुवर्द्धक, कान्तिकारक, वाणीको शुद्ध करने वाला; यानी हकलाना, मिन-मिनाना मिटाने वाला, स्थिरता करने वाला, स्थावर-जङ्गम विष-नाशक, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोष नाशक है।

और वैद्यों ने भी लिखा है—सुवर्ण-भस्म शीतल, बल-वीर्य और कान्तिवर्द्धक, प्रमेह, श्वास, कास, पित्तरोग, क्षयरोग, वमन, बुढ़ापा, मिरगी आदि नाशक है। सुवर्ण-भस्म "पृथ्वी का दूसरा अमृत है।"

सुवर्ण-भस्म के अनुपान।

मात्रा—२ चाँवल से २ रत्ती तक।

अनुपान—

(१) शरीरके दाह में—मिश्री के साथ सोना-भस्म खाओ।

(२) क्षयमें—त्रिकुटाके चूर्णओर घीमें मिलाकर सोनाभस्म खाओ।

(३) मन्दाग्नि में " " " "

(४) श्वासमें " " " "

(५) खाँसी में " " " "

(७) शरीरपुष्टिको—सोना-भस्म भाँगरे के खरस के साथ चाटो।

(८) बल और धातु बढ़ाने को—गायके दूधके साथ सोना-भस्म खाओ।

(९) समस्त नेत्र-रोगोंमें सौंठीके साथ सोना-भस्म सेवन करो।

(१०) बुढ़ापा-नाशार्थ—घीके साथ सोना-भस्म खाने से बुढ़ापा नाश होता है।

(११) कान्तिबढ़ाने को—केशर के साथ सोना-भस्म खाओ।

(१२) क्षय रोग में—पीपलों के चूर्ण और दूध के साथ सोना-भस्म खाओ।

(१४) बुद्धि बढ़ाने को—सोना-भस्म बच के साथ खाओ।

(१५) सन्निपात ज्वर नाश करने को—सोना-भस्म सोंठ, मिर्च और लौंगके साथ खाओ।

(१६) रसादिक धातु-विकार नाशार्थ—सोना-भस्म घी के साथ खाओ।

(१७) उन्माद में—सोना-भस्म सोंठ, लौंग और मिर्च के साथ सेवन करो

(१८) भयंकर प्रदरमें—चौलाईकी जड़के अर्कमें शहद मिलाकर, उसी में सोनाभस्म मिला लो और खाओ।

(१९) संकट निवारणको—आमले के चूर्ण और शहदके साथ सोना-भस्म सेवन करो ।

(२०) खाँसीमें—हल्दी, पीपलके चूर्ण और शहदमें सोनाभस्म खाओ ।

(२१) श्वासमें " "

(२२) मिरगीमें—वचके चूर्ण और शहदमें सोना-भस्म खाओ ।

(२३) उन्मादमें " "

(२४) नपुंसकतामें—पीपर, बड़ी इलायची और शहदके संग सोना-भस्म खाकर दूध पीओ ।

(२५) शरीर-पुष्टिको—कमलकी केसरके साथ सोना-भस्म खाओ ।

(२६) शरीरके दाहमें—नौनी घी के साथ सोना-भस्म खाओ ।

(२७) आयु-बढ़ानेको—शंखपुष्पी के रसके साथ सोना-भस्म खाओ ।

(२८) शिरो रोगमें—मिश्री और घी के साथ सोना-भस्म खाओ ।

(२९) पुत्र पैदा करनेको—विदारीकन्दके साथ सोना-भस्म खाओ ।

(३०) सोज़ाक और मूत्रकृच्छ्रमें—बड़ी इलायची, कपूर और मिश्रीके चूर्णके साथ सोनाभस्म खाओ ।

(३१) तेरहों सन्निपातज्वरोंमें—अदरख और पीपरके रसके साथ सोना-भस्म सेवन करो ।

(३२) प्रदरमें—काकमाचीके अर्क के साथ सोना-भस्म खाओ ।

(३३) आमातिसारमें—त्रिफले के साथ सोना-भस्म सेवन करो ।

(३४) संग्रहणीमें— " "

(३५) रजोधर्म शुद्ध करने को—काकमाचीके अर्कके साथ सोना-भस्म सेवन करो ।

(३६) खूनी बवासीरमें—नागकेशर और गोदनदुद्धीके रसमें सोना-भस्म सेवन करो ।

(३७) बोल बन्द हो जानेपर बुलाने को—एक चाँवल भर सोना-भस्म तीन चम्मच चायके साथ पिलाओ; आदमी बोल उठेगा।

चाँदीकी भस्मकी विधि।

चाँदी कैसी लेनी ?

"भाव प्रकाश" में लिखा है—भारी, चिकनी, कोमल, सफेद, घनकी चोट सहने वाली, सुवर्ण आदिके मेलसे रहित और साफ चाँदी अच्छी होती है। मतलब यह है, कि जो चाँदी खूब सफेद हथौड़ेकी चोटोंसे न टूटने वाली और नर्म हो, वही दवाके कामको अच्छी होती है। सुवैद्य ऐसी चाँदी दवाके लिए चुनते हैं, जो रंगमें खूब सफेद होती है, मोड़ने से मुड़ जाती है, छूने से चिकनी मालूम होती है, तपाने या टाँकी लगाने पर भी सफ़ेद रहती है और तोलमें कम नहीं होती तथा हथौड़ेकी चोट से फटती नहीं। आजकल जिसे ईंटकी चाँदी कहते हैं, वह अच्छी होती है। पर लेने से पहले हर तरह परीक्षा कर लेना ज़रूरी है।

जो चाँदी कड़ी, बनाई हुई, रूखी, लाल पीले पत्तर वाली और हलकी होती है तथा तपाने या कूटने से फट जाती है, वह चाँदी ख़राब होती है। ऐसी चाँदी दवा के लिये भूलकर भी न लेनी चाहिये।

चाँदी शोधने की तरकीब।

"भावप्रकाश" में लिखा है—तेल, छाछ, काँजी, गोमूत्र और कुल्थीके काढ़ेमें, चाँदीके पतले-पतले पत्रोंको आग पर तपा-तपाकर, तीन-तीन बार बुझाने से चाँदी शुद्ध हो जाती है।

चाँदीको तेल आदिमें तीन-तीन बार बुझाने से ही चाँदीके शुद्ध हो

जाने की बात इस लिए लिखी है कि, चाँदीमें ताम्बे पीतल या काँसीकी तरह दोष नहीं होते। पर, "शुद्धस्यशोधनं गुणाधिक्याय, मृतस्य मारणं गुणाधिक्याय" के वचनानुसार कितने ही वैद्य चाँदी को तैल और छाछ प्रभृति पदार्थोंमें सात-सात बार बुझानेकी सलाह देते हैं। श्यामसुन्दर आचार्य इसे "सामान्य शुद्धि" लिखकर, विशेष शुद्ध करने की भी राय दे गये हैं। हमारी रायमें भी चाँदीको उपरोक्त तैल आदिमें सात-सात बार बुझा लेने से ही काम चल जायगा। पर यदि कोई सज्जन उत्तम-से-उत्तम भस्म बनाना चाहें, वह 'विशेष शुद्धि' भी कर लें तो हर्ज नहीं; लाभ ही है। हाँ, मिहनत और ख़र्च ज़रूर है।

विशेष शुद्धि—चाँदीके पतले-पतले पत्रोंको आगमें तपा-तपा कर, नीचे के तीन पदार्थोंमें सात-सात बार बुझाने से "विशेष शुद्धि" हो जाती है:—

(१) दारुखोंका काढ़ा

(२) इमलीके पत्तोंका काढ़ा।

(३) अगस्तियाके पञ्चाङ्गका काढ़ा।

आप जब चाँदीकी सामान्य और विशेष दोनों शुद्ध कर लें, तभी भस्म करने की तैयारी करें। बिना शोधी हुई चाँदी हरगिज़ काम में न लावें। न हो तो "भाव प्रकाश" के मतानुसार तीन-तीन बार ही तैल छाछ आदिमें बुझालें। तैलादि पाँचों पदार्थोंमें प्रायः सभी धातुओंकी शुद्धि हो जाती है।

चाँदी-भस्म की विधियाँ।

पहली विधि।

(१)चाँदी मारनेके लिए आप शुद्ध तपकिया हरतालको नीबूके रसमें तीन घन्टे तक खरल करो। फिर तीन तोले चाँदीके पत्तरों पर, एक तोले हरतालका, जो खरल की गई है—लेप कर दो; यानी ऊपर नीचे उस खरल की हुई हरतालको ल्हेस दो। इसके बाद हरताल ल्हेसे हुए पत्रोंको सुनार की सी मूसमें रख कर, दूसरी मूस उस पर लगाकर, मुँह बन्द

कर दो और पीछे कपरमिट्टी करके सुखालो। सूखने पर, तीस कण्डों के बीचमें कपरमिट्टी की हुई मूसको रखकर आग लगा दो। जब आग शीतल हो जाय, उसे निकाल लो।

निकाल कर, पत्तरों पर फिर नीबूके साथ घुटी हुई हरतालका लेप करो और ऊपरकी विधिसे सब काम करके ३० कण्डोंमें फूँक दो।

इस तरह १४ बार करो; यानी बार-बार आग ठण्डी होने पर, मूससे चाँदी को निकाल लो। फिर नीबूके साथ घुटी हरतालका पत्तरों पर लेप करो, इसके बाद उन्हें मूसमें रखकर बन्द करो और ३० कण्डोंमें फूँक दो। चौदह बार में, उत्तम चाँदीकी भस्म बन जायगी।

नोट—(१)हरबार हरतालका लेप करना जरूरी है।

नोट—(२)हरतालकी जगह सोनामक्खी लेकर, उसको थूहरके दूधमें तीन घन्टे तक खरल कर लो। फिर हरतालकी तरह, ३ तोले चाँदीके पत्रों पर, एक तोले सोनामक्खी का लेप करके—ठीक ऊपरकी विधि से चौदह आँच देकर चाँदीकी भस्म कर सकते हैं। और कोई भेद नहीं है, केवल हरतालकी जगह "सोनामक्खी" लेनी होगी और थूहरके दूधमें खरल करनी होगी।

दूसरी विधि।

(२) पहले पाँच तोले चाँदीको गला लो। फिर उस गली हुई पतली चाँदी में पाँच तोले शुद्ध पारा मिला दो और खरल करो। इसमें देर न करो, फौरन घोटना शुरू करो। जब चाँदी और पारा एक हो जायँ, तब उसीमें पाँच तोले शुद्ध गंधक डाल दो और घोटो। इसके बाद, कपड़-छन किया शुद्ध हरताल पाँच तोले और मिला दो और घोटो। जब कजली हो जाय, सात-कपरौटी की हुई पक्की विलायती शीशीमें उसे भर दो। फिर "बालुका-यन्त्र" में रखकर १२ घन्टे आग दो। स्वाँग शीतल होने पर, शीशी को निकाल लो। शीशीको चतुराई से तोड़ कर, पैंदे से "चाँदी भस्म" और गले से "ताल-सिन्दूर" निकाल लो।

नोट—बालुकायन्त्रकी विधि हमने २६५ पृष्ठमें समझाई है, वहाँ देख लो।

चाँदी भस्म की तीसरी विधि।

(३) आप एक देशी राज्यका विशुद्ध चाँदी का एक रुपया लेलो। उसे तपा-तपाकर तैल, छाछ, काँजी आदि में तीन-तीन बार बुझालो। फिर थोड़ा सा गोबर लेकर, उस पर तीन तोले "अजवायन"—रुपये की चौड़ाई जितनी जगह में—एक जगह रख दो। अजवायन पर रुपया रख दो। रुपये के ऊपर फिर तीन तोले अजवायन रख दो। ऊपर से फिर गोबर रख कर गोला सा बनादो; यानी चाँदी और अजवायन न दीखें, इस तरह बन्द कर दो, पर अजवायन रुपये के नीचे ऊपर से न हटे। उस गोबर के गोले को सुखा लो। फिर चार सेर कण्डे लेकर, उनके बीच में गोबर के गोले को रख कर फूँक दो। इस तरह करके फिर रुपये को निकाल लो और ऊपर की विधि से, उसके नीचे-ऊपर तीन-तीन तोले अजवायन बिछाकर, गोबर में बन्द कर और सुखाकर, चार-चार सेर कण्डों में बारह बार फूँको; अजवायन नीचे ऊपर हर बार रखो। बारहवीं बार में रुपया फूल-जैसा हो जायगा। इस तरह आप शोधे हुए चाँदी के रुपये-जितने मोटे पत्तर को भी फूँक सकते हैं।

नोट—इस कुश्ते की मात्रा १ रत्ती की है। शहदके साथ खाने से खूब ताक़त लाता और शरीर पुष्ट करता है।

चाँदी-भस्म की चौथी विधि।

(४) एक बर्तनमें नीबूका रस खूब भर दो। चूल्हे पर आग जलाकर, एक पक्के मिट्टी के शकोरे में चाँदी के पत्तर रख लो और उन्हें आग पर तपाओ। जब वे लाल हो जायँ, उन्हें नीबूके रसमें बुझाओ। इस तरह तिरेसठ बार तपा-तपाकर, नीबूके रसमें ६३ बार बुझानेसे चाँदी की भस्म हो जायगी। हर बार बुझाने से भस्म हो होकर गिरेगी, उसे ज़मीन पर मत गिरने देना। जब भस्म हो जाय, उसे खरल में डालकर, नीबूके रसके साथ ३ घन्टे तक घोटो। घुट जाने पर, टिकिया सी बनालो और धूप में खूब सुखालो। सूख जानेपर उसे सराइयों में बन्द करके,

कपर-मिट्टी करो और सुखा लो। इसके बाद एक फुट गहरा और उतना ही लम्बा-चौड़ा खड्डा खोदकर, उसमें जंगली कण्डे भर कर, बीचमें कपरौटी की हुई सराई रखकर, आग लगा दो। आग शीतल होनेपर, सराइयोंको खोल कर भस्मको निकाल लो। यह भस्म खूब सफेद और खाने योग्य होगी।

चाँदी-भस्म के गुण।

चाँदी की भस्म—शीतल, कषैली, पाक और रस में मधुर, दस्तावर, जवानी को ठहरानेवाली, चिकनी, लेखन, वात और पित्त-नाशक एवं प्रमेह आदि रोगों को नाश करने वाली है।

वैद्योंने इसे "प्रमेह पर" ख़ास तौर से सेवन करने की सलाह दी है। यह खूब ताक़त लाती और वीर्य बढ़ाती है। यह शीतल है, अत: दाह नाशक है। मन्दाग्नि, क्षय, पाण्डुरोग, तापतिल्ली, खाँसी, मिरगी, दर्द, नवीन ज्वर, विषम ज्वर, यकृत और मदात्यय आदिको नाश करती है। उम्र, वीर्य, बल और बुद्धि बढ़ाने में अव्वल दर्जे की चीज़ है। यह भूख लगाती और विष को फौरन नाश करती तथा कमज़ोरी को मार भगाती है।

अशुद्ध चाँदी भस्म के उपद्रव।

बिना शोधी या बेक़ायदे बनाई हुई चाँदी की भस्म खुजली, पीलिया, सिर-दर्द, कमज़ोरी और वीर्य-नाश आदि रोग करती है।

उपद्रव शान्ति का उपाय।

सवेरे-शाम, दो या तीन तोले मिश्री और शहद, तीन दिन, चाटने से दूषित चाँदी की भस्म खाने के उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

चाँदी की भस्म सेवन करने के अनुपान।

मात्रा—४ चाँवल से २ रत्ती तक।

अनुपान—

(१) २० प्रमेहों में—बबूलकी छाल, महुएकी छाल और कटहलकी छाल को जलमें पीस-छानकर, उसमें "चाँदी-भस्म" मिलाकर पीओ।

(२१) उन्माद में—वच, ब्रह्मदण्डी के चूर्ण और घी के साथ चाँदी-भस्म खाओ।

(२२) मिरगी में— „ „ „

(२३) बाँझपना नाश करने को—बछड़ेवाली गायके दूध में "असगन्ध की जड़" पीसकर, उस में "चाँदी की भस्म" मिलाकर, १ मास सेवन करने से बाँझ पुत्र जनती है।

(२४) शरीर-पुष्टि को—पान में रखकर चाँदी की भस्म खाओ।

(२५) वीर्य-वृद्धिको—खोये और मिश्री में चाँदी-भस्म खाओ।

(२६) बन्ध्यापन नाश होने को—मातलिंगी का बीज बच्चेवाली गाय के दूध में पीस कर, उसमें चाँदी-भस्म मिला कर ४० दिन खाओ।

(२७) हिचकीमें—आमले और पीपरके चूर्ण में चाँदी-भस्म खाओ।

(२८) बाँझपना नाश करने को—शिवलिंगी के बीज के साथ चाँदी-भस्म खाओ।

(२९) जीर्ण ज्वर और तिल्ली में—शिवलिंगी के बीज के साथ-चाँदी-भस्म खाओ।

(३०) खाँसी में „ „ „

(३१) वायुगोले में „ „ „

(३२) आनन्द बढ़ाने को—शहद और अदरखके रस में चाँदी-भस्म खाने से अनेक रोग नाश होकर सुख होता है।

(३३) धातुपुष्टिको—छोटी इलायची, बंसलोचन और सत्त-गिलोय एक-एक रत्ती के साथ, शहदमें मिलाकर चाँदी-भस्म खाओ। ऊपर से मिश्री-मिला दूध पीओ।

(३४) बल-वीर्य-वृद्धिको—बंसलोचन, छोटी इलायची, केसर और गुलाबजल में घुटे मोती—ये सब रत्ती-रत्तीभर और चाँदी की भस्म १ या २ रत्ती—इन सब को "शहद" में मिलाकर चाटो और ऊपर से दूध-मिश्री पीओ।

(३५) धातु पुष्टिको—शहद में मिलाकर चाँदी-भस्म खाओ।

ताम्बा कैसा लेना ?

"भावप्रकाश"में लिखा है—जो ताम्बा गुड़हर के फूल की सी कान्ति वाला, चिकना, भारी, घन की चोट सहन कर लेनेवाला और लोहा तथा शीशा आदि से रहित हो—वह ताम्बा मारने योग्य है। नैपाली ताम्बा, जिस के बासन बाज़ारों में बहुत मिलते हैं, इस कामके लिए अच्छा होता है।

ताम्बा शोधने की विधि।

ताम्बे का शोधन अच्छी तरह करना चाहिये, क्योंकि ताम्बा विष से भी बुरा है। विषमें तो केवल एकही दोष है, पर अशुद्ध ताम्बे में भ्रम, वमन, विरेचन, पसीना, उत्क्लेद, मूर्च्छा, दाह और अरुचि—ये आठ दोष हैं। कहा है—

न विषं विषमित्याहुस्ताम्रन्तु विषमुच्यते।
एको दोषे विषे ताम्रे त्वष्टौ दोषाः प्रकीर्त्तिताः॥

जिसको विष कहते हैं, वह विष नहीं है; वास्तव में ताम्बा ही विष है; क्योंकि विष में तो एक ही दोष है, पर ताम्बे में आठ दोष हैं।

ताम्बे के पतले कंटकवेधी पत्रों को अग्नि में तपाओ और लाल होने पर उन्हें नीचे लिखी चीज़ों में तीन-तीन बार बुझाओ :—

(१) तेल, (२) छाछ, (३) काँजी, (४) गोमूत्र, (५) कुलथी क्वाथ,—इन पाँचोंमें सभी धातुएँ शुद्ध हो जाती हैं। "भावप्रकाश"-कर्त्ताने इन्हीं पाँचोंमें ताम्बेको शुद्ध करने की राय दी है।

नोट—रसराज-महोदधिकारमे निम्न-लिखित चीजोंमें सात-सात बार बुझाने या शोधने की बात कही है :—

(१) छाछ, (२) थूहरका दूध, (३) आकका दूध, (४) निमकका जल, (५) नीबूका रस, (६) गोमूत्र, और (७) गायका दूध ।

रसायनाचार्य श्याम छन्दर महाशयने निम्न-लिखित बारह पदार्थोंमें सात-सात बार शोधनेकी राय दी है :–

(१) तेल, (२) माठा, (३) गोमूत्र, (४) काँजी, (५) कुल्थीका काढ़ा, (६) इमलीकी छाल या पत्तियोंका काढ़ा, (७) नीबूका रस, (८) ग्वांरपाठेका रस, (६) जमीकन्दका स्वरस, (१०) गायका दूध (११) नारियलके भीतरका पानी, और (१२) शहद ।

हमारी रायमें उपरोक्त बारह पदार्थोंमें ताम्बेको शोधना सबसे अच्छा है । जितना ही परिश्रम अधिक होगा, फल भी उतना ही अच्छा होगा । और धातुओंकी शुद्धिमें कमी रहनेसे उतनी हानि न हो, पर ताम्बेकी शुद्धिमें कसर रहने से भयानक हानि है । इस लिए ताम्बेकी शुद्धिमें आनाकानी अच्छी नहीं ।

नोट—(१) तेल तिलीका लें, चाहे सरसोंका (२) दूध गायका लें, चाहें भैंसका । (३) नारियलका पानी न मिले, तो नारियलके तेलसे काम हो सकता है, (४) यदि जमीकन्दका स्वरस न मिले, तो ताम्बेके पत्रोंको जमीकन्दमें रखकर, तीन बार गजपुटकी आग देने से काम चल सकता है, (५) इमलीकी छाल न मिले, तो पत्तियों से भी काम निकल सकता है ।

ताम्बा मारनेकी विधि ।

पहली विधि ।

(१) ताम्बेके छोटे-छोटे पत्रे करके, तीन दिन तक नीबूके रसमें खेददो; पीछे खरलमें डालकर, ताम्बेका चौथाई शुद्ध पारा डालकर ३ घण्टे तक खरल करो । फिर निकालकर, ३ घण्टे तक नीबू के रस में खरल करो ।

पीछे ताम्बे से दूनी शुद्ध गंधक लेकर, पत्रों पर लपेट कर, गोला बना लो । फिर पुनर्नवाको पानीके साथ, भाँगकी तरह पीस कर, उसका गोले पर दो-दो अंगुल मोटा लेप करो ।

फिर इस गोलेको एक सरावेमें रखकर, बाकी जगहमें बालू भरदो

और ऊपरसे दूसरा सरावा ढक कर, सन्धियोंको राख और नोनसे बन्द कर दो।

सब काम हो जाने पर, उसे चूल्हे पर रख कर आग जला दो। फिर हलकी, मध्यम और तेज़ आग लगाओ; यानी अनुक्रम से आग बढ़ाओ। यह आग १२ घण्टे तक बराबर लगती रहे।

फिर आग शीतल होने पर, ताम्बेको निकाल लो। खरलमें डालकर ३ घण्टे तक ज़मीकन्दका रस दे-देकर खरल करो। खरल किये हुए ताम्बेका गोला बनाकर, उसे ज़मीकन्दके पेटमें रक्खो। उस ज़मीकन्दका मुँह ज़मीकन्दके टुकड़े से बन्द करके, उसपर एक अँगूठे जितना ऊँचा-मोटा मिट्टीका लेप कर दो। फिर फ़ौरनही उसे गजपुटमें रखकर फूँक दो। इस तरह ताम्बा मर जायगा और उसमें वमन, विरेचन, उत्क्लेद आदि कोई दोष न रहेगा।

दूसरी विधि।

(२) बन-गोभीको सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। लुगदी वज़न में एक सेर हो। उसमें दो तोले शुद्ध ताम्बा रख दो और ऊपरसे लुगदीके मसाले से ही मुँह बन्द करके, मुल्तानी मिट्टी और कपड़े की सात तह लपेट दो और सुखालो। फिर दो मन आरने कण्डों के बीचमें उस गोले को रखकर आग लगा दो; भस्म हो जायगी। इसे सब काममें ले सकते हो। मात्रा आधे चाँवल से एक चाँवल तक।

नोट—सागबीब नामक जड़ीके पत्तोंकी लुगदीमें अथवा काकजंघाकी लुगदीमें ताँबा रखकर, ठीक ऊपरकी विधि से काम करने से सर्वोत्तम ताम्बा-भस्म बनती है। इस भस्मकी बेइन्तहा तारीफ है। ताम्बा खूब शोधकर लेना चाहिये; क्योंकि इसमें विष बहुत है। इन दोनों बूटियोंसे बनी भस्म जियादा से जियादा १ रत्ती तक खा सकते हो, पर बनगोभी वाली की मात्रा एक चाँवल-भर है। एक रत्ती भस्म पानमें रखकर, सवेरे-शाम खाने और दूध पीने तथा केवल दूध और भात का आहार करने से सात दिनमें खूब पुरुषार्थ बढ़ता है।

ताम्बा-भस्म सेवनके अनुपान।

(१) हिचकी रोगमें—नीबूके रस और नीबूके बीजोंके साथ ताम्बा भस्म खाओ।

(२) खूनी और बादी बवासीरमें—वनगोभी और मिर्चोंके साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(३) आँवके दस्तोंमें—आमले और पीपरके चूर्णके साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(४) संग्रहणीमें—सोंठके चूर्ण और घी के साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(५) अतिसारोंमें—कच्चे बेलको भूँजकर निकाले हुए रसके साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(६) नामर्दीमें—मिश्री २ तोले, खोआ ५ तोले, छोटी इलायची दो माशे और ताम्बा-भस्म १ रत्ती,—इन सबको मिला कर ३ मास खाओ और ऊपरसे गाय का दूध पीओ।

(७) समस्त प्रमेहोंमें—गूलरके फलके चूर्णके साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(८) कलेजेके दाह और पीड़ामें—अनारके दानोंके रसमें ताम्बा-भस्म खाओ।

(९) वात-पित्त-कफके नाशार्थ—बड़ी इलायची और मिश्रीके साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(१०) अजीर्ण न होने देने को—अदरखके स्वरस, छोटी हरड़ और सैंधेनोनके साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(११) पित्तज्वरमें—बताशेके साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(१२) वातज्वर में पीपलों के चूर्ण के साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(१३) कफज्वरमें— „ „

(१४) १३ सन्निपातोंमें—अदरखके रस और मिर्चोंके साथ ताम्बा-भस्म खाओ।

(१५) पेटके फूलने में—१रत्ती ताम्बा-भस्म टेसूके फूलोंके काढ़े में खाओ।

(१६) पेशाब बन्द होनेमें—टेसूके फूलोंके काढ़े में ताम्बा-भस्म खाओ।

संखिया मारनेकी विधि।

पहली विधि।

संखिया दो तोले लेकर रख लो। फिर मूलीकी एक सेर राख तैयार करो। एक हाँडीमें मूली की राख आध सेर रख दो, उसपर संखिया रखदो; फिर ऊपरसे शेष मूली की राख रखकर हाथ से दवा दो। हाँडीके मुँहको पारीसे बन्द करके कपरौटो कर दो।

चूल्हे में चिराग़ की लो-जितनी आग जलाकर, उस पर हाँडी रख-दो और दिन-भर वैसी ही मन्दी-मन्दी आग लगने दो। इस तरह संखिया शुद्ध हो जायगा।

संखिया की मात्रा आधे चाँवलकी है। इस से अधिक मत लेना। यह मारक विष है। थोड़ा खाने से रोग नाश करता और अधिक से मार डालता है। इस से खाँसी, श्वास, शीतज्वर, कोढ़, लकवा और ना-मर्दी आदि रोग नाश होते हैं।

इसका अनुपान दूध, मिश्री और घी है।

संखिया मारने की दुसरी विधि।

पापड़खार चार तोले लेकर, उसमें से आधा एक मिट्टी की सराई में रखो; उस पर एक तोले संखिया रखदो; ऊपर से बाक़ी का पापड़-खार रखदो। फिर पारी पर दूसरी पारी रख कर, कपड़मिट्टी करके सुखालो और बीस सेर कण्डोंमें रखकर फूँक दो; संखिया मर जायगा।

खूराक आधा चाँवल। अनुपान दूध मिश्री और घी। यह कुव्वतेबाह, कोढ़ और लकवे की ख़ास दवा है।

नोट—अगर किसी को संखियेका विष चढ़ाहो, तो उसे गरम घी पिलाओ; विष की शान्ति हो जायगी। अगर जियादा खालिया हो, तो कय और दस्त कराओ।

हरताल भस्म की विधि।
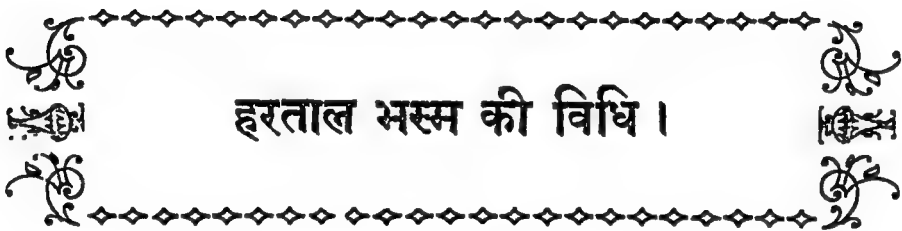
पहली विधि।

(१) आप तोले-भर शुद्ध हरताल को एक इन्द्रायणके फलमें रख दो, फिर उस पर उसका टुकड़ा रखकर छेद बन्द करदो और ऊपरसे चार कपरौटी करके सुखालो। सवा सेर आरने कण्डों के बीच में उस गोले को रख कर, आग लगा दो। इस तरह २१ इन्द्रायणके फलोंमें हरताल को रखो और २१ ही बार सवा-सवा सेर कण्डों की आग में फूँक दो। २१ वीं बार में उत्तम भस्म हो जायगी।

दूसरी विधि।

(२) छटाँक भर हरताल को पहले दही में डालकर, सात रोज़ तक रक्खी रहने दो। सात रोज़ बाद निकालकर, घोग्वार के अर्क़ में खरल करके टिकिया बनालो।

इसके बाद पीपल के वृक्षकी लकड़ियाँ जलाकर, अढ़ाई सेर राख कर लो और उसे कपड़े में छान लो।

एक हाँडी पर पाँच सात पक्की कपरौटी करके सुखालो। फ़िर उस हाँडीमें सवा सेर राख—यही पीपल की राख—भरदो और उसपर हरताल की घुटी हुई टिकिया रख दो। टिकिया पर बाक़ी बची हुई सवा सेर पीपलकी राखरखकर हाथसे दबा दो। फिर चूल्हेमें बेरकी लकड़ी जला-

कर, चूल्हे पर हाँडी रखदो। आग खूब मन्दी रखो। अगर राख में दर्ज हो जाय, तो थोड़ी सी वही पीपलकी राख और डालकर दबा दो। इस के लिये हाँडी को बराबर देखते रहो। राखमें दराज़ आवे, तो राख डालकर दबादो और आगको औरभी मन्दी कर दो। इस तरह लगातार १८ घन्टे मन्दी-मन्दी आग लगने दो।

१८ घन्टे बाद, आग शीतल होने पर, हाँडीको उतारकर टिकिया को निकाल लो। टिकिया पर कुछ राख जमी होगी, उसे चाकू से छील-छील कर उतार लो। नीचे सफेद हरताल-भस्म मिलेगी। अगर कुछ पीलापन हो, तो दूसरे दिन फिर ऊपर की विधि से पीपल-वृक्षकी राख ऊपर-नीचे रखकर, बीच में टिकिया रखकर, दिन-भर आग लगाओ। इस बार कसर मिट जायगी—हरताल सफेद हो जायगी।

नोट(१) -अगर आप हाँडी की ओर न देखेंगे, हरताल पर रक्खी राखमें दराज हो जायगी और आप तत्काल और राख डालकर दराज को बन्द न करदेंगे, तो हरताल उड़ जायगी। यह हरताल बडी गुणकारक है। लाला खूबचन्द की पोथी देखकर हमने कई बार काम लिया, वास्तव में काबिल तारीफ है।

नोट(२)—ठीक यही तरकीब संखिया तैयार करने की है; फर्क इतना ही है, कि हरताल को पीपल की राख लेनी होती है ; पर संखिया को "आधाझारे" की राख लेनी होती है।

नोट(३) - हरताल शोधकर फूंकनी चाहिये। हरताल शोधने की तरकीब आगे पृष्ठ ४११ में लिखी है।

हरताल मारने की विधि।

शुद्ध तबकिया हरतालको खरल में डाल, ऊपर से पुनर्नवा या सोंठी का रस दे देकर १२ घण्टे तक खरल करो और फिर टिकिया बनाकर सुखा लो।

फिर एक हाँडीमें—उसके आधे पेट तक—पुनर्नवा का खार या उसकी राख भरदो। राख पर हरताल की टिकिया रखदो और ऊपर से फिर वही पुनर्नवा की राख या खार भर दो। हाँडी के

मुँह पर पारी ढक दो और चूल्हे पर चढ़ादो । पहले मन्दी, फिर मध्यम और फिर तेज़ आग करदो । इस तरह पाँच दिन तक अखण्ड—लगातार आग लगाओ । परमात्मा की दयासे हरताल मर जायगी । यह भस्म खाने के लिये उत्तम है । मात्रा १ रत्ती की ।

हरताल की सेवन-विधि ।

मात्रा—१ से दो चाँवल तक । बहुतही ज़ियादा दी जाय, तो ४ चाँवल तक । बस, आगे न बढ़ना चाहिए ।

अनुपान :—

(१) रोज़ आनेवाले ज्वर में—बुख़ार आने के समय से डेढ़ घन्टे पहले, कच्चे दूधमें १ या दो चाँवल भर हरताल भस्मदो

(२) तिजारी ज्वर में—नं० १ के मुताबिक़ ।

(३) चौथैया में—नं० १ के मुताबिक़ ।

(४) जाड़ेके या बिना जाड़ेके टाइम पर आनेवाले ज्वरों में, नं० १ में लिखी विधि से काम करो ।

(५) सोज़ाक में—भेड़के दूधके खोये में १ मात्रा हरताल-भस्म मिला कर लो । ऊपर से कच्चा दूध पीओ; मीठा मत मिलाओ और गुड़, तेल, लाल मिर्च, खटाई से परहेज़ करो

(६) लिंगेन्द्रिय की ताक़तको—गरगोंटा चिड़ियाके मांस को मसाला डालकर भूनो और उसके साथ १ मात्रा खाओ । ऊपर से बिना मीठा मिला दूध पीओ । केवल दूध-भात खाओ ।

(७) नामर्दी नाश करनेको—यही विधि है, जो न० ६ में ऊपर है।

(८) पतली धातु ठीक करने को—गायके कच्चे दूध में १ मात्रा हरताल-भस्म रोज़ सात दिन तक खाओ । ऊपर से घी, भात, मलाई खाओ; और भोजन कुछ मत करो

(६) सन्निपात ज्वर में—अदरखके रस में १ मात्रा हरताल-भस्म देकर, ऊपर से घी पिलाओ।

(१०) श्वास में—चजरिया मछली को मसाला डाल कर घी में पकाओ। उसी में १ मात्रा हरताल-भस्म मिलाकर खाओ। ऊपर से चनेकी रोटी और मछली खाओ।

(११) फालिज को—मुर्गी के कच्चे अण्डे में १ मात्रा हरताल-भस्म रखकर खाओ। ऊपर से विना मीठा मिला कच्चा दूध पीओ।

(१२) बुख़ार को—अदरख ३२ माशे और अजवायन ४ माशे दोनों को पीसकर अर्क़ निकाल लो और १ मात्रा इसी अर्क़ के साथ खाओ। ऊपर से कच्चा दूध विना मीठे के पीओ

(१३) शरीरके दर्द में—भेड़ के दूधके खोयेमें १ मात्रा हरतालभस्म लो। ऊपर से घी पीओ। पथ्य—दूध चाँवल, अरहर की दाल विना नमककी।

नोट—ये सब विधियाँ उत्तम हैं। शीतज्वर और नामर्दीमें हमारी भी परीक्षित हैं। कदाचित् लाला खूबचन्दकी सभी परीक्षित हों

मूँगा-भस्म की विधि।

मूँगेके वृक्ष होते हैं। यह वृक्ष लकाद्वीप और मालद्वीप प्रभृति टापुओं के पास के समुद्र में होते हैं। वहाँ के लोग मूँगे के वृक्षों को निकाल कर लाते हैं। फिर इटली आदि यूरोपियन देशोंमें मूँगा साफ होता और उस पर रङ्ग होता है।

बहुत से वैद्य मूँगे को इसी रूपमें—जिसमें वे उसे देखते हैं—

पैदा हुआ समझते हैं। पर असलमें इसकी गुलाबी या लाल रङ्गकी डालियाँ होती हैं। कलकत्तेमें इसकी साफकी हुई डालियाँ आती हैं। लोग समझते हैं, कि मूँगेका फल अलग होता है और डालियाँ अलग। हमने करोड़पति मूँगेकी फर्मोंसे इसका पता लगाया, तो उन्होंने कहाकि, इन डालियोंके ही मूँगे बनते हैं। हमने वैसी ही डाली लेकर कई बार मूँगा-भस्म बनाई; बनी भी उत्तम और फल भी दिया।

शास्त्रोंमें लिखा है—पके हुए कुँदरू के फल के समान, लाल, गोल, चिकना, चमकदार, बिना छेद वाला मूँगा उत्तम होता है। ऐसा ही मूँगा पहनने और खाने-योग्य है। लेकिन जो मूँगा रङ्ग में पीतल के जैसा, फीके रङ्गका, टेढ़ा-मेढ़ा, छेद वाला, रूखा और कालाई लिये होता है, वह न पहनने-योग्य है और न खाने-योग्य।

आज-कल बहुत से ठग मूँगे की डाली एक आने या दो आने तोलेमें लाकर, आगमें जलाकर राख कर लेते हैं और उसे प्रवाल या मूँगा-भस्म के नामसे बेचते हैं। वह काम की नहीं होती। इसीसे बहुत से लोगोंका प्रवाल या मूँगा-भस्म पर विश्वास नहीं रहा।

संस्कृतमें मूँगेको "प्रवाल" "विद्रुम" "अङ्गारकमणि" "भौमरत्न" "रक्ताङ्ग", लतामणि, रक्तकन्द प्रभृति कहते हैं। हिन्दी में मूँगा, बँगला में पला या मूँगा, गुजराती में परवाली, फारसी में मिरजान्, अरबी में बसद और अँगरेज़ी में रेड कौरेल (Red Coral) कहते हैं।

मूँगा भस्म के गुण।

मूँगा-भस्म—मधुर, खट्टी, दीपन, हल्की, वीर्य और कान्तिवर्द्धक है। स्त्रियों को पहनने से मूँगा मङ्गल करने वाला होता है। मूँगा-भस्म सेवन करने से त्रिदोष, कफ, पित्त, राजयक्ष्मा, खाँसी, विषदोष और उन्माद आदि को दूर करता है। इसके सेवन करने

से महीने डेढ़ महीने में ही मनुष्य मोटा-ताज़ा हो जाता और रङ्ग मूँगे का सा होने लगता है। क्षय और खाँसीमें इस भस्मसे बड़ा उपकार होता है। हमने अनेक बार परीक्षा की है।

मूँगा शोधने की तरकीब।

मूँगोंको एक पक्के शकोरेमें रखकर आग पर तपाओ। जब खूब तप जायँ, सात बार घीग्वारके रसमें बुझाओ। तपा-तपाकर, सात बार घीग्वार के रसमें बुझाने से ही मूँगा और मोती शुद्ध हो जाते हैं। अगर विशेष शुद्धि करनी हो, तो सात बार चौलाईके रसमें भी तपा-तपाकर बुझाओ। अगर चौलाई न मिले, तो ग्वारपाठेमें ही बुझाओ। कोई दोष न रहेगा।

नोट—अबीध मोती आग पर तपाने से बर्तनमें से उछल-उछल कर भागते हैं, असावधानीसे आगमें या जमीन पर गिर जाते हैं। अतः मोतियोंके लिए गहरा बर्तन लेना ठीक होगा। मोती महँगी चीज है; और अबीध मोतियोंका बूका या छोटे मोती बाजरे-समान होते हैं। आग या जमीनसे खोज निकालना कठिन होता है। तपाने से मोती और मूँगोंका रंग बदल जाता है। लाल मूँगे पीले से या मटमैले से हो जाते हैं। उनका ऊपरका रंग उतर जाता है।

मूँगा मारने की पहिली तरकीब।

(१) शुद्ध मूँगा आठ तोले, शुद्ध पारा १ तोले और शुद्ध आमलासार गन्धक १ तोले—लेकर रखो।

पहले गन्धक और पारे को खरलमें डालकर कजली करो यानी उन्हें खूब घोटो, घोटने से काला काजल सा हो जायगा। पर ध्यान रहे, पारा उछलता बहुत है; अतः धीरे-धीरे खरल करना चाहिये। जब काजलसी चिकनी और काली कजली हो जाय, तब उस कजली में शोधे हुए मूँगे मिलादो और घोटो। ऊपरसे घीग्वार का रस डालते जाओ। इस तरह रस डाल-डालकर पूरे १२ घण्टे तक घोटो। इसके बाद गोला या टिकिया बनालो और सुखालो। जब

सूख जाय, उसे शराव-सम्पुटमें रख, कपरोटी कर सुखालो और एक गजपुट की आगमें फूँक कर निकाल लो। घोटने के समय आपके मूँगे स्याह हो जायँगे, उनका निशान भी न दीखेगा; पर शराव-सम्पुट या सराइयों को खोल कर निकालने पर, सुन्दर सफेद गुलाबी माइल मूँगा-भस्म मिलेगी।

नोट—इस तरह हमने अनेक बार मूँगे मोतियों की भस्म बनाई हैं। इस विधि में जरा भी तकलीफ और दिक्कत नहीं।

मूँगा भस्म की और विधि।

शुद्ध मूँगे लेकर "बिछिया बूटी" के रसमें खरल करके शराव-सम्पुट में रखकर गजपुट में फूँक दो। सम्पुट से निकाल कर, फिर इसी बिछिया बूटी के रसमें घोटो और शराव-सम्पुटमें रख, गजपुट में फूँक दो। इस तरह दो गजपुट की आग देने से भस्म तो हो जायगी, पर कसर रहेगी। अतः आगे के काम और भी करो:—

शराव-सम्पुट से मूँगा-भस्म निकाल कर, गोदनदुद्धी के रसकी पाँच भावनायें दो। सूखने पर घीग्वार के रसकी पाँच भावनायें दो। फिर टिकिया बनाकर, शराव-संपुट में रख, एक गजपुट की आग दो। इस बार निर्दोष भस्म हो जायगी।

मूँगा भस्म की तीसरी विधि।

शुद्ध मूँगे ५ तोले लेकर रखो। पहले एक सरावेमें घीग्वारका गूदा नीचे रखो। उस पर शोधे हुए मूँगे रखो, मूँगोंके ऊपर फिर घीग्वारका गूदा आध पाव रख दो और ऊपर से दूसरा सरावा ढक कर, सन्ध बन्द करके कपरौटी करदो और सुखा लो। शेषमें, शराव-सम्पुट को गजपुट में रखकर फूँक दो।

मूँगा-भस्म के अनुपान।

मात्रा—१ चाँवल से २ रत्ती तक:—

अनुपान—

(१) खाँसी में—१ रत्ती मूँगा भस्म शहद में मिलाकर खाओ।

(२) बुख़ार में नं० १ के मुताबिक़ खाओ।

(३) जीर्णज्वर में—सितोपलादि चूर्ण में १ रत्ती मूँगा-भस्म शहदमें मिलाकर चाटो।

नोट—अगर और भी जोरदार करना हो, तो मोती और चाँदीके वर्क भी मिला दो। इससे ज्वर भी जायगा और बल भी बढ़ेगा।

(४) खाँसी और कफ सहित शीतज्वर में—१ रत्ती मूँगा-भस्म और १ रत्ती अभ्रक-भस्म दोनों मिलाकर, पान में रखकर खाओ।

(५) कफकी खांसी में—मूँगा-भस्म आधी रत्ती और अभ्रक-भस्म आधी रत्ती मिलाकर पानमें खाओ।

मोती-भस्म की विधि।

मोती की उत्पत्ति।

मोती आठ तरह के होते हैं:—(१) सीप से, (२) शंख से, (३) सूअर से, (४) हाथी से, (५) मैंडक से, (६) बाँस से, (७) मछली से, और (८) साँप से। पर आजकल, प्रायः सीपके ही मोती मिलते हैं।

जो मोती रंग में फीका, चपटा, मछली की आँख जैसी ललाई लिये, टेढ़ा-मेढ़ा, खड्डेवाला, रूखा और ऊँचा-नीचा होता है, वह न खाने के कामका होता है और न पहनने के।

जो मोती तारों के समान चमकदार, मोटा, चिकना, गोल, चन्द्रमा-जैसा सफेद, तोल में भारी और बिना छेदवाला होता है, वही खाने और पहननेके काम का होता है।

मोती के संस्कृत में मौक्तिक, शौक्तिक, मुक्ता, इन्द्र, रत्न, शशि-

प्रभा, सुधांशुरत्न, लक्ष्मी, हिम, शुक्तिमणि आदि बहुत से नाम हैं। इसकी प्रभा चन्द्रमा के जैसी होती है, इसी से इसे शशिप्रभा कहते हैं। मोती चन्द्रमा को प्यारा है, अतः चन्द्रमा की पीड़ा-शान्ति के लिए "मोती" और मंगल ग्रह की शान्ति के लिए "मूँगा" पहनना अच्छा है।

मोती की परीक्षा।

यों तो अनुभवी पुरुष मोती की चन्द्रमा-जैसी सफेदी, गुलाई, मुटाई, भारीपन और चिकनाई से ही समझ लेते हैं, कि यह मोती अच्छा है। जिस में मछली की सी आँख की ललाई, टेढ़ा-मेढ़ापन, ऊँचा-नीचापन, गद-मैली रंगत, रुखाई और रंगका फीकापन देखते है, उसे निकम्मा समझते हैं। फिर भी शास्त्र में एक ऐसी परीक्षा लिखी है, जिस से मोती की परख न जानने वाला भी उसकी बुराई-भलाई समझ सकता है।

जब आप मोती की परीक्षा करना चाहें, तब एक हाँडी में एक सेर गोमूत्र और छटाँक भर साँभर नमक पीस कर डालदें। उस हाँडी पर एक आडी लकडी रख दें। मोतियों को एक पोटली में बाँध कर, पोटली को हाँडी में इस तरह लटकादें, कि पोटली गोमूत्र में डूबी रहे और कुछ ऊँची भी रहे, यानी झूले की तरह बना दें। इसी तरहके यंत्र को "दोलायंत्र" भी कहते है, क्योंकि दोला का अर्थ झूलना है। हाँडी को चूल्हे पर चढ़ाकर नीचे आग लगादें। ६ घन्टे तक आग लगावें। बाद ६ घन्टे के पोटली को निकाल लें और मोती या मोतियों को धान यानी चाँवलों की भूसी में रख कर मलें। अगर मोती असली होगा, तो उसका रंग-रूप ज़रा भी न बदलेगा। यदि ख़राब होगा, तो रंग-रूप बदल जायगा। जिन मोतियों का रूप-रंग न बदले, उन्हें ही भस्म को ले लो।

मोती-भस्म की विधि।

मोती और मूँगेका शोधन और मारण एकसाही है। मोतियों को

एक औंड़े बासन में रख कर, आग पर गरम कर-करके, घीग्वारके रस में सात बार बुझाओ। इस तरह उनके दोष निकल जायेंगे।*

पीछे; जितने मोती हों, उनका आँठवाँ भाग शुद्ध पारा और उतनी ही शुद्ध गंधक ले लो। पहले गंधक और पारे की कजली करके, उसी में मोती डाल कर, घीग्वार के रस में १२ घन्टे घोटो। पीछे टिकिया बना कर, शराव-सम्पुट में रखकर, गजपुट में फूँक दो। स्वाँग शीतल होने या आग ठण्ढी होने पर, मोती-भस्म निकाल कर शीशी में रखलो।

मोती-भस्म की दूसरी विधि।

(२) शोधे हुए एक तोले अबीध मोती लेकर, घीग्वारके पट्ठे के चार तोले गूदे के बीच में उन्हें रख दो। फिर उस पट्ठे को शराव-सम्पुट में रख कर, कपरौटी करके सुखालो और चार सेर कण्डों में फूँक दो। सुन्दर भस्म हो जायगी।

मोती-भस्म की तीसरी विधि।

(३)शुद्ध मोती लेकर, पाताल नीमकी जड़के साथ सिल पर पीसी हुई लुगदी के बीच में उन्हें रखकर, उस लुगदी को शराव-सम्पुट में बन्द करके, गजपुट में फूँक दो। एक आग में ही भस्म हो जायगी।

उस भस्मको फिर सम्पुटसे निकालकर, खरलमें डालकर, नीबू के रस के साथ घोटो और शराव-सम्पुट में रखकर, १० सेर कण्डों में फूँक दो।

उसे फिर निकालकर, घीग्वारके रसमें खरल करो और शराव-सम्पुट में रखकर गजपुट में फूँक दो। इस तरह २ गजपुट की आग खाने से मोती-भस्म सब काम के लायक हो जायगी।

* मोती या मूँगा जो शोधने हों, एक कपड़े में बाँध लो। एक घड़े में आधा घड़ा इन्द्रायण का रस भर दो और घड़े पर एक आड़ी लकड़ी रखकर, उस लकड़ी में ऊपर की मोती मूँगे की पोटली को बाँधकर भीतर रसमें लटका दो और घड़े को चूल्हेपर चढ़ा दो, नीचे से ३ घण्टे आग लगाओ। मोती-मूँगा शुद्ध हो जायँगे।

मोती-भस्म सेवन करनेके अनुपान।

मात्रा आधी रत्ती से २ रत्ती तक। कमज़ोर को २ चाँवल-भर ही काफी है।

(१) ताक़त के लिए—१ रत्ती मोती-भस्म "सितोपलादि चूर्ण" और ादी के वर्कों में सेवन करो।

(२) हिचकी रोग में भी ऊपर की तरह ही सेवन करो।

(३) अधिक वीर्यपात के कारण से हुए ज्वर में—जिस में खुश्की हो, बार-बार ग़श आते हों, कमज़ोरी हो, अन्तकाल मालूम होता हो, १ रत्ती मोती-भस्म, १ वर्क चाँदी का, १रत्ती सत्त-गिलोय, १ रत्ती वंस-लोचन, एक छोटी इलायची, १ रत्ती वंग भस्म और १ रत्ती सार—मैनसल के साथ फूँका हुआ,—इन सबको मिलाकर, शहद या शर्वत अनार में फौरन खिलाओ; पन्द्रह मिनट में आराम होगा। अगर दवा देने में देर होगी, तो रोगी मर जायगा।

मोती-भस्म के गुण।

मोती-भस्म—मधुर और ठण्डी है। यह राजयक्ष्मा, उरःक्षत, नेत्र-रोग, वीर्य की कमज़ोरी और नाताक़ती आदि रोगों को नाश करती है। खाँसी, श्वास, कफक्षय और अग्निमान्द्य प्रभृति को नाशकरके शरीर को हृष्ट-पुष्ट और बलवान करती है। और भी लिखा है—मोती-भस्म से नेत्ररोग, खाँसी, प्रमेह, सोज़ाक, ज्वर और मूत्रकृच्छ्र, ये सब आराम होते हैं। मोती भस्म शीतल और समस्त रोग-नाशक है।

चन्द उपधातु और विष-उपविषों की शोधन-विधि ।

गन्धक का वर्णन ।

गंधककी पैदायश ।

कहते हैं, पहले, श्वेत द्वीपमें पार्वतीजी क्रीडा करती थीं । उनके कपड़े मासिक धर्म होनेसे रजसे भीग गये । तब उन्होंने कपड़ों-समेत क्षीर-सागरमें स्नान किया । उनके कपड़ों से जो रज गिरा, उसी से "गन्धक" बन गयी ।

गंधक के गुण आदि ।

संस्कृत में गन्धक को गन्धक,गन्ध-पाषाण, सौगन्धिक, गौरीबीज, पामाघ्न, पामारि, गन्धमोदन और रसगन्धक प्रभृति कहते हैं । हिन्दी, बँगला, मरहटी और गुजराती में "गन्धक" कहते हैं । फारसीमें गोदीद और अँगरेज़ीमें सल्फर (Sulphur) कहते हैं ।

गन्धक चार तरह की होती है—(१) लाल, (२) पीली, (३) काली, और(४) सफेद । सोना बनानेवालोंके काममें लाल, रसायन के काम में पीली या सफेद, घावों पर लगाने के काममें सफेद; और काली गन्धक सोना बनाने आदि सब कामों में उत्तम है; परन्तु यह मिलती नहीं ।

लोक में दो तरह की गन्धक मशहूर हैं :—(१) लूनिया, और (२) आमलासार । आमलासार गन्धक के तीन भेद हैं:—(१) शुकतुण्ड, (२) सूआ पङ्खी, और(३) प्रसिद्ध आमलासार गन्धक । शुकतुण्ड—तोते

की चोंच जैसी लाल होती है; यह सोना बनाने के काम आती है। यह शरीर को खूब बलवान कर सकती है ; पर मिलती नहीं। सूआपाखी तोते की पूँछके रङ्गकी होती है। यह कुछ खोजसे मिल जाती है। इस के योग से सभी रस अच्छे बनते हैं, पर कठिनाई से मिलने के कारण वैद्य लोग तीसरी "आमलासार" गन्धक को ही लेते हैं, जो पीली, चमकदार और अतीव चिकनी होती है। लूनिया गंधक कोई कामकी नहीं होती। हाँ, खुजली प्रभृति के लेप आदि में बरती जा सकती है।

गन्धक—चरपरी, कड़वी, उष्णवीर्य, कषैली, दस्तावर, पित्तकारक, पाकमें चरपरी, रसायन; विसर्प, कृमि, कोढ़, खुजली, क्षय, प्लीहा, कफ और वातको नष्ट करने वाली है।

अशुद्ध गंधक के दोष।

विना शोधी हुई गन्धक—कोढ़, विषम ज्वर, सूजन और रक्तविकार पैदा करती एवं बल वीर्य और रूपको नष्ट करती है, अतः शोधी हुई गन्धक ही लेनी चाहिये। विना शोधी हुई गन्धक को काममें न लाना चाहिये।

शुद्ध गंधक के गुण।

शुद्ध गन्धक—दस्तावर, बुढ़ापा और मृत्यु नाशक तथा खुजली, विसर्प, कृमि, कोढ़, क्षय, तिल्ली, कफ तथा वात नाशक है।

गंधक शोधने की विधियाँ।

पहली विधि।

(१)एक मिट्टी की हाँड़ीमें कच्चा दूध आधे-पेट भरदो। ऊपर से एक पतला कपड़ा—झन्नासा उस पर बाँधदो। फिर एक लोहेकी कलछी में गन्धक के बराबर घी लेकर गरम करो। उसी में गन्धक डालदो और आग पर पिघलाओ। जब गन्धक पिघल जाय, दूधमें डालदो। कपड़ेमें होकर गन्धक निकल जायगी और फिर वह शुद्ध समझी जायगी। पर यदि उसकी ज़र्दी न जाय, तो जबतक ज़र्दी कम न हो जाय, दो

तीन दफा ऐसा ही करो; यानी गन्धक को दूधसे निकाल कर, फिर दूसरा दूध हाँडीमें भर कर, नये घी में गन्धक पिघला कर दूधमें डालो।

दूसरी विधि।

(२) एक और सीधी तरकीब यह है—आप हाँडीमें दूध भरकर, ऊपर कपड़ा बाँधदो। कपड़े के ऊपर, हाँडी के किनारों पर, आटेकी चार अंगुल ऊँची दीवार बनादो। उस कपड़े पर गन्धक पीसकर रखदो और दीवार पर एक तवा रखकर, तवे पर कोयले सिलगादो। गरमी पाकर गन्धक दूधमें जा गिरेगी और खील सी हो जायगी। बहुत लोग गन्धकको इस तरह भी शुद्ध करते हैं, पर घी में शोधना इससे अच्छा है। मामूली कामोंके लिये, इस तरह भी शोध सकते हो।

तीसरी विधि।

(३) गन्धक को कितने ही वैद्य अच्छी तरह विलोयी हुई छाछ में भी शोधते हैं। एक हाँडी में, गन्धक के अनुमान से, विलोई हुई छाछ भरदो। उस पर झन्नासा पतला कपड़ा बाँध दो। एक कलछी या बड़े बर्तनमें एक भाग घी और चार भाग आमलासार गन्धक पीस कर मिलादो और आग पर तपा-तपाकर, उसी छाछ के बासन में उसे छोड़ो। बर्तन में नीचे गन्धक के ढेले से मिलेंगे। अगर आप और भी पाँच सात बार इसी तरह घी में पिघला-पिघला कर दूध या छाछमें शोधेंगे, तो गन्धक औरभी उत्तम हो जायगी। शोध लेने पर, गन्धक को गरम जलसे धोकर, गुलाब के अर्क़ या नीबू के रसमें २४ घण्टे तक भिगो रखो। यह सब से अच्छी गन्धक होगी।

चौथी विधि।

(४) चौथी विधि यह है—गन्धक को घी में, ऊपर की विधि से, पिघला-पिघलाकर, चार बार दूधमें बुझाओ और फिर घी में पिघला-पिघला कर, दो बार भाँगरे के स्वरस में बुझाओ। इस तरह परमोत्तम शुद्धि होती है।

पाँचवीं विधि ।

(५) पाँचवीं विधि—गन्धक को घीमें गला-गलाकर, कपड़ेमें होकर ६ वार गायके दूधमें छोड़ो । फिर घी में पिघला-पिघलाकर ६ वार भाँगरे के रस में डालो । फिर १२ घण्टे तक गन्धक को आकके दूधमें खरल करो । इसके बाद घीमें पिघला कर, एक बार दूधमें छोड़ो । शेषमें, गन्धक को खरल में डाल कर, पाँच दिन तक घीग्वार के रसमें खरल करो और फिर सुखाकर रखलो । यह गन्धक अमृत-समान है । खाने के लिए सर्वोत्तम है । इसके सेवन से समस्त रोग नाश हो जाते हैं ।

अशुद्ध गंधक के दोषों की शान्ति का उपाय ।

अगर अशुद्ध गन्धक सेवन करनेसे कुछ विकार हो जायँ; तो आप रोगी को "गायके दूधमें गायका घी" मिलाकर पिलावें और भोजन न दें । एक सप्ताह में सब दोष शान्त हो जायेंगे ।

गंधक सेवन-विधि

(१) प्रमेह में—शुद्ध गन्धक १ तोले गुड़में मिलाकर खाने और ऊपर से दूध पीने से बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

(२) मन्दाग्नि—शुद्ध गन्धक शहद में मिलाकर लगातार कुछ दिन खाने से मन्दाग्नि नष्ट हो जाती है ।

(३) नेत्र रोगमें—शुद्ध गन्धक छै महीने तक सेवन करने से गिद्ध कीसी नज़र हो जाती है ।

हिंगुल-वर्णन ।

हिंगुल के नाम और लक्षण ।

संस्कृत में हिंगुल के दरद, म्लेच्छ, इङ्गुल, चूर्ण-पारद, रस-स्थान, हंसपाद और शुकतुण्डक आदि बहुतसे नाम हैं । इसे हिन्दीमें हिंगुल और सिंगरफ कहते हैं । बँगलामें हिंगुल, गुजरातीमें हिङ्गलो, मरहटी में हिंगुल, फारसी में सिंग्रफ, अरबी में जञ्जफर और अङ्गरेज़ोमें "सल्फरेट आव् मरकरी" कहते हैं ।

सिंगरफ सफेद, पीला और जवा-कुसुम के रङ्गका,—इस तरह तीन तरह का होता है। सफेद रङ्गवाले को चर्मार, पीले को शुकतुण्डक, और लालको हंसपाद कहते हैं। इनमें पहले से दूसरा और दूसरेसे तीसरा उत्तम है। "हंसपाद हिंगुल" ही बहुधा दवाके काममें आता है। यही सबसे उत्तम है।

हिंगुल के गुण ।

सिंगरफ कड़वा, कसैला, चरपरा, नेत्र-रोग, कफ, पित्त, हुल्लास, कोढ़, ज्वर, कामला, तिल्ली, आमवात और विष-नाशक है। इस हिंगुल को नीबू या नीमके पत्तोंके रसमें खरल करके, "डमरूयन्त्र"में रख कर, आग लगाने और ऊपर की हाँडी शीतल जलसे तर रखने से, ऊपर की हाँडीमें विशुद्ध पारा आ लगता है। उस पारेमें धूआँ की कालौस होती है। उसमें से पारा निकाल कर, साफ कर लेना चाहिये। हिंगूल से निकाला हुआ पारा शुद्ध होता है। इसको शोधने की दरकार नहीं। यह प्रायः सब कामोंमें लिया जा सकता है।

हिंगुल से पारा निकालने की विधि ।

हिंगूल को नीम के पत्तोंके रसमें अथवा नीबू के रस में ३ घण्टे तक खरल करके, एक कपरौटी की हुई हाँडी में रखकर, ऊपर से दूसरी हाँडी औंधी मारकर, सन्धों को खूब अच्छी तरह से बन्द करदो। राख, लोहकीट, रुई और मिट्टीको पानीके साथ पीसकर, लुगदी सी बनाकर, उसे चिथड़ों में मिलाकर, उसीसे हाड़ियों की दरा-जोंको बन्द करदो और कई तह इस तरह के मिट्टीमें लसे कपड़ोंकी ऊपर चढ़ादो; ज़रा भी साँस रहने से, आग पर हाँडी रखने से पारा निकल जायगा। फिर हाँडीको सुखाकर, चूल्हे पर चढ़ादो और ऊपरकी हाँडी पर रेज़ोके कपड़ेकी २० तह करके और पानीमें भिगो कर रखदो। बीच-बीच में कपड़े पर शीतल जल डालते रहो, पर नीचेकी हाँडी पर पानी न पड़े, वरनः हाँडी फूट जायगी। एक सेर हिंगूल में प्रायः तीन

पाव पारा निकल आवेगा। यह पारा शुद्ध है। इसे शोधने की दरकार नहीं। इसे हरकाम में ले सकते हो।

हिंगुल शोधने की विधि।

(१) नीबू के रस की या भेड़के दूध की सात भावना देनेसे सिंगरफ शुद्ध हो जाता है।

(२) कोई-कोई सिंगरफ को ६ घण्टे तक नीबू के रसमें खरल करते हैं और फिर ६ घण्टे तक भेड़ के दूध में खरल करते है; तब शुद्धि मानते हैं। यह विधि भी सुभीते की है। एक दिनमें ही काम हो जाता है और कोई दोष नही रहता।

नोट—किसी दवाके रस या काढ़ेमें किसी चीज को डालकर खरल करो और सुखालो,—बस यही भावना है। इसी तरह जितनी भावना देनी हों, उतनी ही बार दवाको रस या काढ़ेमें मर्दन करके या खरल करके सुखालो। एक दफा सूख जाने पर, दूसरी बार फिर ताजा रसमें घोट कर सुखाने से, दूसरी भावना होती है। इसी तरह दूसरी बार सूखने पर तीसरी बार फिर ताजा रसमें घोटकर सुखाने से तीसरी भावना होती है। बस, इसी तरह और आगे समझलो। बहुत बार एक दिन में एकही भावना दी जा सकती है। कभी-कभी जल्दी सूख जाने से दो तीन भी।

शिलाजीत वर्णन।

शिलाजीत के सम्बन्ध में हमने इसी भागके पृष्ठ ५०-५३में बहुत कुछ लिखा है। इसके शोधने की तरकीबें भी लिखी हैं। फिरभी; दो एक सरल शोधन-विधि और भी लिखते हैं:—

(१) शिलाजीतको एक दिन त्रिफले के काढ़े में खरल करो। इसके बाद, एक दिन गायके दूधमें खरल करो। इस तरह शिलाजीत शुद्ध हो जाता है।

(२) आध सेर त्रिफला जौ-कुट करके बत्तीस सेर पानीमें औटाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छानलो। इस छने हुए पानीमें

तीन पाव शिलाजीत दरदरा सा कूटकर डालदो और २४ घण्टे भीगने दो। इसके बाद, पानी को नितार लो; गाद न आने पावे। इस नितरे हुए शिलाजीत के जल को कड़ाही में औटाओ; जब राव सा गाढ़ा हो जाय, आग से उतार लो। इसके बाद; इस गाढ़ी रबड़ी सी को एक दिन गायके दूध में घोटो; फिर एक दिन त्रिफले के काढ़ेमें घोटो और फिर एक दिन भाँगरेके स्वरसमें घोटो। इतने काम होने पर, शिलाजीत शुद्ध हो जायगा। इस में कष्ट अधिक है; पर काम अच्छा होगा। अगर जल्दी न हो, तो इसी विधि से शिलाजीत शोधना चाहिये।

मैनसिल-वर्णन।

मैनसिलके नाम और गुण।

संस्कृतमें मैनसिलको मनः शिला, शिला, नागजिह्विका, नागमाता और रक्तनेत्रिका आदि कहते हैं। हिन्दीमें मैनसिल, बँगलामें मनगाछ, मरहटीमें मनशील, गुजरातीमें मणशील, अँगरेजीमें (Realgar) रेलजर और लैटिनमें आरसेनिकम सल्फीडम कहते हैं।

शुद्ध मैनसिल—भारी, रंगको सुधारने वाला, दस्तावर, गरम, लेखन, चरपरा, कड़वा और चिकना है तथा विष-विकार, श्वास, खाँसी, भूतबाधा, कफ और खून-विकार नाशक है।

मैनसिल हरतालकाही एक भेद है। हरताल बहुत पीली होती है और मैनसिल रक्त वर्ण का होता है।

अशुद्ध मैनसिलके दोष।

बिना शोधा मैनसिल—बल को कम करता, दस्त रोकता, मूत्ररोग और शर्करायुक्त मूत्रकृच्छ्र करता है।

मैनसिल शोधनेकी विधि।

मैनसिलको, तीन दिन तक, दोलायंत्रसे बकरीके दूधमें पकाओ,

फिर बकरीके पित्तेकी सात भावना दो। बस, मैनसिल शुद्ध हो जायगा।

खुलासा यह है कि, मैनसिलको एक पोटलीमें बाँध लो। एक हाँडीमें बकरीका दूध—आधे पेट तक—भर दो और उस पर एक लकड़ी आड़ी रख दो। उस पोटलीको लकड़ीमें बाँध कर हाँडीमें लटका दो। इस तरह लटकाओ, कि पोटली दूधमें लटकती रहे। हाँडी को चूल्हे पर चढ़ा दो और नीचे आग जला दो। इस तरह तीन दिन तक पकाओ। चौथे दिन, उसे पोटली से निकालकर, बकरीके पित्ते के साथ खरल करो और सुखाओ। सूखने पर, फिर पित्ते के साथ खरल करो। इस तरह सात बार सुखाओ और सात बार पित्तेके साथ खरल करो।

दूसरी विधि—बहुत लोग मैनसिलको बकरीके मूत्रमें तीन दिन औटाकर शुद्ध कर लेते हैं। बाज़े तीन दिनतक कुम्हड़े के रसमें औटा कर शुद्ध कर लेते हैं।

तीसरी विधि—कितनेही वैद्य मैनसिलको केवल अदरखके स्वरस में अथवा अगस्तके रसमें घोटकर शुद्ध मान लेते हैं और सब कामोंमें बर्तते हैं।

नोट (१)—तीनों विधियाँ उत्तरोत्तर एक दूसरेकी अपेक्षा जलदी की हैं। अगर जलदी न हो, तो पहली ही विधि से काम लेना चाहिये।

नोट (२)—जहाँ "मैनसिल" शब्द हो, वहाँ आप शोधा हुआ मैनसिल ही काम में लावें।

हरताल वर्णन।

हरतालके नाम और गुण।

संस्कृतमें हरिताल, ताल, गोदन्त, कांचनरस, हरिबीज, सिद्ध-धातु, कनक-रस, गौरी ललित और विडारक आदि कहते हैं। हिन्दी, बंगला, मरहटी और गुजराती सबमें "हरताल" कहते हैं। अंगरेज़ीमें

ओरपीमेण्ट (Orpement) और लैटिनमें यैलो आर्सेनिकम सल्फीडम (Yellow Arsenicum sulphidum) कहते हैं।

हरताल दो तरहकी होती हैं :—(१) तबकिया, जिसे पत्राख्य भी कहते हैं। इसमेंसे तबक या अभ्रककेसे पत्रे निकलते हैं। इसका रंग सोनेका सा होता है। यह भारी और चिकनी तथा रसायन है; यानी बुढ़ापे और मृत्युको जीतने वाली है। मतलब यह, तबकिया हरताल सर्वोत्तम होती है। (२) दूसरे प्रकारकी हरताल गोले सी होती है। इसमें पत्रे नहीं होते और ताक़त कम होती है। यह अल्प गुण वाली और स्त्रीके पुष्पकी नाशक है।

शुद्ध और मारी हुई हरताल के गुण।

हरताल—चरपरी, चिकनी, कषैली, गरम; विष, खुजली, कोढ़, मुखरोग, रक्त-विकार, कफ, पित्त, केश और व्रण नाशक है। शुद्ध हरतालके सम्बन्धमें कहा है:—

तालकं हरते रोगान् कुष्ठमृत्युज्वरापहम्।
शोधितं कुरुते कान्तिं वीर्यवृद्धिं तथायुषम्॥

शुद्ध हरताल—रोगनाशक, कोढ़, मौत तथा ज्वर हरने वाली, कान्तिको सुन्दर करने वाली एवं वीर्य और आयु बढ़ाने वाली होती है।

अशुद्ध हरताल के दोष।

अशुद्ध हरताल—आयुनाशक, स्फोट, ताप, अंगसंकोच, कफ-वात और प्रमेह पैदा करने वाली है। अतः हरतालको बिना शोधे खानेके काममें न लेना चाहिये।

हरताल शोधनेकी विधि

तबकिया हरतालके टुकड़े-टुकड़े करके, दोलायंत्रकी विधिसे—जिस तरह हम मैनसिलके शोधनेमें समझा आये हैं—नीचे लिखी चार चीज़ों में तीन-तीन घण्टे पकाओः—(१) काँजी, (२) पेठेका रस, (३) तिलीका तेल, और (४) त्रिफलाका काढ़ा।

पहले काँजीमें पकाओ, फिर पेठेके रसमें, फिर तिलीके तेलमें और शेषमें त्रिफले के काढ़ेमें । हरेकमें तीन-तीन घन्टे पकाने से हरताल शुद्ध हो जायगी ।

तूतिया-वर्णन ।

तूतियाके नाम और गुण

संस्कृतमें तूतियाको तुत्थ, शिखिग्रीव, तुत्थक, ताम्रगर्भ, मयूरतुत्थ, ताम्रोपधातु, नील और हेमसार आदि कहते हैं । हिन्दीमें तूतिया और नीलाथोथा, बँगला में तूँतिया, मरहटी में मोरथुथु, गुजराती में मोरथूथू, फारसीमें इदिया, अरबीमें तूतिया-अकज़र, अंगरेज़ीमें सलफेट आव् कॉपर (Sulphate of copper) कहते हैं । तूतिया ताम्बेकी उपधातु है । इसमें कुछ ताँबेका मिलाव होता है ।

तूतिया के गुण ।

नीला-थोथा—चरपरा, खारी, कषैला, वमनकारक, हलका, लेखन, मलभेदक,—दस्तावर, शीतल, नेत्रोंको हित, कफ, पित्त, विष, कोढ़, और खुजली नाशक है । इसको जलमें घोलकर, पिचकारी लगाने से सोज़ाकमें बहुत जल्दी लाभ होता है ।

तूतिया शोधन-विधि ।

(१) तूतिया में दसवाँ भाग सुहागा डालकर खरल मे रक्खो, ऊपर से बिल्ली और कबूतरकी विष्ठा डाल-डालकर खरल करो । फिर गोला बनाकर, सराई में बन्द कर, १ पुट की आग देदो । फिर दहीमें खरल करके १ पुटकी आग दो । शेषमें, शहद में खरल करके १ पुटकी आग दो, इस तरह तूतिया शुद्ध होकर मर जायगा ।

(२) सिरके और अचार में नीलाथोथा ३ घन्टे खरल करके, टिकिया बनाकर, सराइयों में बन्द कर, आग में फूँकदो ; तूतिया शुद्ध हो जायगा ।

(३) खानका तूतिया, (क) गाय के मूत्र, (ख) भैंसके मूत्र, और (ग) बकरी के मूत्र में तीन-तीन घण्टे तक पकाने से शुद्ध हो जाता है।

नोट—बनावटी तूतिया को मिट्टी के बासन में डालकर, ऊपर से नौसादर का पानी भर कर घोलदो। जब पानी नितर जाय और तूतिया पेंदे में जम जाय, पानी को निकाल दो। फिर उसे धूप में सुखा लो। बस, शुद्ध हो गया।

तूतिया मारण।

एक भाग शुद्ध पारा, एक भाग शुद्ध गंधक और दो भाग शुद्ध तूतिया तीनों को खरल में खरल करो। पीछे पारे या गंधक का आधा शुद्ध सुहागा मिला दो और घोटो। ऊपर से बड़हरका काढ़ा भी डालते जाओ। शेष में सुखा लो। इस मसाले को कपरौटी की हुई शीशी में रख, वालुका-यंत्रकी विधि से चूल्हे पर चढ़ा कर, ४८ घण्टे आग दो। आग आरम्भ से ही तेज़ रहे। समय पूरा होते ही आग बन्द करदो। शीतल होने पर, शीशी के गलेमें "सिन्दूर रस" और पेंदेमें "तूतिया-भस्म" मिलेगी। यह भस्म ताम्र-भस्म के समान गुणकारी होती है।

मुर्दासंग-वर्णन।

नाम और गुण।

कंकुष्ठ या मुर्दासंग हिमालयकी चोटियों पर होता है। इसे संस्कृत में कंकुष्ठ, काक-कुष्ठ, शोधक, और कालमालक आदि कहते हैं। हिन्दी में कंकोठ, मुर्दासंग; बंगला में पार्वतीय मृत्तिका विशेष, मरहटी में मुर-दाड़सिङ्ग, गुजराती में पीलियो और फारसी में मुर्दार संग कहते हैं।

यह दो तरह का होता है—(१) रक्तकाल, (२) अण्डक। इन में भारी, चिकना और पीली कान्तिवाला पहला अच्छा होता है। श्याम, पीला और हलका "अण्डक" नामका अच्छा नहीं होता।

मुर्दासङ्ग—दस्तावर, कड़वा, चरपरा, गरम, वर्णकारक; कृमि, शोथ, उदर-रोग, अफारा गुल्म और कफ नाशक है।

शोधन-विधि ।

(१) हिमामदस्ते में मुर्दासङ्ग को कूटकर कपड़-छन करलो और अदरख के रसमें तीन बार घोट-घोट कर सुखा लो। बस, मुर्दासङ्ग शुद्ध हो जायगा।

मारने की तरकीब ।

शुद्ध मुर्दासङ्गको पीसकर, ग्वारपाठेके रसमें घोट कर, टिकिया सी बनालो। फिर सुखाकर, सराव-सम्पुट में रख, नौ अंगुल गहरे-चौड़े और लम्बे गड्ढे में कण्डे भरकर, उसके बीचमें सराई रख कर फूँक दो। मुर्दासङ्गकी उत्तम खाने-योग्य भस्म हो जायगी।

सिन्दूर-वर्णन।

संस्कृत में सिंदूर के सिन्दूर, रक्तरेणु, शिव, शृंगार-भूषण, रंगज, वंगज, रक्त, गणेश-भूषण, सौभाग्य, और सन्ध्याराग आदि नाम हैं। हिन्दी में सिन्दूर, बङ्गला में सिन्दुर, मरहटीमें शेंदुर और अंगरेज़ी में ओरिनोटो (Orinotto) कहते हैं।

सिन्दूर—गरम, टूटे हाड़ को जोड़नेवाला, घावको शोधने और भरने वाला, विसर्प, कोढ़, खाज-खुजली तथा विष को नष्ट करता है।

शोधन-विधि ।

सिन्दूर को ६ घण्टे तक दूध में खरल करो। इसके बाद नीबू के रसमें ६ घन्टे तक खरल करो। बस, सिन्दूर शुद्ध हो जायगा।

मण्डूर-वर्णन ।

लोहेको आगमें धमाने से जो मैल निकलता है, उसे मण्डूर, लोह, सिंहानिका, किट्टी और सिंहान कहते है। बोल-चालमें इसे लोहकीटी या कीटीसार कहते हैं।

जिस लोहे का कीट होता है, उसमें उसीके से गुण होते हैं ।

नोट—मण्डूर शोधनेकी विधि और उसके सम्बन्ध की कितनी ही जानने योग्य बातें हमने "चिकित्सा चन्द्रोदय" तीसरे भाग के पृष्ठ ४०४ में लिखी हैं ।

मण्डूर शोधन-विधि ।

चूल्हेमें बहेड़ेकी लकड़ियाँ जलाओ । एक बर्तनमें मण्डूर रख कर, आग पर लाल करो । जब लाल हो जाय, गोमूत्रमें बुझा दो । इस तरह तपा-तपाकर सात बार गोमूत्रमें बुझाने से मण्डूर शुद्ध हो जाता है । बुझाने से वह टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाता है। शेषमें, मण्डूरको पानीमें धोकर सुखालो और खरलमें कूट-पीस कर कपड़-छान कर लो और शीशीमें भर दो ।

अगर इसे और भी उत्तम बनाना हो, तो इसे गोमूत्रमें भिगोकर और सराव-सम्पुटमें रख कर, गजपुटकी तीन आँच दे लो ।

मण्डूर-भस्म-विधि ।

मण्डूरको मण्डूर से चौगुने त्रिफले के काढ़ेमें मिला दो । दोनों को कड़ाहीमें डाल कर पकाओ । जब त्रिफलेका काढ़ा एक-दम सूख जायगा ; तब मण्डूरकी भस्म हो जायगी । जब मण्डूर और कड़ाही दोनोंका रंग लाल हो जाय; तब आग मत दो । जब कड़ाही आप ही शीतल हो जाय, मण्डूर-भस्मको निकाल कर पीस लो ।

नोट—(१) जहाँ तक हो, बहेड़े की लकड़ी लगाकर मण्डूर शुद्ध करना चाहिये । अगर बहेड़े की लकड़ियाँ न मिलें, तो बबूलकी लकड़ियों से काम लो और हो सके तो दस पन्द्रह सेर बहेड़े के फल भी चूल्हेमें बबूलके साथ जलाओ ।

नोट (२) मण्डूर-भस्म बनाने के लिए मण्डूर से दूना त्रिफला लेकर अठगुने जलमें काढ़ा बनाओ और चौथाई पानी रहने पर उतार लो ।

नोट (३) मण्डूर ६० या १०० सालका पुराना अच्छा होता है । ४० साल से कम का तो ज़हर के समान होता है ।

मण्डूरभस्मके गुण

मण्डूर-भस्म अनुपान विशेषके साथ देने से पाण्डु, कामला, हलो-

मक, यकृत-शोथ, तिल्ली और पेटके रोग नाश करती है। इनके अलावः, ज्वर, खाँसी, शूल, अफारा, बवासीर, कृमिरोग और गोलेको नाश करती है।

सेवन-विधि ।

(१) पाण्डु रोगमें—चार रत्ती शुद्ध मण्डूर, ६ माशे शहद और ३ माशे घी में मिला कर चाटने से पाण्डु रोग निश्चय ही नाश हो जाता है।

(२) पेटके भयानक दर्दमें—ऊपरकी विधि से मण्डूर खिलाने से अवश्य आराम होता है।

(३) सूजन सहित पाण्डुमें—१ चने-भर मण्डूर को, ऊपर की तरह, घी और शहदमें चाटो।

(४) पाण्डु रोगमें—१ माशे मण्डूर ६ माशे गुड़में मिला कर ११ दिन खाओ।

(५) कामलामें—चने-भर मण्डूरको माशे-माशे भर हल्दी, दारु-हल्दी, कुटकी और त्रिफले के चूर्ण में मिलाकर, ६ माशे शहद और ३ माशे घी के साथ चाटो।

सोनामक्खी-वर्णन ।

जिस तरह सोना, चाँदी, ताम्बा, राँगा, जस्ता, सीसा और लोहा सात धातु हैं; उसी तरह सोनामक्खी, रूपामक्खी, तूतिया, काँसी, पीतल, सिन्दूर और शिलाजीत ये सात उपधातु हैं।

संस्कृतमें सोनामक्खीके स्वर्णमाक्षिक, माक्षिक, धातु, मधुधातु, सुवर्ण माक्षिक, पीत माक्षिक, क्षौद्रधातु और स्वर्ण-वर्ण आदि नाम हैं। हिन्दीमें सोनामक्खी, बँगलामें स्वर्ण-माक्षिक, गुजरातीमें सोनामखी, अँगरेज़ीमें आयर्न पाइराटीस और लैटिनमें फेरियाई सल्फूरेटम कहते हैं।

सोनामक्खीमें थोड़ा-सा सोना होता है। इसीलिये सोने के अभावमें सोनामक्खी देते हैं। सोना न होने से सोनामक्खी देते हैं;

अतः यह सोने से कम गुण वाली है। इसमें सोने के सिवाय और पदार्थोंके भी गुण रहते हैं। जिसमें सोने की सी झलक हो और जो भारी हो, वही सोनामक्खी अच्छी होती है।

शुद्ध सोनामक्खी के गुण।

शुद्ध सोनामक्खी—स्वादु, कड़वी, वीर्यवर्द्धक, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, वस्ति रोग, कोढ़, पाण्डु, प्रमेह, उदररोग, विष, बवासीर, सूजन, खुजली और त्रिदोष नाशक है।

हिकमतमें लिखा है—सोनामाखी प्रकृति में गरम और रूखी है; फेंफड़ोंको हानि करती है। "रोग़न बादाम" इसके दर्पको नाश करता है। इसका प्रतिनिधि "तूतिया" है। मात्रा एक जौ बराबर है। इसमें विष नहीं है। इसका रंग पीला और स्वाद कषैला होता है। यह नेत्रोंके जाले-माड़े, नाखूनोंके रोग, सिर के रोग और तिल्लीको नाश करती एवं हृदयको मज़बूत करती है।

अशुद्ध सोनामक्खीके दोष।

अशुद्ध सोनामक्खी—अग्निमांद्य, बलहानि, नेत्र-रोग, विष्टंभ, कोढ़ और अनेक प्रकार के घाव कर देती है; अतः इसे बिना शोधे काममें न लेना चाहिये।

शोधन-विधि।

एक लोहेकी कड़ाहीमे ३ भाग सोनामक्खी, एक भाग सैंधानोन और ५ भाग बिजौरे नीबूका रस (जितनेमे चूर्ण खूब डूब जाय) तीनोंको डाल कर, खूब तेज़ आग पर पकाओ और कलछी से चलाते रहो। जब तक कड़ाही लाल-सुर्ख़ न हो जाय, उसे चलाते रहो। सुर्ख़ होने पर, आग मत दो और शीतल होने पर उतार लो। बस, सोना-मक्खी शुद्ध हो गई।

नोट—बिजौरे नीबूकी जगह "जंभीरी नीबूका रस" भी ले सकते हो।

और शोधन विधि।

शोधनेकी और विधि—२० तोले सोनामक्खी, १० तोले सैंधानोन

और ३० तोले अरण्डीका तेल,—तीनोंको कड़ाहीमें डालकर, तेज़ आग पर चढ़ाकर पकाओ और कलछी से चलाओ। जब तेल बिल्कुल जल जाय, ३० तोले त्रिफले का काढ़ा डालकर पकाओ। जब काढ़ा भी जल जाय, ३० तोले केले की जड़का रस डाल दो और पकाओ। जब तेल, काढ़ा और केले का रस तीनों जल जायँ, तब नीबूका रस ३० तोले डाल कर खूब आग लगाओ और चलाओ। जब नीबूका रस भी जल जाय, ३ घन्टे तक खूब तेज़ आग लगाते रहो, फिर आग बन्द करो। शीतल होने पर, सोनामक्खीको निकालकर, पानी भरे मिट्टीके वासनमें डालकर खूब मलो और पानी बहा दो, ताकि नमक न रहे। इसके बाद, फिर एक बार पानी देकर मलो और पानीको निकाल दो। जब तक पानीका स्वाद खारा रहे, धोओ; और पानी निकाल दो। शेषमें, सोनामक्खीको सुखाकर कूट-पीसकर छान लो। यह विधि श्याम सुन्दर आचार्य की है। इस तरह शोधी हुई सोनामक्खी सब से उत्तम होती है।

सोनामक्खी की भस्मकी विधि।

सोनामक्खीको नीचेकी चीज़ों में से किसी एकमें खरल करके, आँचकी एक पुट दो; यानी एक बार फूँक दो, तो भस्म हो जायगी :—

(१) कुलथी का काढ़ा, (२) माठा, (३) तेल, और (४) बकरे का पेशाब। जैसे,—कुलथी के काढ़े में घोटकर टिकिया बनालो और शराव-सम्पुट में रखकर, गज़पुटमें फूँक दो ; भस्म हो जायगी।

दूसरी विधि।

सोनामक्खीको नीबूके रसमें सात बार घोट-घोट कर, टिकिया बनाकर, शराव-सम्पुटमे रख कर, सात बार गजपुटमें फूँकने से सोनामक्खी की भस्म हो जाती है। कुलथी के काढ़े वगैरः में से किसी एकमें घोट कर, एक गजपुटकी आग देने से भी भस्म हो जाती है। सात बार अग्निमें फूँकने से औरभी अच्छी भस्म हो जाती है।

नोट—नीबूके रसमें घोट-घोटकर, सातबार फूंकने से रूपामाखी और कांस्य-माक्षिक की भी भस्म हो जाती है।

उत्तम भस्मकी पहचान।

सोनामाखीकी भस्मको धूपमे रख कर देखो, अगर उसमें चमक हो तो अशुद्ध समझो। यदि चमक न हो, तो शुद्ध भस्म समझो।

अशुद्ध भस्मसे हानि।

सोनामक्खीकी अशुद्ध भस्म—मन्दाग्नि, कमज़ोरी और नेत्ररोग प्रभृति अनेक बीमारियाँ पैदा करती है। अगर किसीने वैसी भस्म सेवन की हो, तो वह नीचेका नुसख़ा सेवन करे;—

अशुद्ध सोनामक्खी की शान्तिका उपाय।

अगर अशुद्ध भस्म से रोग उठे हों, तो लगातार कुछ दिन, अनारके छिलकोंका काढ़ा पीओ। कुल्थी का काढ़ा भी अच्छा है।

रूपामक्खी-वर्णन।

रूपामाखी चाँदीके जैसी होती है, और उसमें किसी क़दर चाँदी होती है, इसीसे उसे रूपामाखी कहते हैं। इसे संस्कृतमें तारमाक्षिक, माक्षिक-श्रेष्ठ और रौप्य माक्षिक आदि कहते हैं। हिन्दीमें रूपामाखी, बँगलामें रौप्यमाक्षी, मरहटीमें रौप्यमाक्षिक और गुजराती में रूपा-माखी कहते हैं।

चाँदीके अभावमें रूपामाखी देते हैं। यह चाँदी से कुछ कम गुण वाली होती है। रूपामाखीमें चाँदीके सिवा और पदार्थोंके भी गुण रहते हैं।

शुद्ध रूपामक्खीके गुण।

रूपामाखी—पाकमें मीठी, रसमें ज़रा कड़वी, वीर्यवर्द्धक, रसायन—बुढ़ापा जीतने वाली, नेत्रोंको हितकारी, वस्तिरोग, प्रमेह, कोढ़, पाण्डु, विष, उदर-रोग, बवासीर, सूजन, क्षय, खुजली और त्रिदोष-नाशक है।

हिकमतमें लिखा है—रूपामाखी कालाई लिये सफेद होती है। इसकी प्रकृति शीतल और रूखी है। यह देहकी चिकनाईको सोखती

और आँखोंकी ज्योतिको बढ़ाती है। सिरके रोग, नेत्रके घाव, नाख़ुनों के रोग और मोतियाविन्दको गुणकारक है। यह तिल्लीकी कठोरताको मिटाती है। इसमें विष नहीं है। इसका प्रतिनिधि "मुर्दासंग" है। इसके दर्पको "बादामका तेल" नाश करता हैं। मात्रा २ माशे की है।

अशुद्ध सोनामक्खीके दोष।

अशुद्ध सोनामाखी—मन्दाग्नि, बलनाश, विष्टम्भ, नेत्ररोग, कोढ़, गण्डमाला और अनेक तरहके घाव आदि करती है; अत: शोध कर लेना उचित है।

शोधन-विधि।

रूपामाखीको १२ घन्टे तक ककोड़े, मेढ़ासिंगी और नीबूके रसमें पीसकर, धूपमें सुखा लो। बस, शुद्ध हो जायगी।

रूपामाखी की भस्म की विधि।

रूपामाखीके मारने की वही विधि है, जो सोनामाखी की है। आप इसे बकरे के पेशाबमें खरल करके, शराव-सम्पुटमें रखकर १ गजपुटकी आग दे दो। अगर धूपमें चमक दीखे, तो फिर खरल करके फूँक दो। कोई-कोई सोनामाखी और रूपामाखीको सात-सात बार खरल करके सात-सात आग देते हैं।

अशुद्ध रूपामाखी के विकारों की शान्ति का उपाय।

"मिश्रीमें मिलाकर मेढ़ासिँगी" खाने से रूपामाखीके विकार शान्त हो जाते हैं।

विषके नाम और लक्षण।

संस्कृत में विषको—विष, गरल, हालाहल, रक्तशृंगिक, नील,

आदि कहते हैं । हिन्दीमें वचनाग विष, बँगलामें काट विष, मरहटी में वचनाग, गुजरातीमें विष, फारसी में ज़हर और अँगरेज़ी में पॉइ-ज़न (Poison) कहते हैं ।

विषके नौ भेद हैं—(१) वत्सनाभ, (२) हारिद्र, (३) सक्तुक, (४) प्रदीपन, (५) सौराष्ट्रिक, (६) शृङ्गिक, (७) कालकूट, (८) हालाहल, और (९) ब्रह्मपुत्र ।

वत्सनाभ विष ।

जिसके पत्ते सम्हालूके जैसे हों, आकृति—स्वरूप बछड़े की नाभि-जैसा हो, जिसके नज़दीक दूसरे वृक्ष न ठहरें और न बढ़ें--उसे "वत्सनाभ" विष जानना चाहिये ।

हिकमतमें लिखा है—बच्छनाग विषको संस्कृत में वत्सनाभ, फारसीमें ज़हर, और अरबी में विष कहते हैं । इसका स्वरूप ऊपरसे काला, पर भीतरसे कुछ सफेद और स्वादमें कड़वा होता है। इसकी कुछ ज़ातोंको संखिया कहते हैं । यह निर्विषी-जैसे एक पहाड़ी वृक्षकी जड़ है। इसकी प्रकृति चौथे दर्जे की गरम और रूखी है। यह प्राण-नाशक है। इसका दर्प "निर्विषी और दायुलमिस्क" से नष्ट होता है। इस की मात्रा दो माशेकी हैं। शुद्ध किया हुआ बचनाग कोढ़, सफेद दाग़ और श्वास नाशक है ; पर इसे होशियारीसे सेवन करना चाहिये, क्योंकि घातक विष है ।

हारिद्र विष ।

जिसकी जड़ हल्दीके पेड़ के जैसी हो, वही हारिद्र विष है ।

सक्तुक विष ।

जिसकी गाँठमें सत्तू-जैसा चूर्ण भरा हो, वह सक्तुक विष है ।

प्रदीपन विष ।

जो लाल रङ्गका, दीप्त, अग्निकी सी कान्तिवाला और अत्यन्त दाहकारक हो, वह प्रदीपन विष है ।

सौराष्ट्रिक विष।

जो सौराष्ट्र देशमें पैदा होता है, वह सौराष्ट्रिक विष है।

शृंगिक विष।

जिसको गायके सींग के बाँधने से दूध लाल हो जाय, उसे "शृङ्गिक" या सींगिया विष कहते हैं।

कालकूट।

यह विष एक पेड़का गोंद है। कोंकन और मलयाचल आदिमें होता है।

हालाहल विष।

जिसके फल दाखों के गुच्छों के समान हों, पत्ते ताड़के पेड़-जैसे हों, जिसके पासके वृक्षादि भस्म हो जायँ, वह "हालाहल" विष है। यह हिमालय, दक्खन समुद्र, किष्किन्धा और कोंकन देशमें होता है।

ब्रह्मपुत्र।

जिसका रङ्ग पीला हो, वह "ब्रह्मपुत्र विष" है। यह मलयाचल पर होता है।

रसायन के काम में सफ़ेद विष लिया जाता है। शरीर-पुष्टिके लिये लाल विष, कोढ़ नाश करने को पीला और किसीके मारने के लिये काला विष लेते हैं।

विषके गुण।

विष प्राणनाशक, सारे शरीर में फैलकर पचने वाला, ओजको सुखाकर सन्धियों को ढीला करनेवाला, अग्निके अधिक अंशवाला, अपने साथीके गुण करने वाला, वात और कफ नाशक तथा मद-कारक है। यदि यह विष चतुराई और नियम से सेवन किया जाता है, तो यह प्राणदायक, रसायन, योगवाही, त्रिदोषनाशक, पुष्टिकारक और वीर्य-वर्द्धक होता है।

अशुद्ध विष हानिकर।

अशुद्ध विष परम हानिकर है। शुद्ध करने से इसके दुर्गुण दूर

हो जाते हैं। इसलिये विषको शुद्ध करके दवाओंमें डालना चाहिये।

विष-शुद्धि की विधि।

विष—वच्छनाभ विषको ३ दिन तक गोमूत्र में भिगो रखो। इसके बाद, मूत्रसे निकालकर, लाल राईके तेलसे तर किये हुए कपड़े में दबा कर रखदो। बस, विष शुद्ध हो जायगा।

सींगिया विष की शुद्धि।

सींगिया विष को दो-तीन तोले लेकर, भैंसके गोबर में मिलाकर आगपर पकाओ। इसके बाद निकाल कर, उसमें एक सींक घुसाओ। अगर सींक पार हो जाय, तो ठीक हो गया; उसे धोकर साफ करलो और दूधमें डालकर पकाओ। फिर निकाल कर सुखालो और रखदो। अब, यह सब कामका हो गया।

उपविष शोधन विधि

(१) आक का दूध, (२) थूहर कादूध, (३) कलियारी, (४) कनेर, (५) चिरमिटी—घुंघुची, (६) अफीम, और (७) धतूरा- ये सब उपविष या गौण विष हैं। अगर किसी चीज़में ये डालने हों, तो इन्हें शोध लेना चाहिये।

आकका दूध।

आक को संस्कृत में अर्क, फारसी में खुरग, अरबीमें उशर और अँगरेजी में कैलोट्रोपीसजाइगाटिया कहते हैं। इसका वृक्ष सफेदी लिये हरा होता है। छोटा सा वृक्ष होता है। इसका दूध तीसरे दर्जेका गरम और रूखा होता है। आकका दूध यकृत और फेंफड़ों को हानिकारक है। "घी" इसका मार है। इसका प्रतिनिधि "शब-रम" है। मात्रा ३ माशे की है। इसका दूध मांस-भक्षक है; अतः च-मड़ेमें घावकर देता है। इसके पत्तोंसे सरदी की सूजन नाश होती है: शीतकी पीड़ा शान्त होती है और पेटके कीड़े भी नाश होजाते हैं।

इसके फूल खानेसे भोजन फ़ौरन ही पचता है। यह पक्वाशय के रोगोंको गुणकारक है। इससे कोढ़, खुजली, तिल्ली, बवासीर और गोला आदि भी नाश होते हैं।

आककी शोधन-विधि।

आकका दूध खरल करने से ही शुद्ध हो जाता है।

कलियारी का वर्णन।

कलियारी को करिहरी भी कहते हैं। संस्कृत में कलिकारी, मरहटी में कललानी और गुजराती में कळगारी कहते हैं। इसका वृक्ष पहले मोटी घास की तरह होता है, फिर बेलकी तरह फैलता है। पत्ते अदरखके से होते हैं। इसका पेड़ प्रायः बाढ़ या झाड़ी के सहारे लगता है। पुराना पेड़ केलेके वृक्ष जितना मोटा होता है। गरमीमें पेड़ सूख जाता है। फूलकी पंखड़ियाँ लम्बी और फूल गुड़हर के फूल जैसा होता है। फूलों का रङ्ग लाल, पीला, सफ़ेद और गेरुआ सा होता है। फूलोंसे वृक्ष बड़ा सुन्दर दीखता है। इस वृक्ष की गाँठ में विष होता है।

यह दस्तावर, कड़वा, तीखा, खारा, पित्तकारक, गरम, कषैला और हल्का तथा वायु, कफ, कीड़े, वस्तिशूल, कोढ़, बवासीर, खुजली, व्रण, सूजन शोष, शूल और गर्भनाशक है।

शोधन-विधि।

कलियारी के टुकड़े-टुकड़े करके, एक दिन "गोमूत्र"में भिगोदो, वह शुद्ध हो जायगी।

कनेर का वर्णन।

संस्कृत में कर्णिका और करवीर, हिन्दीमें कनेर, गुजराती में कराहेर; मरहटी में कराहेर कहते हैं। कनेर का पेड़ मशहूर है और सर्वत्र होता है। यह मनुष्यके क़द-बराबर प्रायः २ गज़ ऊँचा होता

है। कनेर का पेड़ चार तरह का होता है:—(१) सफ़ेद,(२) लाल, (३) गुलाबी, और (४) पीला।

इन चारोंमें से सफ़ेद कनेर दवाओं के काममें आता है। इसकी जड़ में विष होता है। पत्ते लम्बे होते हैं। फूलोंमें सुगन्ध होती है न दुर्गन्ध। कनेर के पेड़ के पास साँप नहीं आता। गधा इसे हरगिज़ नहीं छूता।

कनेर की प्रकृति गरम और रूखी है। यह फेंफड़ोंको हानि करता है। "शहद और घी" इसके दर्प को नाश करते हैं। "बाबूना और मुनक्का" इसके बदल या प्रतिनिधि हैं। मात्रा २ माशे की है; पर इसे खाना उचित नहीं।

यह कठोर सूजनको नाश करता, कान्ति करता, रूखापन करता, पीठकी पुरानी पीड़ाको शान्त करता, चूतड़से पाँव की उँगली तकके दर्दको नाश करता और ओजको बल देता है। इसका लेप खुजली और झाँई को नाश करता है। इसके सूखे पत्तोंको पीस-छानकर घावों पर बुरकने से घाव आराम हो जाते हैं। इसकी जड़का लेप करने से असाध्य गरमी के घाव भी आराम हो जाते हैं। बवासीर पर भी इस की जड़का लेप बहुत फायदेमन्द है। सिरके रोगोंमें सफ़ेद कनेर की सूखी जड़ दरदरे पत्थर पर घिस कर लगाने से लाभ होता है। साँप या बिच्छू के काटने पर, काटे-स्थान में सफ़ेद कनेर की जड़ घिसकर लेप करने से बड़ी जल्दी फायदा होता है। यद्यपि इसका खाना-पीना मना है; पर साँप और बिच्छू के काटने पर इसकी जड़को घिसकर या पत्तों का रस निकाल कर, शक्ति-अनुसार पीना चाहिये। अगर ग्लानि हो, तो ऊपर से "घी" पीना चाहिये। सफ़ेद कनेर की जड़ रविवारको कान पर बाँधने से जाड़े के ज्वर भाग जाते हैं। विसर्प पर लाल कनेरके फूल और बराबर के चाँवल, रात को पानीमें डाल, ओसमें रखकर, सवेरे ही पीस कर लेप करने से लाभ होता है। ये सब प्रयोग हमारे आज़मूदा हैं। सफ़ेद कनेर के

सूखे फूल, उनके बराबर ही कड़वी तमाखू और ज़रासी इलायची— इनके चूर्णको कपड़छन करके सूँघनेसे साँपका ज़हर उतर जाता है।

कनेर की शोधन-विधि ।

कनेर की जड़के छोटे-छोटे टुकड़े करके, गायके दूधमें, दोलायंत्र की विधि से, पकाने से कनेर शुद्ध हो जाती है ।

नोट—एक हाँडी में आधे पेट दूध भर कर, उस पर आड़ी लकड़ी रखकर, एक कपड़े में कनेर की जड़के टुकड़े बाँध कर, झूलेकी तरह उस लकड़ी में लटका दो। पोटली दूधमें डूबी रहे। हाँड़ीको चूल्हे पर चढ़ादो और आगदो। यही दोलायंत्र है।

चिरमिटी-वर्णन ।

चिरमिटीको संस्कृत में उच्चटा, हिन्दीमें घुंघुची या चिरमिटी कहते हैं। फारसी में चश्म खुरूस कहते हैं। इसे सब जानते हैं। इसके बीजों से रत्तीका काम लिया जाता है। काले मुँह और लाल शरीरवाली चिरमटी तोलने के काम में आती है। दिहातिन औरतें इनको मालायें भी बनाती हैं।

चिरमिटी दो तरहकी होती हैं—(१) लाल,और (२) सफेद। चिरमिट्टी के पत्ते हरे और बीज लाल और सफेद होते हैं। यह स्वाद में कड़वी और फीकी होती है। प्रकृतिमें तीसरे दर्जे की गरम और दूसरे दर्जे की रूखी है। गरम मिज़ाजवालों को हानिकर और सिर-दर्द पैदा करनेवाली है। इसका दर्प "सूखे धनिये और ताज़ा दूध" से नाश होता है। मात्रा १ माशेकी है।

यह चित्तको प्रसन्न करती, स्नायुओं में बल देती, बलकी रक्षा करती, जरा-व्याधिको दूर करती, ओजको बलवान करती और शुक्र पैदा करती है। लाल और सफेद चिरमिटियों में "सफेद चिरमिटी" उत्तम होती है।

चिरमिटी के शोधने की विधि ।

चिरमिटी तीन घण्टे तक काँजी में पकाने से शुद्ध हो जाती है।

चिरमिटी के विष की शान्ति के उपाय।

चौलाई के रसमें मिश्री मिलाकर पीओ और ऊपर से दूध पीओ। इससे चिरमिटी का विष शान्त हो जाता है।

अफीम-वर्णन।

अफीम को संस्कृत में अहिफेन, फारसी में अफयून, अरबीमें लुबनुल खशखाश और अँगरेज़ी में ओपियम (opium) कहते हैं। यह स्वरूप में काली होती है, पर तत्काल की पैदा हुई सफेद होती है। स्वाद में कड़वी होती है। भारतवर्ष में पोस्ते में सूई चुभा देते हैं, इससे दूध निकलता और जम जाता है। प्रकृतिमें चौथे दर्ज की शीतल और रूखी होती है। बाहरी और भीतरी नसोंको हानि-कारक है। "केशर और दालचीनी" इसके दर्प को नाश करती हैं। "खुरासानी अजवायन" प्रतिनिधि या बदल है। मात्रा १ रत्ती।

अफीम शिथिलता-कारक, बन्धक, रुन्धक, निद्रा लाने वाली, शोथ या सूजन को नष्ट करनेवाली, सारी पीड़ाओं को शान्ति देनेवाली, वीर्य को स्खलित होने से रोकनेवाली, नजला, कफ, खाँसी, कानका दर्द और नेत्रके सब रोगोंको खाने-लगानेसे नाश करनेवाली है। "अस्प-गोलके लुआब"में अफीम घिसकर लगानेसे बाल नहीं निकलते।

अफीम के शोधने की विधि।

(१) अफीमसें अदरखके रसकी बारह भावना देने; यानी बारह बार अदरखके रसमें खरल कर-करके सुखानेसे अफीम शुद्ध हो जाती है।

(२) अफीमको जल में घोलकर, ब्लाटिङ्ग पेपर में या चार तहके कपड़े में छान लेने से मैला ऊपर रह जाता है और पानी नीचे चला जाता है। उस पानीको मन्दी आग पर औटाने से अफीम गाढ़ी हो जाती है। उस में मैल-माकड़ कुछ नहीं रहता।

अफीम के विष की शान्ति के उपाय।

(१) बड़ी कटेरीके रस में दूध मिलाकर पीने से अफीमका ज़हर उतर जाता है।

(२) हींग घोलकर पीने से भी अफीमका ज़हर उतर जाता है ।

कुचला-वर्णन ।

कुचले को संस्कृतमें तिन्दुक, फारसी मे कुचला, अरवीमें इज़राकी और कातिलुलकलब तथा अँगरेज़ी में पॉइज़ननट नक्सवोमिका कहते हैं। इसका स्वरूप कालापन लिये पीला और स्वाद कड़वा होता है। कुचला एक वृक्षका प्रसिद्ध बीज है। प्रकृतिमें तीसरे दर्जेका गरम और रूखा होता है । यह मद करनेवाला—नशा लानेवाला और घातक विष है। इसके ज़हर की शान्ति क़य कराने और घी मिश्री पिलाने से होती है। मात्रा २ रत्ती की है।

इसको शोधकर सेवन करने से पक्षवध, स्तम्भ, आमवात, कमर का दर्द, चूतड़से पैरकी अँगुली तकका झनझनाहट और दर्द तथा वायु-शूल प्रभृति आराम होते हैं। कुचला स्नायुरोगों की अनुभूत दवा है। कुचला पथरी को नाश करता है। इसका लेप चेहरे पर करने से मुँहकी कलाई, व्यंग, झाँई और खुजली तथा दाद नाश हो जाते हैं।

कुचला शोधने की तरकीवें ।

(१ कुचले को घी में भूनलो, शुद्ध हो जायगा।

(२) कुचलेको गोमूत्र में दस दिनतक भिगो रखो ; पर मूत्र रोज़ बदलते रहो। फिर उसे १० दिन बाद निकाल लो और छील कर या बीचों-बीच से चीर-चीरकर, उसके भीतर की जिभली निकाल-निकाल कर फैंक दो और टुकड़े-टुकड़े करके दूधमें डाल कर पकाओ ; कुचला शुद्ध हो जायगा। यह दूसरी तरकीव है।

(३) छटाँक भर कुचला डेढ़ सेर दूध में औटाओ। जब दूध रबडी सा हो जाय, उतार लो और कुचले को निकाल कर धोलो और सुखाकर रखलो। बस, कुचला शुद्ध हो गया। यह तीसरी विधि है।

नोट—कुचले के बीजों को बीच से चीर-चीरकर, उनके अन्दर की जिभली हर हालत में निकाल फैंकनी चाहिये। घी में भूनते समय, इस बात का खयाल अवश्य रहना चाहिये, कि बीज जलने न पावें ।

धतूरे का वर्णन।

धतूरे का वृक्ष प्रसिद्ध है। धतूरा एक छोटे से काँटेदार वृक्षका फल है। इसका पेड़ बैंगन के पेड़-जैसा होता है। संस्कृत में इसे धत्तूर, फारसीमें तातूर और अँगरेज़ीमें इस्टेमुनियम कहते हैं। इसका स्वरूप हरा और काला होता है। स्वाद कड़वा होता है। प्रकृतिमें चौथे दरजे का शीतल और रूखा है। यह अत्यन्त मादक, उन्माद और चिन्ताजनक है। "सौंफ, काली मिर्च और शहद"—इसके दर्प को नाश करते हैं। मात्रा ३ रत्ती की है। अधिक लेने से घातक है। अवयवोंमें और विशेषकर मस्तिष्क में अत्यन्त शिथिलता करनेवाला, अत्यन्त मादक, अत्यन्त निद्राप्रद, पित्तज रुधिर की तेज़ी और सिर दर्द को शान्त करनेवाला है; शोथ या सूजनके भीतरी मलको पकाता है। चिकनाईको सुखाने वाला और वीर्य को स्तम्भन करनेवाला है। इसके पत्तोंका लेप अवयवों को गुणकारक है। वैद्यक में धतूरा गर्म, अग्नि बढ़ानेवाला, नशा लाने वाला एवं ज्वरादि सब रोगों का नाशक लिखा है।

धतूरा शोधन-विधि।

(१) धतूरेके बीजोंको कूटकर १२ घण्टे गाय के मूत्र में भिगोकर निकाल लो और धो डालो; फिर काम में लाओ।

---

(१) सोंठ, छुहारेका छिलका, बंसलोचन और नागौरी असगन्ध,—इन चारोंको कूट-छान कर रख लो। इसमें से ३ माशे चूर्ण स्त्री-

धर्मके पीछे, बारह दिन तक, खाने से उसको गर्भ रहता है, जिसके एक पुत्र होकर रह गया हो ।

(२) चमेली की जड़का छिलका ४ माशे, काली गायके दूध में स्त्री उस जगह पीवे, जहाँ गाय दुही जाती हो और सूरजके सामने मुँह करके सन्तान माँगे ; ईश्वर-कृपासे इच्छा पूरी होगी ।

(३) लड़के का नाल मिस्री में मिलाकर खाने से गर्भ रहता है ।

(४) कसौंदीकी जड़ बकरीके दूध में पीस कर खाने से गर्भ रहता है ।

(५) पलाशका या ढाकके बीज गायके घी में पीस कर, योनिमें लेप करने से, रजस्वला न होने पर भी गर्भ रहता है ।

(६) छुहारे नग १५ और धनिया की जड़ एक पैसे-भर, दूध में औटाकर, सात दिन, खाने से गर्भ रहता है ।

(७) सफेद काँगनी बछड़े वाली गायके दूधमें, रजोधर्मके बाद खाने से गर्भ रहता है ।

नोट—गर्भ रहा कि नहीं, इसके जाननेकी तरकीबें:—(१) स्तनोंका मुँह काला हो जाय, (२) मुँहमें पानी भर भर आवे, भूख सूख जाय, शरीर भारी रहे, आलस्य आवे और सिर पर गुरझट पड़ें । (३) शहदको सिरकेमें मिलाकर खावे, अगर पेटमें दर्द होने लगे, तो गर्भके होनेमें शक नहीं । (४) स्त्रीका हाथ लाल हो, तो बेटा होगा। अगर हाथ सफेद हो, तो लड़की होगी । स्त्री के दूधकी बूँद एक शीशे (आईने) पर डालो और आईनेको धूपमें रख दो। अगर दूधकी बूँद मोती सी हो जाय, तो लड़का होगा और अगर दूध बिखर जाय तो कन्या समझो ।

(८) खसखस के दाने २ तोले, भुने चने २ तोले, खाँड ४ तोले और नारियलकी गिरी पूरे दो नारियलोंकी—इन सबको पीस-कूट कर रख लो। इसमें से ६ पैसे भर रोज़ खाने से जितना बल-वीर्य बढ़ता है, लिख नहीं सकते । पर स्त्री से बचना ज़रूरी है ।

(९) ग्वारपाठेका गूदा, घी, गेहूँकी मैदा और सफेद चीनी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, हलवा बना कर, खाने से २१

दिनमें नामर्द भी मर्द हो जाता है ; पर स्त्री और खटाई से परहेज़ रहना चाहिये।

(१०) चोपचीनी आधपाव और दालचीनी, कबाबचीनी, लौंग, कालीमिर्च, रूमीमस्तगी, सालम मिश्री, जावित्री, इन्द्रजौ, मीठा नरकचूर, अकरकरा, बादामकी मींगी, पिस्ता और केशर—ये सब चार-चार माशे और कस्तूरी २ माशे लाकर रखो।

कस्तूरीके सिवा, सब दवाओंको कूट-पीसकर रख लो। शेषमें, कस्तूरी भी मिला दो। इसके बाद कलईदार कड़ाहीमें आध सेर शहद डालकर चूल्हे पर रखो। आग एक-दम मन्दी रखो। जब शहदमें झाग आने लगें, तब उन्हें उतार-उतार कर फेंक दो। फिर दवाओंके पिसे-छने चूर्णको शहद में मिलाकर चट-पट कड़ाही नीचे उतार लो। शीतल होने पर, तोले-तोले भर की गोलियाँ बाँधलो। इसे "माजून चोपचीनी" कहते हैं ; एक गोली रोज़ सवेरे ही खाने और खटाई तथा बादी पदार्थों से परहेज़ करने से बूढ़ा भी जवान हो जाता है। नमक लाहौरी खाना चाहिये।

(११) असगन्ध आध सेर, सफेद मूसली आध सेर और स्याह मूसली आध सेर,—सबको पीस-कूट कर छान लो। फिर इस चूर्ण को चूर्ण से दस गुने दूधमें पकाओ और चलाते रहो, जिससे दूध या दवा जलने न पावे। जब दूध जल जाय, खोयासा रह जाय, उतार कर छायामें सुखा दो। खूब सूख जाने पर, इस चूर्णके बराबर मिश्री पीस कर मिला दो और एक बर्तनमें मुँह बाँध कर रख दो।

इसमें से २१ माशे चूर्ण रोज़ खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीने से खूब बल-वीर्य बढ़ता और रंग निखर कर गोरा हो जाता है।

(१२) ढाकका गोंद, तालमखाना, बीजबन्द, समन्दर-शोष, सफेद मूसली, बड़ा गोखरू और तज—इन सबको पीस कूट कर छान लो। पीछे चूर्णके वज़नके बराबर मिश्री पीस कर मिला दो

और रख दो। इसमें से ६ माशे चूर्ण सवेरे ही खाकर, ऊपरसे धारोष्ण दूध पीने से खूब बल-वीर्य बढ़ता है।

(१३) कबाबचीनी, लौंग, अकरकरा, सोंठ, जद खालिस और इम्पन्द जलानेका,—ये सब बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें चूर्णके वज़न से दूना पुराना गुड़ मिलाकर, बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके २१ दिन खाने से मैथुन-शक्ति खूब बढ़ जाती है।

(१४) सिरसके बिना घुने बीज दो माशे रोज़, २१ दिनतक, खाने से खूब बल-वीर्य और नेत्रोंकी ज्योति बढ़ती है।

(१५) धनिया पीसकर, उसमें बराबरकी खाँड और घी मिलाकर रखदो। इसमें से ६ पैसे भर रोज़ खाने से बल-वीर्य बढ़ता है।

(१६) जिसने पुत्र जाना हो, पर पुत्री चाहे, उसे कड़वी तोरई साफ करके और छिलका दूर करके योनिमें रखनी चाहिये। मैथुन से पहले, योनिको पानी से धोकर प्रसङ्ग करना चाहिए। इसके बाद मेथीके लड्डू खाने चाहिएँ और चिकनी सुपारी दूधमें पीसकर पीनी चाहिए।

नोट—(१) शराबमें बाजकी बीट एक तोले-भर खाने से गर्भ नहीं रहता। जो शराब में न खाय, वह अन्य चीजमें भी खा सकती है।

नोट—(२) गजपीपल और पिस्तेका छिलका बराबर-बराबर पीस-छान लो। इसमें से १ पैसे-भर चूर्ण रोज एक मास तक खाने से गर्भ नहीं रहता।

हिन्दी-संसारका चमकता हुआ तारा !!

मनुष्यमात्रके पास रखने योग्य

अद्वितीय ग्रन्थरत्न

स्वास्थ्यरक्षा

लेखक—

बाबू हरिदास वैद्य ।

भगवान् कृष्णचन्द्रकी कृपा से "स्वास्थ्यरक्षा" बकौल "वर्त्तमान" कानपुरके आज "स्वास्थ्य रामायण" हो रही है। अटक से कटक और काश्मीर से कन्या कुमारी तक "स्वास्थ्यरक्षा" का आदर हो रहा है। कुटीर-निवासी किसानसे लेकर देशके राजा महाराजा तक "स्वास्थ्यरक्षा" को बड़े चावसे पढ़ते और भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। हिन्दीको गन्दी कहने वाले, हिन्दी-पुस्तकोंको देखकर नाक-भौं सिकोड़ने वाले, हिन्दी-ग्रन्थ पढ़नेमें अपनी हतक समझने वाले, नयी रौशनीके अङ्गरेजीदाँ विद्वान् बाबू और जज, प्रॉफेसर, हेडमाष्टर, ग्रेजुएट, अण्डर ग्रेजुएट, डिपटी कलक्टर और तहसीलदार तक "स्वास्थ्यरक्षा" को अपने घरमें रखना जरूरी समझते और उसके लिये फौरन पौने चार रुपये खर्च कर देते हैं।

"स्वास्थ्यरक्षा" की भारतक कोने-कोनेमें इतनी इज्जत इसलिये की जाती है, कि इसमें मनुष्यके सुखसे जिन्दगीका बेड़ा पार करने के सारे सामान मौजूद हैं। इसको पढ़ने और इसके अनुसार चलने वाला, किसी भी रोग, दुःख और क्लेशका शिकार हो नहीं सकता। इसके पढ़ने और इसमें लिखी बातोंको अमल करने वाला शतायु होकर, दोनो लोकोंमें सुख भोग कर सकता है। जिन अमूल्य सुखदायी विषयोंको करोड़ों खर्च करने वाले राजा महाराजा भी नहीं जानते, वे ही सब इसमें कूट-कूट कर भर दिये गये हैं। बहुत क्या—गागरमें सागर भरा गया है। मूल्य अजिल्दका ३) सजिल्दका ३॥)

पता—हरिदास एन्ड कम्पनी,

☞ २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता।